अलौकिक कौतुक

मार्मिक साखीआं

अलौकिक कौतुक

मार्मिक साखीआं

अलौकिक कौतुक

मार्मिक साखीआं

—हरीश चन्द्र

भूमिका

''धन सतगुरु रामसिंह जी सहाय''

मैं इस पुस्तक के प्रारंभ करने से पहले सतगुरु रामसिंह जी, सतगुरु हरिसिंह जी, सतगुरु प्रताप सिंह जी एवं सतगुरु जगजीत सिंह जी के चरणों में प्रणाम करता हूं।

''सतगुरु रामसिंह भगवान राम का ही अवतार हैं''

सूबा करतार सिंह जी ने यह साखी मण्डी में टेप रिकार्ड करवाई जिसे मैंने सतगुरु जगजीत सिंह जी को उनके दिल्ली निवास पर सुनाया। साखी:— सतगुरु रामसिंह जी अर्धकुम्भ के अवसर पर हजारों सिखों को लेकर हरिद्वार पहुंचे। जहां सभी ने पवित्र गंगा में स्नान किया। इसके बाद सतगुरु रामसिंह जी ने 5-6 सिख और एक सूबा को साथ लिया और ऊपर हिमालय की तरफ प्रस्थान किया। उनके आदेश से सिखों ने अपने साथ गाय के दूध से बना घी और एक बोरी कपास (रुई) की ले ली, काफी ऊंचाई पर एक गुफा के द्वार पर पहुंचे। जिसके मुंह पर एक बहुत भारी पत्थर रखा था, 4-5 सिखों ने पत्थर हटाने की कोशिश की मगर वे उसे हिला तक न सके। अन्त में सतगुरु रामसिंह जी ने अपने छोटे भाई बाबा हरिसिंह से कहा कि हम दोनों मिलकर यह पत्थर हटाएंगे। पत्थर हटाते ही गुफा का रास्ता खुल गया। सब लोग गुफा के अन्दर चले गए। अन्दर पहुंचते ही एक बहुत ही अद्‌भुत दृश्य नजर आया, एक योगी महाराज मूर्छित अवस्था में एक पत्थर की शिला पर लेटे थे। उनकी सांस नहीं चल रही थी, मगर शरीर गर्म था, उनके गेरुवे वस्त्र तार-तार हो चुके थे, सारे सिख सतगुरु रामसिंह जी की तरफ देखने लगे। जैसे पूछ रहे हों कि यह योगी कौन है?

सतगुरु जी ने सूबा नत्थासिंह जी से कहा कि इस योगी के पैरों के तलुओं पर गाय का घी मलो, आधे घन्टे तक सूबा जी योगी महाराज के दोनों पैरों के तलुओं में गाय के घी की मालिश करते रहे। अचानक योगी महाराज उठ बैठे। उनके मुख से निकला—''क्या कलयुग आ गया है?'' सूबा जी ने कहा—''महाराज कलयुग आए तो हजारों वर्ष हो गए हैं।'' अगला प्रश्न योगी महाराज ने ऐसा किया कि सभी को अचम्भे में डाल दिया—''यदि कलयुग आ गया है तो भगवान राम को भी यहां होना चाहिए, जिन्होंने वादा किया था कि वे कलयुग में मुझे दर्शन देंगे।'' उसी क्षण सतगुरु रामसिंह जी ने योगी महाराज को भगवान राम के रूप में दर्शन दिए। योगी महाराज ने उनके चरणों में गिरकर दण्डवत प्रणाम किया और कहने लगे—''भगवन आपने अपना वादा निभाकर मुझ गरीब पर बड़ी कृपा की है, मैं हजारों वर्षों से आपका ही इन्तजार कर रहा था।'' वहां उपस्थित सिखों की समझ में कुछ न आया। सतगुरु रामसिंह जी ने योगी महाराज से कहा—''महाराज इनको त्रेतायुग की कथा सुनाओ सब लोग पत्थरों पर बैठ गए, योगी महाराज ने यह कथा सुनाई—

जब सीता माता को रावण हरण करके लंका ले गया तो हनुमान जी को सीता माता का पता लगाने लंका भेजा। हनुमान जी आकाश मार्ग से समुद्र लांघकर लंका से सीता

माता का पता लगाकर चले आ रहे थे, सभी लोग भगवान राम और लक्ष्मण के साथ हनुमान जी की प्रतीक्षा कर रहे थे, इतने में सभी की निगाह हनुमान जी पर पड़ी, थोड़ी देर में हनुमान जी धरती पर उतर आए और भगवान राम को प्रणाम करके सीता माता का समाचार दिया। अब प्रश्न यह था कि लंका जाने के लिए विशाल समुद्र कैसे पार किया जाए। नल-नील ने वरदान के कारण समुद्र में पत्थर फेंककर रामसेतु का निर्माण किया, जिसके द्वारा सारी वानर सेना श्रीराम के साथ लंका पहुंचकर रावण से युद्ध कर सके। भगवान राम ने प्रसन्न होकर नल और नील से कहा कि वे कोई वर मांगे। उन्होंने बहुत बड़ी सेवा की है। काफी झिझक के बाद नल और नील ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि हे भगवन हम विश्वकर्मा की संतान हैं। हाथों की कारीगरी करके हम अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। हम न तो क्षत्रिय हैं और न ही ब्राह्मण, हमें लोग नीची जाति का समझते हैं। आप विष्णु के अवतार हैं, आप कृपा करके हमारे कुल में अगला अवतार लें, ताकि हम छोटे लोग भी आपकी कृपा से कुछ ऊपर उठ सकें। भगवान राम ने कुछ क्षणों के लिए अपने नेत्र बन्द किए और फिर वचन किया—''विष्णु अवतार का फैसला लाखों साल पहले ब्रह्मा जी और शिव शंकर भगवान से मिलकर लिया जा चुका था। आज त्रेतायुग है, जिसमें मैंने अवतार लिया है। अगला द्वापर युग होगा, जिसमें श्रीकृष्ण भगवान का अवतार होगा, उसके पश्चात कलयुग आएगा जो लाखों सालों तक चलेगा, जिसमें बाबा नानकदेव विष्णु का अवतार लेंगे। इसलिए अब कलयुग में भी कोई स्थान बाकी नहीं बचा। सारी वानर सेना को दुःखी देखकर भगवान राम ने थोड़े समय पश्चात् उन्हें सांत्वना देते हुए कहा—''बाबा नानकदेव हिन्दुओं की रक्षा के लिए पहले गुरु होंगे, दसवें गुरु गोबिन्द सिंह होंगे, जो मलेच्छों से हिन्दुओं की रक्षा करेंगे, ग्यारहवां गुरु गुप्त रहेगा। मैं बारहवें गुरु के रूप में इस धरती पर आऊंगा, मेरा जन्म भैणी की धरती पर लकड़ी के कारीगर के घर होगा। मैं माता के गरभ से उत्पन्न नहीं होऊंगा। मेरा नाम राम के बाद सिंह याने कि रामसिंह होगा। इसलिए लोग मुझे बाबा रामसिंह के नाम से जानेंगे। योगी महाराज ने आगे कहा कि मैंने हाथ जोड़कर भगवान राम से प्रार्थना की कि भगवन मैं आपके दर्शन कलयुग में करना चाहूंगा, आप कृपा करें।'' भगवान राम ने कहा—''तथास्तु'' और वादा किया कि वह मुझे दर्शन देंगे, आदेश किया, तुम ऋषिकेश की गुफा में सांस दसवें द्वार में चढ़ाकर मूर्छित अवस्था में चले जाओ, मैं तुम्हें कलयुग में होश में लाऊंगा और दर्शन दूंगा,'' आज भगवान राम ने वैसा ही किया है जो उन्होंने त्रेतायुग में कहा था। सतगुरु रामसिंह जी ने योगी से पूछा—''अभी आप को अन्य कोई इच्छा हो तो कहो,'' योगी ने हाथ जोड़कर विनती की—''आपके दर्शन के बाद मेरी कोई इच्छा नहीं रह गई, आप कृपा करें मैं आपकी दरगाह में पहुंचकर इस जीवन मरण के बन्धन से मुक्त हो जाऊं,'' सतगुरु जी ने योगी महाराज को लेटने का ईशारा किया और उनके सिर पर हाथ रख दिया, योगी ने प्राण त्याग दिए, उनकी आत्मा बैकुण्ठ को

प्रस्थान कर गई। योगी के मृत शरीर को रुई में लिपेट कर गुफा से बाहर लाया गया और उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया।

इस प्रकार मेरा मानना है कि भगवान विष्णु का अवतार कलयुग में भी चल रहा है और सतगुरु जगजीत सिंह जी कलयुग में गुरु नानक की गद्दी के 15वें गुरु हैं। जिनका प्रकाश श्री भैणी साहब में हुआ। सारे नामधारी सिख आशा बांधे हैं कि सतगुरु रामसिंह जी अपने वायदे के अनुसार शीघ्र ही दर्शन देंगे, और उनकी आयु 250 वर्ष की होगी।

सतगुरु जगजीत सिंह जी की अपार कृपा जो कि लेखक ने स्वयं देखी है—

1. लेखक का दायां बाजू सड़क दुर्घटना में टूट गया, सतगुरु जगजीत सिंह जी ने वचन किया कि डाक्टरों को गलती लगी है। दुबारा चैक करवाओ, दाहिना बाजू ठीक हो चुका था।
2. लेखक के जीजा जी को रात के समय अधरंग का दौरा पड़ गया, सुबह आसा-दी-वार में सतगुरु जी को अर्ज विनती की अरदास कराई गई। 10-15 मिनट बाद बहन का फोन आया कि जीजा जी को होश आ गया था। अगले दिन वे काम पर चले गए। आज इस घटना को बीते 15 वर्ष हो गए हैं और जीजा जी ठीक-ठाक हैं।
3. मैं अपने मित्र उमेश वर्मा जो कि डायबिटीस के कारण सन 2000 में अन्धे हो गए थे, उन्हें गाड़ी में बिठाकर अप्रैल सन् 2002 में सतगुरु जी के दर्शन हेतु श्री भैणी साहब ले गया। सतगुरु जी ने कृपा की और उन्हें पवित्र भजन दिलवा दिया और अमृत वेले पाठ करने को कहा। दो माह बाद एक आंख से दिखाई देना शुरू हो गया और तीन माह बाद उसी डाक्टर ने दूसरी आंख का आपरेशन किया और उससे भी दिखाई देना शुरू हो गया। अद्‌भुत चमत्कार देखकर वर्मा जी की सतगुरु जी के प्रति अपार श्रद्धा हो गई और भजन करते समय कई बार इन्हें सतगुरु जी के दर्शन हुए।

   एक वर्ष पहले जब वे बैंक से 5,000 रुपए निकाल कर बाहर आए तो तीन लुटेरों ने उन पर हमला कर दिया। उन्हें जख्मी करके पैसे लेकर भाग गए, 20-25 मिनट तक वे जख्मी हालत में सड़क पर पड़े रहे। उनकी मदद करने कोई न आया। सतगुरु जी को याद करके रक्षा करने की विनती करने लगे। अचानक एक बुजुर्ग सिख जो कि सफेद नामधारी वस्त्रों में था, उनको अपने तिपहिए में बिठाकर उनके घर के बाहर पहुंचा गया। वर्मा जी ने तिपहिए वाले सिख को उसका किराया जो कि 23 रुपए था, दिया और उसका धन्यवाद किया, घर के बाहर वर्मा जी की पत्नी उनका इंतजार कर रही थी, उन्होंने पत्नी को सारी घटना बताई कि ये बुर्जुग सिख मुझे अपने तिपहिए में बिठाकर यहां छोड़ गए। पत्नी ने जब पूछा कि कौन सिख? वर्मा जी ने मुड़कर ईशारा किया, लेकिन हैरानी की बात कि वहां पर न तो कोई तिपहिया था और न ही बुर्जुग सिख, सब सतगुरु की लीला थी।

   पिछले दिनों उन्हें दिल का दौरा पड़ा, अस्पताल में भर्ती करवाया गया, वर्मा जी ने

रु. 5500/- का बैंक ड्राफ्ट बनवाकर श्री भैणी साहब भिजवाया और अर्ज विनती की कि आपरेशन की नौबत न आए। डाक्टर फैसला कर चुके थे कि वर्मा जी की बाई-पास सर्जरी करनी है। अचानक वर्मा जी ने ऑपरेशन वाले दिन अस्पताल में चिल्लाना शुरू कर दिया कि उन्हें ऑपरेशन नहीं करवाना क्योंकि सतगुरु जगजीत सिंह जी ने उन्हें अस्पताल में दर्शन देकर कहा है कि वह एकदम ठीक हैं ऑपरेशन नहीं करवाना। घरवाले परेशान होकर वर्मा जी को अस्पताल से घर ले आए। उनके बेटे ने समझा कि उनके पिता का दिमाग खराब हो गया है जो कि इस प्रकार की बातें कर रहे हैं।

4. भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक तो ब्राह्मण हैं और दूसरा वे सभी धर्मों का आदर करते हैं। सन् 2001 में मैंने 'सतगुरु जगजीत सिंह महाराज—एक विराट स्वरूप' नामक पुस्तक उन्हें भेंट की तो उन्होंने मुझसे पूछा—ये गुरु कौन हैं? मैंने उन्हें बताया कि ये गुरु नानक जी की गद्दी के 15वें गुरु सतगुरु जगजीत सिंह जी हैं। हालांकि अकाली सिख और खाने-पीने वाले सिख देहधारी गुरु पर विश्वास नहीं करते। इनका मानना है कि उनका ग्रंथ साहिब ही उनका गुरु है। सुनने में आया है कि अंग्रेज शासक सतगुरु रामसिंह और उनके सिखों के आंदोलन से परेशान हो गए तो उन्होंने सिखों को अपने पक्ष में लेकर यह घोषणा करवा दी कि गुरु गोबिन्द सिंह जी ने संसार छोड़ने से पहले ग्रंथ साहिब को अपनी गद्दी दे गए थे। इसलिए सिख यह भजन गाते हैं—'गुरु ग्रंथ को गुरु मान्यो' नामधारी सिखों का मानना है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी ने गुरु बालक सिंह को गद्दी सौंपी और उनसे अनुरोध किया कि वे गुप्त रहें, और आगे कहा कि वे 12वें जामें में श्री भैणी नामक कस्बे में एक लकड़ी के कारीगर के यहां अवतार लेंगे और उनका नाम रामसिंह होगा और गुरु बालक सिंह से गद्दी वापिस लेने आएंगे। और हुआ भी ऐसा ही। मैंने जब यह कथा श्री वाजपेयी जी का सुनाई तो उनके मन में जिज्ञासा उठी कि सतगुरु जी के मैं भी दर्शन करूं।

9 जनवरी सन् 2002 को मुझे सूचना मिली कि सतगुरु जी दिल्ली पधारे हैं। मैंने तुरंत प्रधानमंत्री निवास को सूचित किया। सुबह 10 बजे प्रधानमंत्री वाजपेयी जी बिना किसी सूचना के सतगुरु जी के दर्शन करने उनके निवास स्थान मानसरोवर गार्डन पहुंच गए। 40 मिनट तक सतगुरु जी के साथ अकेले वार्ता की। 20 मई 2002 को सुबह 8 बजे मुझे सतगुरु जी के सेवक रछपाल सिंह का फोन आया कि सतगुरु जी पूछ रहे हैं कि वाजपेयी जी इस समय कहां हैं? मैंने उन्हें बताया कि कल 19 मई को मैं वाजपेयी जी को संसद भवन में मिला था, वे कह रहे थे कि उसी शाम वे कश्मीर जाने वाले हैं। रात को दूरदर्शन समाचारों से पता चला कि कश्मीर में हुर्रियत कॉन्फ्रेंस के बड़े नेता अब्दुल गनी लोन की उग्रवादियों ने हत्या कर दी है। मैंने रछपालसिंह को सूचना दी कि वाजपेयी जी इस समय श्रीनगर में

हैं। इसके बाद रछपालसिंह ने जो कुछ मुझसे कहा, सुनकर मैं चकित भी हुआ और डर भी गया। उनका कहना था कि सतगुरु जी अचानक पाठ करते-करते रुक गए और उन्होंने मुझे सूचना देने के लिए कहा कि वाजपेयी जी को कहो कि जहां वे जाने वाले हैं, वे आज वहां न जाएं, क्योंकि उनकी सेहत को खतरा है? सेवक ने कहा—ऐसा ही जानिए। मैंने सोचा कि यदि यह सूचना प्रधानमंत्री कार्यालय को देता हूं तो वे मुझे पकड़कर ले जाएंगे कि आपको यह सूचना कहां से मिली और यह सूचना देनी भी जरूरी थी, मैंने वाजपेयी जी के बड़े भाई समान आदरणीय चमनलाल जी से संघ कार्यालय सम्पर्क करके सूचना से अवगत कराया। वे रोने लगे। मैंने उन्हें कहा कि आप सतगुरु जी से सीधी बात करें और निवेदन करें कि वाजपेयी जी के जीवन की रक्षा करें। चमनलाल जी ने ऐसा ही किया, सतगुरु जी को वाजपेयी जी की रक्षा की अर्ज विनती की, सतगुरु जी ने वचन किया कि मैं तो रक्षा करूंगाा ही लेकिन मेरा हुक्म मानकर वाजपेयी को बाहर जाने के लिए मना ही करें। मैंने श्रीनगर राजभवन का फोन नं. पता करके चमनलाल जी को देते हुए कहा कि वाजपेयी के निजी सचिव आर.पी. सिंह को सम्पर्क करके कहें कि वाजपेयी जी को सतगुरु जी का हुक्म सुनाएं कि जहां वे आज जा रहे हैं, वे वहां न जाएं। वाजपेयी जी हुर्रियत कॉन्फ्रेंस नेता अब्दुल गनी लोन के घर उनकी हत्या पर अफसोस प्रकट करने के लिए जाने वाले थे। उनके निजी सचिव ने चमनलाल जी का संदेश प्रधानमंत्री को दिया तो उन्होंने हंसते हुए कहा कि मान्यवर चमनलाल जी का हुक्म है तो मैं नहीं जाऊंगा। दोपहर के समय फौज के सुरक्षा कर्मियों ने प्रधानमंत्री के निजी सचिव को सूचना दी कि जिस रास्ते से प्रधानमंत्री लोन के घर जाने वाले थे उस रास्ते में रिमोट कंट्रोल वाला बम रखा था जो कि फौज के जवानों ने निष्क्रिय कर दिया। वाजपेयी जी को जब यह सूचना मिली तो उन्होंने चमनलाल जी को धन्यवाद दिया कि आपने मेरे जीवन की रक्षा की है। चमनलाल जी ने कहा कि रक्षा तो सतगुरु जगजीत सिंह जी ने की है, उनका धन्यवाद करें।

5. मेरे फ्लैट के ऊपर एक बहुत ही भले युवक लव चौधरी रहते हैं। उनके पिता की उम्र शायद 75 वर्ष की होगी, सीढ़ी से गिरने के कारण उनकी दोनों टांगे टूट गई और प्लास्टर चढ़ा था। मैं पड़ोसी होने के नाते उन्हें देखने चला गया। वे भिवानी के बहुत बड़े जमींदार हैं। बातों-बातों में उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने श्री जीवन नगर में सतगुरु प्रताप सिंह जी के दर्शन किए थे। मैंने चौधरी साहब को बताया कि मैंने अपनी पहली पुस्तक सतगुरु प्रतापसिंह जी पर लिखी थी और दूसरी पुस्तक सतगुरु जगजीत सिंह जी पर लिखी, जो कि इस समय गद्दी पर विराजमान हैं। चौधरी साहब ने विनती की कि सतगुरु जी से अर्ज करें कि वे उन पर कृपा करें ताकि बगैर आपरेशन के वे ठीक हो जाएं।

मैंने संत सुरेन्द्रसिंह जी को फोन करके विनती करने को कहा, उन्होंने मुझसे

चौधरी साहब का नाम पूछा, मैंने बताया—हरनारायण चौधरी। अगले दिन संत सुरेन्द्रसिंह जी ने सतगुरु जी के चरणों में अर्ज की, सतगुरु जी के पूछने पर उन्होंने चौधरी जी का नाम हरनारायण बताया। सतगुरु जी हंस पड़े और कहा कि हरनारायण की दोनों टांगे कैसे टूट सकती है? यह वचन सुनकर मुझे आभास हो गया कि चौधरी जी पर सतगुरु जी की कृपा हो गई है। मैं चौधरी जी को मिला और भरोसा दिलाया कि वे प्लास्टर कटवा लें। कृपा हो चुकी है प्लास्टर कटवाया गया, एक टांग पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी और दूसरी टांग भी तीन माह बाद ठीक हो गई, धन्य सतगुरु जगजीत सिंह जी। चौधरी साहब ने वायदा किया था कि वह ठीक होने के बाद श्री भैणी साहब सतगुरु जी के दर्शन कर के वहां लंगर करेंगे। समय ही बताएगा कि कब तक श्रद्धा बनी रहेगी।

6. मेरे मित्र अश्वनी कालरा 3-4 महीने दिल का दौरा पड़ने पर अस्पताल में रहे। डॉ. सेठी ने उनके जीवन का समय 4-6 माह दिया। जब दो माह रह गए, उनकी पत्नी सरला कालरा ने फोन करके दुखी स्वर में पूछा कि सतगुरु जी कृपा कर सकेंगे। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि कालरा जी सतगुरु जी के पड़ोसी थे और मैं कई सालों से उनसे अनुरोध कर रहा था कि वह सतगुरु जी के दर्शन करें। उनका कहना था, वह खाना-पीना नहीं छोड़ पाएंगे, आज जब मौत ने दस्तक दी है, उन्हें सतगुरु जी की याद आई। खैर कुछ रोज बाद सूचना मिली कि सतगुरु साध संगत को दर्शन देने दिल्ली आ रहे थे। मैंने कालरा जी को सूचना दे दी। शाम के नितनेम में कालरा परिवार गुरुद्वारे आया। अरदास के पश्चात् मैंने कालरा जी को सतगुरु के सामने खड़ा कर के अर्ज की कि सतगुरु जी डाक्टर ने इनको 4-6 माह का जीवनकाल बताया था, जिसमें से 2 माह जा चुके थे। उनकी उम्र साठ साल से कम थी और एक बेटे की शादी भी अभी करनी थी। आप कृपा करें और कालरा जी को निरोग करें। सतगुरु जी ने इशारे से कहा कि वह भजन ले लें, सतगुरु कृपा करेंगे। भजन ले कर अश्वनी कालरा जी कीर्तन सुनने सामने बैठ गए। उनका कहना था कि सतगुरु जी लगातार उनकी ओर देखते रहे और वह महसूस करने लगे कि वह स्वस्थ हो रहे थे।

एक हफ्ते के बाद कालरा जी डाक्टर सेठी को दिखाने पहुंचे और ई सी जी की गई, जो ठीक नॉर्मल आई। डा. साहब ने तीन बार ई सी जी की वही रिजल्ट आया। दवाई तो चल रही है परन्तु वह आधा दिन अपनी फर्नीचर फैक्टरी में और आधा दिन घर पर काम करते हैं। इस बात को पांच साल हो चुके हैं, कालरा जी को भरोसा हो गया था कि कृपा सतगुरु जी ने की थी परन्तु वह सतगुरु का धन्यवाद करने, माया भेट करने आज तक भैणी साहब नहीं गए। सतगुरु सबका भला करते हैं चाहे कोई माने या ना माने। धन सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज।

—हरीश चन्द्र

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ

सरदार अमोलक सिंह सुपुत्र सरदार बलवन्त सिंह, गांव भटिया कलान (नाभा के पास) बैंकाक

सन्त अमोलक सिंह जी का परिवार सतगुरु हरि सिंह जी के समय से ही नामधारी विश्वासों तथा परम्पराओं में रम गया था। उनकी नानी जी अभी 109 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारीं हैं। उनकी नानी का नाम बीबी हरनाम कौर था। पर उन्हें बेवेधानी के नाम से ही पुकारा जाता था।

सन्त अमोलक सिंह जी वर्ष 1983-84 में ही बैंकाक आ गए थे। बैंकाक आकर उन्होंने 6-7 वर्ष तक नौकरी की पर जब उन्होंने देखा कि उनकी स्थिति सच्चे पातशाह जी की कृपा से अच्छी हो गई है तब उन्होंने अपनी माता तथा बहिन को भी अपने पास बैंकाक बुला लिया। इनकी छोटी बहिन की सगाई भी सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज की कृपा से बैंकाक में ही हो गई। तथा उसके बाद आनन्द कारज भी वहीं सम्पन्न हुआ। यह सच्चे पातशाह जी की अपार कृपा का ही फल था। उसके बाद उन्होंने अपने छोटे भाई को भी बैंकाक में ही बुला लिया। अमोलक सिंह का आनन्द कारज भी सच्चे पातशाह जी की हजूरी में वर्ष 1991 में बैंकाक में ही सम्पन्न हुआ। इनकी पत्नी थाईलैंड (बैंकाक) की ही रहने वाली है।

पहली साखी

जैसा कि ऊपर बता दिया गया है कि अमोलक सिंह की छोटी बहिन का आनन्द कारज (पाणि ग्रहण संस्कार) बैंकाक में ही हुआ था। आनन्द कारज के तीन-चार साल बाद वह अचानक बीमार पड़ गई। उसके परिणाम-स्वरूप वह अपना दिमागी सन्तुलन खो बैठी। अनेक अस्पतालों में इलाज करवाया। लगातार दो वर्ष पर्यन्त इलाज चलता रहा पर स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। हालात दिन प्रतिदिन खराब होते गए। भले उसके ससुराल वाले अच्छे पैसे वाले लोग थे, पर सब व्यर्थ रहा। जब तक कि सच्चे पातशाह जी को स्वीकार न हो। इधर-उधर की भाग-दौड़ सब बेकार रही।

एक दिन अमोलक सिंह की माता ने उनसे कहा कि वह सतगुरु महाराज के चरणों में अर्ज करे कि आप कृपा करके उसकी बहिन को रोग मुक्त कर दें। पर अमोलक सिंह सतगुरु महाराज के चरणों में विनती करना भूल गए और माता जी

को तसल्ली देते हुए कहा कि सतगुरु अवश्य कृपा करेंगे। सतगुरु महाराज के चरणों में अर्ज न करने का एक कारण यह भी था कि अमोलक सिंह नामधारी मर्यादा भूलकर अपनी दाढ़ी हल्की-हल्की काटने लगे थे। उन्हें डर था कि उनकी कटी हुई दाढ़ी देखकर सतगुरु महाराज नाराज होंगे। उनकी माताजी ने उन्हें दुबारा सतगुरु महाराज के चरणों में अर्ज करने को कहा। माता जी ने यह भी कहा कि उसे अपनी बहिन की कोई चिन्ता नहीं है। मेरा आदेश है कि तू सच्चे पातशाह जी से अर्ज कर। अमोलक सिंह डरते-डरते बैंकाक में ही सच्चे पातशाह के दर्शन करने गये तथा विनती की कि ''हे गरीब नवाज! मेरी बहिन का दिमाग खराब हो गया है। अनेक डाक्टरों से इलाज कराया पर कोई आराम नहीं मिला। आप सतगुरु महाराज मेरी बहिन पर कृपा करें।'' सच्चे पातशाह जी ने बात सुनी और कहने लगे तेरी दाढ़ी बहुत सुन्दर है पर इसके साथ कुछ होने का नहीं है। तू अपनी दाढ़ी सम्भाल। तेरी बहिन स्वत: ठीक हो जाएगी।

अमोलक सिंह जी को सतगुरु महाराज की बात समझ में आ गई तथा उन्हें अपनी भूल का ज्ञान हो गया। उन्होंने अपने मन में प्रतिज्ञा कर ली कि वह सतगुरु जी के वचन का पूरी तरह से पालन करेंगे। और आज के बाद कभी दाढ़ी को नहीं काटेंगे। अमोलक सिंह जब सतगुरु के दर्शन करके आए तो माता जी ने पूछा कि सच्चे पातशाह जी ने क्या कहा है। अमोलक सिंह ने उसका संक्षिप्त सा उत्तर दिया और कहा कि सच्चे पातशाह ने कृपा कर दी है। अब मेरी बहिन ठीक हो जाएगी। और हुआ भी ऐसा ही। इधर संत जी ने अपनी दाढ़ी काटनी बंद कर दी, उधर उनकी बहिन बीबी परमजीत कौर दिमागी तौर पर बिलकुल ठीक हो गई। वह अपने घर का सारा काम ठीक से करने लगी है। और अपना परिवार ठीक ठंग से चला रही है।

धन्य हो सतगुरु महाराज जिनकी कृपा से जटिल से जटिल समस्याएं भी सुलझते तनिक भी देर नहीं लगती।

मूकम करोति वाचालम्,
पंगुम लंघयते गिरिम्।
यत कृपया तम हम्-बन्दे,
परमानन्द माधवम्।

दूसरी साखी

यह वर्ष 1998 की एक अलौकिक घटना है जो यह संकेत देती है कि सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज सर्व अर्न्तयामी हैं। वह दूसरे के मन की बात जान लेते हैं। इस साखी से यह बात भी साफ हो जाती है कि सतगुरु महाराज

के सजाए हुए सिख अपनी नामधारी मर्यादा को न तोड़ें। वे मांस भोजन तथा शराब आदि को अपने निवास स्थान या व्यापार केंद्र पर जहां पर वे कार्य करते हैं न आने दें। सतगुरु महाराज का चित्र जब अपने निवास स्थान या दुकान आदि पर लगा हो तो आप यह समझें कि सतगुरु महाराज का वहां पर पहरा लग गया है। सतगुरु महाराज आपकी हर बात को देख रहे हैं। मर्यादा भंग करने की सजा भी सतगुरु अवश्य देंगे। साधसंगत को सतगुरु महाराज की आज्ञा की अवहेलना करने मर्यादा भंग करने का दण्ड भी भोगना पड़ता है।

सन्त अमोलक सिंह जी ने एक सज्जन श्री गुलाटी के पास 10 वर्ष तक नौकरी की। श्री गुलाटी विदेशी मुद्रा (करैन्सी) के लेन-देन का कारोबार करते थे। अर्थात् किसी भी दूसरे देश की मुद्रा के बदले दूसरी मुद्रा का आदान प्रदान करना। गुलाटी जी के यहां काम करने के बाद श्री अमोलक सिंह ने अपनी एक दुकान खोल ली जिसमें वह सूट केस तथा कपड़े का व्यापार करने लगे। दुकान खोलने के बाद उनके मन में विचार आया कि क्यों न वह भी एक्सचेंज अथवा मुद्रा बदलने का काम शुरू करें। परंतु धन का अभाव होने के कारण काम न कर पाए। एक दिन की बात है उन्हें दो खुले सिख मिले। बातों बातों में वे कहने लगे कि वे उनके इस कारोबार में धन लगाने को तैयार हैं। पर शर्त यह है उन दोनों को भी इस कारोबार में भागीदार बनाया जाए। अमोलक सिंह उनकी बातों से सहमत हो गए। और उनके साथ साझेदारी में काम शुरू कर दिया। इनके साझेदार खुले सिख थे। वे मांस मदिरा का सेवन भी करते थे। उन्हें यह सब देख कर अच्छा नहीं लगता था। एक दिन जब कि उनके साझेदार उनकी दुकान में सतगुरु के चित्र के सामने ही मांस और शराब का सेवन करने लगे। अमोलक सिंह ने उनको मना भी किया, पर विवशता के कारण वह उनका विरोध भी न कर सकते थे। क्योंकि कारोबार में धन तो उन दोनों का ही लगा हुआ था।

अगले ही दिन की बात है, कि श्री अमोलक सिंह ने सुबह 10 बजे अपनी दुकान का दरवाजा खोला और अपने नेपाली नौकर को सफाई के लिए पानी लाने बाहर भेज दिया। इतनी देर में उनकी दुकान पर एक जान पहचान की महिला आ गई। उस महिला ने 2000/- (दो हजार) डालर निकाले और उसके बदले में वहां की मुद्रा अमोलक सिंह जी से मांगी। अमोलक सिंह ने अपने दराज में से 80 हजार बाहट निकाल कर उस महिला को दे दिये। बाकी के कुछ और पैसे देने के लिये अपनी तिजोरी खोली। इसी बीच चार पाकिस्तानी पठान डाकू उनकी दुकान में घुस आए। उनमें से दो के हाथों में बड़े-बड़े चाकू तथा दो के हाथों में लोहे की मोटी-मोटी सलाखें थी। ये डाकू पिछले 5-7 दिनों से इनकी

दुकान के चक्कर लगा रहे थे। कभी 10 और कभी 20 डालर का बदलाव भी इन्होंने किया था। एक तरह से ये डाका डालने का कार्यक्रम बना रहे थे। तथा वहां की एक-एक गतिविधि का जायज़ा ले रहे थे। एक पठान ने दुकान में घुसते ही अपना चाकू निकाल कर उस महिला की गर्दन पर रख दिया। उस महिला ने 80 हजार बाहट डरकर उसके हवाले कर दिये। उस डाकू ने महिला का पर्स खाली करने के बाद उसके सोने के गहने भी उतरवा लिये। वह डाकू छुरा लेकर सन्त अमोलक सिंह जी की तरफ बढ़ा। सन्त जी लड़ने के लिये तैयार हो गए थे तो वह महिला चिल्ला कर बोली, ''सरदार जी की जान बख्श दो इन्हें मत मारो। जो पैसा आप लोगों ने लेना है ले लो। सरदार जी ने सब पैसे तिजोरी से निकाल कर डाकुओं को दे दिये। अमोलक सिंह ने 20 हजार डॉलरो की एक और रकम एक कपड़े में छिपा कर, तिजोरी के पीछे रखी हुई थी। वह भी उन डाकुओं के हाथ लग गई। इसके अलावा 2 लाख भारतीय रुपए की मुद्रा भी इन डाकुओं के हाथ लगी। अमोलक सिंह जी को विचार आया कि पैसे तो लगभग 15-16 लाख जा रहे हैं साथ ही इज्जत और मान-सम्मान भी चला जाएगा। क्योंकि उसके साझेदार इस बात पर विश्वास कर पाएंगे कि नहीं? वह उनको क्या उत्तर देगा। इसी उधेड़बुन में उसे सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज का ध्यान ही आया। उसने कुछ ही मिनटों में आंखें बंद करके सच्चे पातशाह जी को अर्ज की। हे सच्चे पातशाह! हे अकाल पुरुष! पैसा चला गया तो कोई बात नहीं पर यदि इज्जत मान सम्मान चला गया तो कुछ नहीं रहेगा फिर दुबारा अरदास की कि सतगुरु महाराज आप ऐसी कृपा करो कि कम से कम एक डाकू मेरे हाथों अवश्य पकड़ा जाए। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी प्रार्थना सतगुरु महाराज ने सुन ली है। उसमें हिम्मत आ गई। उन्होंने उस भागते हुए डाकू को पीछे से पकड़ के नीचे गिरा लिया। यह पाकिस्तानी डाकू घबराकर चिल्लाने लगा और दूसरे डाकू ने चाकू से अमोलक सिंह की छाती पर प्रहार किया पर सतगुरु जी की कृपा से बचाव हो गया। तीसरा डाकू यह सब देख रहा था। उसने जब देखा कि चाकू का वार खाली चला गया है तो उसने लोहे की सलाख से उनके सिर पर प्रहार किया। सतगुरु जी की कृपा से उसका बार पगड़ी के ऊपर हुआ वह फिर बच गये। फिर उस डाकू ने पीठ में सलाख घुसाने की कोशिश की। जिसके कारण सन्त जी को चोट आ गई। पर उसने पहले डाकू को कैंची का दाव लगा कर नीचे दबा दिया। दूसरा और तीसरा डाकू लोहे की सलाखों से और छुरे से इनकी पीठ पर वार करते रहे। चौथा डाकू पहरा दे रहा था। उसने दरवाजा बन्द कर दिया था ताकि बाहर से कोई बचाव के लिए आ न सके। और शोर भी सुनाई न पड़े। अन्यथा कोई भी

बचाव के लिए बाहर से आ सकता था। अमोलक सिंह ने नेपाली भाषा में अपने नौकर से कहा कि हमलावर के सिर पर स्टूल दे मारो। उस छोटे नेपाली नौकर ने स्टूल उठा कर डाकू के सिर पर दे मारा। जिससे उसने घबरा कर अमोलक सिंह जी को छोड़ दिया और भागने का प्रयास करने लगा। पहला डाकू तो इनके सिर और बाजू पर वार करता रहा। इनके शरीर से खून बह रहा था पर इन्होंने उसे छोड़ा नहीं, पहरा दे रहा डाकू डर गया। वह दरवाजा खोलकर बोला चलो भाग चलें क्योंकि बाहर भीड़ जमा हो गई थी। ये चारों डाकू बाहर की ओर भागे तो अमोलक सिंह जी ने इनका पीछा करते हुए चौथे डाकू की पतलून की बैल्ट से उसे पकड़ लिया। और उसी कैंची का दाव लगाकर नीचे गिरा दिया। बाकी के तीन डाकू अपने चौथे साथी को छोड़कर भाग गये। सारा नजारा देखती हुई भीड़ में से किसी ने पुलिस को बुला लिया। जब तक कि पुलिस ने मौके पर पहुंच कर उस चाकू चलाने वाले डाकू को हथकड़ी न लगा ली तब तक अमोलक सिंह जी ने बड़ी हिम्मत और बहादुरी दिखाते हुए उस डाकू को पकड़े रखा। छोड़ा नहीं। इसके बाद उन्होंने जख्मी हालत में बेहोश होते होते अपने घर पर फोन करके सूचना दी कि वह बुरी तरह से घायल हैं। जब उन्हें गाड़ी में अस्पताल लाया जा रहा था तो वह बेहोश हो गये। अस्पताल में उनका आप्रेशन किया गया। देर शाम को जब उन्हें होश आया तो उन्होंने पूछा कि वह कहां है? उनके जान-पहचान वाले बोले कि आप बेहोश हो गये थे। तो आपको अस्पताल में लाना पड़ा और आपका ऑप्रेशन किया गया। ग्लूकोज़ लगाया गया है। दवाईयां भी दी गई हैं। इस सब के बावजूद भी उनका मन खुश था कि सच्चे पातशाह जी ने उनकी प्रार्थना सुनकर एक डाकू को पकड़ पाने की सामर्थ्य प्रदान कर दी।

पुलिस ने इस पाकिस्तानी डाकू को मार-पीट करके तरह-तरह की यातनाएं देकर उसके दूसरे साथियों के ठिकानों की जानकारी मांगी और उनके ठिकानों पर गये। जहां उनके छिपे होने का सन्देह था। मगर बेकार रहा। आखिर चार दिन बाद उसके दो साथी पकड़ लिये गये। उनसे 10 लाख रुपया भी बरामद हो गया। बाकी के पांच लाख रुपए चौथा डाकू लेकर गायब हो गया था। इन तीनों को थाई पुलिस सरदार जी की दुकान अर्थात् वारदात की जगह पर ले गई। और वहां जा कर सब को बताया कि कैसे उन डाकुओं ने चाकू और लोहे की सलाखें चला कर डाका डाला। और किस प्रकार सन्त अमोलक सिंह जी ने हिम्मत और बहादुरी से इनका मुकाबला करके एक डाकू को पुलिस के आने तक पकड़े रखा। इन डाकुओं के पास से पाकिस्तान का पासपोर्ट तथा हवाई जहाज की टिकट भी मिली इन तीनों डाकुओं पर मुकदमा चला तथा 10-10 साल की सजा सुनाई गई।

एक महीने के बाद अमोलक सिंह जी स्वस्थ होने पर अपनी दुकान पर आए। पर दुकान पर बैठते ही उन्हें डर सा लगा। उन्होंने सतगुरु महाराज के चित्र की तरफ देखा और माथा टेका। फिर अरदास की वे उन्हें शक्ति प्रदान करें ताकि वे अपना कार्य सुचारू रूप से चला सकें। दूसरी अरदास थी कि उनके साझेदार जो कि मांस तथा शराब का सेवन करते हैं उनसे किसी प्रकार छुटकारा दिलाएं। अमोलक सिंह ने पुलिस द्वारा दिये गये 10 लाख रुपए अपने साझीदारों को देते हुए कहा कि वे कृपया उनके साथ अपनी साझेदारी समाप्त करें। और अपना काम धन्धा बंद करें परंतु साझेदार तो दुकान छोड़ने को ही तैयार न थे। कुछ लोगों ने उन्हें सुझाव दिया कि उनको 6 महीने और अपने साथ काम करने दो। फिर इसके बाद देखा जाएगा। 6 महीने बाद उन्होंने उनकी कुर्सी और मेज सड़क पर निकाल दिये। और सतगुरु महाराज की कृपा से इन साझेदारों से उनको छुटकारा मिल गया। कुछ समय बाद पुलिस ने इनकी वारदात की वीडियो फिल्म भी दिखाई थी। जिसमें वारदात का विस्तार पूर्वक वर्णन था जो उनके मुताबिक रिकार्ड था। इस प्रकार इन्हें सतगुरु द्वारा दिया गया दण्ड भी था। जो कि उनके साझेदार उनकी दुकान में मांस-मदिरा का सेवन करते रहे, और साथ ही एक डाकू को पकड़कर रखने की शक्ति भी सतगुरु जी की कृपा का ही फल था।

धन्य है सतगुरु जी की कृपा दृष्टि।

तीसरी साखी

यह साखी सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह के विराट स्वरूप का एक छोटा सा उदाहरण मात्र है। इस साखी को पढ़कर या सुनकर साध संगत जी आप के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। आपका दिल दहल उठेगा। जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि आजकल एड्स नाम की बीमारी एक बहुत ही भयानक रोग माना जाता है। जोकि एक शरीर से दूसरे शरीर में असुरक्षित यौन सम्बन्धों या एड्स पीड़ित व्यक्ति का खून चढ़ाने से या एड्स पीड़ित मां के गर्भ में पल रहे बच्चे में चला जाता है। यह बीमारी असाध्य अर्थात् लाईलाज मानी जाती है। इस बीमारी से मृत्यु अवश्यंभावी है। पर सतगुरु सच्चे पातशाह जिसे बचाना चाहें, जिसकी प्राण रक्षा करना चाहें उसे एड्स जैसी भयंकर बीमारी भी नहीं मार सकती।

सन्त अमोलक सिंह के छोटे भाई जो जवानी में वैश्या गामी बन गए थे और वैश्याओं से असुरक्षित यौन सम्बन्धों के कारण इन्हें एड्स की बीमारी ने पकड़ लिया था। बहुतेरे इलाज करवाया परन्तु डाक्टरों ने इसे असाध्य मानकर जवाब दे

दिया था और कह दिया था कि इसके बचने की कोई आशा नहीं। घर के सभी लोग शोक ग्रस्त हो रहे थे। और चिन्तित थे कि अब क्या होगा। एक जीवित प्राणी में खड़ी मृत्यु स्पष्ट दिख रही थी। इसी बीच सतगुरु जी ने बैंकाक में बीबी ज्ञानन के घर डेरा डाला। वहीं ये साध संगत को दर्शन देकर कृतार्थ करने लगे। जब अमोलक सिंह जी ने सुना कि सच्चे पातशाह ने बीबी ज्ञानन के घर पर डेरा डाला है तो वह अपने छोटे भाई को लेकर सतगुरु महाराज के दर्शन करने बीबी ज्ञानन के डेरे पर पहुंच गये। सच्चे पातशाह जी के दर्शन किये, माथा टेका और हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि हे सच्चे पातशाह मेरा छोटा भाई बीमार है। यह चिन्ता से पागल सा हो रहा है। आप इसकी रक्षा कीजिये। इसके बहुतेरे इलाज करवा लिये हैं। डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया है। अब आप की ही कृपा का सहारा है। आप ही इसे जीवन प्रदान कर सकते हैं। सच्चे पातशाह ने बात सुनकर इनके पूरे परिवार को भगवती की और भजन की माला जपने का आदेश दिया। अमोलिक सिंह जी के पूरे परिवार ने सच्चे पातशाह के आदेशानुसार भगवती की तथा भजन की माला शुरू कर दी। फलस्वरूप कुछ दिनों तक तो ठीक चलता रहा पर फिर बीमारी ने जोर पकड़ लिया। सच्चे पातशाह जी के चरणों में फिर अरदास की गई। सतगुरु महाराज ने आदेश दिया कि दिल्ली से डा. देव को बुलवाया जाए साथ में उसे टिकट भेजी जाए। उससे उपचार कराओ सतगुरु नारायण कृपा करेंगे। सतगुरु जी महाराज के आदेशानुसार डा. देव बैंकाक पहुंच गये। और सतगुरु जी के दर्शन करने के पश्चात् और सतगुरु जी की आज्ञा लेकर अमोलक सिंह के भाई का इलाज शुरू कर दिया। 15 दिन तक निरन्तर इलाज चलता रहा। 15 दिन में इनके भाई को काफी आराम मिल गया। जब पहले से काफी आराम मिला तो डा. देव उन्हें दवाइयां और हिदायत देकर दिल्ली वापिस लौट आए। सतगुरु जी बैंकाक से श्री भैणी साहब चले गये। वहां से भी वह उस रोगी का हाल समाचार निरंतर पूछते रहे। कई बार तो हालत बिगड़ भी जाती थी। पर दवाइयां लगातार चलती रहीं। सच्चे पातशाह जी बार-बार कृपा करते रहे। नाम स्मिरण चलता रहा। भगवती की माला तथा भजन भी निरंतर करते रहे। कई माह तक इसी तरह इलाज चलता रहा। जिसके फलस्वरूप अब इनका भाई पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया है। वह अपना काम धन्धा भी स्वयं ही देखता है। सच्चे पातशाह जी की इस अपार कृपा से अमोलक सिंह जी के समूचे परिवार की श्रद्धा भक्ति बहुत बढ़ गई है। धन्य हैं सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह। अकाल पुरुष। जग के पालनहार, कष्ट निवारक तथा संसार को सुख प्रदान करने वाले प्रभु के साक्षात अवतार।

सन्त प्रीतम सिंह जी (अमेरिका)
सुपुत्र सरदार उत्तम सिंह (नकोदर पंजाब)

सन्त प्रीतम सिंह जी नकोदर (पंजाब) के निवासी हैं। सन्त जी को भारत से अमेरिका आए 35-36 वर्ष हो गए हैं। आपके दो पुत्र तथा एक पुत्री है। पुत्रों के नाम देव सिंह तथा जोगी है और पुत्री का नाम रीता है।

सन्त जी 1960 में अमेरिका चले गये थे। उन्होंने गुरुनानक कालेज लुधियाना से मकैनिकल इंजीनियरिंग पास की है। सतगुरु महाराज का 1973 में शिकागो का दौरा था। सच्चे पातशाह जी उनके पास दो तीन बार ठहरे। उनका मन प्रसन्नता से परिपूर्ण था। 1984 में सन्त जी पहले लॉस एंजलस चले गए तथा इस प्रकार उनका सतगुरु महाराज से 10-11 वर्ष तक कोई सम्पर्क नहीं रह पाया था। जिसका आज तक भी उनके मन में बहुत खेद है। 1994-95 की साखी है। उनका बड़ा पुत्र देव सिंह बीमार पड़ गया। उसे बुरी आदतें पड़ गईं। वह शराब तथा मांस का सेवन भी करने लग गया। ये लोग बेटे के कारण बहुत चिन्तित थे। उनके पास ही L.A. के प्रधान सन्त गुरदेव सिंह रहते थे। इन्होंने सन्त गुरदेव सिंह जी से प्रार्थना की कि वह सच्चे पातशाह जी को प्रार्थना करें कि वे उनके पुत्र पर कृपा करें जिससे उसकी सभी बुरी आदतें छूट जाएं और वह अच्छा हो जाए। 1997 में सच्चे पातशाह जी लॉस एंजलस पधारे और वे अनन्त कृपा कर सन्त प्रीतम सिंह जी के घर पर आए। उन्होंने सन्त प्रीतम सिंह जी के घर में पदार्पण किया। प्रार्थना की। सच्चे पातशाह जी ने अरदास करवा दी। यह अरदास सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी के चरणों में की गई। सतगुरु महाराज की कृपा बरसने लगी। प्रभु के घर में देर है अंधेर नहीं। जब वे कृपा करने लगते हैं तो कोई देर नहीं होती। 5-6 महीने में उनका बेटा अच्छा हो गया। उसने सभी व्यसन, शराब, मांस पूरी तरह से त्याग दिये। सतगुरु ने अपनी अपार कृपा से शुद्ध, बुद्ध निरजंन कर दिया। खरा सोना बन गया उसका जीवन। सब खोट जाते रहे। उनके पुत्र का विवाह भी हो चुका था। तथा बच्चा होने वाला था। उन्हें स्वप्न में सतगुरु महाराज ने दर्शन दिये। उस रात 15-16 साल का एक लड़का सतगुरु महाराज के साथ बैठा हुआ था। सन्त जी को यह एक प्रकार से दृष्टान्त हुआ था कि उनके बेटे के घर में पुत्र जन्म होने वाला है। सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी ने अपनी माया से बालक भी साथ ही दिखा दिया था। सतगुरु महाराज का दृष्टान्त सार्थक था। पुत्र हुआ था। सात महीने के बाद सतगुरु महाराज ने उसको भजन भी दे दिया

था। अब वह बालक 16-17 महीने का है। तथा सन्त भक्ति में लीन रहने लगा है। वह सतगुरु महाराज की फोटो के सामने खड़ा होकर अरदास भी करता है। यह सब सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की कृपा है। उसको नाम चेतन हरनाम सिंह दिया गया है।

सन्त जी एक नर्सिंग होम चलाते हैं, जिसमें दिमागी बीमारियों के रोगी रहते हैं। अब सतगुरु महाराज की कृपा से सन्त जी के 5-6 नर्सिंग होम हैं। तथा बड़े सन्तोषजनक ढंग से जीवन बीत रहा है। उनकी महिमा का गुणगान करते हैं। उनकी ही कृपा से उनका सब परिवार चल पल रहा है। सन्त जी ने कहा धन्य सतगुरु जगजीत सिंह, धन्य सतगुरु जगजीत सिंह।

ना विद्या न बाहुबल
नहीं गठे में दाम
सतगुरु तेसे दीन की
पत राखे श्री राम।।

सन्त गुरमीत सिंह सुपुत्र सन्त सूबा सिंह
(लॉस एंजलस)

सन्त गुरमीत सिंह का परिवार शुरू से ही नामधारी मर्यादाओं के अनुरूप चल रहा है। सन्त जी वर्ष 1982 में अमेरिका आ गए। यहां आने के उपरान्त उन्होंने अपने केश भी कटवा दिये थे और नामधारी मर्यादाओं से दूर हो गए थे।

सच्चे पातशाह जी की कृपा से उनकी मुलाकात सन्त गुरदेव सिंह जी से जो कि लॉस एंजलस नामधारी दरबार के अध्यक्ष हैं से हो गई, और फिर धीरे-धीरे सन्त गुरदेव सिंह जी के सम्पर्क और मार्गदर्शन से सन्त गुरमीत सिंह वापिस नामधारी विश्वासों में आ गए और मर्यादाओं का पालन करने लगे। सन्त जी कहते भी हैं कि वह सन्त गुरदेव सिंह के बहुत बड़े आभारी हैं। जिनके मार्गदर्शन के कारण ही वह सही रास्ते पर आ पाए हैं। अब सन्त गुरमीत सिंह जी ने केश और दाढ़ी भी बढ़ा ली है। और इनका समस्त परिवार नामधारी मर्यादा में रहकर भजन बन्दगी करता है।

वर्ष 1979 में सन्त जी का आनन्द कारज श्री भैणी साहब में ही हुआ था। अब सन्त जी के दो बेटे और दो बेटियां हैं।

साखी

लगभग चार महीने पहले की बात है एक दिन सुबह साढ़े तीन या चार बजे होंगे उनकी नींद खुल गई। और वह बिस्तर से उठकर घर के बाहर आ गए। बाहर आकर क्या देखते हैं कि एक श्वेत वस्त्रधारी नामधारी शरीर ठीक सामने से होकर पीछे की ओर मुड़ गया। उन्होंने सोचा कि यह नामधारी सज्जन दुकान से कुछ खरीदना चाहता है। क्योंकि पीछे की ओर दुकान है। सन्त जी ने उस सज्जन का पीछा किया तो वह एकदम दूर कोने में खड़ा नजर आया। सन्त जी ने सोचा कि शायद इनका बेटा ही स्टोर देखने गया है। सन्त जी वापिस अपने कमरे में आ गए। और आकर वह अपने बेटे के कमरे में गए तो देखा कि उनका बेटा तो वहां गहरी नींद में सो रहा है। सन्त जी वापिस नीचे अपने कमरे में आ गए। कुछ समय के पश्चात् इन्होंने खिड़की से देखा कि वही नामधारी शरीर पिछली गली से जा रहा है। अब उनसे रहा नहीं गया और यह सोचने लगे कि आखिर यह पहेली क्या है। यह नामधारी शरीर मेरे आस पास ही घूम फिर रहा है। यह सोचकर सन्त जी कमरे से निकल कर उस नामधारी शरीर के पीछे-पीछे चल

पड़े। फिर उसके बाद उसके दर्शन नहीं हुए। सन्त जी के एक बड़े भाई कश्मीर सिंह भी अमरीका में ही रह रहे हैं। सन्त जी ने अपने बेटे की सगाई भी नामधारी परिवार में ही की है।

सच्चे पातशाह हम पर निरंतर कल्याण कर रहे हैं और दिन रात अपनी माया के द्वारा इनकी खबरगीरी करते रहते हैं ताकि इन्हें और इनके परिवार को किसी प्रकार का कष्ट न हो और वह समस्त परिवार के लोग सुख पूर्वक रहते रहें।

जय सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज!

सरदार मनमोहन सिंह सुपुत्र मास्टर निहाल सिंह
मास्टर निहाल सिंह जी की जीवनकथा

सरदार मनमोहन सिंह जी का कहना है कि शुरू से ही उनके परिवार पर नामधारी सतगुरुओं की अपार कृपा रही है। उनके पिता मास्टर निहाल सिंह जी उनके जन्म के पहले से ही नामधारी विश्वासों में सजे हुए थे। इनके ननिहाल के परिवार पर भी सतगुरु जी की अपार अनुकम्पा रही है। इसी कारण उनके पिता जी जो एक महान सन्त थे, का विवाह एक नामधारी परिवार में हुआ था। इनके नाना जी भी नामधारी विश्वासों में सने हुए थे। परन्तु जिस महिला से इनका विवाह हुआ वह नामधारी परिवार से नही थी। इनके नानाजी भारत से डाक्टरी चिकित्सा की पढ़ाई पास करके विलायत गए और वहां से डाक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त करके भारत लौटे। उस समय ऐसी सुविधा केवल अंग्रेजों को ही मिली हुई थी। इनकी नियुक्ति स्वास्थ्य अधिकारी के पद पर मिन्टगुमरी में हुई थी जो अब पाकिस्तान का एक नगर है। यह घटना शायद 1925 के आस-पास की रही होगी। उस समय यह अनिवार्य नहीं था कि नामधारी लड़के या लड़की का विवाह केवल नामधारी परिवार में ही हो। खुले सिखों के परिवार में भी शादी विवाह हो जाया करते थे। इनकी नानी खुले सिख परिवार से ही थीं। वह 10 गुरुओं की अरदास करती थीं। नाना जी नामधारी होने के कारण 12 गुरुओं की अरदास करते थे। इनके नाना के घर पहले पहल एक कन्या ने जन्म लिया था। और तीसरी बार भी कन्या ही पैदा हुई थी। परन्तु पुत्र की प्राप्ति न हुई। उन दिनों नाना जी बैंकाक (थाईलैंड) में रहते थे। इनकी नानी इनके नाना जी को लेकर एक नामधारी सन्त के डेरे पर गई। और अर्ज की कि आप कृपा करें कि अगली बार बेटा उत्पन्न हो। सन्त जी ने वचन किया कि मैं आपको नामधारी बनने के लिए नहीं कहता। परन्तु आप को 12 गुरुओं की अरदास करनी चाहिए। आगे सन्त जी ने कहा कि आपने तो दो नावों में पांव रखा हुआ है। आपका पति 12 गुरुओं की अरदास करता है और आप 10 गुरुओं की। सन्त जी ने इनकी नानी से पूछा, ''बीबी तू दस तूं की चाहनीएं। अर्थात बीबी तुम बताओ कि तुम क्या चाहती हो। तू पुत्र चाहती है या... सन्त जी ने अपनी बात बढ़ाते हुए कहा कि आपका पति 10 गुरुओं तक पहुंचता हुआ 12 गुरुओं तक पहुंचता है फिर आप दोनों में विवाद किस बात पर है? आप दोनों 10 गुरुओं को मानते हो अन्तर केवल इतना है कि आपका पति 10 गुरुओं तक पहुंचता हुआ 12 गुरुओं तक

पहुंचता है। जहां कि उसका पति तो फायदे वाली जगह पर है क्योंकि वह 12 गुरुओं को मानता है। तुम घाटे वाली जगह पर हो क्योंकि तुम दसवें गुरु पर ही रुक जाती हो। यदि तुम्हें पुत्र चाहिए तो 12 गुरुओं की अरदास करो। एक तो तेरा पति इससे प्रसन्न हो जाएगा दूसरे सतगुरु श्री रामसिंह जी कृपा करेंगे। इनकी नानी ने पुत्र प्राप्ति की चाह में मन बना लिया कि आज से वह 12 गुरुओं की अरदास किया करेंगी। आगे सतगुरु जी कृपा करें। सन्त जी ने आदेश दिया कि दोनों पति पत्नी सुबह अमृत समय गुरद्वारे की सेवा किया करो। और 12 गुरुओं की रोजाना अरदास किया करो। उन पर सतगुरु सच्चे पातशाह श्री रामसिंह जी की अवश्य कृपा होगी। इस प्रकार दोनों पति-पत्नी ने सन्त जी के आदेश का पालन करते हुए गुरुद्वारे की सेवा शुरू की और 12 गुरुओं की अरदास करने लगे।

समय बीतता गया। इनकी नानी जी ने गर्भ धारण किया। और ठीक समय पर इनके घर पहले पुत्र (इनके मामा जी) का जन्म हुआ। सन्त जी उन दिनों बैंकाक से कहीं दूर थे। उन्हें सन्देश भेजा गया कि सरदार प्रताप सिंह के घर पुत्र जन्म हुआ है। सन्त जी सन्देश पाकर परम प्रसन्न हुए। और अपने रागी जत्थे के साथ भजनवाणी करते हुए उनको दर्शन दिए। और बधाई देते हुए कहा कि आपने पुत्र की प्राप्ति सेवा से की है। इसलिए में आपके बेटे का नाम सेवासिंह रखता हूं। इस प्रकार इनके मामाजी का नाम सेवासिंह रखा गया। इससे इनके पूरे परिवार को असीम प्रसन्नता प्राप्त हुई।

जब पहला विश्व युद्ध हुआ तो उस समय काम धन्धे बिलकुल ठप्प पड़े हुए थे। 90 प्रतिशत दुकानदार तथा व्यापारियों ने अपने आपको दीवालिया घोषित कर दिया था। तथा बाजार का पैसा देने से इन्कार कर दिया था। परन्तु इन के नाना जी ने वायदा किया कि भले इन्हें घर के जेवर ही क्यों न बेचने पड़े परंतु वह बाजार का एक-एक पैसा चुकता करेंगे। तथा किसी भी सूरत में वह दीवालिया नहीं कहलाएंगे। इस प्रकार उन्होंने इनकी नानी जी के न चाहते हुए भी उनका सारा जेवर बेचकर अपना कर्ज़ चुकाया। इसके सदमे में नानी काफी बीमार पड़ गईं। इनके नाना जी अपनी पत्नी को लेकर इलाज के लिए भारत आए। भारत पहुंचते ही इनकी नानी स्वस्थ हो जातीं और जब फिर बैंकाक जातीं तो फिर बीमार पड़ जातीं। इनके नाना जी को सलाह दी गई कि या तो बैंकाक में रहकर पैसा कमा लो या फिर अपनी पत्नी का इलाज करवा कर इन्हें बचा लो। इनके नाना जी मान गए। वह भारत आ गए और अपनी पत्नी का इलाज करवाया। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गईं।

इनकी बेटियां भी जवान हो गई थीं। इन्हें इनके विवाह की चिन्ता सताने लगी। खुले नौजवान सिख पढ़े-लिखे भी थे और अच्छी खासी नौकरियां भी थीं। पर इनके नाना जी तो एक नामधारी युवक को खोज रहे थे। जो कि पढ़ा-लिखा तो हो चाहे वह अधिक न भी कमाता हो तथा बड़ा धनी भी न हो। इनके पास खुले सिखों के कई रिश्ते आए। जो उस समय में 300/- रुपए प्रतिमास वेतन ले रहे थे। जबकि उस जमाने में 25/- 30/- रुपए आम तनख्वाह होती थी। सरदार प्रताप सिंह जी को सलाह दी गई कि यदि उन्होंने नामधारी लड़का ही ढूँढना है, तो इसके लिए उन्हें खुद मेहनत करनी पड़ेगी। इनके नाना जी नामधारी युवक की तलाश में घूमते-घूमते रावलपिंडी पहुंचे। वहाँ एक निहाल सिंह नाम के युवक स्कूल में पढ़ाते थे। इस नामधारी युवक को मिलने इनके नाना जी स्कूल में पहुंचे। वहां पहुंचकर उस युवक के बारे में पूछताछ की कि उस युवक को वेतन कितना मिलता है। मास्टर निहाल सिंह जी ने बताया कि उनको 25/- रुपए प्रतिमास वेतन मिलता है, नाना जी ने फिर पूछा कि आज तक उसने कितने पैसे जमा कर लिए हैं? इस पर उस युवक ने कहा कि इस वेतन का अधिकतर भाग तो वह अपने घर भेज देता है। परन्तु फिर भी आज तक उसने कोई 100/- (सौ रुपए) जमा कर रखे हैं। नाना जी ने कहा कि वह अपनी पास बुक दिखाए। मास्टर जी ने अपनी पास बुक उनके सामने रख दी। जिसमें 100/- रुपए की रकम दर्शाई गई थी। इनके नाना जी ने 300/- प्रतिमाह वेतन पाने वाले खुले सिख का रिश्ता छोड़ दिया तथा एक मामूली से स्कूल टीचर से अपनी लड़की का रिश्ता करना स्वीकार कर लिया जिसे केवल 25/- रुपए प्रतिमास वेतन मिलता था। तथा जिसकी जमा पूंजी केवल 100/- रुपए थी। नाना जी को अपने नामधारी पर इतना पक्का विश्वास था। इस प्रकार सरदार मनमोहन सिंह जी की माता का रिश्ता मास्टर निहाल सिंह जी से हो गया। इनकी माता श्रीमती जगजीत कौर का देहान्त वर्ष 1995 में हुआ। इनके पिता मास्टर निहाल सिंह जी इस संसार से वर्ष 2001 में स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर गए।

शादी के पश्चात् मास्टर निहाल सिंह जी का गुजारा रूखा-सूखा हो ही जाता था। पुत्र प्राप्ति के बाद भी वह सतगुरु प्रताप सिंह जी के चरणों से जुड़े रहे। जब भी साल में स्कूलों में 2 महीनों की छुट्टियां होती तो मास्टर जी अपने परिवार के साथ श्री भैणी साहब चले जाया करते तथा सेवा किया करते।

साखी

एक समय की बात है जब सरदार मनमोहन सिंह जी बहुत छोटे थे। उस

समय श्री भैणी साहब में कुछ ट्रक आए हुए थे। जो सेवा के लिए जाने वाले थे। इस छोटे से बच्चे मनमोहन सिंह ने अपने माता-पिता से जिद की कि वह भी इन ट्रकों में सेवा के लिए जाएगा। माता-पिता बड़े प्यार से उसे समझाने लगे पर वह बालक न माना। उसी समय वहां सतगुरु प्रताप सिंह जी ने दर्शन दिए उन्होंने बालक के माता-पिता से बच्चे के रोने का कारण पूछा। बच्चे के माता-पिता ने बताया कि यह बालक ट्रक में बैठने की जिद कर रहा है। इस पर कृपा निधान दयालु, कृपालु, भक्त वत्स्ल, सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी ने वचन किया, ''काका तूं ट्रक ते क्यों जाएंगा। तूं ते कारां ते चढ़ेया करेंगा।'' अर्थात् बेटा तू ट्रक में क्यों बैठेगा, तू तो कारों में बैठा करेगा। सतगुरु जी के वचन सुनकर उस 25/- रुपए मासिक वेतन पाने वाले अध्यापक ने कहा कि देखो मेरे सतगुरु सच्चे पातशाह ने मेरे बेटे के लिए पहले से ही कारों का बन्दोबस्त कर दिया है। और सतगुरु जी की कृपा से आज उनका परिवार वहां समृद्ध परिवार है। तथा लाखों करोड़ों के बंगलों में रहता है। करोड़ों रुपयों का ये कारोबार करते हैं। नई से नई कारें महंगी से महंगी कारें इनके घरों के बाहर खड़ी रहती हैं। मनमोहन सिंह के पिता का अपने बच्चों को कहना था कि सतगुरु महाराज ने कृपा तो कब से कर दी थी। उन्हें यह ज्ञान था कि परिवार में समृद्धि एवम् सौरभ अवश्य आएगा। हर बालक के पास कारें होंगी। मनमोहन सिंह जी के दो भाई और दो बहिनें हैं। टैंट बनाने के इनके दो कारखाने हैं।

दूसरी साखी

सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की भी मनमोहन सिंह जी के परिवार पर अपार कृपा बनी हुई है। उनके पिताजी मास्टर निहाल सिंह जी जब सेवा निवृत्त हुए तो उनकी नौकरी बढ़ा दी गई अर्थात् सेवा वृद्धि कर दी गई। हालांकि वह नामधारी स्कूल में ही पढ़ाते थे। जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त था तथा सरकार से आर्थिक सहायता पाता था। स्कूल प्रशासन के पास कोई नया अध्यापक नहीं था। इसलिए दो वर्षों तक निहाल सिंह जी मुख्याध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। और इनकी सेवा वृद्धि होती रही। पर तीसरे वर्ष शिक्षा निदेशक अड़ गया कि उन्हें अब नया मुख्याध्यापक लाना पड़ेगा। मनमोहन सिंह जी ने सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के चरणों में जाकर अर्ज की कि अब उनके पिता मास्टर निहाल सिंह जी को खुशी-खुशी छुट्टी दे दें ताकि वह अपने पुत्रों के कारोबार में उनकी सहायता कर सकें। इस पर सच्चे पातशाह जी ने वचन किया कि मास्टर निहाल सिंह जी पन्थ के लिए ही हैं तथा वह उन्हीं के साथ रहेंगे।

इसलिए उन्हें छुट्टी नहीं मिल सकती। सच्चे पातशाह ने स्कूल में जाकर घोषणा कर दी। कि दूसरे मुख्याध्यापक आज से स्कूल के मुख्याध्यापक होंगे। तथा मास्टर निहाल सिंह जी स्कूल के प्रबंधक होंगे जिसमें कि आयु की कोई सीमा नहीं थी। यह स्कूल श्री जीवन नगर में स्थित है। इस प्रकार वर्ष 1970 में सेवा निवृत्त होने के बाद वह 1980 तक स्कूल के प्रबंधक रहे। कुछ समय बाद जब दिल्ली में होला मोहल्ला हुआ तो सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने मास्टर निहाल सिंह जी को बहुत सम्मान दिया। तथा पञ्चरत्न की उपाधि से सुसज्जित किया और घोषणा की कि अब वह उन्हें मुक्त करते हैं जिससे कि वह अपने बच्चों के साथ समय बिता सकें। मास्टर जी ने 'सतयुग' नाम के नामधारी समाचार पत्र की भी बहुत वर्षों तक सेवा की। आज भी इनका नाम सम्पादक के रूप में लिया जाता है। इनके लेख आदि निरंतर सतयुग में छपते रहे। कुछ समय के पश्चात् श्री सतगुरु महाराज जी ने श्री भैणी साहब में 8-10 कुटिया बनवाईं जिसमें वृद्ध नामधारी सन्तों के रहने की व्यवस्था की गई। मास्टर निहाल सिंह जी को भी आदेश हुआ कि वह भी अब श्री भैणी साहब सतगुरु महाराज के पास ही रहें। वहां रहते हुए कभी-कभी वह छुट्टी लेकर अपने बेटों के पास भी चले जाया करते। पर अधिकतर समय वह श्री भैणी साहब में ही बिताते। उनका मन दिल्ली में अपने बच्चों के पास भी नहीं लगता था। वह एक सप्ताह भैणी साहब वापिस आने की तैयारी में लग जाते। वह बच्चों को कोई न कोई बहाना सुनाकर हफ्ता दस दिन के भीतर ही श्री भैणी साहब को प्रस्थान कर जाते। श्री भैणी साहब में वह बहुत खुशी महसूस करते। यहां वह भजन वाणी तथा लिखने पढ़ने में समय बिताते रहते।

31 जनवरी, 2001 को सरदार मनमोहन सिंह जी, इनके भाई, इनका बेटा कार लेकर श्री भैणी साहब सतगुरु श्री जगजीत सिंह के दर्शन करने तथा वापसी पर अपने पिता मास्टर निहाल सिंह जी को घर लाने के लिए चल पड़े। रात सबने श्री भैणी साहब में ही बिताई। गुरमाता ने इनका रहने का सुन्दर प्रबंध कर दिया। ये सभी अपने पिता निहाल सिंह जी से मिले। मास्टर निहाल सिंह जी ने अपने बच्चों से कहा कि अब रात बहुत हो गई है। सभी लोग आराम करें। सुबह सतगुरु जी के दर्शन करके ही जाएंगे।

दूसरे दिन सुबह 8 बजे पिता मास्टर निहाल सिंह जी ने बच्चों की कार में बैठकर सबको श्री भैणी साहब के पवित्र स्थानों के दर्शन कराए। 2 घंटे इन पवित्र स्थानों के दर्शन कराकर मास्टर निहाल सिंह जी अपने बच्चों तथा समधि को लेकर सच्चे पातशाह के दर्शन करने चले गए। उन दिनों सच्चे पातशाह

श्री जगजीत सिंह जी महाराज पुराने वृद्ध सन्तों से सतगुरु श्री रामसिंह जी की कथाएं सुना करते थे। अधिकतर पंडित गोपालसिंह जी ही कथा किया करते थे। उस दिन किसी कारणवश सतगुरु जी ने मास्टर निहाल सिंह जी को आदेश दिया कि आज आप कथा सुनाएंगे। बड़े हाल में 15-20 व्यक्ति बैठे थे। सूचना मिली कि बाकी के लोग बाहर चले जाए। क्योंकि सच्चे पातशाह जी कुछ लोगों के साथ बैठकर ही कथा सुनने वाले थे। सच्चे पातशाह जी ने अपने सामने एक तख्त बिछवाया। उस पर मास्टर निहाल सिंह जी को बैठकर कथा सुनाने के लिए कहा गया। मास्टर जी ने एक साखी सुनाई। उसके बाद दूसरी साखी सुनाई। फिर तीसरी साखी सुनाई। सच्चे पातशाह जी आदेश करते गए तथा मास्टर जी सुनाते गए। मास्टर जी थक भी गए थे तो उन्होंने पण्डित गोपाल सिंह जी से कहा कि यह समय आपका है इसलिए आप ही साखियाँ सुनाएं। पंडित गोपाल सिंह जी ने वचन किया कि आज का समय आपके नाम है इसलिए साखियाँ आप ही सुनाएंगे। सच्चे पातशाह मास्टर जी की साखियाँ सुनकर बड़ा आनन्द ले रहे थे। साखियाँ समाप्त होने के पश्चात् मास्टर निहाल सिंह जी ने हाथ जोड़कर सच्चे पातशाह जी को अर्ज़ कि ताकि बच्चों के साथ घर जा सकूं। ये लोग मुझे साथ ले जाने के लिए आए हुए हैं। सच्चे पातशाह जी ने हाथ का इशारा ऊपर की ओर करते हुए कहा, ''त्वानूं हुण छुट्टियां ही छुट्टियां ने। तुसी हुण अपने घर जाओ। अर्थात् आप की अब छुट्टियां ही छुट्टियां हैं। आप अपने घर जाइए। भोजन का समय हो रहा था। मास्टर जी ने बच्चों से कहा कि चलो जहां जहां सच्चे पातशाह जी का लंगर होता है वहीं बैठकर प्रसाद पाएं। सब लोग नीचे पंगत में बैठ गए। सेवादारनी माता ने वहां दर्शन दिए। और वचन किया कि अभी ताज़ा प्रसाद बन कर तैयार हो जाएगा तथा मास्टर जी के लिए ताजा खिचड़ी बन जाएगी जो कि वह रोज खाते थे। सेवादारनी माता ने ताजा खिचड़ी बनाकर मास्टर जी के सामने परोस दी। मास्टर जी ने चम्मच से खिचड़ी ली और कबीरदास का दोहा गाया। ''कबीर खूब खाना खिचड़ी अमृत लौन।'' यह पढ़ने के बाद खिचड़ी वाला चम्मच मुहं में डाला। मास्टर जी ने दूसरा चम्मच मुंह में डालने से पहले ही चम्मच थाली में रख दिया। शायद विद्याता का यही आदेश था। उनकी आत्मा उनका शरीर छोड़ गई। देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि मास्टर जी समाधि में लीन हो गए हों। जब चम्मच के थाली में गिरने की आवाज हुई तो मनमोहन सिंह के भाई ने अपने पिताजी की ओर देखा कि उन्होंने आंखें बंद की हुई हैं। उन्होंने अपने पिताजी की पीठ थपथपाई परन्तु आत्मा तो पंक्षी की भांति उड़ चुकी थी। उसी समय एक चारपाई मंगवाई गई और मास्टर जी को उस पर लिटा दिया गया।

उसी समय गुरुमाता भी आ गईं और मास्टर जी को देखकर वचन किया कि इनके ऊपर चद्दर डाल दो। उस समय बाहर से एक डाक्टर भी सच्चे पातशाह के दर्शन करने वहां आए हुए थे। उन्होंने जल्दी से आकर मास्टर जी की जांच की और मृत घोषित कर दिया। इस प्रकार मास्टर निहाल सिंह जी ने अपनी जीवन लीला श्री भैणी साहब की पवित्र धरती पर आकर और सच्चे पातशाह जी के दर्शन करके समाप्त की।

विश्वास किया जाता है कि सच्चे पातशाह ने जो स्वयं भगवान नारायण का अवतार हैं अकाल पुरुष हैं मास्टर निहालसिंह जी को अपना केवल्य काय दिया ही होगा

धन्य है सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी।

सन्त गुरु बख्श सिंह गांव एलनाबाद

सतगुरु हरिसिंह जी के समय से ही सन्त गुरबख्श सिंह के दादा सन्त मन्नासिंह जी नामधारी सज गए थे। अब उनका सारा परिवार सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के चरणों से जुड़ा हुआ है।

पहली साखी

वर्ष 1996 की बात है एक बार सन्त गुरबख्श सिंह जी राजस्थान में बागड़ियों के गांव आनन्द गये। वहां अपना थ्रेशर ठीक करवाना था। वहां पहुंचने के बाद सन्त जी का मन उदास हो गया। वह सोचने लगे कि 200 किलोमीटर चलकर अकेला इस जंगल में क्यों आ गया। सन्त जी अपने को अकेला तथा असहाय समझने लगे थे। सन्त उदास मन से बैठे थे कि अचानक देखते हैं कि अंधेरी रात में सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी का चमकता हुआ चित्र इनके सामने प्रकट हो गया। उनकी आत्मा जागृत हो गई। कि सतगुरु इस संकट की घड़ी में भी उनके साथ हैं। उनके मन की उदासी दूर हो गई। वह प्रसन्नचित हो गए। दूसरे दिन सन्त जी ने अपने थ्रैशर की मरम्मत करवाई तथा प्रसन्न मन लेकर एलनाबाद के लिए रवाना हो गए। इस प्रकार सतगुरु महाराज अपने भक्तों को कभी अकेला तथा असहाय नहीं छोड़ते न ही उन्हें असहाय तथा अकेला महसूस होने देते हैं। ऐसी है सतगुरु महाराज की भक्त वत्सलता।

दूसरी साखी (यह बात 1996 के बाद 97 की है)

यह घटना 9 अगस्त 1997 को घटी। सन्त गुरबख्श सिंह अपनी गाड़ी में सिरसा से सामान लेकर एलनाबाद पहुंचे थे। वह अपनी गाड़ी को दुकान के भीतर ले जाने लगे जिससे गाड़ी का सामान ठीक से भीतर उतारा जा सके। जब सन्त जी गाड़ी का डाला खोलने लगे तो अचानक प्रैशर का रोलर जिसका वजन लगभग 12 किलोग्राम का था, लुढ़ककर नीचे उनके पैर पर गिर गया। सन्त जी पीड़ा से कराह उठे उनके पैर पर सूजन आ गई। दुकान के भीतर ही उनका घर भी था। बड़ी मुश्किल से सन्त जी सीढ़ियां चढ़कर मकान की पहली मंजिल पर अपने कमरे में पहुंचे। पैर पर सिकाई की गई। फिर भोजन खाकर वह बिस्तर पर सो गए। सुबह 5 बजे वह उठे तो स्नान के बाद दूसरा पैर न उठ पाया। इसमें पीड़ा हो रही थी। इनके मन में विचार आया कि यदि इसी प्रकार पीड़ा रही तो

सतगुरु महाराज का नाम स्मरण कैसे हो पाएगा। सन्त जी मन में ऐसा विचार कर ही रहे थे कि अचानक देखते क्या हैं कि सच्चे पातशाह प्रकट हुए और सन्त जी का दाहिना कंधा पकड़कर सहारा दिया। सतगुरु महाराज के हाथ का स्पर्श होते ही सन्त जी के पैर की आधी तकलीफ कम हो गई और वह नाम स्मरण में लग गए। कुछ दिनों बाद सन्त जी का पैर बिना इलाज के ठीक हो गया यह सब सतगुरु जी की कृपा दृष्टि का ही चमत्कार था। जब यह घटना हुई तब सतगुरु इंगलैंड के दौरे पर थे।

बीबी सच्चो

बीबी सच्चो श्री गंगा नगर राजस्थान की रहने वाली है। बीबी सच्चो तो नाम धारी परिवार से आई हैं परंतु इनके पति असीम कुमार जी खुले हिन्दू परिवार से हैं। उनकी शादी 20 वर्ष पूर्व हुई भी। यह सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह है जी के प्रति पूर्ण आस्था रखते हुए पूरे नित्यनियम पूजा-पाठ, वंदना अर्चना में बड़ा समय लगाती थीं। तथा पूर्ण मर्यादित जीवन व्यतीत करती थीं। ये चीजें उनके सुसराल वालों को अच्छी न लगीं। इनके कारण इनको बड़ा परेशान किया जाने लगा। इनके पति भी घरवालों के साथ मिलकर इनको बहुत दुखी करने लगे। हालांकि इनके दो बेटियां तथा एक बेटा भी हो चुके थे। पर इन पर वे लोग निरंतर अत्याचार करते रहे। उन्होंने सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी को अरदास की कि हे सच्च पातशाह मेरी रक्षा करो। मेरी रक्षा करो। सतगुरु महाराज ने रक्षा तो करनी ही थी। पर अपना कौतुक भी दिखाना था।

साखी

बीबी सच्चो सतगुरु से अरदास करती थी कि चाहे मेरे सुसराल वाले मेरे साथ नहीं हैं। परंतु मेरा पति मेरे साथ हो जाए। सच्चे पातशाह ने अपना कौतुक दिखा दिया। एक दिन सच्चो का पति असीम कुमार सुबह सो कर उठा तो उसे बिलकुल अंधेरा नजर आया आंखों की रोशनी जा चुकी थी। दोनों आंखों में काला मोतिया ऐसा आया कि आंखे एक दम पत्थर सी हो गईं। अब वह असीम कुमार चिल्लाने लगा कि मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा। बीबी बहुत परेशान हो गई। कि इन्हें क्या हो गया है? अचानक यह क्या हो गया है। और गरीबी इतनी थी कि किसी डॉक्टर को दिखाने या उसे बुलाने की हिम्मत तक नहीं होती थी। क्योंकि खर्चा बहुत होता था। और अगर ऑप्रेशन की नौबत आएगी तो यह तो उन के लिए संभव ही नहीं होगा। बीबी सच्चो की अरदास सच्चे पातशाह के पास पहुंची। उन्होंने श्री गंगा नगर के सूबा को आदेश भेजा कि ये हिन्दू नाम धारी हैं। इन को 26 तारीख को श्री भैणी साहब भेजने का वह बन्दोबस्त करें। सच्चे पातशाह के आदेशानुसार भैणी साहब जाने का प्रबंध किया गया। बीबी सच्चो अपने पति को साथ लेकर श्री भैणी साहब सच्चे पातशाह के चरणों में पहुंच गई। नजर चले जाने के बाद इनके पति के मन में भी सतगुरु महराज के प्रति आस्था होने लगी तथा इनके मन में विचार आया कि यदि इनके

आंखों की ज्योति वापिस आ सकती है तो केवल सतगुरु महराज ही कृपा कर सकते हैं। दूसरी कोई सांसारिक शक्ति इनकी आंखों की रोशनी नहीं लौटा सकती। उन्होंने कहा कि जीप करकर हम लोग चलते हैं। उनके पास गाड़ी का किराया तक न था। इनकी एक पड़ोसन थी जिनकी मुनियारी की दुकान थी। उससे इन्होंने 700/-रुपए मांगे पर उस पड़ोसन ने इनको 700/- रुपए की बजाए 2000/-रुपए दे दिए। और कहा कि आप लोग जाओ और जीप करके सतगुरु जी के दर्शन करके आओ। यह परम कृपा स्वयं सतगुरु श्री जगजीत सिंह ही करते जा रहे थे। पहले ये अपने पड़ोसियों के साथ फाजिलका में आईं जहां सतगुरु जी पधारे हुए थे। और वहां इन्होंने लंगर की सेवा का जिम्मा ले लिया। वहीं पर सूबा जी को सच्चे पातशाह जी ने हुक्म दिया कि 26 तारीख को बीबी को लेकर भैणी साहब जी को पहुंचाना है। क्योंकि दया तो श्री भैणी साहब में ही होनी थी। सच्चे पातशाह ने सब को सन्त लक्खा सिंह जी कोठी पर बुला भेजा। बीबी सच्चो अपने पति को लेकर वहां गई। वहां पर भीड़ बहुत लगी हुई थी। परंतु सूबा जी सुबह होने से पहले ही उनको अंदर ले गए। क्योंकि इन्हें वापिस भी जाना था। सच्चे पातशाह जी ने पूछा—''बीबी केहड़े डॉक्टर नूं दिखाया है।'' इस पर बीबी सच्चो ने उत्तर दिया ''सच्चे पातशाह जी सडे कोल ते डॉक्टर नूं दिखान वास्ते पैसे ही नहीं थे।'' अर्थात् हमारे पास तो डॉक्टर को दिखाने के लिए पैसे ही नहीं थे। अब तक किसी भी डॉक्टर को नहीं दिखाया है। हुण कृपा तो आप जी ने ही करनी है। अब कृपा तो आप ने ही करनी है।'' सच्चे पातशाह ने वचन किया—''बीबी अगर इन्हां दी अक्खां दी जोत चली बी गई तो इन्हां नूं नवी जोत दे देयांगे। अर्थात् अगर इन की आंखों की रोशनी चली गई है तो हम नई रोशनी दे देंगे। तुम चिंता न करो किसी बात की। यह शब्द सतगुरु महराज के अपने मुख कमल से निकालने थे कि बीबी सच्चो को ज्ञान हो गया कि सतगुरु महराज श्री जगजीत सिंह जी की कृपा दृष्टि उन पर हो गई है।

अब उनके पति की आंखों की रोशनी अवश्य आएगी। डॉक्टर चाहे जो कुछ भी कहते रहें। इस प्रकार यह अपनी पड़ोसन से 2000/- रुपए लेकर श्री भैणी साहब पहुंची। सतगुरु भैणी साहब में सरोवर पर बैठे पाठ कर रहे थे। बीबी सच्चो ने अपने पति का हाथ पकड़ कर सच्चे पातशाह जी के चरणों तक पहुंचाया और माथा टेका। सतगुरु जी ने अपने सेवक रछपाल जी से कहा—''बीबी नूं पुच्छो कि एह क्या करन वास्ते आई है? अर्थात् बीबी से पूछो कि यहां क्या करने के लिए यहां आई है? उत्तर मिला कि पातशाह जी ने ही तो कृपा कर के उन्हें बुलाया है। क्योंकि उन के पति की आंखों की रोशनी चली गई है। और सच्चे-पातशाह

जी ने उन पर कृपा करने के लिए कहा था। सतगुरु जी ने वचन किया—"उन्हें यहां श्री भैणी साहब में ही कुछ दिन रहने दो।" उस दिन फिर बीबी सच्चो ने अर्ज किया कि सच्चे पातशाह अब आप का क्या आदेश है। उन्होंने कहा कि लुधियाणा में जो आंखों का अस्पताल है वहां पर इनकी आंखों की जांच कराओ। डॉक्टर को मेरा नाम लेकर बताना। लुधियाणा के आंखों के अस्पताल में डॉक्टर ने इनकी आंखों की जांच की। दवा भी डाली। और कहा कि वे 15 दिन बाद दिखाने के लिए आएं। इनकी आंखों में काला मोतिया आ गया है। इनकी आंखों का ऑप्रेशन किया जाएगा। इसमें 10,000/- रुपयों का खर्चा आएगा। उन्होंने कहा कि ठीक है। रात हो चली थी। इनके मन में आया कि घर में दो बच्चियां जवान हैं, मैं घर में चक्कर लगा आऊं और देख जाऊं। सतगुरु महराज के सेवादार ने बीबी सच्चो को 500/- रुपए दिए ताकि वह घर हो के आ सके। 15 दिन के बाद यह फिर श्री भैणी साहब आई। सच्चे पातशाह जी ने इनको 10,000/- रुपए दिए। जिससे यह अपने पति की आंखों का ऑप्रशेन कर सके। यह डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर इन के पति की आंखों में सुबह से शाम तक थोड़ी-थोड़ी देर के बाद दवा डालता रहा। फिर शाम को 7-30 पर उन्हें स्ट्रेचर पर डालकर ऑप्रेशन थिएटर की ओर ले गए जिस से इनकी आंखों का ऑप्रेशन किया जा सके। कुछ समय के बाद डॉक्टरों ने बीबी सच्चो को अंदर बुलाया और कहा कि इनके घरवाले कहां हैं? उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी मैं हूं। जो कुछ बात करनी है मुझे बताओ। डॉक्टर कहने लगे कि उनकी आंखों की ज्योति तो हमेशा के लिए जा चुकी है। मैं उनका ऑप्रेशन नहीं कर सकता। आप अपने ये 10,000/- रुपए वापिस ले जाओ। मुझे बहुत खेद है कि मैं यह ऑप्रेशन नहीं कर पाऊंगा। आपके पति की आंखें सदा के लिए चली गई हैं। अब आपके पति जीवन भर बिना आंखों ही दृष्टि के ही रहेंगे। बीबी कहने लगी-"आप घबराते क्यों हो मेरे सतगुरु महराज ने दया कर दी है। सब ठीक हो जाएगा। फिर वे लोग डॉक्टर की प्रतीक्षा करते रहे। डॉक्टर अपने कमरे से 2 घंटे तक बाहर ही न निकला। सतगुरु महराज ने बीबी के मन में प्रवेश करके वचन किया—"बीबी! तेरी तो श्रद्धा है सतगुरु जी पर डॉक्टर की तो श्रद्धा नहीं, है सतगुरु के प्रति। इस डॉक्टर ने तो घबरा ही जाना था। कुछ समय बाद संत दयालसिंह, जो श्री भैणी साहब का काम देखते थे, उन्होंने किसी नामधारी सिख को लुधियाणा फोन किया कि वह अस्पताल जाके बीबी सच्चो को अपने घर पर ले जाएं। ताकि वे बेचारे धक्के न खाते रहें। रात को फिर वह नामधारी सिख अस्पताल आया तथा बीबी को अपने घर पर ले गया। भोजन भी करवाया और रात को अपने घर पर ही ठहरया। सुबह

ये लुधियाणा से चलकर सीधे श्री भैणी साहब आए और सतगुरु महराज के चरणों में हाजिर हुए। माता जी ने कहा कि सच्चे पातशाह जी आप पर दया कर रहे हैं। सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप लोग कोई चिंता न करें। उसके बाद यह अपने पति का हाथ पकड़ कर पहले मेले में लाई। वहां सच्चे पातशाह जी के वचन किया—'' जा बीबी तैनूं खुशियां दितियां।'' अर्थात् बीबी! जाओ हमने तुझे प्रसन्ताएं प्रदान की। यह नाचने लगी कि अब सच्चे पातशाह जी की कृपा हो गई है। अब उनके पति की आंखों की ज्योति वापिस आ जाएगी। आंखों की रोशनी इनको मिल जाएगी। सच्चे पातशाह के मुख से खुशियां शब्द निकलते ही उनके पति की कुछ दृष्टि वापिस आ गई। वह लंगर की तरफ बिना हाथ थामे दौड़ पड़े। बीबी सच्चो घबरा गई कि कहीं यह किसी से टकरा न जाएं। क्योंकि जैसा वह समझती थीं कि इनको नजर नहीं आता था। जब यह वहां पहुंची तो उनके पति ने कहा कि अब उन्हें कुछ-कुछ दिखने लगा है। सच्चे पातशाह ने कृपा कर दी है। बीबी सच्चो का कहना है कि यह श्री भैणी साहब में तीन सप्ताह से आई हुई है और इससे तीन चार दिन पहले श्री गंगा नगर में इनके पति ने सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी के सपने में दर्शन किए। सच्चे पातशाह ने इन्हें आदेश सुनाया कि अस्पताल जाकर इलाज करा। उनको समझ में बात नहीं आई। और यह सो गए। फिर सच्चे पातशाह जी आए और उनकी जो दो कुर्सियां पड़ी हुई थी जिसमें नामधारी दसौधं लेने आते थे, बैठते थे। वहां सच्चे पातशाह जी बैठे हैं तथा कहते हैं कि मैं ने तेरे को आदेश किया था तू अपने बड़े अस्पातल में जा तथा अपनी आंखों का इजाल करवा। वे जो दवाई डालवाएंगे वह आंखों में डाल। तब श्री असीम कुमार ने अपनी पत्नी सच्चो को बताया कि इस प्रकार सच्चे पातशाह जी ने दर्शन दिए हैं। तथा ऐसा आदेश दिया है। तो बीबी सच्चो ने उन्हें अपने देवर के साथ अस्पताल भेजा। जब ये अस्पताल गए तो डॉक्टर ने दोनों आंखों में उनके दवाई की एक-एक बूंदे डाली। दवाई आंखों में जाने की देर थी कि उनको सारे रोगी जो वहां बैठै थे दिखने लगे। सब कुछ इन को साफ-साफ दिखाई देने लगा। सारी दुनियां रंग-बिरंगी नजर आने लगी। ये अस्पताल में खुशी से नाचने लगे कि सच्चे पातशाह जी ने इन पर कृपा कर दी है। सच्चे पातशाह ने आंखें मेरी ठीक कर दीं। नई ज्योति दे दी तथा आंखों की नई ज्योति लौट आई। सतगुरु महराज ने मेरी दृष्टि वापिस दे दी। वहां से वह अपने भाईयों की दुकान पर भी गए। घूमते-फिरते रहे। भाईयों ने इन्हें पूछा कि वह अकेले कैसे पहुंच पाए तो यह बोले कि मेरा काला मोतिया मुझे छोड़ गया है और मैं बिलकुल ठीक हूं । और इस प्रकार सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी

ने इनपर अपार कृपा कर के इनको अपने चरणों में लगा लिया है। और इस प्रकार कौतुक दिखाकर इनकी आंखों की ज्योति चली जाने के बाद फिर इन्हें वापिस दिला दी है। और नई आंखें दिला दी। अब यह सच्चे—पातशाह के प्रतिदिन दर्शन करते हैं, और अब वह पूरी तरह से बदल चुके हैं। इनकी पत्नी बीबी सच्चो का कहना है मुझे पूरी आशा है कि अब ये लोग मुझे सताएंगे नहीं। क्योंकि अब इन्हें पता चल गया है कि सतगुरु जी अगर कृपा कर सकते हैं तो दडिंत भी कर सकते हैं। इसलिए प्रत्येक प्रार्थी को सतगुरु महाराज के चरणों में शरण लेनी चाहिए। वह ही अशरण-शरण हैं। वह ही सतगुरु हैं। अनाथों के नाथ हैं। निष्प्राणों के प्राण है। निराशय के आश्रय हैं। निराधार का आधार है। तथा निराश जन की आशा हैं।

सतगुरु जी को जो भजे बने सुखों की खान।
सतगुरु सब सर्वस्व हैं। वही जीव-मन प्राण॥
जय श्री सतगुरु महाराज जगजीत सिंह जी।

सरदार कुलबीर सिंह भाटिया सुपुत्र सरदार त्रिलोक सिंह भाटिया सागर (मध्य प्रदेश) वाले द्वारा ये साखियां अस्सू के मेले में सुनाई गई

वर्ष 2001

सरदार कुलवीर सिंह पहले खुले सिख थे। इन्हें सन्त मेलासिंह (एम.ई.एस. ठेकेदार) ने सिपाही का काम सौंपा। यह सन्त जी को यदा कदा मिलते रहे और वह इनको सच्चे पातशाह की साखियां सुनाते रहे। कुलवीर सिंह जी के मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि क्यों न सतगुरु महाराज के दर्शन किए जाएं। 1970 में सन्त निर्मल सिंह जी से उन्होंने भजन लिया। उसके बाद अनेक बार सन्त जी ने सतगुरु जी महाराज के दर्शन किए। इनके परिवार के सभी सदस्य 6 भाई और 3 बहिनें नामधारी विश्वासों का पालन करते थे।

साखी

वर्ष 1971 में यह एक अद्‌भुत घटना घटी थी। ये दोनों भाई ट्रक लेकर जा रहे थे कि अचानक हार्न देने पर सामने जाती हुई बैलगाड़ी के बैल विदक गए। और एक बूढ़ी औरत जो कानों से बहरी थी बैलों के विदक जाने से घबरा गई और इस प्रकार वह इनके ट्रक के सामने आ गई। ब्रेक लगाने के बावजूद ट्रक का अगला पहिया बूढ़ी औरत के ऊपर आकर टिक गया। उस बूढ़ी औरत के मुंह से खून बहने लगा। तथा वह बेहोश हो गई। ऐसा प्रतीत होता था उस बूढ़ी महिला ने प्राण त्याग दिए हों। सरदार जी ने सतगुरु रामसिंह के चरणों में अरदास की कि प्रभु आप कृपा करें। ऐसा प्रतीत हुआ कि सतगुरु महाराज ने इनकी अरदास कबूल कर ली हो। उस बैलगाड़ी पर कुछ घास पड़ी हुई थी। उन्होंने उसी घास पर इस बूढ़ी महिला को लिटा दिया। और इनका छोटा भाई इसी बैलगाड़ी पर बैठकर किसी डाक्टर की तलाश में चल पड़ा। आगे 4-5 मील पर एक छोटा सा अस्पताल था। वे वहां चले गए। सरदार सीधे पुलिस चौकी पर गए। और वहां रिपोर्ट लिखवाई कि इस प्रकार दुर्घटना हो गई है, हैड कान्सटेबल जो कि उनको जानता था, बाहर आकर देखा कि सड़क पर खून ही खून बिखरा पड़ा है। उसने

सरदार कुलबीर सिंह भाटिया सुपुत्र सरदार त्रिलोक सिंह भाटिया सागर (मध्य प्रदेश) वाले द्वारा ये साखियां अस्सू के मेले में सुनाई गई

वर्ष 2001

सरदार कुलवीर सिंह पहले खुले सिख थे। इन्हें सन्त मेलासिंह (एम.ई.एस. ठेकेदार) ने सिपाही का काम सौंपा। यह सन्त जी को यदा कदा मिलते रहे और वह इनको सच्चे पातशाह की साखियां सुनाते रहे। कुलवीर सिंह जी के मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि क्यों न सतगुरु महाराज के दर्शन किए जाएं। 1970 में सन्त निर्मल सिंह जी से उन्होंने भजन लिया। उसके बाद अनेक बार सन्त जी ने सतगुरु जी महाराज के दर्शन किए। इनके परिवार के सभी सदस्य 6 भाई और 3 बहिनें नामधारी विश्वासों का पालन करते थे।

साखी

वर्ष 1971 में यह एक अद्‌भुत घटना घटी थी। ये दोनों भाई ट्रक लेकर जा रहे थे कि अचानक हार्न देने पर सामने जाती हुई बैलगाड़ी के बैल विदक गए। और एक बूढ़ी औरत जो कानों से बहरी थी बैलों के विदक जाने से घबरा गई और इस प्रकार वह इनके ट्रक के सामने आ गई। ब्रेक लगाने के बावजूद ट्रक का अगला पहिया बूढ़ी औरत के ऊपर आकर टिक गया। उस बूढ़ी औरत के मुंह से खून बहने लगा। तथा वह बेहोश हो गई। ऐसा प्रतीत होता था उस बूढ़ी महिला ने प्राण त्याग दिए हों। सरदार जी ने सतगुरु रामसिंह के चरणों में अरदास की कि प्रभु आप कृपा करें। ऐसा प्रतीत हुआ कि सतगुरु महाराज ने इनकी अरदास कबूल कर ली हो। उस बैलगाड़ी पर कुछ घास पड़ी हुई थी। उन्होंने उसी घास पर इस बूढ़ी महिला को लिटा दिया। और इनका छोटा भाई इसी बैलगाड़ी पर बैठकर किसी डाक्टर की तलाश में चल पड़ा। आगे 4-5 मील पर एक छोटा सा अस्पताल था। वे वहां चले गए। सरदार सीधे पुलिस चौकी पर गए। और वहां रिपोर्ट लिखवाई कि इस प्रकार दुर्घटना हो गई है, हैड कान्सटेबल जो कि उनको जानता था, बाहर आकर देखा कि सड़क पर खून ही खून बिखरा पड़ा है। उसने

कहा कि बूढ़ी महिला अवश्य मर गई होगी। इतना खून बह जाने के कारण उसका बचना असंभव था। इधर उनका छोटा भाई 3-4 मील दूर जहां बहुत बड़ा मेला सा चल रहा था। बाजार लगा हुआ था, उसे छोटे से अस्पताल में ले गया और एक मेज पर लिटा दिया। अभी डाक्टर उसकी जांच कर रहे थे। अचानक वह महिला होश में आ गई। वह उठकर बैठ गई। वह कहने लगी, हमें घर जाना है। डाक्टर हैरान थे। वहां पर उस महिला के दो-तीन लड़के जो उस मेले में आए थे, आ गए। उन्हें बड़ा डर लग रहा था कि अगर यह महिला मर गई तो उनके परिवार वाले और गांव वाले मिलकर उनका बुरा हाल कर देंगे। परंतु सतगुरु को की गई अरदास व्यर्थ नहीं जा सकती थी। थोड़ी देर बाद बड़े भाई पुलिस लेकर अस्पताल पहुंचे। पुलिस वालों ने देखा कि महिला तो ठीक-ठाक है। पर फिर भी सरदार जी को तसल्ली न हुई। उन्होंने अपने छोटे भाई को कहा कि इसे बस में बिठाकर किसी बड़े और अच्छे अस्पताल में ले जाओ। और अगर रात वहां रुकना भी पड़े तो इनके साथ ही रहना। उस महिला का एक बेटा भी उनके साथ बैठ गया। अगले दिन छोटा भाई घर वापिस आया तो सरदार जी ने पूछा कि क्या वह महिला बच गई तो सुरिन्दर सिंह जी ने बताया कि रात को वह बूढ़ी महिला अस्पताल से घर वापिस चली गई। उस महिला ने कहा कि उसे उधर नहीं रहना है। उसने कहा कि हमें घर वापिस जाना है। जब पुलिस वालों को यह खबर मिली तो उन्होंने अगले दिन जब कोर्ट में पेशी हुई तो उसमें उस महिला के बेटे भी आए। और मजिस्ट्रेट के सामने उन्होंने कहा, ''हमारी माताजी ठीक हैं।'' मजिस्ट्रेट ने उनके छोटे भाई से पूछा कि आपने दुर्घटना की है? आप कबूल करते हैं? उन्होंने कहा, ''हां जी हजूर मैं कबूल करता हूं।'' उसने थोड़ा जुर्माना करके उन्हें बरी कर दिया। रात में उनका ट्रक भी छोड़ दिया। दोनों भाईयों के मुंह से निकला, ''धन्य सतगुरु रामसिंह! धन्य सतगुरु रामसिंह!''

कहा कि बूढ़ी महिला अवश्य मर गई होगी। इतना खून बह जाने के कारण उसका बचना असंभव था। इधर उनका छोटा भाई 3-4 मील दूर जहां बहुत बड़ा मेला सा चल रहा था। बाजार लगा हुआ था, उसे छोटे से अस्पताल में ले गया और एक मेज पर लिटा दिया। अभी डाक्टर उसकी जांच कर रहे थे। अचानक वह महिला होश में आ गई। वह उठकर बैठ गई। वह कहने लगी, हमें घर जाना है। डाक्टर हैरान थे। वहां पर उस महिला के दो-तीन लड़के जो उस मेले में आए थे, आ गए। उन्हें बड़ा डर लग रहा था कि अगर यह महिला मर गई तो उनके परिवार वाले और गांव वाले मिलकर उनका बुरा हाल कर देंगे। परंतु सतगुरु को की गई अरदास व्यर्थ नहीं जा सकती थी। थोड़ी देर बाद बड़े भाई पुलिस लेकर अस्पताल पहुंचे। पुलिस वालों ने देखा कि महिला तो ठीक-ठाक है। पर फिर भी सरदार जी को तसल्ली न हुई। उन्होंने अपने छोटे भाई को कहा कि इसे बस में बिठाकर किसी बड़े और अच्छे अस्पताल में ले जाओ। और अगर रात वहां रुकना भी पड़े तो इनके साथ ही रहना। उस महिला का एक बेटा भी उनके साथ बैठ गया। अगले दिन छोटा भाई घर वापिस आया तो सरदार जी ने पूछा कि क्या वह महिला बच गई तो सुरिन्दर सिंह जी ने बताया कि रात को वह बूढ़ी महिला अस्पताल से घर वापिस चली गई। उस महिला ने कहा कि उसे उधर नहीं रहना है। उसने कहा कि हमें घर वापिस जाना है। जब पुलिस वालों को यह खबर मिली तो उन्होंने अगले दिन जब कोर्ट में पेशी हुई तो उसमें उस महिला के बेटे भी आए। और मजिस्ट्रेट के सामने उन्होंने कहा, ''हमारी माताजी ठीक हैं।'' मजिस्ट्रेट ने उनके छोटे भाई से पूछा कि आपने दुर्घटना की है? आप कबूल करते हैं? उन्होंने कहा, ''हां जी हजूर मैं कबूल करता हूं।'' उसने थोड़ा जुर्माना करके उन्हें बरी कर दिया। रात में उनका ट्रक भी छोड़ दिया। दोनों भाईयों के मुंह से निकला, ''धन्य सतगुरु रामसिंह! धन्य सतगुरु रामसिंह!''

मेला सिंह सुपुत्र ज्वाला सिंह

यह साखी सरदार मेला सिंह जी सुपुत्र ज्वाला सिंह जी जबलपुर (मध्य प्रदेश) वाले ने श्री भैणी साहब 2001 के आश्विन मास के मेले में बताई।

सन्त मेला सिंह जी वैसे होशियारपुर के रहने वाले हैं। यह साखी सतगुरु महाराज प्रताप सिंह जी के समय की है। सन्त मेला सिंह जी के पास एक अमेरिकन कार हुआ करती थी। वह एक दिन जबलपुर से होशियारपुर जा रहे थे। सरदार मेला सिंह जी उन दिनों खुले सिख हुआ करते थे। होशियारपुर जाने के बाद उन्होंने अपना प्रोग्राम बनाया कि क्यों न हिमाचल प्रदेश बिलासपुर सरोवर में सैर करने के लिए जाया जाए। जब वह मंडी पहुंचे तो बड़ी ऊबड-खाबड़ सड़कें और बड़े घुमावदार भूल-भुलैया वाले रास्ते थे। उन्हें दिखा कि तीन तरफ पहाड़ियां हैं। वहां एक बोधी मंदिर भी था। रास्ते में उन्होंने बताया कि यह सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी की कोठी है। वहां पर उन्हें बताया गया कि उनकी कार इन ऊबड़-खाबड़ रास्तों से नहीं जा सकती। उस कोठी के बाहर सतगुरु जी की जीप खड़ी थी। सन्त मेला सिंह ने अपने जीजा जी, जो नामधारी थे। कहा कि यदि सतगुरु प्रताप सिंह जी अपनी जीप उन्हें दे दें तो वह आराम से ऊपर जा पाएंगे। उन लोगों ने अपनी कार जीप के पास ही खड़ी कर दी तथा स्वयं ऊपर सच्चे पातशाह जी के दर्शन करने चले गए। सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज ने पूछा कि ये लोग कौन हैं तो उत्तर मिला कि ये लोग जबलपुर से आए हैं। फिर सतगुरु ने वचन किया—''सुबह आस्सा दी वार के समय अवश्य आना। ये लोग अगली सुबह गए। भजन वाणी सुनी। सतगुरु जी ने वचन किया कि आप बड़े कठिन रास्ते से जा रहे हैं। आप हमारी जीप ले जाएं। इनको ऐसा प्रतीत हुआ कि सतगुरु जानी जान हैं। तथा उन्होंने इनके मन की बात जान ली है। सन्त जी ने पहले से भजन लिया हुआ था। बाद में सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी ने 1962, 1964, 1980 तथा 1984 में चार बार जबलपुर में साध संगत को दर्शन दिए। सतगुरु महाराज तो अनेक बार कार में आते थे। और एक बार वातानुकूल वोगी बुक करवा कर गाड़ी में लगवा कर ले आए। सन्त जी ने 1980 में नामधारी वेष-भूषा भी पहन ली और पूरी तरह से नामधारी बन गए। यह घटना 1959 की है।

साखी

यह घटना वर्ष 1968 की है। एक बार महिला खेत मजदूर खेतों में काम

करके शाम को घर वापिस लौट रही थीं। वे दोनों ओर एक कतार में चल रही थीं। एक पांच वर्ष की लड़की बाईं तरफ की कतार में से निकल कर दाहिनी तरफ की लाइन के लिए अपनी मां से मिलने के लिए सड़क पर दौड़ पड़ी। अचानक वह बच्ची इनकी गाड़ी के सामने आ गई। सन्त जी कार चला रहे थे। ब्रेक लगाते-लगाते लड़की कार के नीचे आ गई, और बेहोश हो गई। सन्त जी घबरा गए और सतगुरु को अरदास की कि हे सच्चे पातशाह आप इस बच्ची की रक्षा करो। फिर वे उस बच्ची और उसकी मां को कार में बिठाकर ले गए। रास्ते में एक प्राइवेट डाक्टर सड़क के किनारे मिला उसे दिखाया। उसने देखा कि पूरे शरीर में कहीं भी कोई चोट नहीं थी। कोई हड्डी नहीं टूटी थी। सब कुछ ठीक ठाक था। अचानक बच्ची उठकर बैठ गई। इन्होंने बच्ची की मां को दूध पीने के लिए 20 रुपए दिए। और वह खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़ी। सन्त जी का कहना है कि सतगुरु जी ने उनकी अरदास सुनकर उस बच्ची की रक्षा कर दी तथा इनकी भी रक्षा कर दी। यदि सतगुरु बचाव न करते तो बड़ा संकट प्रस्तुत हो सकता था परंतु सतगुरु महाराज तो अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। उनको हर प्रकार के कष्टों से बचाते हैं।

सरदार नरेन्द्रसिंह सुपुत्र सरदार सन्तासिंह पांडवनगर दिल्ली, (लास एंजलस)

सन्त नरेन्द्रसिंह जी के पिता के समय से ही इनका परिवार नामधारी विश्वासों का रहा है। वह नामधारी मर्यादाओं तथा परम्पराओं का पालन करता रहा है। सन्त जी 1985 में अमरीका चले गए थे। इन्होंने वहीं पर अपना कारोबार शुरू किया था। 1993 में इन्हें सूचना मिली कि सच्चे पातशाह अमरीका आ रहे हैं। लास एंजलस में साध-संगत के पास खास बन्दोबस्त नहीं था। बड़ी परेशानी थी कि सच्चे पातशाह को कहां ठहराया जाए। लास एंजलस में दो ही नामधारी परिवार नजर आते थे जिसके पास सतगुरु महाराज को ठहराया जा सकता था। इनमें से एक थे सरदार त्रिलोचन सिंह। हालांकि उनके परिवार में बीबी खुले सिख परिवार से आई थी।

वर्ष 1993 में जनवरी मास में सच्चे पातशाह जी का डेरा लास एंजलस में सरदार त्रिलोचन सिंह जी के घर पर ही रखा गया। समयानुसार सच्चे पातशाह जी ने इनके घर पर चरण डाले। और अमरीका के कोने-कोने से साध संगत सच्चे पातशाह जी के दर्शन लाभ प्राप्त करने के लिए सरदार त्रिलोचन सिंह के डेरे पर पहुंचे। उस समय सन्त नरेन्द्रसिंह जी सिम्मी वैली में रहते थे। सन्त नरेन्द्रसिंह जी ने भी जाकर सच्चे पातशाह जी के चरणों में अर्ज की कि हे सच्चे पातशाह ! आप मेरे घर पर भी चरण डालें। सतगुरु जी ने अपार कृपा की और सन्त नरेन्द्रसिंह जी के घर पर चरण डाले। वहां पर कई गैर नामधारी परिवार भी सतगुरु के दर्शन करने के लिए पधारे।

सन्त जी के दो बेटे हैं। वे नामधारी दस्तार नहीं बांधते थे। उनके नाम हैं गगनदीप और मनदीप सिंह। सच्चे पातशाह ने इन्हीं दोनों भाईयों की अगले दिन दस्तार बंदी करनी थी। अगले दिन रामदास आश्रम में सच्चे पातशाह जी ने पहुंचना था। जहां पर योगी हरभजन सिंह खालसा के रहने का स्थान था। कार्यक्रम के अनुसार, सच्चे पातशाह जी ने इसी रामदास आश्रम में सन्त जी के बेटों की दस्तार सजानी थी। उस दिन वर्षा इतने जोरों से हुई कि सन्त जी उनका परिवार तथा बेटे वहां समय पर पहुंच न पाए। जब सन्त जी पहुंचे तो कार्यक्रम समाप्त हो चुका था और सच्चे पातशाह सरदार त्रिलोचन सिंह के डेरे की तरफ प्रस्थान कर चुके थे। सन्त जी सीधे वहां से सन्त त्रिलोचन सिंह जी के डेरे पर सपरिवार पहुंच गए। सतगुरु जी ने कृपा कर के इनके दोनों बेटों की दस्तारें वहीं

सजा दीं। उस समय सन्त नरेन्द्रसिंह जी जो नोकदार पगड़ी बांधते थे। सच्चे पातशाह जी ने हंसपाल जी से कहा कि नरेन्द्रसिंह जी से पूछें कि उस ने अपनी पगड़ी कब सीधी करनी है। इसके बाद सच्चे पातशाह जी ने इनकी दस्तार उतार कर देखी तो क्या देखते हैं कि इनके सिर पर बाल ही नहीं हैं। सच्चे पातशाह जी ने मजाक में कहा कि कंघा लगाने के लिए सिर पर कील ठोंकनी पड़ेगी। फिर भी सच्चे पातशाह ने नामधारी प्रथा के अनुसार इनके सिर पर नई दस्तार सजा दी।

छोटे ठाकुर जी जब भी अमरीका पधारते तो सन्त नरेन्द्रसिंह जी के घर पर ही ठहरते। सन्त जी ने छोटे ठाकुर जी से प्रार्थना की कि आप कृपा करके हर साल दर्शन देते रहें। क्योंकि आपके चरण पड़ने मात्र से ही हमें एक कमरे के मकान से दो कमरे वाले मकान में पहुंचाया और फिर तीन कमरे वाले मकान में। और अब तो इनकी कृपा से सन्त जी ने अपना मकान भी खरीद लिया है।

सच्चे पातशाह जी ने कृपा करके दो बार सन्त जी के सिम्मी वैली वाले डेरे पर चरण डाला और सन्त जी को ढेर सारी खुशियां दीं। पिछले साल सन्त जी ने मकान इधर ले लिया है। और मन करता था कि सच्चे पातशाह नए मकान में अपने चरण डालें। हालांकि सतगुरु जी का कार्यक्रम बड़ा व्यस्त रहता है। फिर भी सच्चे पातशाह ने सन्त जी के नए मकान में चरण डाले। अर्थात सतगुरु जी ने सन्त जी की अरदास सुन ली थी और सच्चे मन से की गई अरदास कभी भी खाली नहीं जाती।

सन्त जी ने अपने बड़े बेटे की सगाई इंग्लैंड में की। वे चाहते थे कि उनके बड़े बेटे का आनन्द कारज सतगुरु महाराज की हजूरी में ही हो। लड़की सूबा सतनाम सिंह जी की भांजी तथा छोटे ठाकुर जी की साली की लड़की है। इसलिए छोटे ठाकुर जी ने बहुत यत्न करके टोरंटो (कैनेडा) जाकर सच्चे पातशाह जी की हजूरी में सन्त जी के बड़े बेटे का आनन्द कारज करवाया। सच्चे पातशाह जी का डेरा सूबा रेशम सिंह जी के घर पर होता था। सच्चे पातशाह जी ने सन्त जी को परवानगी दी कि अपना व्यापार शुरू कर दो। सच्चे पातशाह जी के आदेशानुसार उन्होंने अपना व्यापार शुरू कर दिया। जो बहुत अच्छा चल रहा है। जिस चीज की मुराद सन्त जी की होती है सन्त जी अरदास कर देते हैं। उन पर सच्चे पातशाह जी की कृपा हो जाती है। उन्हें किसी प्रकार की कमी नहीं है। कोई कठिनाई नहीं है। जिस किसी ने सतगुरु महाराज का आंचल पकड़ा उसे सच्चे पातशाह ने खुशियों से भर दिया।

बेअन्त जी की अलौकिक कथा

बेअन्त जी जब आठ वर्ष के हुए थे तो एक अलौकिक घटना घटी थी। यह घटना जिला शेखुपुरा गांव चक्क की है जो आजकल पाकिस्तान में है। वहां एक और गैर नामधारी सिख स. कर्मसिंह रहते थे। स. कर्मसिंह के दो पुत्र थे। दोनों के हाथ जमीन की एक लड़ाई में गांव के निवासी एक व्यक्ति का कत्ल हो गया था।

मुकदमा चला। मुकदमे में गवाह मुकर गए। शहदातों को आधार मान कर सैशन जज के उन दोनों भाईयों को मृत्यु दंड की सजा सुना दी थी। गरीबी के बावजूद कर्मसिंह ने पहले हाई कोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट में अपील की पर कुछ न बना। फांसी की सजा बहाल रही। कर्मसिंह के मन में विचार आया कि उसे भैणी साहब जाकर सतगुरु, श्री प्रतापसिंह के दर्शन कर अपने मन का दु:ख उन्हें बताना चाहिए। वह अवश्य उस पर तथा उसके पुत्रों की रक्षा करेंगे। सतगुरु स्वयं ईश्वर का रूप है उनके भंडार में कोई कमी नहीं। यदि कमी है तो उसके विश्वास की। वह जेल में गया अपने पुत्रों से मिला। उस ने पुत्रों को कहा कि वे रहम (दया) की अपील करें और मैं श्री भैणी साहब जाकर सतगुरु महाराज के दरवार में जाकर आपके प्राणों की भीख मांगता हूं वह अवश्य दया करेंगे। यदि सतगुरु प्रसन्न हो गए तो मेरी खाली झोली में वह भीख अवश्य डाल देंगे। यदि सतगुरु महाराज ने कृपा करनी स्वीकार न की तो मैं आत्म हत्या कर लूंगा।

गर्मियों के दिन थे। शरीर पसींने से तर बतर हुआ जा रहा था। जब कर्मसिंह श्री भैणी साहब पहुंचे तो पता चला कि सतगुरु श्री प्रतापसिंह जी विदेश की यात्रा पर गए हुए हैं। वह एक महीने के बाद लौटेंगे कर्मसिंह का दिल यह सुनकर टूट सा गया। उसने सोचे, ''सतगुरु महाराज के आने तक उसके दोनों बेटे फांसी पर लटका दिए जाएंगे।

उदास तथा निराश हुआ कर्मसिंह एक खुला स्थान देखकर वहां बैठ गया। वह सोच में पड़ गया कि अब क्या करना चाहिए। वहां सामने कुछ बच्चे गेंद खेल रहे थे। साहब जादा बेअन्त उन में से एक थे। अपने मन को दूसरी ओर लगाने के लिए कर्मसिंह उन बच्चों का खेल देखने बैठ गया। बच्चों के खेल में गेंद अचानक रेंगती हुई कर्मसिह के पास से होकर आगे चली गई। बाल रूप बेअन्त जी गेंद लेने गए। उन्होंने रुक कर कर्मसिंह की देखा और वचन किया, ''अरे भाई मन को निराश करके क्यों बैठ गया है, जाओं गेंद पकड़ कर लाओ।

आप के दोनों लड़के छूट जाएंगे। कर्मसिंह हैरान सा हुआ गेंद पकड़ कर लाने चला गया। वह गेंद ले आया और फिर दूसरे बच्चों को इस विलक्षण बालक के बारे में पैदा हुई जिज्ञासा शांत करने के लिए पूछने लगा। कि यह बालक कौन है?

कर्मसिंह के मन को कुछ बल मिला वह सोचने लगा, ''ईश्वर: यत्करोति, शोभनम एवं करोति'' अर्थात् भगवान जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। उन बच्चों की बात सुन कर मन ने सतगुरु महाराज के चरणों में नमन किया। उन का कथन था कि यह बालक सतगुरु महाराज श्री प्रतापसिंह जी के बड़े साहब जादे हैं बेअन्त। अब कर्मसिंह को पूर्ण विश्वास हो गया कि सतगुरु महाराज के साहब जादे भी ईश्वरांश हैं। वह भी सामर्थ्यवान तथा शक्तिशाली हैं उस के बेटे अवश्य वरी हो जाएंगे। वह मन ही मन सतगुरु महाराज तथा साहिबजादे बेअन्त जी को प्रणाम करके घर लौट आया। उसने अपनी पत्नी को यह सारी घटना सुना दी। मन में संतोष हुआ। सांत्वना मिली पत्नी को भी विश्वास हुआ कि सतगुरु महाराज जी की उसके बेटों पर अवश्य कृपा होगी। फिर वह जेल में गए और पुत्रों से इस सारी घटना का आंखों में श्रद्धा के आंसू भर कर वर्णन कर डाला। और विश्वास से कहा कि सतगुरु महाराज की परम अनुकम्पा से वे दोनों छूट जाएंगे। अब संसार की कोई शक्ति उनके बेटों को फांसी पर नहीं लटका सकती।

लड़कों ने पिता की बात सुनी और फिर बताया कि उन्हें भी कल स्वप्न हुआ है। सपने में सफेद कपड़ों वाला एक बालक मिला था। उसने बताया, आप वरी हो जाओगे। अब हमें पूरा विश्वास हो गया है कि सतगुरु महाराज की हम पर कृपा हो गई है।

कुछ समय के पश्चात् उनकी रहम (दया) की अपील का फैसला सुनाया गया। ये दोनों वरी कर दिए गए थे। अब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि सतगुरु महाराज की उन पर कृपा हो गई है और यह भी कि सतगुरु महाराज स्वयं ईश्वर का अवतार हैं। उस दिन से वे श्री भैणी साहब गुरुद्वारे में जाकर सतगुरु महाराज को अवतार मान कर उनके चरणों की भक्ति करने लगे।

ड्राइवर जसवीर सिंह की कहानी—न्यूयार्क

सन्त गुरूचरण सिंह जी का बेटा जसवीर सिंह वर्ष 1989 में भारत से विदेश जाने के लिए तैयार हुआ। संत जी के पास उस समय पैसों की बड़ी कमी थी। एक एजेंट के माध्यम से जसवीर सिंह थाईलैंड पहुंचा था। वहां पहुंच कर एजेंट ने इनके तथा इनके साथ गए दूसरे लड़कों के भी बाल कटवा दिए। वे फिर सबके सब जर्मनी पहुंचे। वहां उसे जसवीर के जीजा जी एक इटालियन रेस्तोरां में काम करते थे। जसवीर को भी इसी रेस्तोरां में काम मिल गया। बालक जसवीर आयु में छोटा होते हुए भी सतगुरु श्री रामसिंह जी के प्रति बड़ी श्रद्धा रखता था। कभी भी मांस आदि नहीं खाता था। रेस्तोरां में काम करते हुए कुछ समय बाद उसने फिर मांस खाना शुरू कर दिया। क्योंकि यहां उन्हें अपने हाथों से मांस काटना पड़ता था। इसलिए वहां पर काम करते हुए वह फिर मांसाहारी हो गया।

कुछ समय के पश्चात जसवीर ने पूरे एक सप्ताह तक रेस्तोरां का खाना नहीं खाया और रोता रहा कि सच्चे पातशाह अब मैं बिना कागजात के कहां जाऊं। एक दिन जसवीर के मन में आया कि वह रेस्तोरां की नौकरी छोड़ दे। यही विचार लेकर वह बाहर आया और आकर देखा तो पुलिस की गाड़ी खड़ी थी। यह देखकर जसवीर फिर अपने काम पर वापिस लौट आया। बाद में यह किसी प्रकार अमेरिका आ गया। सतगुरु जी की कृपा हो गई। इनके कागजात बीमा आदि सभी तैयार होकर मिल गए। वर्ष 1997 में इन्होंने सतगुरु महाराज के दर्शन किए। सच्चे पातशाह के दर्शन करने के पश्चात् भी यह एक महीने तक मांस भोजन करते रहे। अचानक एक दिन इन्हें उल्टी आनी शुरू हुई। स्वप्न में हर रात को इन्हें सतगुरु के दर्शन होते थे। मगर फिर भी इन्होंने अपने संगी साथियों का साथ नहीं छोड़ा। जसवीर सिंह श्री जीवन नगर में सच्चे पातशाह को अपना फोन नम्बर भी दे आया था। जसवीर सिंह को सूचना मिली कि सच्चे पातशाह तीन महीने बाद न्यूयार्क आ रहे हैं। वह दर्शन करने हवाई अड्डे पर पहुंच गया। सच्चे पातशाह जी हवाई अड्डे से बाहर आए। यह घटना जसवीर सिंह को आज तक याद है।

सतगुरु जी ने पूछा कि वह क्या काम करता है तो जसवीर ने कहा—"हजूर सच्चे पातशाह मैं यहां टैक्सी चलाता हूं।" तब सतगुरु महाराज बोले, जब मैं दुबारा न्यूयार्क आऊं तो मुझे मिलना। श्री सतगुरु महाराज हवाई अड्डे के अंदर जाने लगे तो अचानक सतगुरु महाराज ने आवाज लगाई, जसवीर इधर आ। आने

पर सतगुरु महाराज ने शौचालय के बारे में पूछा और कहा कि उन्हें लघुशंका निवारण के लिए जाना है। जसवीर उन्हें शौचालय बताकर अपने घर वापिस आ गया।

बेअन्त सतगुरु की बेअन्त लीला

सन्त गुरचरण सिंह के पूर्वज नामधारी सिख थे। उनका पुत्र जसवीर सिंह जर्मनी में रहता था। एक बार होला मुहल्ला श्री जीवन नगर में था। वहां पर जसवीर सिंह ने श्री सतगुरु महाराज के दर्शन किए। अगला मेला भी श्री जीवन नगर में ही था। सन्त जी ने वहां जाकर सतगुरु जी के चरण स्पर्श किया और प्रार्थना की की कि वह उनके घर दर्शन देने की कृपा करें। भगवान कृपालु-दयालु तथा दया के सागर तो हैं ही। श्रीमद्भगवत गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि *'यो माम पश्यति सर्वत्र, सर्वत्र मयी पश्यति।'* जो मुझे सब जगह देखता है भगवान उसे सब जगह देखते हैं। सतगुरु महाराज ने कृपा की और उनके घर दर्शन दिए। इन्दर पुरी सिरसा से सन्त लखवीर सिंह भी सतगुरु महाराज के साथ आए हुए थे। सन्त जी दाढ़ी में धागा बांधते थे। सच्चे पातशाह ने उनसे पूछा कि वह कितनी देर भजन करते हैं। सन्त जी का उत्तर था कि जितनी देर तक सच्चे पातशाह कृपा करते हैं वह देर तक भजन करते हैं। सच्चे पातशाह ने फिर इनसे पूछा कि वह कौन से इलाके से आए हैं। सन्त जी ने उन्हें बताया कि वह पाकिस्तान में जिला सियालकोट के रहने वाले हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उनके बड़े-बूढ़े वहीं रह गए और पाकिस्तानी फौज ने उन्हें मार दिया। उनके परिवार के लोग भी वहीं मारे गए। उन्होंने यह भी बताया कि वे वहां नवां शहर में काम करते थे। वहां वे गेहूं निकालने वाली मशीनें बनाते थे। सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि वह अपने बेटे जसवीर सिंह को उनसे जरूर मिलवाएं। सन्त जी ने विनती करी कि हे सच्चे पातशाह जसवीर बाबू ने दाढ़ी और केस कटवाए हुए हैं। और वह मांस मदिरा का सेवन भी करता है। सच्चे पातशाह जी ने बात सुनी और फिर आदेश दिया कि वह अपने बेटे को उनसे जरूर मिलवाएं। सन्त जी को अब विश्वास हो गया था कि सच्चे पातशाह की कृपा अवश्य होगी। चार-साढ़े चार बजे सच्चे पातशाह वापिस लौट गए। सुबह चार बजे का समय था जब जसवीर सिंह का फोन आया कि रात को वह अपने भाई के ससुराल में ठहर गया था। सन्त जी ने कहा कि वह जल्दी चला आए। उसे सच्चे पातशाह जी के पास जाना है। वह दो मिनट भर के लिए मौन हो गया। सन्त जी ने कहा कि उन्होंने सच्चे पातशाह जी को सारी बातें बता दी हैं कि किस प्रकार वह एजेंट द्वारा थाईलैंड गया और वहीं जाकर केश

कटवा दिए। इतनी ही बात हुई और इसके बाद बेटा भी वापिस आ गया। सन्त जी बेटे को लेकर श्री जीवन नगर में वैसाखी के मेले में पहुंच गए। नाम स्मरण प्रारंभ हो चुका था। सन्त जी ने बेटे से कहा कि आज तो देर हो जाएगी क्योंकि सच्चे पातशाह स्मरण के समय किसी से भी बात नहीं करते। चमत्कार हो गया। थोड़े समय में सन्त जी ने देखा कि सन्त लखवीर सिंह जी सच्चे पातशाह जी को नमस्कार करके आ रहे थे। सन्त जी ने लखवीर सिंह को इशारे से बुलाया और पूछा कि क्या लिखकर सच्चे पातशाह जी से प्रार्थना की जाए? सन्त जी ने हां में उत्तर दिया। सन्त जी कागज पैन खोजने लगे। इतनी देर में सच्चे पातशाह जी ने आसन से उठकर लंगर की ओर चरण बढ़ाए। जब सच्चे पातशाह इनके पास पधारे तो सन्त जी ने तथा इनके बेटे जसवीर सिंह ने चरण स्पर्श किए।

सतगुरु जी ने इशारे से कहा कि वे प्रतीक्षा करें। अभी नित नेम चल रहा है। नाम स्मरण समाप्त हो जाने पर सच्चे पातशाह ने इनसे पूछा—''खाने पीने का क्या हाल है। जसवीर सिंह ने बताया कि वह मांस भक्षण करता है पर शराब पीनी छोड़ दी है।'' सच्चे पातशाह जी ने कहा—''सतगुरु कृपा करेंगे। मांस खाना भी छूट जाएगा। बाद में जसवीर सिंह ने सच्चे पातशाह जी का फोटो भी खींचा। कुछ समय बाद जसवीर सिंह जब अमरीका जाने लगे तो अपनी माताजी से गुरवाणी का पाठ करने का गुटका मांगा। माताजी ने गुटका दे दिया। जब सन्त जी बेटे को विदा करके लौट रहे थे तो सामने से आती गाड़ी में सच्चे पातशाह जी के दर्शन हो गए। इनसे जो शब्द उच्चारण हुआ वह था धन्य सतगुरु रामसिंह जी, धन्य सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी।

सच्चे पातशाह की वापसी

जसवीर सिंह अपनी लंबी लीमो गाड़ी धुलवा कर हवाई अड्डे पर पहुंच गए। मन में इच्छा थी कि सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह उनकी गाड़ी में बैठें और चित में प्रसन्नता दें। परंतु इस बात का ज्ञान न था कि सच्चे पातशाह चमड़े वाली सीट पर नहीं बैठते। सच्चे पातशाह जब हवाई अड्डे से बाहर पधारे तो सरदार बलदेव सिंह जी की गाड़ी जिसमें उनके लिए आसन भी लगा दिया था, तैयार खड़ी थी। जसवीर सिंह ने सोचा कि सच्चे पातशाह की जैसी इच्छा, उसने अपनी गाड़ी सच्चे पातशाह के सामने लगा दी। दस मिनट भर की प्रतीक्षा के पश्चात् जब सच्चे पातशाह इनकी गाड़ी में बैठने लगे तो किसी सिख ने कह दिया कि इनकी गाड़ी की सीट तो चमड़े की है। सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि सीट को भली प्रकार देख लो। जसवीर ने ब्लेड से सीट काट दी तो वह रैक्सीन की निकली।

सतगुरु जी ने कृपा कर दी और इनकी गाड़ी में आकर बैठ गए। जसवीर ने उनसे विनय की कि वह उस गरीब के घर में चरण डालकर पवित्र करें। प्रभु कृपा होते कुछ देर नहीं लगती। किसी भक्त ने भगवान से पूछा कि प्रभु मेरे भाग्य में ईश्वर दर्शन हैं कि नहीं। तो उत्तर मिला कि उसे प्रभु दर्शन होने में अभी सात जन्म और लेने पड़ेंगे। बस फिर क्या था वह भक्त खुशी से नाचने लग गया कि मेरे भाग्य में प्रभु के दर्शन हैं। प्रभु को मेरा ध्यान भी है। बस इतना सोचते हुए उसने अपने भाग्य को धन्यवाद दिया। बस फिर क्या था वह सात जन्म का समय सात क्षणों में समाप्त हुआ और भगवान उसे दर्शन देने के लिए साक्षात प्रगट हो गए। बस यही बात श्री जसवीर सिंह से भी हुई। उसने सतगुरु महाराज से घर में चरण डालने के लिए विनती की और सतगुरु ने कृपा कर डाली और कह दिया कि तीन बजे उन्हें लेने के लिए आ जाना। जसवीर मनचंदा जी के साथ में घूम रहा था जब सच्चे पातशाह का मोबाईल पर सन्देश प्राप्त हुआ कि वह उसका इंतजार कर रहे हैं। जसवीर ने मनचंदा जी से सलाह ली कि सच्चे पातशाह जी का स्वागत सम्मान कैसे करें। सलाह मिली कि सतगुरु महाराज के स्वागत के लिए कम्बल ले लो। मेवे ले लो। जाते ही सतगुरु महाराज जसवीर की गाड़ी में बैठ गए। घर पहुंचे तो बड़ी तेज वर्षा हो रही थी। आंधी चल रही थी। सच्चे पातशाह ने चरण कमलों से जसवीर के घर को पवित्र किया। एक कमरे में एक अंग्रेज महिला गोरी मेम के साथ जसवीर का फोटो पड़ा हुआ था। सच्चे पातशाह ने पूछा कि वह कौन है। जसवीर ने कहा कि यह उसकी अमरीकन पत्नी है। जिससे मैंने वीजा लेने की खातिर शादी कर ली थी। यह शादी केवल कागजों तक ही सीमित थी। अब तलाक भी हो चुका है। सच्चे पातशाह वापिस चले गए।

अगली बार जब सच्चे पातशाह न्यूयार्क गए तो जसवीर ने अर्ज की कि सतगुरु महाराज उसी के घर ही निवास करें। सतगुरु महाराज ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। अगले दिन अमरजीत सिंह के घर पर आसा दी-वार का कीर्तन था। वहां जसवीर सिंह ने प्रार्थना की कि वह अमरजीत सिंह के साथ कपड़े के व्यापार में साझेदारी करना चाहता है। सच्चे पातशाह ने आशीश देते हुए कहा कि किसी प्रकार का झगड़ा मत करना। जसवीर सिंह ने कपड़े में साझेदारी का काम शुरू कर दिया। पर व्यापार में उसे घाटा हो गया।

एक बार सच्चे पातशाह जसवीर की गाड़ी में बैठे थे। साथ में श्री मनचंदा भी बैठे थे। जसवीर ने प्रार्थना की कि उसे व्यापार में जबरदस्त घाटा हो गया है। वह अब क्या करे। मनचंदा जी ने पूछा कि पहले वह क्या काम करते थे। जसवीर ने उत्तर दिया कि वह पहले टैक्सी चलाते थे, और बहुत सुखी था। सतगुरु ने

जसवीर की बात सुनी तो कहा कि वह दुबारा टैक्सी खरीद कर चलाए। सतगुरु महाराज की ऐसी परम कृपा हो गई कि जसवीर ने नई लीमो गाड़ी ले ली। और कमाई रोज दो-तीन गुना होने लगी। छः मास में ही सारा ऋण उतार दिया गया। सतगुरु जी ने दिखा दिया कि जो बुरे कर्म किए थे उसका फल भोगना ही पड़ता है।

अवश्यमेव ही भुक्तकम कृतम कर्मम शुभा-शुभम्।
सतगुरु ने आदेश दिया कि दसोन्ध निकाला कर।
यह सब प्रभु कृपा का ही फल था।

एक अनोखा कौतुक

एक बार ये रात को सोए हुए थे। सच्चे पातशाह जी का सैल पर फोन आ गया कि समय बुरा आ रहा है। परंतु घबराना नहीं। फोन सुनने के बाद यह सो गए। इन्हें नींद आ गई। सुबह उठकर सात बजे उसने भारत में अपने घर में फोन किया तो भाई ने बताया कि बड़े भाई की दुर्घटना हो गई है। दोनों बाजू टूट गए हैं। फिर इन्होंने अपना सैल फोन देखा तो पता चला कि रात के दो बजकर छः मिनट पर भारत से फोन आया था। उन्होंने घबराकर सच्चे पातशाह जी को फोन किया। आदेश हुआ कि सतगुरु जी ने प्राणों की रक्षा कर दी है।

एक बार सच्चे पातशाह ने प्रसिद्ध सितारवादक उस्ताद विलायत खान के घर दर्शन देने जाना था। सच्चे पातशाह जी का डेरा सेठ शेरसिंह जी के घर पर था। उस्ताद विलायत खान के घर सितारवादन का कार्यक्रम था। सितारवादन रात के नौ बजे तक चला। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद रास्ते में सच्चे पातशाह ने गाड़ी रुकवा दी और जसवीर को आदेश किया कि वह काफिले की गाड़ियों के सभी चालकों से पूछो कि उन्हें क्या वापसी का रास्ता मालूम है। जसवीर ने पूछकर सच्चे पातशाह को सूचना दी कि सभी चालकों को वापसी का रास्ता भली भांति ज्ञात है। सच्चे पातशाह जी को संतोष न हुआ तो उन्होंने रछपाल जी को भेजा उसने भी वही बात बताई। फिर सच्चे पातशाह जी ने हुकम किया कि सेठ जी के बेटे को बुलवा कर लाओ। इतनी देर में काफिले की गाड़ियों के सभी चालक अपनी अपनी गाड़ियों से उतरकर सतगुरु जी के पास आ गए। फिर सच्चे पातशाह जी ने हुकम किया कि अब गाड़ी चलाओ। इस प्रकार इनका काफिला फिर चल पड़ा। अगली हरी बत्ती पर पहुंचे तो वहां बड़ा ही भयानक दृश्य प्रस्तुत था। कुछ ही देर पहले अनेक गाड़ियों और मोटर साइकिलों की दुर्घटना हुई थी। उनकी सवारियां सड़क के दोनों तरफ खून से लतपत बिखरी पड़ी थीं। उस समय

जसवीर ने शीशे में सतगुरु महाराज का एक नया ही रूप देखा। उसे और सारी साध संगत को अब बात समझ में आई कि सतगुरु ने किस प्रकार चालकों को रास्ते के ज्ञान का बहाना बनाकर इतने बड़े तथा भयानक खतरे को टाल दिया। तथा सारी साध संगत के प्राणों की रक्षा की। घर पहुंच कर जसवीर ने कान पकड़ लिए और दृढ़ निश्चय कर लिया कि उसे सतगुरु के आदेश का तुरन्त पालन करना चाहिए।

नामधारी प्रथा से आनन्द कारज

जसवीर का आनन्द कारज भी एक कौतुक ही था। जसवीर ने श्री भैणी साहब जाकर श्री पातशाह जी से साधारण शब्दों में प्रार्थना की। हे सच्चे पातशाह! मैंने आपकी हजूरी में आनन्द कारज सम्पन्न करवाना है। आप आज्ञा दें कि मैं आपके चरणों में आऊं। सच्चे पातशाह जी ने उत्तर दिया—''पहले अपनी दाढ़ी बढ़ा ले फिर आ जाना।'' जसवीर ने प्रार्थना की सतगुरु महाराज यह दाढ़ी 12 दिन की हो गई है और यदि मैं इसे पूरी बढ़ाने लगा रहा, तब तक मैं बूढ़ा हो जाऊंगा। सच्चे पातशाह जी ने हंसकर आदेश दिया जाकर तारीख ले लो। जसवीर के ससुराल वाले अकाली सिख थे। वे शादी दरबार साहब के सामने करना चाहते थे। खैर वे लोग भी मान गए। जसवीर सिंह अपने रिश्तेदार और सगे संबंधियों को लेकर श्री भैणी साहब पहुंच गए।

अमृत वेले आसा-दी वार के कीर्तन के पश्चात् पूर्वाजी ने तुरन्त आनन्द कारज का प्रबंध कर दिया। आनन्द कारज के पश्चात् जसवीर सिंह सच्चे पातशाह की कोठी पर दर्शन करने गए। सच्चे पातशाह बड़े प्रसन्न थे।

एक बार जसवीर श्री भैणी साहब गए तो सच्चे पातशाह इनको कार में बिठाकर क्लब में वालीवाल का खेल देखने चले गए। मैच लम्बा खिंच गया था। जिस तरफ सच्चे पातशाह देख रहे थे उस ओर के 11 अंक थे तथा दूसरी ओर वालों के 14 अंक। फिर अचानक 11 अंक वाले 5 अंकों से जीत गए। जसवीर का बड़ा भाई भी उनके साथ था। उसने सच्चे पातशाह जी से प्रार्थना की, सतगुरु मेरे व्यापार में घाटा पड़ गया है। सच्चे पातशाह जी ने कहा—''एक माला भगवती की और एक माला भजन की किया कर सतगुरु कृपा करेंगे।'' धीरे-धीरे इनका व्यापार बहुत बढ़िया चलने लगा और घर परिवार सब सुखी रहने लगे। परन्तु एक बात का खेद था कि इनकी कोई संतान नहीं थी। अगली बार सतगुरु जब न्यूयार्क आए तो जसवीर ने सतगुरु महाराज से प्रार्थना की, बड़े भाई पर कृपा करो। बच्चे की दात दें। कुछ समय बाद सच्चे पातशाह बोले, ''भाई को कहो

अपने भाई की लड़की गोद ले ले। कुछ दिन बाद सच्चे पातशाह कैनेडा से न्यूयार्क वापिस आए तो जसवीर ने पूछा आपने भारत में भाई को फोन कर दिया था। जसवीर ने प्रार्थना की कि हे गरीब नावाज अगर दूसरा बच्चा गोद ले लिया तो अपना बच्चा तो होगा ही नहीं। सच्चे पातशाह जी ने उत्तर दिया, जिस औरत को बच्चा नहीं होता उसे कोई बच्चा मां कहकर पुकारे उसके गलैन्ड खुल जाते हैं। यह एक विज्ञान है। अब जसवीर को बात समझ में आई। उसने अपने पिता सन्त गुरचरण सिंह के माध्यम से फोन द्वारा अपने भाई को आग्रह किया और सच्चे पातशाह का वचन सुनाया। इनका भाई बहुत रोया। जब वह अपनी घर की सीढ़ी चढ़ रहा था तो इनके भाई की अढ़ाई वर्ष की लड़की ने इन्हें पापा कहकर पुकारा। इन्हें सब समझ आ गई कि यह सब सच्चे पातशाह जी की कृपा है। कुछ माह बाद भाई की पत्नी गर्भवती हो गई। और फिर कन्या ने जन्म लिया। ये लोग अत्यंत प्रसन्न हुए। इनका सारा परिवार सच्चे पातशाह के दर्शन करने गया।

सच्चे पातशाह ने कन्या का नाम गुरदीप रखा। इस प्रकार सतगुरु जी ने सन्त गुरुचरण सिंह जी के परिवार को असीम प्रसन्नता तथा हर्ष प्रदान किए। सन्त जी कहते हैं कि सतगुरु पर श्रद्धा रखो, वे अवश्य कृपा करेंगे।

साई सच्चे पातशाह रीझ भगो कै खीझ।
भूमि परे तो ऊपजे उल्टे सूधे बीज।

धन्य सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज ईश्वर स्वरूप सत्य कारज जग तारण सत्य सनातन।

डॉ. इकबाल सिंह, श्री भैणी साहब

डॉ. इकबाल सिंह जी का परिवार काफी समय पूर्व से ही गुरु घर से जुड़ा हुआ है। परिवार के सभी लोग सतगुरु जी के प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं। शुरू-शुरू में डॉ. इकबाल सिंह जी जीवन नगर इलाके के सन्तनगर गांव में रहते थे। वे आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा लोगों की चिकित्सा किया करते थे।

वर्ष 1984 की बात है कि एक दिन अचानक उनके पेट में दर्द शुरू हो गया। काफी इलाज करवाए पर वह ठीक न हुए। यह कष्ट साल-डेढ़ साल तक चलता रहा इसी कारण उनका स्वास्थ्य भी खराब रहने लगा। उनके शरीर का वजन भी बहुत कम हो गया। उनके शरीर का वजन 75 किलो से घट कर 50 किलो रह गया। फिर धीरे-धीरे इतने कमजोर हो गए कि विस्तर पर ही पड़े रहने लगे। विस्तर से उठने तक की ताकत इनके शरीर में नहीं थी। इनका खाना रहना आदि सब विस्तर पर ही होता था। शौच आदि भी विस्तर पर ही करते थे। डॉक्टरों को उनके बचने की कोई आशा नहीं थी।

उन्हीं दिनों सन्तनगर में पंचभादो का मेला चल रहा था। यह मेला प्रतिवर्ष सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी की बरसी पर उनकी याद में मनाया जाता है। सन्त ज्ञान सिंह जी ने सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी से प्रार्थना की कि उनका बेटा बहुत बीमार चल रहा है आप कृपा कर उनके घर चरण डालें तथा उनका भला करें। उसी दरबार में महाराज बीर सिंह जी भी बैठे थे। उन्होंने सभी बात सुनी कुछ समय बाद महाराज बीर सिंह जी अपनी गाड़ी में बैठकर डॉ. इकबाल सिंह के घर पर आए। उन्होंने देखा कि डॉ. इकबाल सिंह जी की हालात वास्तव में बड़ी गंभीर बन गई है। वे विस्तर से उठ तक नहीं सकते हैं। महाराज जी को देखकर डॉ. इकबाल सिंह जी ने उनसे विनती की वह कृपा करके सच्चे पातशाह जी को अर्ज करें। महराज जी ने कहा, ''सच्चे पातशाह जल्दी ही आने वाले हैं। महाराज जी के इतना कहने के बाद ही बाहर कार के रुकने की आवाजें आई और कुछ ही मिनटों के बाद सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने उनके घर में अपने चरण डाल कर पवित्र किया। क्योंकि डॉ. इकबाल सिंह स्वयं तो विस्तर से उठ नहीं पाते थे इसलिए सच्चे पातशाह जी ने अपने चरण उठाकर विस्तर पर ही रख दिए ताकि वे मत्था टेक सकें। डॉक्टर साहब ने सच्चे पातशाह जी से विनती की कि उनके पेट में साल डेढ़ साल से दर्द रहता है। आप ही कृपा करें। सच्चे पातशाह बोले तुम तो बिलकुल ठीक हो। किसी प्रकार की कोई चिंता

मत करो। इतना कह कर सच्चे पातशाह बाहर मोटर की ओर चले गए।

सच्चे पातशाह अभी मोटर तक पहुंच भी न पाए होंगे डॉ. इकबाल सिंह जी को ऐसा प्रतीत हुआ कि उन पर सतगुरु महाराज की कृपा हो चुकी है। उनका कष्ट निवारण हो चुका है। डॉ. इकबाल सिंह विस्तर पर उठ कर बैठ गए। उनके मन में आया कि वह अब जमीन पर खड़े हो सकते हैं। इतना सोचते ही वह बिना किसी के सहारे जमीन पर खड़े हो गए। अपनी पत्नी को आवाज लगाई कि वह उनकी चप्पलों का जोड़ा लेकर आए। जब उनकी श्रीमती चप्पलों का जोड़ा लेकर आई और उन्हें खड़े देखा तो वह बहुत हैरान हो गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह डॉ. साहब से बोली कि वह बैठ जाएं कहीं ऐसा न हो कि इतने लंबे समय के बाद खड़े होने पर उन्हें चक्कर आ जाए और वह कहीं गिर न जाएं। डॉ. साहब को सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज के वचनों पर पूरा विश्वास था। उसी विश्वास से उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वह पेशाब के लिए बर्तन न लाए खुद ही चल कर वह गली में एक कोने में पेशाब करेंगे। जब वह पेशाब करके गली से वापिस अपने कमरे में आए ही थे तो इतने में उनके पिताजी भी सतगुरु जी को मोटर में बिठाकर वापिस लौट आए थे। उन्होंने डॉ. इकबाल सिंह को चलते हुए देखा तो हैरानी से पूछा कि वह कहां गए थे। इस पर डॉ. इकबाल सिंह ने चौंका देने वाली खुश खबरी सुनाई कि अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हैं। उन्हें न ही पेट में कोई दर्द है और न ही चलने-फिरने में किसी के सहारे की आवश्यकता। उन पर सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी की अपार कृपा हो चुकी है। धन्य हैं सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज। अब डॉ. इकबाल सिंह जी पूरी तरह से स्वस्थ हैं। और सतगुरु महाराज की अपार कृपा से सैकड़ों हजारों मरीजों का प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा इलाज कर रहे हैं। सच्चे पातशाह ने इनको गोरखपुर में नैचरोपैथी कॉलेज में पढ़ने के लिए भेजा और वहां से यह नैचरोपैथी की उच्च शिक्षा प्राप्त करके लौटे अब वह 5 $^1/_2$ वर्षों से श्री भैणी साहब में रहकर साध संगत की सेवा कर रहे हैं।

साखी

डॉ. इकबाल सिंह जी का कहना है कि मरीजों पर कृपा तो सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज ही करते हैं पर उनका श्रेय वे डॉ. इकबाल सिंह को ही देते हैं। सतगुरु जी अकाल पुरुष हैं, सर्वज्ञ हैं। साक्षात नर के रूप में नारायण हैं। वे नर रूप में अपनी अनुकम्पाओं द्वारा समाज के दुखी जीवों को सुखी बनाते जा रहे हैं। जैसा कि रहीम ने अपने एक दोहे में कहा है—

देनहार कोई और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मोहि पर करें ताते नीचे नैन॥

पिछले वर्ष की एक घटना है जब 70 वर्ष की आयु के एक वृद्ध सन्त फुम्मन सिंह जी उत्तर प्रदेश से श्री भैणी साहब सतगुरु जी के दर्शनार्थ आए थे। उनकी दोनो आंखों की रोशनी हमेशा के लिए जा चुकी थी। डॉक्टरों ने साफ तौर पर कह दिया था कि अब ऑप्रेशन से भी यह आंखों की रोशनी लौट नहीं सकती। सन्त फुम्मन सिंह ने अपने भतीजे दीपक सिंह के द्वारा सच्चे पातशाह जी से प्रार्थना की कि हे सच्चे पताशाह! आप अपनी अपार कृपा करें और उनके फूफा जी की आंखों की रोशनी लौट आए। उस समय सच्चे पातशाह बूढ़े लोगों को दर्शन देने आए हुए थे। सच्चे पातशाह ने रछपाल सिंह जी से कहा, ''रछपाल इनकी आंखों की पुतली बदलवा दो तो उनकी आंखों की रोशनी वापिस आ जाएगी। रछपाल सिंह को आदेश मिला की वह डॉ. इकबाल सिंह को कहें कि वे सन्त जी को जालन्धर के अस्पताल में ले जाएं और वहां इनकी एक आंख में नई पुतली डलवा दें। रछपाल सिंह तो सच्चे पातशाह जी की सेवा में पूर्णतय रत रहते हैं। इस कारण वह जल्दी ही सतगुरु महाराज का संदेश डॉ. इकबाल सिंह को न पहुंचा पाए। प्रभु के चमत्कारों की कोई गिनती नहीं होती उसी रात आंखों के डॉक्टर आई सर्जन डॉ. जगदीप सिंह का डॉ. इकबाल सिंह को जालन्धर से फोन आया कि अभी-अभी किसी माई के मरने के पश्चात् अपनी आंखों की दोनों पुतलियां दान कर दी हैं। यदि आप के वहां किन्हीं दो मरीजों को आंखों की पुतली लगवानी हो तो तुरंत सुबह-सुबह मरीजों को लेकर जालन्धर पहुंचे। अभी तक डॉ. इकबाल सिंह को सतगुरु महाराज के आदेश की कोई सूचना नहीं मिली थी। परंतु फिर भी उन्होंने बूढ़े मरीजों में से दो तैयार किए। ताकि उन्हें जल्दी जालन्धर ले जाया जाए। तथा उनकी आंखों की पुतलियां बदल दी जाएं। कुछ समय पश्चात् सतगुरु जी के सेवक रछपाल सिंह डॉ. इकबाल सिंह जी को अचानक मिल गए और कहने लगे कि सच्चे पातशाह ने किसी मरीज की आंख की पुतली बदलने को कहा था। परंतु उन्हें याद नहीं आ रहा है कि मरीज पुरुष या स्त्री। इसी बीच दीदार सिंह भी डॉ. इकबाल सिंह जी को खोजता हुआ आ पहुंचा और डॉ. साहब से विनती की कि डॉ. साहब कल सतगुरु जी ने बुजुर्गों को दर्शन देते समय आदेश दिया था कि आप मेरे फूफाजी को जालन्धर ले जाकर उनकी आंख की नई पुतली लगवा दें। उनके इतना कहते ही रछपाल सिंह जी की यह गुत्थी सुलझ गई कि मरीज पुरुष था या स्त्री जिस पर सतगुरु महाराज की अपार कृपा दृष्टि हो गई थी।

डॉ. इकबाल सिंह ने बिना क्षण भर की भी देर किए बजुर्ग मरीज सन्त फुम्मन सिंह जी को तैयार किया और श्री भैणी साहब के प्रबंधकों से एक गाड़ी लेकर सतगुरु महाराज के चरणों में अरदास करके जालन्धर के लिए प्रस्थान किया।

इधर जालन्धर में डॉ. जगदीप सिंह अपने एक सहयोगी डॉक्टर के साथ मरीज की प्रतीक्षा कर रहे थे। आंखों की पुतलियां दान में मिल गई थीं। इसलिए डॉ. जगदीप सिंह कहते थे कि किन्हीं दो मरीजों को एक-एक आंख में पुतली लगा दी जाए। तो दो मरीजों को आंख की रोशनी मिल जाएगी तथा उनका जीवन प्रकाशमय हो जाएगा। इतने में डॉ. इकबाल सिंह दो रोगियों को साथ लेकर जालन्धर पहुंच गए। डॉ. जगदीप सिंह ऑप्रेशन की तैयारी में लग गए। आंखों का ऑप्रेशन शुरू हुआ। बाहर कमरे में बैठकर टी.वी. पर ऑप्रेशन की क्रिया देख रहे थे। डॉ. साहब ने स्पष्ट तौर पर देखा कि स. फुम्मन सिंह की आंख के नीचे चर्बी का पर्दा छाया हुआ था। जिसके कारण पुतली बदलने के बावजूद भी शायद वह देख न पाएंगे। फिर भी डॉ. इकबाल सिंह को अपने सतगुरु महाराज के वचनों पर पूरा विश्वास था कि सतगुरु महाराज के वचन व्यर्थ नहीं जा सकते। ड़ेढ-दो घंटे के बाद ऑप्रेशन समाप्त हुआ। डॉ. इकबाल सिंह ने डॉ. जगदीप सिंह से पूछा कि ऑप्रेशन कैसा रहा। इस पर डॉ. जगदीप सिंह ने कहा, ''कोई उम्मीद तो नजर नहीं आती थी। इस पर डॉ. इकबाल सिंह बोले, ''सतगुरु महाराज के घर में किसी बात की कमी नहीं है। मरीज की आंखों पर पट्टी बांध दी गई थी जो दो दिन के बाद खुलनी थी।

डॉ. इकबाल सिंह जालन्धर से श्री भैणी साहब वापिस लौट गए। वे दो दिन तक सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना करते रहे कि महाराज फुम्मन सिंह पर कृपा करें जिससे उसकी आंखों की रोशनी वापिस आ जाए। अगले दिन 11 बजने से दो मिनट पहले डॉ. इकबाल सिंह जी ने सतगुरु जी के चरणों में अरदास की। कि हे गरीब नवाज़ फुम्मन सिंह जी की आंखों का ऑप्रेशन तो हो गया है पर दया आप महाराज ने ही करनी है। सच्चे पातशाह जी ने कहा, ''उसकी आंख तो ठीक हो गई है। और उन्हें नजर आने लग गया है। सवा 11 बजे डॉ. जगदीप सिंह का जालन्धर से फोन आया। डॉ. इकबाल सिंह ने पूछा, ''पट्टी खुल गई है क्या''? डॉ. जगदीप सिंह ने उत्तर दिया कि पट्टी भी खुल गई है और उसे दिखने भी लग गया है। फिर डॉ. इकबाल सिंह ने पूछा कि आंख पर से पट्टी कितने बजे खोली थी? इस पर डॉ. जगदीप सिंह ने उत्तर दिया कि पूरे 11 बजे पट्टी खोली थी। डॉ. इकबाल सिंह को ज्ञान हो गया कि सतगुरु महाराज ने 11 बजने

में दो मिनट पहले ही कहा था। कृपा तो उसी समय हो गई थी। उन्होंने मन ही मन कहा, ''धन्य सतगुरु महाराज जगजीत सिंह जी की लीला अपरम्पार है। वे सचमुच ईश्वर के अवतार है तथा संसार के दुखियों का दुख दूर करने के लिए पृथ्वी पर उन्होंने अवतार लिया है।

साखी

वर्ष 1986-87 में डॉ. इकबाल सिंह जी का सन्तनगर में आयुर्वेदिक दवाइयों का एक चिकित्सालय था। चिकित्सालय के ठीक पीछे उनका घर था। एक दिन उन्होंने श्री भैणी साहब जाने का विचार बनाया अपना बैग तैयार किया और श्री भैणी साहब जाने के लिए चल पड़े। अचानक पेशाब की हाजत हुई। ये पेशाब करने के लिए एक तरफ जाने वाले थे कि इतने में सिरसा जाने वाली बस आ पहुंची। डॉ. साहब ने सोचा कि अगर वह बस छूट गई तो अगली बस एक घंटे के बाद आएगी। इसलिए उन्होंने यह बस ले ली। उन्होंने सिरसा पहुंचने तक लगभग डेढ़ घंटे तक अपना पेशाब रोके रखा। सिरसा पहुंच कर बस से उत्तर कर वह एक गली में पेशाब करने जा रहे थे कि इतने में लुधियाणे जाने वाली बस अड्डे पर आकर लग गई। डॉ. साहब दुविधा में पड़ गए कि वह पेशाब रोककर रखें या बस छोड़ दें। और अगली बस आने तक दो-ड़ाई घंटे तक इंतजार करें। आखिर उन्होंने बस ड्राईवर के बराबर वाली सीट पर अपनी रूमाली रखी और पेशाब करने चले गए। जब वह पेशाब करके अपना बैग लेकर बस की ओर चलने लगे तो देखा कि बस उन्हें छोड़ कर लुधियाणा की ओर चल पड़ी है। उन्होंने ध्यान से देखा कि ड्राईवर के बराबर वाली सीट पर जहां उन्होंने अपनी रूमाली रखी थी वहां एक सवारी बैठी थी। उनका मन बड़ा दुखी हुआ कि बस छूट गई है। उन्होंने बस अड्डे की बैंच पर बैठकर अरदास की कि जो उसकी रजा वह ठीक ही थी। बैंच पर बैठे-बैठे उनकी आंख लग गई। सतगुरु महाराज के शब्द उनके कानों में सुनाई पड़े सतगुरु जो करते हैं वह भले के लिए ही करते हैं। दस बारह मिनट बाद एक बरनाला जाने वाली बस आ गई। डॉ. इकबाल सिंह उस बस में सवार हो गए। मानसा बस अड्डे पर दोनों बसे साथ-साथ ही पहुंची। आगे वाली बस का स्टीयरिंग फेल हो गया और वह नहर में गिरते-गिरते बची। नहर पार करने के बाद बस ड्राईवर के नियंत्रण से बाहर हो गई और एक कीकर के पेड़ से जोर से टकराई। पीछे डॉ. इकबाल सिंह वाली बस भी घटना स्थल पर पहुंच गई।

डॉ. इकबाल सिंह ने बस से उतर कर सवारियों की सहायता के लिए दुर्घटना

ग्रस्त बस का दरवाजा खोला तो देखा कि जो सवारी उनकी रूमाली वाली सीट पर बैठी थी वह मर चुकी थी। अब डॉ. साहब को ज्ञान हो गया कि किस प्रकार सच्चे पातशाह सतगुरु जी ने पेशाब करने के बहाने उनकी बस छुड़वा कर उनकी जान की रक्षा कर ली। धन्य हैं सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी।

जा को राखे सतगुरु मार सके न कोय।
बाल न बांका करी सके जो जग बैरी होय॥

साखी

डॉ. इकबाल सिंह जी का कथन है कि वर्ष 1999 में कैनेडा से सूबा रेशम सिंह जी श्री भैणी साहब आए और सतगुरु जी के चरणों में अरदास की अब वे एयर-कंडीशन तथा फ्रिज का भारी काम नहीं कर सकते। और विनती की कि वे कृपा करके उसे नैचरोपैथी (प्राकृतिक-चिकित्सा) का काम सिखाएं। सच्चे पातशाह जी ने डॉ. इकबाल सिंह को हुक्म दिया कि सूबा रेशम सिंह को अढ़ाई तीन मास के भीतर वह यह काम सिखाएं। डॉ. इकबाल सिंह ने सतगुरु जी के चरणों में अरदास की कि वह काम वो हमको सिखाएंगे परंतु पहले जो मैडीकल कैंप कनाडा में लगाना है उसके लिए डॉ. इकबाल सिंह जी खुद जाकर सूबा रेशम सिंह की सहायता करना चाहेंगे। इस प्रकार सूबा रेशम सिंह की नैचरोपैथी में ट्रेनिंग पूरी हुई। और डॉ. इकबाल सिंह को आदेश दिया कि वह कनाडा जाने की तैयारी करें। अब प्रश्न यह था कि कैनेडा का वीजा स्पांसरशिप के बिना कैसे मिलेगा। सच्चे पातशाह के आदेशानुसार डॉ. इकबाल सिंह जी मनचंदा जी से मिले और प्रार्थना की कि वह उन्हें अमरीका का वीजा ले दें। पर मनचंदा जी इसमें आनाकानी की। न तो स्पांसरशिप दिलवाई और न ही वीजा। डॉ. इकबाल सिंह निराश होकर रमेशनगर मुरझाए लौट आए तथा आकर विस्तर पर लेट गए। उदासीनता के कारण उन्हें नींद न आई, रात के 10 बजे होंगे जब डॉ. इकबाल सिंह को नींद आ गई। उसी समय सच्चे पातशाह जी ने दर्शन दिए। आदेश दिया कि वह इंग्लैंड का वीजा लगवा लें। उसी समय डॉ. इकबाल सिंह उठ गए। वह बेसमेंट में गए जहां वीजा लगवाने वाले काफी लोग सोए हुए थे। डॉ. साहब ने उनसे कहा कि वे अभी स्नान करके आएंगे। कृपा करके उनके साथ ब्रिटिश अम्बैसी चलें क्योंकि आधी रात को ही वीजा लगाने वालों की लंबी कतार लग जाती थी। कोई भी व्यक्ति उनके साथ चलने को तैयार न हुआ। डॉ. साहब को अपने सतगुरु पर पूरा विश्वास था कि वह कृपा कर चुके हैं। अब तो केवल मात्र अम्बैसी ही जाने की आवश्यकता थी।

डॉ. इकबाल सिंह आधी रात को 2 बजे स्नान करके सड़क पर आ खड़े हुए। वे आटो रिक्शा लेकर तीन बजे से पहले ब्रिटिश अम्बैसी पहुंच गए। वहां पर कुछ लोग पहले से लाइन में लगे हुए थे। डॉ. साहब उन लोगों के पीछे खड़े हो गए। 10 बजे के लगभग उनकी बारी आई। एक महिला अधिकारी उनके सामने आई। उस महिला ने सतगुरु जी के वचन दुहराए। वह कहने लगी कि वह तो कब से उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। कुछ ही मिनटों में इंग्लैंड का वीजा बिना किसी सिफारिश के लग गया। धन्य हैं सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी जो अंतर्यामी हैं। घट-घट के वासी हैं। दुखियों के भगवान हैं। नर रूप में नारायण के अवतार हैं।

भजन करै सतगुरु भगवाना।
पावै स्वर्ग मोक्ष सुख नाना॥
जा पर कृपा करें गुरुदेवा।
पग-पग पर सबको सुख मेवा॥
सतगुरु भजन करै मन मेरो।
अमृत वर्षा होत घनेरो॥

सन्त उज्वल सिंह सुपुत्र सन्त कृपाल सिंह दादा श्री टहल सिंह, सेन हौजे (अमरीका)

सन्त उज्वल सिंह जी का परिवार सतगुरु श्री रामसिंह जी की कृपा से नामधारी सजा हुआ है। और आज तक गुरु घर से जुड़ा हुआ है।

साखी

वर्ष 1996 में सन्त उज्वल सिंह जी एक कार दुर्घटना में घायल हो गए थे। वह चौदह दिन तक अस्पताल में भर्ती रहे। हुआ ऐसा कि एक दिन रविवार प्रभात समय पौने 5 बजे सन्त जी अपनी कार में गुरुद्वारे जा रहे थे। तो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या नं. 101 पर इनकी कार दुर्घटना ग्रस्त हो गई। इनकी टांग की हड्डी दो स्थानों से टूट गई। इसके साथ ही इनका कंधा भी उतर गया। आप अस्पताल में 14 दिन तक रहे। तथा अढ़ाई वर्ष तक सन्त जी कोई काम नहीं कर पाए। एक दिन उन्होंने सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना की वह बहुत ही कष्ट में हैं। सतगुरु जी की ओर से आदेश हुआ कि वह एक माला भगवती की और एक माला भजन की करके सच्चे पातशाह के चरणों में अरदास करें। सतगुरु कृपा करेंगे। उन्होंने सतगुरु जी के आदेशानुसार एक माला भगवती की तथा एक माला भजन की करके अरदास कर दी। सतगुरु जी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा इनका कष्ट निवारण कर दिया। सतगुरु महाराज की कृपा के कारण उन्हें एक प्रकार से नया जीवन प्राप्त हुआ है तथा यह पूर्णतया स्वस्थ हैं।

दूसरी साखी

एक बार गांव सन्त नगर का एक युवक करनैल सिंह (सुपुत्र जगत सिंह) एक गंभीर मुसीबत में पड़ गया। वह किसी दलाल के माध्यम से अमरीका गया। सन्त उज्वल सिंह भी दलाल के माध्यम से ही अमरीका गए थे। तथा अमरीका पहुंचते ही वह जेल में बन्द कर दिए गए। वह करनैल सिंह के साथ ही जेल में रहे। सन्त जी तो दो महीने में ही जेल से छूट गए थे परन्तु करनैल सिंह को जेल में तीन-चार साल तक रहना पड़ा।

करनैल सिंह के पिता ने सच्चे पातशाह जी से अर्ज की कि हे सच्चे पातशाह मेरा बेटा करनैल सिंह कैलेफोर्निया (अमरीका) की जेल में बन्द है आप हजूर कृपा करके किसी के जिम्मे यह काम लगाएं तथा उसे जेल से मुक्ति दिलवाने की

कृपा करें। इसके लिए जो भी पैसा खर्च होगा वह उसे वहन करने को तैयार हैं। सच्चे पातशाह ने यह काम सरदार त्रिलोचन सिंह, प्रधान गुरुदेव सिंह और उज्वल सिंह के जिम्मे लगा दिया। और कुछ दिनों के पश्चात् करनैल सिंह जेल से बाहर आ गए। तथा उसके कानूनी कागजात भी सब कुछ तैयार हो गए। बाद में करनैल सिंह की अमरीका में नौकरी भी लग गई। वह पूरी प्रसन्नता से अमरीका में रह रहा है। सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह को हर नामधारी व्यक्ति की चिन्ता लगी रहती है। तथा सूचना मिलते ही वह हर एक की सहायता करते हैं तथा दुख-संकट का निवारण करते हैं। नामधारी संगत का एक यह भी कर्तव्य है कि वह पूरी नामधारी मर्यादा में रहकर उसका पालन करे तथा सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज की आज्ञा का पालन करे। इस समय सैन हौजे में 15-16 नामधारी सिख रहते हैं।

गीता में भगवान कहते हैं—

यो मम पश्यति सर्वत्र सर्वत्र मयि पश्यन्ति अर्थात जो भगवान के चरणों में अपना मन लगाए रहता है भगवान उसकी ओर अपना मन लगाए रहते हैं। जो भी सतगुरु महाराज के चरणों में अपना मन लगाए रहता है सतगुरु सदा उसकी रक्षा सहायता करते हैं।

सन्त जसपाल सिंह सचदेव सुपुत्र सन्त प्यारा सिंह सचदेव, बैंकाक

सन्त जसपाल सिंह जी का परिवार पिछली कई पीढ़ियों से नामधारी मर्यादाओं का पालन करता हुआ सतगुरु महाराज के चरणों से जुड़ा है। इनके पिता का नाम सन्त प्यारा सिंह जी है। यह पूरी श्रद्धा भक्ति से सतगुरु के चरणों से जुड़े रहे। सन्त जसपाल जी सात भाइयों में से सबसे छोटे हैं। अपने पिता के जीवन काल में उनके साथ हर जगह जाया करते थे। क्योंकि वह सब भाईयों में सबसे छोटे थे। उनकी आयु उस समय 15-16 वर्ष की रही होगी। जब इनके पिता जी सन्त प्यारा सिंह ईश्वर को प्यारे हो गए। 15-16 वर्ष की आयु में सन्त जसपाल सिंह जी को सतगुरु श्री जगजीत सिंह महाराज के बारे में अच्छा खासा ज्ञान प्राप्त था कि सतगुरु महाराज किस प्रकार अलौकिक ढंग से कृपा करते हैं। तथा कैसे अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

समय व्यतीत होता गया। धीरे-धीरे इनके मन में सतगुरु जी के प्रति अपार-श्रृद्धा हो गई। एक बार सन्त जसपाल सिह जी के साढ़े पांच वर्ष के बेटे को खुजली हो गई। बच्चा खुजली के कारण बड़ा दु:खी था। थोड़े समय के लिए आराम आ जाता था। पर थोड़ी देर के पश्चात् वैसी ही स्थिति दुबारा हो जाती। उनका वह बालक संगीत भी सीख रहा था। और खुजली के कारण बालक की पढ़ाई में भी विघ्न पड़ रहा था। उन्हीं दिनों सच्चे पातशाह जी बैंकाक पधारे हुए थे। जसपाल सिंह ने सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज के चरणों में विनती की कि हे गरीब नवाज़ मेरे बेटे को खुजली का कष्ट है। आप कृपा करें जिससे दवाई न खानी पड़े। और कोई भजन करने से बालक ठीक हो जाए। सच्चे पातशाह जी ने अपने सेवक सन्त रछपाल सिंह को संबोधित करते हुए कहा कि अफ्रीका फोन करके इनकी दवा मंगा दो। दो दिन तक अफ्रीका फोन करते रहे परन्तु वैद्य जी से संपर्क न हो सका। जसपाल सतगुरु महाराज से दुबारा अर्ज की पर कोई उत्तर न मिला। सतगुरु महाराज को भारत वापिस आना था। इसलिए सब लोग सतगुरु महाराज को विदा करने हवाई अड्डे पर चले गए। उनके साथ जसपाल सिंह भी अपने बेटे को साथ लेकर चले गए। सतगुरु महराज बैंकाक के हवाई अड्डे पर बैठे थे। उनके सामने ही श्री जसपाल सिंह के बेटे को खुजली होनी शुरू हुई। जसपाल सिंह ने सच्चे पातशाह से फिर अर्ज की। वह कहने लगा, ''सतगुरु महाराज! आप स्वयं देख रहे हैं इस बालक को

कितना कष्ट हो रहा है। इस पर सच्चे पातशाह ने पूछा क्या अफ्रीका फोन नहीं हुआ और फिर कहा कि सरदार निर्भय सिंह से अफ्रीका के वैद्य का नंबर लेकर उसको सतगुरु महाराज का आदेश सुनाएं। इसके बाद सतगुरु महाराज विमान में बैठकर भारत के लिए रवाना हो गए।

कुछ दिन पश्चात् बच्चे की तकलीफ और बढ़ गई। जसपाल सिंह ने वैद्य जी को फोन किया। वैद्य जी फोन पर मिल गए। और वैद्य जी ने कहा कि वह अफ्रीका से दवाई कैसे भेज सकते हैं? और दूसरा कोई उपाय न था। उनकी बात सुनने के पश्चात् जसपाल सिंह जी की तीसरी आंख खुल गई। उन्हें विचार आया कि कृपा तो सतगुरु महाराज ने ही करनी है बाकी सब बहाना है। कुछ समय बाद सच्चे पातशाह जी फिर बैंकाक आए। और जसपाल ने सतगुरु महाराज से प्रार्थना की। उन्होंने ने अफ्रीका में वैद्य गुरचैन सिंह को फोन किया। वैद्य जी ने दवाई भेजने में अपनी असमर्थता बताई। और तबसे उनके बेटे को खुजली का कष्ट नहीं हुआ। और आज तक वह रोगमुक्त है। धन्य है सतगुरु जी महाराज।

कारण करन स्वयं वही हैं स्वयं वही करतार।
जिस पर कर दे कृपा स्वयं वह कभी न हो बीमार।।

सूबा सतनाम सिंह, नैरोबी वाले

सतनाम सिंह जी ने एक खुले सिख की साखी सुनाई। वह श्री भैणी साहब गुरुद्वारे में आए और सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज के चरणों में माथा टेका। सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि ठाकुर उदय सिंह जी और सन्त जगतार सिंह जी को बुलाओ तथा उनकी बात सुनो। सन्त जी ने प्रार्थना की वे एक खुले सिख हैं। उन्होंने बताया कि 1968-69 में उनका काम-धन्धा बिलकुल मंदा पड़ गया था। किसी ने उन्हें बताया कि वह गुरु वाणी का पाठ करें। जब उतने दिन उन्होंने पाठ किया। दिन पूरे हो गए तो उनका दिमाग हिल गया। काम करने को दिल नहीं करता था। सारा दिन बेकार घूमते रहते। कई सन्तों के पास गए कि वो उन्हें शांति प्रदान करें। किसी तरह एक दिन वह परेशानी की हालत में नहर के पास चले जा रहे थे कि अचानक एक दिन एक बुजुर्ग नहर का पानी पी रहे थे। और यह खुले सिख नल का पानी पी रहे थे। उन्होंने पूछा कि क्या बात है तो खुले सिख ने बुरे मन से कहा कि वह बहुत कष्ट में हैं। इस बुजुर्ग ने वचन दिया कि वह श्री भैणी साहब जाएं आप पर कृपा हो जाएगी। खालसा सिख ने कहा कि वह श्री भैणी साहब क्यों जाएं? उस बुजुर्ग ने तीन-चार बार फिर कहा कि उनकी समस्या श्री भैणी साहब ही हल हो सकती है और कहीं नहीं। खालसा सिख ने हां कर दी उनके पास उस समय एक साईकिल थी। जिसकी हवा निकली हुई थी। वह साईकिल को हाथ से धकेलते हुए आगे जा रहे थे। पीछे-पीछे वह बुजुर्ग चले आ रहे थे। बातचीत चल रही थी। अचानक खालसा सिख को पीछे से आवाज आनी बंद हो गई। उसने पीछे मुड़कर देखा तो पीछे कोई नजर नहीं आया। उन्होंने राह में चलते एक आदमी से पूछा कि यहां पर सफेद कपड़ों वाला एक बुजुर्ग था जो कि मेरे पीछे-पीछे चले आ रहा था। आपने उसे देखा है। न जाने कहां चला गया। तो उन्होंने बताया कि उन्होंने किसी सफेद कपड़ों वाले बुजुर्ग को नहीं देखा। खालसा सिख ने जोर-जोर से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। कुछ समय बाद वह श्री भैणी साहब आए तो सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के दर्शन किए। सच्चे पातशाह ने वचन किया पहुंच गए ना? उसका यह सुनना था कि वह सतगुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। वह आज तक सतगुरु जी के दर्शन करके आमिट सन्तोष असीम प्रसन्नताएं तथा सुख प्राप्त करता है। वह सतगुरु महाराज को दिन रात भजता है।

जय श्री सच्चे पातशाह श्री सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी।

सन्त कुलविन्दर सिंह सुपुत्र सन्त हरि सिंह गांव : लिसाड़ा (न्यूयार्क)

सन्त कुलविन्दर सिंह जी का परिवार पहले कई पीढ़ियों से नामधारी विश्वासों से सुसज्जित है। हालांकि कुलविन्दर सिंह जी ने केश नहीं रखे हुए थे। पर पूरी नामधारी मर्यादा के भीतर ही रहते थे। सन्त जी सतगुरु जगजीत सिंह जी के प्रति अपनी श्रद्धा रखते हैं, यह अपनी आय का 10 प्रतिशत दसौंध गुरु घर में भेजते हैं। सन्त जी अमेरिका में लैंडस्केपिंग और घास लगाने का व्यापार करते हैं। पिछले वर्ष मार्च 2000 में सन्त जी के बड़े भाई सन्त रनजीत सिंह जी ने इंग्लैंड के एक सन्त सरदार बहादुर सिंह जी के साथ मिलकर श्री भैणी साहब में होला मोहल्ला की सेवा ली। सन्त कुलविन्दर सिंह जी भी भजन वाणी का आनन्द लेने श्री भैणी साहब होला मुहल्ला में गए।

वर्ष 1997 में सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी के लास एंजलस आने की सूचना मिली। परमजीत सिंह ने सन्त कुलविन्दर सिंह से अनुरोध किया कि वह भी उनके साथ लास एंजलस चलें। और सतगुरु जी के दर्शन का आनन्द लाभ प्राप्त करें। परन्तु सन्त जी ने अपनी विवशता बताई और कहा कि वह वादा तो नहीं करते कि वह लास एंजलस जा पाएंगे या नहीं। परमजीत सिंह जी नाराजगी दिखाते हुए कहा कि इसका मतलब यह है कि आप अपने घर पर सच्चे पातशाह जी के चरण डलवाना नहीं चाहते। इस पर सन्त जी ने कहा कि यदि सतगुरु महाराज जी की इच्छा होगी तो वह चरण अवश्य डालेंगे। सन्त जी के मन में बड़ा खेद हुआ। वह सोचने लगे कि वह तो सच्चे पातशाह जी के प्रति आस्था और अपार श्रद्धा रखते हैं परन्तु परमजीत ने यह कैसी बात कह दी है। सन्त जी ने मन ही मन सच्चे पातशाह जी के चरणों में अरदास की कि हे सच्चे पातशाह मैं अपने व्यापार में इतना व्यस्त हूं कि मैं आपके दर्शन करने लास एंजलस भी नहीं आ पाया परन्तु आप प्रभु कृपा करो और मेरे घर पर चरण डालो। उनकी अरदास मंजूर हो गई। और सन्त जी को स्वप्न में सच्चे पातशाह जी ने दर्शन दिए। और सुबह सवेरे चार बजे सच्चे पातशाह ने अपने चार-पांच सिंहों के साथ इनके घर पर चरण डाले। और बचन किया, ''तेरी अरदास मंजूर हो गई तो असी तेरे घर चरण पान आ गए।'' सच्चे पातशाह जी ने फिर आगे बचन किया, ''खुलकर दर्शन कर ले।'' तुम्हें निराश नहीं करना था मैंने। अगले दिन सच्चे पातशाह जी ने बहुत से नामधारी सिखों के घर में चरण डाले तथा सन्त कुलविन्दर सिंह जी

के घर पर भी सतगुरु महाराज ने चरण डाले और 10-15 मिनट तक वहां पर बैठे रहे।

जब सन्त जी का बेटा केवल 6 महीने का ही था तो उसे सच्चे पातशाह जी से भजन दिलवाया गया। सन्त जी ने स्वयं भी अपने बेटे के साथ भजन लिया। इनकी बेटी ने भी भजन लिया सगतुरु जी ने इन्हें हुकम दिया कि वह केश धारण करें। सन्त जी ने सतगुरु महाराज का आदेश शिरोधार्य कर स्वीकार किया। और कहा कि सच्चे पातशाह कृपा करें तो केश धारण कर पाऊंगा। सतगुरु जी ने कहा, "हमारी कृपा तो है ही, तुम भी तो हिम्मत करो। सन्त जी का कहना था कि यदि वह अपनी आय से 10 प्रतिशत (दसौंध) निकालते हैं तो तीन गुना अधिक पाते भी हैं। पैसों अर्थात् धन का कभी किसी प्रकार का कोई अभाव प्रतीत नहीं होता। सन्त जी का स्वयं का यह कहना है कि वह कोई अधिक पढ़े-लिखे तो हैं नहीं और न ही इंजीनियर हैं। उन्हें तो बस खेती करना ही आता है। परन्तु सच्चे पातशाह जी की कृपा से काम-धंधा अच्छा चल रहा है। सन्त जी कभी भी कोई नया काम-धंधा शुरू करते हैं तो काम शुरू करने से पहले सतगुरु के चरणों में अरदास अवश्य करते हैं। और महाराज की कृपा से सारा काम ठीक ढंग से होने लगता है।

सन्त कुलविन्दर सिंह के दो भाई और दो बहनें भारत में रहते हैं तथा दो भाई इंग्लैंड में रहते हैं। सन्त जी का पूरा परिवार सुख पूर्वक जीवन बिता रहा है। सन्त जी की माताजी का वर्ष 1993 में देहावसान हो गया था। इनका एक बड़ा भाई भी स्वर्ग सिधार गया है। सन्त जी के पिता इंग्लैंड में रहते हैं।

सारे परिवार पर सतगुरु महाराज की परम कृपा है। सारा परिवार सतगुरु महाराज की कृपाओं के कारण परम आभारी हैं।

श्री बलविन्दर सिंह सुपुत्र सन्त पालसिंह सुपुत्र बुध सिंह हलवाई : लुधियाना (न्यूयार्क)

सन्त जी का परिवार शुरू से ही नामधारी विश्वासों को मानता चला आ रहा है। ये लोग लुधियाणे में हलवाई की दुकान चलाते रहे हैं। और आजकल न्यूयार्क (अमेरिका) में केटरिंग का काम करते हैं।

सन्त जी को कई बार श्री भैणी साहब से आदेश आता कि जलेबियां बनानी हैं तो ये सहर्ष श्री भैणी साहब आते और बड़ी श्रद्धा से जलेबियां बनाते। इन्हें मिठाइयां बनाने के लिए ही प्राय: श्री भैणी साहब से बुलावा आता था। इनके मन में इच्छा हुई कि सच्चे पातशाह को अपने हाथ से बनाकर लंगर में भोजन करवाना है। इनकी यह इच्छा भी सतगुरु महाराज ने पूरी कर दी। जब उन्होंने अमेरिका जाकर इनके हाथ का बना भोजन पाया।

सन्त जी के मन में अमेरिका जाने की इच्छा हुई तो ये सतगुरु महाराज के दर्शन करने के लिए श्री भैणी साहब जाने को तैयार हुए। यह रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। सच्चे पातशाह जी की ऐसी कृपा हुई कि इन्हें स्टेशन पर ही सतगुरु श्री जगजीत सिंह के दर्शन हो गए। एक प्रकार से अमेरिका जाने की इन्हें स्वीकृति मिल गई। अब सन्त जी अमेरिका जाने की तैयारी करने लगे। एजेंटों के द्वारा इन्होंने अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। इनके साथ दूसरे अनेक लोग भी अमेरिका पहुंचे। पर अमेरिका पहुंचते ही अवैध पासपोर्ट के अपराध में इन्हें जेल में बंद कर दिया गया।

जेल में एक रात इन्हें सतगुरु जी ने दर्शन दिए। और कहा कि वह उसके साथ हैं। घबराना नहीं। जितने दिन हो सके सोध रखना। आगे सतगुरु कृपा करेंगे। हुआ यह कि सन्त जी हांगकांग होते हुए सैन फ्रांसिस्को हवाई अड्डे पर पहुंचे। तो वहां पर इमीग्रेशन वालों ने इनसे पूछ लिया कि क्या यह पासपोर्ट आपका है। तो सन्त जी ने सच्चाई बता दी और कह दिया कि 'जी नहीं।' यह तो डुप्लीकेट पासपोर्ट है। बस इनका इतना कहना था कि इनको और इनके साथ सत्रह दूसरे लोगों को भी जेल भेज दिया गया। इनमें से सन्त जी को ही जेल में बाँड हुआ और चार हजार डालर में एक मित्र ने इनकी जमानत करवा ली। एक सरदार वकील जेल में आया और इनसे वायदा किया कि वह इनका मुकदमा

लड़ेगा। उस वकील ने इनका केस लड़ा और एक महीने में इनका बाँड हो गया। जेल से बाहर आने पर वकील साहब ने एक रैस्तोरा में इन्हें नौकरी भी दिलवा दी। वहां यह केवल शाकाहारी भोजन ही बनाते रहे। एक वर्ष के बाद इनको ग्रीनकार्ड भी मिल गया। और बाद में यह न्यूयार्क पहुंच गए। न्यूयार्क पहुंचने पर इनका नामधारी साध संगत से संपर्क हो गया। इस प्रकार अब यह नामधारी साध संगत के संपर्क में रहने लगे हैं।

पिछले साल की बात है जब सच्चे पातशाह जी न्यूयार्क गए और इनको मौका मिल गया। इन्होंने अपने हाथ से लंगर बनाकर सच्चे पातशाह को भोजन कराया।

अब सन्त जी न्यूयार्क में टैक्सी चलाते हैं तथा थोड़ी देर के लिए हलवाई का कार्य भी करते हैं। यह पिछले छः सात वर्षों से न्यूयार्क में रह रहे हैं। यहां पर सच्चे पातशाह सतगुरु जी की कृपा से इन्होंने अपना मकान भी खरीद लिया है तथा गुरुद्वारे में यह तीन चार सौ लोगों के लिए लंगर भी बनाते हैं। लगभग हर रविवार को यह नित्य नियम भजन भक्ति आराधना पर आते हैं और सतगुरु जी की कृपा से यह बाकायदा भजन भक्ति आराधना आदि करते हैं।

सन्त परमजीत सिंह चाना
सुपुत्र सन्त सन्तोख सिंह : सेन हौजे

सन्त सन्तोख सिंह जी का परिवार अनेक पीढ़ियों से नामधारी विश्वासों से जुड़ा हुआ है। इनका परिवार सतगुरु जी जगजीत सिंह जी के प्रति अपार श्रद्धा रखता है।

साखी

वर्ष 1999 में सन्त जी की एक बड़ी भयंकर दुर्घटना हो गई थी। हुआ यों कि सन्त जी कैंपबैल इलाके में लाल बत्ती पर बत्ती बदलने का इंतजार कर रहे थे। इतने में पीछे से आती एक कार ने इनकी कार को इतनी जोर से टक्कर मारी कि सन्त जी की रीढ़ की हड्डी और गले पर बहुत जोर से चोट लगी। यह चोट बाहिर से तो नजर नहीं आती थी पर अंदर से यह बड़ी भयंकर चोट थी। इस कार दुर्घटना के बावजूद सन्त जी अपनी गाड़ी खुद चलाते रहे। परिणामस्वरूप इनकी सेहत दिन प्रतिदिन खराब होती चली गई। उन्होंने बहुत से डॉक्टरों को दिखाया। फिजियोथेरापी भी करवाई परंतु फिर भी इनकी हालत खराब ही होती गई। कोई फायदा न हुआ। कई एक्स-रे भी करवाए गए। सीटीस्कैन भी हुए तब पता चला कि इनकी रीढ़ की हड्डी की एक डिस्क बहुत क्षतिग्रस्त हो गई है। ये फिजिकल थिरैपी करवाते रहे। ये सब करवाते दो महीने बीत गए। पर कुछ भी अंतर न आया काफी इलाज करवाने के बाद भी इनकी हालात वैसी की वैसी ही रही, आखिर में डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें कोई विशेष कारण नहीं दिख रहा। अंत में सभी जगह से निराश होकर सन्त परमजीत सिंह जी ने सच्चे पातशाह जी के चरणों में आश्रय लेने की मन में सोची। और सच्चे पातशाह जी को अर्ज की, "हे गरीब नवाज! आपजी बख्शीश करो।" उन दिनों सन्त जी पगड़ी भी नोकदार बांधते थे। धीरे-धीरे उन्होंने अपने आप ही पगड़ी भी सीधी कर ली। और उसके साथ-साथ ही उनकी हालात में सुधार आने लगा। हालांकि सन्त जी को बिना कुछ कामकाज के डेढ़ वर्ष तक घर में रहना पड़ा। इस बीच उन्होंने कोई दवा नहीं खाई। मालिश ही करते रहे। धीरे-धीरे सतगुरु महाराज की अपार कृपा से सन्त जी अब बिलकुल ठीक हो गए हैं। पहले ध्यान आदि में उनका मन भी नहीं लगता था परंतु सच्चे पातशाह जी ने इन पर ऐसी कृपा की अब ध्यान में इनका मन लगने लगा है। तथा साथ ही सोध भी रख ली है। सोध का जल यह चशमे से लाते

हैं तथा चश्मे के जल से ही लंगर पकता है। इसके बाद सच्चे पातशाह जी ने इनके घर पर तीन-चार बार चरण डाले हैं।

सच्चे पातशाह 1995-96 में लॉस एंजलस आए थे। सारी साध संगत ने कार्यक्रम बनाया कि सतगुरु महाराज के दर्शन करने के लिए इन्हें लॉस एंजलस लाया जाए। सन्त परमजीत सिंह अपनी देहाड़ी बचाने के लालच में सोचने लगे कि वह सच्चे पातशाह जी के दर्शनों के लिए कैसे जाएं। इस बार बात नहीं बनती थी क्योंकि कार दुर्घटना से पहले सन्त जी टैक्सी चलाने लगे थे। कार दुर्घटना के बाद इन्होंने टैक्सी चलाना भी छोड़ दिया था। और इन दिनों यह पार्ट टाईम काम करके अपना निर्वाह चलाने लगे थे। इस कारण सन्त जी सच्चे पातशाह जी के दर्शन न कर पाए। मन बहुत दुखी हुआ तथा इन्होंने मन में ठान लिया कि अगली बार जब सच्चे पातशाह जी का दौरा लगेगा तो आप उनके दर्शन अवश्य करेंगे। भले उनकी दिहाड़ी क्यों न छूट जाए।

इनकी प्रार्थना सच्चे पातशाह जी ने सुन ली और अगले वर्ष 1997 में लॉस एंजलस में सन्त जी को दर्शन दिए। प्रधान गुरदेव सिंह जी का लॉस एंजलस से फोन आया कि सच्चे पातशाह फलां दिन दर्शन देने वाले हैं। उन दिनों सन्त जी को लेखाकार का कोर्स करके नई-नई नौकरी मिली थी। और उन्होंने एक दो दिनों के भीतर ही अपना कार्य-भार संभाला था। उन्होंने मालिकों को बताया कि वह उनको सच्ची बात बताकर एक दो दिन की छुट्टी मांग लेंगे। इसके बावजूद यदि वह उन्हें छुट्टी न दें या फिर नौकरी से ही क्यों न निकाल दें। उन्होंने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह सच्चे पातशाह जी के दर्शन अवश्य करेंगे। ऐसा निश्चय करने के बाद सन्त जी ने अपने मालिक को फोन किया तथा उनसे निवेदन किया कि वह सच्चे पातशाह जी के दर्शनों के लिए लॉस एंजलस जाना चाहते हैं। इस कारण वह दो-तीन दिन बाद ही ड्यूटी पर लौट पाएंगे। इस कारण वह उन्हें दो दिन की छुट्टी देने की कृपा करें। सच्चे पातशाह जी की ऐसी कृपा हुई कि इनके मालिक ने फोन पर इन्हें कह दिया कि वह दो दिन बाद नौकरी पर आ सकते हैं। उनकी नौकरी सुरक्षित रहेगी। हालांकि सन्त जी को इन दो दिन छुट्टी के पैसे नहीं मिलने थे पर उन्होंने पैसों की परवाह नहीं की। और लॉस एंजलस जाकर सतगुरु महाराज के खुले दर्शन किए। और सच्चे पातशाह का आशीश प्राप्त किया। सच्चे पातशाह जी का डेरा सरदार त्रिलोचन सिंह जी के घर पर पड़ा था। सन्त जी सच्चे पातशाह के दर्शन करके वापिस अपनी नौकरी पर चले गए। इनके दो दिन की छुट्टी से कठिनाई से दो तीन सौ डालर का नुकसान हुआ होगा परंतु सच्चे पातशाह जी की कृपा से इनको किसी और काम से पांच सौ डालर का लाभ

प्राप्त हो गया। इनकी कार दुर्घटना के कारण डेढ़ वर्ष तक घर बैठे रहने के कारण कोई पच्चास साठ हजार डालर का नुकसान हुआ होगा। परंतु सतगुरु तो हृदय की बात जान लेने में सक्षम हैं। उन्होंने सारी बात जान ली, उनकी ऐसी कृपा बरसी कि इनको तीन गुना अधिक लाभ हो गया। डेढ़ साल की सारी कसर सच्चे पातशाह ने पूरी कर दी। जब कभी भी सच्चे पातशाह अमरीका गए तो सन्त जी का मन दौड़कर दर्शने करने का हो जाता था।

दूसरी साखी

अगली बार जब सच्चे पातशाह जी लॉस एंजलस आए तो सन्त परमजीत सिंह जी लॉस एंजलस आए तो सन्त परमजीत सिंह जी सपरिवार दर्शन करने गए। दो दिनों के बाद रात को सच्चे पातशाह जी से आज्ञा मांगी। सच्चे पातशाह जी ने इन्हें अपने पास बुलाकर थपथपाया और घर जाने की अनुमति प्रदान कर दी। रात के 9 बजे का समय था, सन्त जी सपरिवार सहित दर्शन करने के बाद लॉस एंजलस से अभी बाहर ही निकले थे कि बड़े जोर से वर्षा होने लगी। बिजली कड़कने लगी। बच्चे कार में बैठे थे। सन्त जी कार चला रहे थे, किसी ने वीयर की खाली बोतल सड़क पर फेंकी हुई थी जो दूर से दिख तो गई परंतु सन्त 50-60 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से गाड़ी चला रहे थे। इसलिए गाड़ी रोकते-रोकते गाड़ी का पिछला टायर उस वीयर की टूटी बोतल के शीशे पर चढ़ गया। और पिछला टायर फट गया। गाड़ी एक तरफ रुक गई। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा था। उनके पास न तो कोई टार्च थी और न ही रोशनी का कोई अन्य साधन। अचानक उन्होंने देखा कि पास ही टेलीफोन लगा हुआ है। सन्त जी ने दौड़कर ट्रिपल ए (एएए) को फोन किया। 15 मिनट के बाद ही एक ट्रक आ गया और उसने कार का टायर बदल दिया। क्योंकि टायर में हवा कम थी इसलिए उस ट्रक के पीछे चलकर एक पेट्रोल पम्प से हवा भरवाई। और सुबह सवेरे सन्त जी अपने परिवार सहित कुशलपूर्वक अपने घर पहुंच गए। सन्त जी ने सतगुरु महाराज का कोटि-कोटि धन्यवाद किया कि आपने अपना हाथ रखकर हमारे सारे परिवार की रक्षा कर ली। इस प्रकार कोई बड़ा भयंकर ग्रह टल गया।

वर्ष 1999 में सच्चे पातशाह जी विमान द्वारा आ रहे थे तो रास्ते में फीनिक्स से अनके नामधारी लोग इस विमान में चढ़ गए, ताकि वे सच्चे पातशाह जी के दर्शन कर सकें। उस समय सच्चे पातशाह जी योगी हरभजन सिंह खालसा को देखने जा रहे थे। इस विमान में रौनक बढ़ गई। जहाज की परिचारिकाओं ने सच्चे पातशाह जी के साथ फोटो खिंचवाया तथा नामधारी इतिहास पूछा। सतगुरु

महाराज वहां से सीधे न्यू मैक्सिको गए जहां योगी जी रहते थे। न्यू मैक्सिको पहुंचने पर वहां अमेरिकन सिख सच्चे पातशाह जी को लेने आए। एक कोठी में सच्चे पातशाह जी का डेरा था और दूसरी कोठी में साध संगत के ठहरने का प्रबंध था। एक अलग स्थान पर संगीत सम्मेलन का कार्यक्रम था। गोरे अमेरिकन सिख सारा प्रबंध करने में जुटे थे। इन सब अमरीकनों को योगी जी ने ही सिख धर्म की दीक्षा दी थी। योगी जी बहुत बीमार थे। अपने स्थान से हिल भी नहीं पाते थे। गोरे सिक्खों ने शास्त्रीय संगीत गाया। बाद में योगी जी ने कहा कि सच्चे पातशाह जी ने आज ऐसे दर्शन दिए हैं जैसे कालीन पर बैठकर भगवान स्वयं आकाश से उतर कर आए हों। अंत में सच्चे पातशाह जी ने वचन किया। और फिर चलने की तैयारी हुई। सच्चे पातशाह जी के दर्शन करने के लिए सन्त परमजीत सिंह जी जब घर से चलने का कार्यक्रम बना रहे थे तो सन्त जी के मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि सच्चे पातशाह उनके कंधे पर हाथ रखें और प्रसन्नताएं दें। सच्चे पातशाह जी तो अंतर्यामी हैं। अपने भक्त की हर इच्छा को जान लेते हैं। जब सच्चे पातशाह जी जाने लगे तो सन्त जी को सन्त हरपाल सिंह जी ने कहा कि वे सच्चे पातशाह के जूते इधर ले आएं। जहां से कि सतगुरु बाहर निकलेंगे। सन्त परमजीत सिंह जी का मन अत्यंत प्रसन्न हुआ। और उन्होंने सतगुरु जी के जूते उठाकर उनके चरणों के पास रख दिए। सतगुरु जी ने जूते पहने और हंसते हुए उनके कंधे पर हाथ रखा और थपथपाया। और पूछा, "क्या आनन्द आया है? परमजीत सिंह जी ने उत्तर दिया कि सतगुरु जी की कृपा हुई बहुत आनंद आया। अगली बार सच्चे पातशाह जी ने इनके घर चरण डाले और फिर जब सरदार कुलविन्दर सिंह जी के घर चरण डालने जा रहे थे तो सच्चे पातशाह जी ने वचन किया हुन तो तू भजन किता कर।" ऐसी कृपा सच्चे पातशाह जी की हो गई।

तीसरी साखी

अभी हाल ही में 11 सितम्बर 2001 को न्यूयार्क में उग्रवादियों ने जो वह काण्ड किया तो उसके पश्चात वहां सिक्खों को निशाना बनाकर हमला किया जाने लगा क्योंकि वहां के लोगों (अमरीकनों) को मुसलमानों और सिक्खों में फर्क पता नहीं चलता था, इसलिए वो लोग सिक्खों को मुसलमान समझकर उन पर हमला करते थे। सन्त जी को कई लोगों ने सलाह दी कि वह पगड़ी उतार दें और पगड़ी के स्थान पर टोपी पहनना शुरू कर दें परन्तु सन्त जी उनकी यह सलाह नहीं माने। उन्होंने सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज से अरदास की, कि हे सच्चे पातशाह आप कृपा करो। मैंने तो पगड़ी उतारनी नहीं है। सन्त जी इसी

प्रकार रोज सतगुरु महाराज से अरदास करके घर से बाहर निकलते हैं। उन्हें कहीं पर भी कोई परेशानी या दिक्कत नहीं होती। जिस कम्पनी में सन्त जी कार्य करते हैं वह फिलीस्तीनी लोगों की कम्पनी है। वे लोग सिगरेट का व्यापार करते हैं। दोनों मालिक और मैनेजर तीनों अंदर हर समय सिगरेट पीते रहते हैं। सन्त जी को यह बड़ा बुरा लगता था तो उनसे रहा न गया। और उन्होंने अपने मालिक से साफतौर पर कह दिया कि या तो वे लोग सिगरेट पीना छोड़ दें नहीं तो वह नौकरी छोड़ देंगे। सच्चे पातशाह जी की ऐसी कृपा हुई कि ये तीनों लोग दफ्तर के बाहर जाकर सिगरेट पीने लगे। वे अब दफ्तर के अंदर कभी सिगरेट नहीं पीते थे। और फिर धीरे-धीरे सभी ने सिगरेट पीना छोड़ ही दिया। अब उन्हें अपने दफ्तर वालों से कोई परेशानी नहीं है। यह सब सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज, घट-घट के वासी, भक्त वत्सल, परम सन्त, भगवत स्वरूप महात्मा, पुण्य पुरुष श्री जगजीत सिंह जी की कृपा से ही संभव हो पाया है। नहीं तो इतने बड़े देश में इतने बड़े विशाल संसार में, इतनी सारी जनसंख्या में, इतने बड़े स्वार्थ भरे समाज में, इतनी भारी बेरोजगारी में, इतनी भारी धन लोलुपता में भला कोई किसी की परवाह करता है? कभी नहीं। यह सब सच्चे पातशाह जी की कृपा का फल है। इसलिए विवश होकर कहना पड़ता है।

सतगुरु परम विशाल हैं सतगुरु परम प्रसिद्ध।
सतगुरु परम महेश हैं सतगुरु योगी सिद्ध॥
धन्य सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह।

संत सरवन सिंह जी

संत जी इंग्लैंड से आए हैं। वे सतगुरु महाराज के काफी समीप रहे हैं। ये सतगुरु महाराज के कुछ कौतुक और कुछ अपने अनुभव सुना रहे हैं।

जनवरी 1995 की 3 तारीख को संत जी ने सतगुरु महाराज से अखंड पाठ की स्वीकृति ली थी। प्रात: 8 बजे अखंड पाठ रखा था। प्रात: आसा दी वार के पश्चात् वहां लड़ाई-झगड़ा हो गया। वहां एक बच्चे को बहुत चोट लगी। उसकी हालत काफी गंभीर हो गई। इससे उनका मन बहुत उदास हो गया। वे सोचने लगे कि यदि इस बच्चे का कुछ अनिष्ठ हो गया तो अनर्थ हो जाएगा। सब लोग यह सोचेंगे कि सतगुरु महाराज आए थे और यह सब कुछ हो गया। यह तो बहुत बड़ी हानि हो जाएगी। सतगुरु अपने नित्य नियम में व्यस्त थे। संत जी भी वहीं आसन जमा कर बैठ गए। परंतु इनका मन बहुत उदास था। यह जब वहां आसन जमा कर बैठे थे तो इन्हें ऐसा लगा कि सतगुरु महाराज की कृपा से वह अंर्तध्यान हो गए हों, देखते क्या हैं कि श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के समय की बात दिखने लगी कि एक सिख को दंड मिला कि उसकी आंखों में गरम सलाखें लगा दी जाएं। जिस समय उसकी आंखों में गरम सलाखें लगाईं तो वह गुरु जी का ध्यान कर रहा था। थोड़ी देर के पश्चात् उसने आंखों को हाथ लगाया तो आंखें स्वस्थ थीं। जब सच्चे पातशाह के दर्शन करने गए तो पता चला कि उस दिन वे बाहर नहीं आ रहे थे। क्योंकि उनकी आखों से खून बह रहा था। इस प्रकार सारा कष्ट सच्चे पातशाह ने अपने ऊपर ले लिया।

उस दिन संत जी उन्मुक्त मन से अपने ध्यान में बैठे तो क्या देखते हैं कि एक महान चमत्कार देखने में आया। और वह यह कि जो घाव बच्चे के सिर पर लगे थे, वे अब सतगुरु महाराज के सिर पर थे और उनसे रक्त बह रहा था। अब उन्हें विश्वास हो गया कि उस बच्चे को कुछ नहीं होगा। थोड़ी देर के पश्चात् डाक्टर आया। उसने टीके लगाए तथा पट्टी आदि की। कुछ दिनों में वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। सच्चे पातशाह अंतर्यामी हैं। सतगुरु महाराज की कृपा से बच्चा बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

संत जी का अपना कारखाना है। जिसमें 40 लोग काम करते हैं। इसमें स्त्रियों तथा बच्चों के कपड़े बनते हैं। सतगुरु महाराज स्वयं कृपा करके मेले में बुला लेते हैं। वे बहुत दयालु हैं वे दया का सागर हैं। कृपा निधि हैं। दीन दुखियों के संबल हैं। उनकी यही विशेषता जनसाधारण के मन में उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न कर रही है।

जत्थेदार रुड़सिंह विचे

सन्त नगर में जब पिछला होला हो रहा था तो साध संगत ने कहा कि इतने जत्थेदारों ने कीर्तन किया है फिर भी अधिक आनंद नहीं आया।

जत्थेदार ने कहा कि रात को सच्चे पातशाह को चिट्ठी लिखनी है। उसमें उन जत्थेदार के नाम लिखने हैं जिनके दीवान लगेंगे। उनका नाम भी उसमें दिया गया है। सच्चे पातशाह ने बालम जी तथा इन जत्थेदार जी को दीवान म्हारा कुम्हारा सिंह गुरुद्वारे में लगाने का आदेश दे दिया। उसके बाद कवि ज्ञानी सेवा सिंह दिल्ली वाले को पांडाल में दीवान लगाने का आदेश दिया। फिर नित्य नियम किया। अरदास हुई। वे सोचने लगे कि बेकार स्थान दीवान लगाने के लिए दे दिया है। क्योंकि गुरुद्वारे में तो गांव की साध संगत ही होगी। बड़े मेले में सतगुरु ने दीवान भी सजाया तो ऐसी बेकार जगह पर। पहले बालम जी का दीवान लगाना था। वे भी दीवान लगाने के लिए झिझक रहे थे। इतने में विरला सिंह जी ने आवाज दे दी कि यदि बालम जी दीवान नहीं लगा रहे तो वह अपने जत्थेदार बुला लेते हैं। बालम सोचने लगे कि यदि उनकी शिकायत सच्चे पातशाह के पास चली गई तो नाराज हो जाएंगे। ये दोनों वहीं इकट्ठे हो गए। इतने में बालम जी दीवान लगाने के लिए आ गए। जब नित्य नियम की अरदास हो रही थी तो जत्थेदार के मन में विचार आया कि दीवान बड़ी बेकार जगह लगा हुआ। अखंड पाठ तथा नित्य नियम का उन्हें आनंद नहीं आया। नित्य नियम की अरदास के बाद सरदार गुरु बचन सिंह जब जयकारा बोल रहे थे तो सच्चे पातशाह ने जत्थेदार को अपने पास बुलाया और कहने लगे कि तुम एक घंटे के नित्तनेम में अनेक प्रकार के विचारों में डूबे हुए हो। उन्हें अपना समझ कर यहां दीवान लगाने के लिए भेजा था। यदि बालम शिकायत करें कि उन्हें पंडाल से बाहर क्यों भेजा था तो सतगुरु जी कह सकें कि जत्थेदार को भी तुम्हारे साथ भेजा था। इस प्रकार सतगुरु जी ने यह कह कर उनकी सारी चिंता पल भर में दूर कर दी। इस घटना से इन्हें सतगुरु जी पर अपार श्रद्धा हो गई।

जत्थेदार एक और अलौकिक घटना का वर्णन कर रहे हैं। एक बार दमदमे के मेले में गए थे। वहां उन्हें प्रीतम सिंह की पत्नी मिली, जिसने सतगुरु जी श्री जगजीत सिंह की अपार कृपा के बारे में बताया। वह बताती है कि उसकी एक आंख में दर्द शुरू हुआ तो सिरसे में डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने कहा कि एक आंख तो खराब हो गई है परंतु दूसरी आंख का ऑप्रेशन नहीं करवाया गया

तो दूसरी आंख के खराब होने की भी आशंका है। उनका बेटा उन्हें वहां छोड़कर बाजार से जरूरी दवाएं लेने गए। भाग्य की बात कि वहां से सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी गुजर रहे थे। उन्होंने उनके बेटे से पूछा कि वहां कैसे आया है? उसने बताया कि मम्मी जी की आंख में दर्द है। उनका ऑप्रेशन होना है। इसलिए वह दवाएं लेने के लिए वहां आया है। सतगुरु तुरंत उस लड़के के साथ उसकी माताजी को देखने अस्पताल गए। वे पूछने लगे कि दर्द कहां होता है। माता जी ने जब हाथ लगाकर बताया तो सतगुरु जी ने आंख पर हाथ लगा कर देखा। बीबी जी बताती हैं कि दर्द तो उनका सतगुरु महाराज का हाथ लगते ही ठीक हो गया। फिर सच्चे पातशाह कहने लगे कि उन्हें चुपचाप अस्पातल से छुट्टी दिलवा कर घर ले जाओ। सतगुरु महाराज ने कहा कि न तो कोई दवा करनी है और न ही ऑप्रेशन करवाना। वह जब रात को आराम से सोई। सुबह उठी तो सतगुरु जी की कृपा से उनकी दोनों आंखों से ठीक दिखाई पड़ रहा था।

संत हरि सिंह जी से प्रार्थना है कि वे सतगुरु महाराज के अलौकिक चमत्कारों के बारे में अपने अनुभव सुनाएं। इनके साथ बचपन से ही उनके संबंध रहे हैं। जब पाकिस्तान बनने वाला था तो सतगुरु प्रताप सिंह जी ने उन्हें दिल्ली में जाने का आदेश दिया था। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने यहां 600 किले जमीन ली और बाबा जगजीत सिंह जी को साध संगत से पैसा इकट्ठा करने के लिए कहा। फिर शेखूपुरा, लायलपुर, लाहौर आदि स्थानों से लोगों को इधर लाने के लिए कहा। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने यह जमीन चुरू के एक बनिए से खरीदी थी। बाबा जगजीत सिंह के साथ संत हरि सिंह भी जाते थे और लोगों को बताते थे कि वहां रहने में खतरा है। सतगुरु जी ने उस समय यह जमीन 5,500/- रुपए हैक्टेयर की दर से खरीदी थी। इस जमीन की कीमत 25-26 लाख के लगभग थी। जब पाकिस्तान बन गया तो बाबा जगजीत सिंह जी ने साध संगत को संभालने के लिए बहुत काम किया। महाराज बीर सिंह जी पर घसीटा सिंह का कत्ल का केस चला तो उन्हें निर्दोष सिद्ध कराने तथा बरी कराने के लिए बाबा श्री जगजीत सिंह जी ने भी बहुत काम किया तथा उन्हें बरी करवाने में सफल हुए। बाकी दो को मृत्युदंड हुआ। दो को 20 साल का आजीवन कारावास हुआ। दो में से एक को मुत्युदंड समाप्त हो गया और उसके स्थान पर 20 साल का आजीवन कारावास हुआ। इस प्रकार केवल एक को ही मृत्युदंड मिला। उस इलाके में बाबा श्री जगजीत सिंह जी ने बहुत काम किया। फिर कुछ समय के उपरांत सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी ने शरीर त्याग दिया।

इस इलाके में संत हरि सिंह तथा सरदार अवतार सिंह जी में कुछ अनबन

अथवा मनमुटाव हो गया। दोनों नंबरदार थे। उन दोनों में बोल-चाल नहीं थी। सतगुरु जगजीत सिंह को जब इसका पता चला तो उन्होंने कहा कि वे दोनों मेरे ही आदमी हैं परंतु आपस में रूठ गए हैं। यह अच्छा नहीं है। तुम दोनों में समझौता अथवा मेल करवा देते हैं। सतगुरु जी ने दोनों को एक स्थान पर बुलाया और हाथ आदि मिलवा कर सुलह करवा दी। साथ ही 40 भगवतियों का पाठ करने का आदेश भी दिया, पर दोनों ला-परवाह रहे तथा पाठ नहीं किया। कुछ समय के पश्चात् दोनों को दमे की तकलीफ हो गई। रात-रात भर सोना कठिन हो जाता था। उन्होंने सतगुरु जी से स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना की। उनकी कृपा से दोनों का स्वास्थ्य ठीक हो गया। कुछ समय बाद अवतार सिंह जी ने शरीर त्याग दिया। संत हरि सिंह जी को फिर दमे की थोड़ी शिकायत हो गई। सतगुरु जगजीत सिंह ने स्वयं अरदास करवाई। उसके बाद श्वास का कष्ट पूरी तरह जाता रहा। उसके बाद एक ऑप्रेशन भी हुआ जो सच्चे पातशाह की कृपा से पूरी तरह से सब ठीक हो गया। ऑप्रेशन सफल हो गया। वे 12 साल से पूर्णतया स्वस्थ हैं। तब से अब तक भगवती की नित्य प्रति एक माल का जाप करते हैं। 82 वर्ष की आयु में भी आप चुस्त हैं। सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की अपने हाथ से सेवा करते हैं। वे स्वयं साध संगत के बर्तन साफ करवाते थे। लोगों के स्नान के लिए पानी निकालने में सहायता करते थे। गद्दी पर बैठने के बाद भी सुबह-सुबह उठ कर कुएं से पानी निकाल कर साध संगत की सेवा किया करते थे।

कुंदन लाल नाम का एक ज्योतिषी था, जिसे काफी ज्ञान था। उसका ज्योतिष विद्या पर अधिकार था। उसका ज्योतिष सदा ठीक निकलता था। वर्ष 1962 में सतगुरु जगजीत सिंह जी के घर में शिशु का जन्म होने वाला था। ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि उन्हें पुत्र प्राप्ति होगी। जब सतगुरु को इस बात का पता चला तो वे कहने लगे कि ज्योतिषी की भविष्यवाणी गलत है। समय आने पर उनके घर कन्या उत्पन्न हुई। जब कुंदन लाल ज्योतिषी को यह बात बताई गई तो उसने सतगुरु प्रताप सिंह जी की कुंडली बनाकर देखा तो पता चला कि वे तो अकाल पुरुष हैं। अवतारी पुरुष हैं। वे श्री राम हैं। वे ही कृष्ण भगवान हैं। वे गुरु नानक देव भी हैं और गुरु गोविंद सिंह भी। यह सब देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने नाम ले लिया और नामधारी बन गए। तब से उन्होंने अपना नाम कुंदन सिंह रख लिया। ज्योतिषी को जब पता चला कि उसका ज्योतिष झूठ हो गया है तो वह कहने लगे कि यह तो अकाल पुरुष हैं, इनका ज्योतिष कोई नहीं लगा सकता। इसी ज्योतिषी ने महाराज हरि सिंह जी के बरी होने की तारीख बताई थी

जो पूर्णतया ठीक निकली थी। जिस दिन महाराज जी के मुकद्मे का फैसला सुनाना था तो जज ने सबको जाने का आदेश दे दिया क्योंकि झगड़ा होने की आशंका थी। वहां केवल 5 व्यक्ति संत हरि सिंह, संत गुरदयाल सिंह, बाबा जगजीत सिंह और सरदार अवतार सिंह रह गए। जब फैसला सुनाना था तो उससे पहले सतगुरु प्रताप सिंह जी को जीवन नगर से वीर सिंह मिलने गए थे। वहां एक हवलदार ने बताया कि अब जज फैसला सुनाएंगे, सतगुरु प्रताप सिंह तो वहीं चौबारे में रहे, और वे चारों अदालत में फैसला सुनने के लिए आ गए। जज ने आते ही अपना फैसला सुना दिया कि महाराज वीर सिंह जी बरी हो गए। केदार सिंह तथा गुरदीप सिंह को फांसी की सजा हो गई और अवतार सिंह तथा अमर सिंह को भी सजा हो गई। सतगुरु तथा पंडित कुंदन लाल दोनों वहां पहुंच गए। पंडित जी ने उन दोनों पर कृपा करने के लिए सतगुरु जी से प्रार्थना की। सतगुरु महाराज ने कृपा कर दी और एक की फांसी टूट गई। और दो भी दंड भोग कर आ गए।

सरदार घसीटा सिंह का कत्ल, केदार सिंह ने किया था। बाकी के तीन निरपराध पकड़े गए थे। महाराज वीर सिंह जी कत्ल के समय पर वहां मौजूद ना थे। उन्हें ऐसे ही फंसाया गया था। जब कत्ल की खबर आई तो 6-7 अलग-अलग थानों में पहुंच गई। कैरों ने यह रिपोर्ट बदलनी चाही जिससे महाराज जी को भी दंड भुगतना पड़े। उन दिनों एक डी.एस.पी. था रिर्पोट बदलने के लिए तैयार न हुआ उसे नौकरी से निकालने की धमकी भी दी गई। वह किसी निर्दोष के गले में फांसी का फंदा डालने के लिए तैयार न हुआ। इस प्रकार मौके के गवाह न मिलने के कारण महाराज जी बरी हो गए। सतगुरु जगजीत सिंह जी को साखियां तो अनंत हैं। जिस गद्दी पर वह विराजमान है, उसमें असीम सामर्थ्य तथा शक्ति है। वे वास्तव में अवतारी पुरुष हैं। उन्हें कभी क्रोध नहीं आता। सदा मुस्कराते रहते हैं। वे वचन मात्र से सबके कष्ट हर लेते हैं। उनकी कृपा की लीला अपार है। वे अथाह सागर की भांति हैं जिसकी गहराई तक पहुंच पाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है।

संत निरंजन सिंह

संत जी सतगुरु श्री प्रताप सिंह तथा सतगुरु श्री जगजीत सिंह दोनों में ही अपार श्रद्धा रखते हैं। वे बताते हैं कि यहां जब जमीन ली गई तो साध संगत ने प्रार्थना की कि यहां गरमी बहुत है। सतगुरु प्रताप सिंह जी वहीं नित्य नियम करने लगे थे। थोड़ी देर बाद ही वहां वर्षा हो गई। वहां वर्षा 7 वर्ष बाद हुई थी। उसके बाद जंगल में घूमने के लिए निकले। उनकी दृष्टि एक स्थान पर पड़ी। वहां एक मुसलमान महिला कपड़े धो रही थी। उन्होंने उसे कपड़े न धोने का आदेश दिया और बताया कि वहां तालाब है। फिर घूमते-घूमते नकाड़े के कुंए के पास पहुंचे। वहां खुदवाया।

अगले दिन सतगुरु ने एक सिख को इलाहानाबाद जाने का आदेश दिया और कहा कि सब नामधारियों को नौहर भेजने के लिए चार बजे शाम को जाने की आज्ञा प्रदान की है। उनका कहना था कि इलाहानाबाद उजड़ जाएगा। तब तक इस बारे में किसी को भी पता नहीं था। सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी की आज्ञानुसार एक सिख ने शाम के चार बजे सबको नौहर भेज दिया। रात को ही वहां झगड़ा हो गया और वह उजड़ गया। सुबह संत नगर के पास उन्हें शेर सिंह नाम का एक सरदार मिला। वह सामान लेकर आ गया था। उसने पूछने पर बताया कि इलाहानाबाद उजड़ गया और वह जो कुछ ला सकता था उठाकर ले आया। इसके बाद संत जी ने कुछ दिन के लिए छुट्टी मांगी। पर सच्चे पातशाह छुट्टी देने के लिए तैयार न हुए। जब पाकिस्तान से चिट्ठी आई तो वह इस शर्त पर छुट्टी देने को तैयार हुए कि वह सातवें दिन वापिस आ जाएंगे। 40-50 सिख ही यहां पर पहुंचे थे। पाकिस्तान अभी नहीं बना था और उनके परिवार वहीं थे। तब यहां पर मुसलमान रहते थे। अमृतसर से एक पठान यहां जहीर-उद्दीन यहां सतगुरु जी से मिलने आया करता था। वह इन्हें पीर मुर्शिद मानता था। जब पाकिस्तान बना तो उसने मुसलमानों को इन्हें न मारने की चेतावनी दी थी और बताया कि यह बहुत बड़े पीर हैं। इसके बाद वे लोग वहां से चले गए। पर कुछ समय बाद और मुसलमान वहां आ पहुंचे। सबने सतगुरु जी से वहां से चले जाने का आग्रह किया पर वे नहीं माने। सब संतों के बार-बार कहने पर वे वहां से चले जाने के लिए तैयार हुए और यह कहकर गए कि श्री जीवन नगर उस कोठी पर और उधर टीले पर मुसलमान चढ़ाई नहीं कर सकेंगे।

मुसलमानों के सिरसा में 80 गांव थे। उन्होंने सोचा कि ये 40-50 सिख हैं

इन्हें मारकर जाएंगे पर उन्हें उस पठान ने समझाया कि यह बाबा बहुत बड़ा पीर है। इसलिए इन्हें कुछ मत कहना पर वे नहीं माने। उन्होंने उनकी सीमा में आकर कुछ फायर किए पर कोई लाभ नहीं हुआ वे लोग फिर वापिस चले गए। जब वे जा रहे थे तो दमदमे के एक सिख ने एक भैंस रख ली पर उसे बरछी लग गई और वह मर गया। सतगुरु का वचन पूरा हो गया क्योंकि उन्होंने मुसलमानों को कुछ भी कहने से रोका था। सतगुरु वहां से चले गए। उसके बाद कुछ संत टिबी चले गए। वहां सिख महिलाएं इकट्ठी हो रही थीं। मुसलमान फिर इकट्ठे हो गए और सतगुरु से प्रार्थना करके 100 गांवों को काफिला वहां से चला गया। वे इनसे माल व पशु आदि ले गए थे। पर मिल्ट्रि ने इन्हें ले जाने नहीं दिया।

सतगुरु जगजीत सिंह जी इन संत जी को फैसला करवाने के लिए बुलाते थे। संत के ही किसी भाई को फैसला सुनाने के लिए सतगुरु ने इन्हें लाने के लिए घोड़ी भेज दी। उस समय संत जी को बुखार था। उन्होंने वहां जाकर दोनों को समझाने की बड़ी कोशिश की पर कोई लाभ नहीं हुआ। समझाते-समझाते रात के 9 बजे गए। सतगुरु जी से कहा कि सुबह फैसला कर लेंगे पर उन्होंने कहा कि कोई फायदा नहीं है। अब तो यह मरकर ही फैसला करेंगे। तीन चार दिन में ही सिरसे से संत निरंजन सिंह की मृत्यु का समाचार मिल गया। एक बार यह संत जी संत नगर में बीमार हो गए। वहां बहुत थोड़े लोग रहते थे। ये बहुत ही उदास हो गए थे। अगले दिन ही सतगुरु स्वयं श्री जीवन नगर पहुंच कर वहां से किसी सिख को साथ लेकर संत जी के पास पहुंच गए। सतगुरु जी कहने लगे कि उन्होंने आकर पानी भी नहीं पिया और यहां आ गए हैं। उन्हें बहुत सांत्वना दी और कहा कि घबराओ नहीं, जल्दी ठीक हो जाओगे। इसके बाद वे बाहर आकर फिर श्री जीवन नगर वापस आ गए। थोड़े दिनों में संत जी स्वस्थ होने लगे पर काफी कमजोर हो गए। संत आला सिंह उन्हें कुछ दिन में स्वयं सतगुरु के पास ले आए और कृपा करने के लिए कहा। सतगुरु जी ने कहा कि उन्होंने कृपा कर दी है परंतु फिर भी संतों का वचन रखने के लिए थोड़ी दूर नैहर के पास मतवाने के पास जाने के लिए दूर वहां गए और लौट आए थोड़े दिन में स्वास्थ्य सुधरने लग गया।

सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने सन्त नगर को कुछ श्राप दे दिया। उन्होंने कहा कि सतगुरु प्रताप सिंह जी ने जो न्यारी बनाई थी परंतु अब कलरी हो गई है। जब कलरी का नाम लिया तो सब सिख कहने लगे कि गांव को श्राप हो गया है। ये संत जी बड़े परेशान हो गए। वे पागल से होकर सब गालियां देने लगे। वे दौड़ते हुए श्री जीवन नगर पहुंच गए। वहां दीवान लगा हुआ था। ये आते ही

सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के पास पहुंच गए। उन्होंने कहा कि सतगुरु महाराज! यह आपने क्या किया कि सतगुरु प्रताप सिंह जी ने तो न्यारी बनाई थी और आपने कलरी बना दी। इस पर सतगुरु जगजीत सिंह जी कहने लगे कि हो तो कलरी गई थी पर अब तुम्हारे आने से ठीक हो जाएगी। इनका वचन कभी वृथा नहीं जाता।

बहुत साल पहले एक बार श्री भैणी साहब में हरिमंदिर में सरदार अतर सिंह जी ने दीवान लगाया हुआ था। इनके पास सतगुरु ने थूकने के लिए एक लौटा रख दिया। संत जी के मन में विचार आया कि लोटा पीता भी है या नहीं। अतर सिंह ने थूक कर रखी लोटा गट-गट पी गया। तो सतगुरु महाराज कहने लगे कि यह क्या किया। संत मोहर सिंह जी बड़े सिद्ध थे। वे दूर मड़िया में रहते थे। वे वहां से गदहे पर चढ़ कर श्री भैणी साहब चले गए। वे फिर वहां से दीवान में चले गए। बहुत संगत तो मड़िया वापस चली गई। संत मोहर सिंह अहंकार में यही कहते रहे थे कि जो इंद्रियां हैं इन्हें वे सदमें की तरह गिरा दें और नीचे न गिरें वे आध घंटा के लगभग तृत्यकारी करते रहे और फिर अपने डेरे पर चले गए। सतगुरु प्रताप सिंह जी के भीतर सब गुरुओं की शक्ति थीं। जो भी इस गद्दी पर बैठता है, उसमें शक्ति का प्रवेश स्वत: हो जाता है। ठीक एक फलदार वृक्ष की भांति जिस से मिठास और रस अपने आप फल में भरने लग जाता है।

संत सत्यपाल सिंह सुपुत्र संत सदा सिंह

यह घटना सन् 1981 की है। सच्चे पातशाह की आज्ञानुसार संत सत्यपाल सिंह का उनके साथ यमुना नगर से चलकर लखनऊ पहुंचना था। प्रातः भजन और कीर्तन के पश्चात् इसने सतगुरु महाराज से प्रार्थना की कि वे उसके घर अपने चरण डालें। उस व्यक्ति का घर मेरठ के एक देहात में था। वहां पर सड़क कच्ची थी और बरसारत के कारण दलदल बना हुआ था। प्रात: 8 बजे श्री सतगुरु महाराज ने अपनी 13 नंबर कार छोड़ दी। वे जीप में बैठ गए। चालक सत्यपाल के साथ आगे की सीट पर सच्चे पातशाह और पीछे की सीट पर पूर्वा जी, संत तरसेम सिंह तथा एक अंगरक्षक बैठे थे। सड़क पर कीचड़ होने के कारण जीप एक ओर से फिसल कर खड्डे में गिर गई और आधे से अधिक टायर दलदल में फंस गया। जीप का इंजन बंद हो गया। पूर्वा जी परेशान हो गए। वे सत्यपाल से पूछने लगे कि अब क्या होगा। जब चालक जीप का दरवाजा खोलकर उतरने लगा तो सच्चे पातशाह कहने लगे, ‘‘नीचे मत उतरो और खिड़की बंद कर लो।’’ फिर सतगुरु महाराज ने सत्यपाल के कंधे पर हाथ रखकर कहा कि अब वह गाड़ी स्टार्ट करे। चालक सत्यपाल ने सतगुरु महाराज की आज्ञा का पालन किया और गाड़ी स्टार्ट कर दी और गाड़ी गियर में डाल दी और रेस दी। गाड़ी तुरंत खड्डे से निकल कर सड़क पर आ पहुंची। अब सत्यपाल को यह ज्ञान हो गया कि यह अकाल पुरुष का ही चमत्कार था जिसके कारण यह सब संभव हो सका। इसके बाद बिना किसी रुकावट के गाड़ी उस गांव में संत के डेरे तक पहुंच गई। संत जी अपनी साइकिल पर गाड़ी के आगे-आगे चलते गए ताकि वह गाड़ी को रास्ता दिखा सकें।

चरण डालने के बाद सच्चे पातशाह अपने मेरठ वाले डेरे में पहुंच गए। सतगुरु महाराज की सर्व सामर्थ्य देखकर कबीर का यह दोहा स्मरण आने लगता है :

जिन खोजा तिन पाया गहरे पानी पैठ।
मैं विपुरा पूड़न उरा रहो किनारे बैठ॥

सूबा अमरीक सिंह सुपुत्र सरदार दयाल सिंह, गांव गढ़ी साहिब, तहसील कैथल, जिला कुरुक्षेत्र

कोई भी कार्य जो मानवी सामर्थ्य के अनुसार रहता है तो वह मानवी कहलाता है, परन्तु जब कोई कार्य मानवी शक्ति एवं सामर्थ्य की परिधि को पार करके बाहर चला जाता है और यह मनुष्य की पहुंच से ऊपर उठ जाता है तो इसे दैवी चमत्कार या इसमें ईश्वर अर्थात किसी अज्ञात शक्ति द्वारा किए गए कार्य की संज्ञा दे दी जाती है।

सतगुरु महाराज के चमत्कार की भी ऐसी अनेक घटनाएं हमारे सामने नित्य प्रति उजागर होती चली जा रही हैं जिन्हें देखकर हम संदेह से नहीं, विश्वास से कह सकते हैं कि ये मानवी सामर्थ्य की घटनाएं न होकर दैवी चमत्कार की ही घटनाएं हैं। ऐसी ही एक और घटना आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

सूबा अमरीक सिंह जी का व्यवसाय ट्रक चलाना ही बन गया था। वह दूर-दूर पूर्वोत्तर राज्यों तक भी ट्रक चलाते हुए चले जाते थे। सूबा जी निस्संदेह एक नामधारी बाबा फौजा सिंह मस्ताना के परिवार से हैं। वह भारत विभाजन से पूर्व गांव मक्की जिला शेखूपुरा के निवासी थे। इस क्षेत्र पर अब पाकिस्तान का अधिकार है। सूबा जी पूरी नामधारी मर्यादा रखते हुए भी पूरी वेष-भूषा नहीं पहनते थे।

1991 में एक दिन सूबा जी ट्रक चलाते हुए गुवाहाटी से पंजाब की ओर आ रहे थे। रास्ते में टैक्स अधिकारी (R.T.O.) द्वारा पड़ताल की जा रही थी। स्वभाव में यह टैक्स अधिकारी जो एक मुसलमान था बड़े क्रूर स्वभाव का था। जो दो तीन हजार से कम जुर्माना ही नहीं करता था। सूबा जी के ट्रक में माल उचित सीमा से अधिक भरा हुआ था। उन्हें भय था कि जुर्माना अवश्य होगा क्योंकि वह क्रूर अधिकारी किसी को रियायत देना जानता ही नहीं था।

सूबा जी के पास सिवाए इस बात के कोई रास्ता नहीं था कि वह सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज का ध्यान करें और उनको इस संकट की घड़ी में पुकारें। उन्होंने सच्चे मन से सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह का स्मरण किया और इस संकट की घड़ी में सहायता के लिए प्रार्थना की। सूबा जी ने सिर पर सफेद अंगोछा अवश्य बांधा हुआ था। पर कुर्ता पाजामा नामधारी संगत की भांति सफेद

नहीं था। अचानक पीछे से उस क्रूर स्वभाव के मुसलमान अधिकारी ने आवाज लगाई। आवाज में क्रूरता स्पष्ट झलक रही थी। और यह भी स्पष्ट था कि वह अपने स्वभाव के अनुसार कोई रियायत नहीं वरतेगा। इसलिए इनका कलेजा धक धक धड़कने लगा। सूबा उस अधिकारी के आदेशानुसार बिल्टी तथा दूसरे सभी आवश्यक कागज आदि लेकर तुरंत पहुंचे। पर इससे पूर्व कि वह अधिकारी बिल्टी तथा दूसरे कागज देखता। चमत्कार हो गया था। एक महान चमत्कार। सतगुरु महाराज ने सूबा जी की इस संकट की घड़ी में की गई प्रार्थना सुन ली थी। उस अधिकारी ने बिल्टी पर लिखे वजन की ओर ध्यान ही न दिया। और हस्ताक्षर कर दिए। जिसका स्पष्ट प्रमाण था कि माल सब नियमानुसार ठीक है। उसने केवल सूबा जी से एक सौ रुपये मांगे जो सूबा जी ने सहर्ष दे दिए। अधिकारी ने विधिवत इन सौ रुपयों की रसीद भी दे दी।

अब सूबा जी के मन में विचार आया कि सतगुरु महाराज की कृपा केवल एक सफेद अंगोछा सिर पर बांधने मात्र से हो गई, इसलिए उसे पूरा नामधारी परिधान सफेद कुर्ता पाजामा ही पहनना चाहिए। अब सूबा जी जो पहले मन से ही नामधारी थे अब तन से भी हो गए। भगवान तो भावना के भूखे होते हैं। भावना पहचान कर उन्होंने संकट की घड़ी में सूबा जी की सहायता कर दी अब सूबा जी पूरी तरह से भी नामधारी होकर सतगुरु महाराज के परम उपासक हो गए।

सन 1992 में सूबा जी के मन में विचार आया कि वह ट्रक चलाने का धंधा छोड़कर ट्रकों का क्रय विक्रय (खरीद-फरोख्त) शुरू करें। एक दिन की बात है दीवान लगा हुआ था। सूबा जी भी सतगुरु महाराज के दर्शन करने गए। सच्चे पातशाह जी ने मौन रहते हुए अपना कुर्ता पकड़ कर सूबा जी की तरफ संकेत किया। जिसका अर्थ था कि वह भी इस प्रकार नामधारी परिवेश मे आ जाएं। बुद्धिमान को और जिस पर प्रभु कृपा हो संकेत मात्र बहुत होता है, सूबा जी ने सतगुरु महाराज का संकेत समझ लिया। सतगुरु महाराज का संकेत रंग लाया और सूबा जी थोड़ी ही देर में सफेद कुर्ता पाजामा धारण करके सतगुरु महाराज के समक्ष उपस्थित हो गए।

चूंकि भेद मिट चुका था। सतगुरु महाराज ने सूबा जी की छल कपट से दूर निर्मल आत्मा को पहचान लिया था उसे अपनाने में देर न लगी। वह सतगुरु महाराज के भक्तों की श्रेणी में आ चुके थे।

सतगुरु महाराज ने सूबा जी के घर पर चरण डाले और दर्शन दिए। भले सूबा जी घर पर स्वयं नहीं थे। रास्ते में जब इन्हें यह सूचना मिली कि सच्चे पातशाह

उनके घर चरण डालने गए हैं तो उन्हें इस बात से परम प्रसन्नता हुई पर खेद भी हुआ कि वह स्वयं उपस्थित नहीं रह सके।

सूबा जी को यह सूचना मिली कि सच्चे पातशाह उनके मामा जी के घर चरण डालने वाले हैं तो यह रह न सके। ये सीधे ट्रक लेकर अपने मामा श्री के घर पहुंचे। सतगुरु वहां पर विराजमान थे। उनके दर्शनों का दिव्य प्रकाश हो रहा था। सूबा जी ने सीधे जाकर सतगुरु महाराज के चरणों में सिर रख दिया।

समय बीतता गया। कुछ समय के पश्चात् वैशाखी के मेले पर सतगुरु महाराज अमृतसर पधारे। वहां दीवान सजाया गया। दीवान में सतगुरु महाराज ने आदेश दिया कि उनके डेरे पर सवाना माडी के सब जन उपस्थित हों। सूबा जी वहीं के तो निवासी थे। सब संगत उपस्थित हुई। इसमें सूबा जी ने लोगों को हुक्म हुआ कि सब भैणी साहब पहुंचें। प्रभु कृपा हो तो देर नहीं लगती। कुछ दिन पश्चात् सूबा जी का श्री भैणी साहब से सूचना मिली कि सच्चे पातशाह जी ने इन्हें सूबा नियुक्त कर दिया है। इस प्रकार सन 1994 से आज तक श्री अमरीक सिंह जी सूबे का पदभार संभाल कर सतगुरु महाराज की तथा भक्त जनों की सेवा में रत हैं तथा पुण्य लाभ अर्जित कर रहे हैं।

सन्तन की सेवा में रहिए।
भक्ति भाव गंगा में बहिए॥

सन्त गुरदयाल सिंह जी
रामगढ़ वाले

पग-पग पर संकट हरें, पग-पग बनें दयाल।
पग-पग करें सहायता, सतगुरु परम कृपाल॥

सतगुरु की महिमा अपार है। उनकी कृपा का एक और उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मन परम प्रसन्न हो रहा है और मन उनकी अनुकम्पाओं के आगे नतमस्तक होता जा रहा है।

सन्त गुरुदयाल सिंह जी का एक बेटा था। उसे कुछ कष्ट हो गया। उसका एक बाजू अकड़ता जा रहा था। ऊपर नीचे बाजू को लाना असंभव सा हो गया था। सन्त गुरदयाल सिंह जी की भी सतगुरु महाराज के प्रति अपार श्रद्धा तथा आस्था थी। वास्तव में यह संसार का स्वभाव सा बन गया है कि जब-जब कोई कष्ट होता है मनुष्य के मुख से बरबस हॉय मां निकल पड़ता है। उसी प्रकार सन्त गुरदयाल सिंह जी ने अपने बेटे का कष्ट देखा तो सिवाय सतगुरु के चरण पकड़ने के और कोई रास्ता नहीं रहा था। उन्होंने सतगुरु महराज को इस कष्ट में पुकारने का निर्णय किया। उन्होंने मन में निश्चय किया कि वह श्री भैणी साहब जाकर सतगुरु महराज को विनय करेंगे तथा प्रार्थना करेंगे कि उनके बेटे का कष्ट हरण कर स्वास्थ्य लाभ कराएं।

इस बात की सूचना सन्तनगर के भगवान सिंह को मिली। वह सन्त गुरदयाल सिंह जी से मिलने चल पड़े।

भगवान सिंह जी ने सन्त जी को बताया कि उनके बेटे का बाजू टूट गया था। सूजन भी बहुत हो गई थी। डॉक्टर ने ऑपरेशन किया। हड्डी टूट कर तीन टुकड़े हो गई थी। डॉक्टर ने तीनों टुकड़े निकाल दिए। ऑपरेशन के बाद बाजू सूखती चली गई। इस कारण वह बहुत चिंतन हो गए। उन्होंने सन्त गुरदयाल सिंह से विनती की कि वह आश्विन मास के मेले में जाकर सतगुरु महराज के चरणों में विनती करें। वह उनके बेटे की बाजू ठीक कर दें।

सन्त गुरदयाल सिंह जी श्री भैणी साहब पहुंचे। तो उन्होंने सतगुरु महाराज को अकेले पाया सतगुरु महाराज के चरणों में उन्होंने अपने बेटे अवतार सिंह के बाजू का उल्लेख किया। साथ ही उन्होंने भगवान सिंह के बेटे के लिए भी प्रार्थना की।

सच्चे पातशाह बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे। उनके बेटे का वह कष्ट दूर करें और

उसे स्वास्थ्य लाभ कराएं। सतगुरु महराज के पास उन्होंने अपने बेटे अवतार सिंह के बाजू का उल्लेख किया। उनके चेहरे पर तेज जैसा झलकने लगा। वह साक्षात् परमेश्वर, अवतारी पुरुष दिखाई पड़ने लगे। देखकर आंखें चुधियाने सी लगी। सतगुरु, महाराज ने प्रार्थना सुनी। उन्होंने कुछ समय के लिए नेत्र बंद कर लिए। फिर वह भाव विभोर होकर कहने लगे, ''दोनों बालकों को कहो कि भजन की चालीस दिन पर्यन्त एक-एक माला का जाप किया करें। साथ ही रोज सतगुरु प्रताप सिंह जी के चरणों में अरदास करें।

सच्चे पातशाह ने तीन बार यही वचन दोहराया कि चालीस दिन भजन (गुरु मंत्र) की एक-एक माला का जाप करें और सतगुरु महाराज के चरणों में अरदास करें।

सन्त जी को सतगुरु जी के वचन सुनकर बड़ी शांति प्राप्त हुई और उन्हें विश्वास हो गया कि उन दोनों के बेटे स्वस्थ हो जाएंगे। परंतु सन्त जी तीस दिन तक श्री भैणी साहब में ही रहे। वे वहां दोनों लड़कों को यह सूचना भी न दे पाए कि सतगुरु महाराज ने क्या हुक्म दिया है। एक महीने के बाद वे अपने गांव लौटे और भगवान सिंह को सतगुरु महराज ने जो कुछ कहा था उसकी सूचना देने गए। भगवान सिंह ने सन्त जी को जो कुछ बताया उसे सुनकर वह चकित रह गए। उन्होंने बताया कि पिछले तीस दिन से उसके बेटे का बाजू ठीक होता जा रहा है। सतगुरु जी की अपार कृपा से अब रक्त का प्रवाह ठीक ढंग से होने लगा है। बाजू अब दिन प्रतिदिन स्वस्थ होने लगी है। सतगुरु जी की कृपा से उनके अपने बेटे का बाजू भी ठीक हो गया। सतगुरु महाराज का वचन कभी खाली नहीं जाता। वह भक्त का संकट काटते हैं तथा उसे हर प्रकार से सुख-समृद्धि और संतोष प्रदान करते हैं। केवल उन पर पूरी श्रृद्धा और आस्था होनी चाहिए।

सन्तान प्राप्ति

सन्त गुदयाल के पुत्र स्वर्ण सिंह का आनंद कारज (विवाह संपन्न) सतगुरु महाराज की हजूरी में ही हुआ था। शादी हुए 10 वर्ष हो गए पर कोई संतान नहीं हुई। सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज जीवन नगर पधारे थे। कीर्तन चल रहा था। कीर्तन के एक-एक शब्द में भगवान स्वयं उपस्थित प्रतीत हो रहे थे। कीर्तन समाप्त हुआ। सच्चे पातशाह ने आदेश दिया, ''आप 66 साध संगत दूसरी जगह जाओ। यदि यहां पर कुछ न मिला तो वहां सब कुछ मिलेगा।'' सन्त जी ने सिक्खों से कहा कि सतगुरु महाराज से जो भी प्रार्थना वे करें वही पूर्ण होगी। सतगुरु महाराज तो दया के सागर हैं। उनके मुंह से निकला शब्द वृथा नहीं

जा सकता। उनकी पत्नी तथा पुत्र वधु दोनों ने सतगुरु महाराज के चरणों में प्रार्थना की, कि हे सतगुरु, हे सच्चे पातशाह शादी हुए 10 वर्ष हो गए हैं, अभी तक संतान सुख की प्राप्ति नहीं हुई। आप गरीब निवाज हैं। आपके भंडार में कोई कमी नहीं है।'' सतगुरु ने अरदास सुनी। कृपा बरस गई। सतगुरु कहने लगे, ''एक-एक माला भगवती की और एक-एक माला भजन (गुरुमंत्र) का जाप किया करो। संतान प्राप्ति अवश्व होगी।'' बस फिर क्या था सच्चे पातशाह के मुखार्विन्द से निकला हुआ शब्द था, कैसे पूरा न होता बाद में उनके पुत्र स्वर्ण सिंह के घर चार पुत्र हुए। मन का समस्त कष्ट जाता रहा। सतगुरु महाराज ने सब आशाएं पूरी कर दीं। सभी कार्य संपन्न कर दिए। मन की बगिया खिल गई। सुगंधित फूल अपनी मधुर सुगंध बिखेरने लगे। सन्त जी का परिवार धन्य हो गया।

ना विद्या ना बाहुबल नहीं गांठ में दाम।
तुलसी ऐसे दीन की पत राखे श्री राम॥

सन्त महिन्दर सिंह बाजेवाले सुपुत्र सन्त निधान सिंह, गांव दमदमा, श्री जीवन नगर

एक बार सन्त महिन्दर सिंह जी का छोटा बेटा बहुत बीमार पड़ गया। इनके पिता ने सतगुरु महाराज के चरणों में प्रार्थना की कि वह उनके बेटे को बिना दवा के अच्छा कर दें। सतगुरु जी ने वचन किया कि बीबी को कहें कि वह बच्चे को गोदी में लेकर भजन किया करें और अपना दूध इस बच्चे को न पिलाएं। सतगुरु का आदेश अकाल पुरुष का आदेश था। सन्त जी की पत्नी बच्चे को अपना दूध पिलाना बंद करके और उसे गोदी में उठाकर भजन बंदगी करने लगी।

कुछ दिनों बाद यह शिशु बिना दवा के ही स्वस्थ हो गया। इस पर सच्चे पातशाह जी की कृपा हो गई। हालांकि माता के दूध में किसी प्रकार की खराबी न थी। पर आदेश तो सतगुरु महाराज का था। उनका आदेश कैसे कोई टाल सकता था। इसके बाद सन्त जी के तीन बच्चे और हुए और इसी माता का दूध पी-पीकर पले और बड़े हुए। सतगुरु अपने बच्चों पर और अपनी साध संगत पर कभी अपनी कृपा दृष्टि से और कभी अपने वचनों से कल्याण करते रहते हैं। केवल उनके प्रति सच्ची श्रृद्धा होनी चाहिए।

बाद में सन्त जी का वही बेटा राम सिंह बड़ा होकर हरियाण की रस्साकशी टीम का कप्तान बना।

सन्त सन्तोख सिंह सैन हौजे
(अमरीका)

सन्त जी ने सतगुरु प्रताप सिंह जी के अनेक बार दर्शन किए थे। सतगुरु प्रताप सिंह जी घोड़े पर सवार होकर आते थे। उनके साथ बहुत से नामधारी सिख भी सवार होकर आते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे सतगुरु गोविंद सिंह जी घोड़े पर सवार होकर चले आ रहे हों। पं. वसन्त सिंह जी एक विद्वान पुरुष थे। जिन्होंने सतगुरु प्रताप सिंह जी को पढ़ाया था। उन्होंने अपनी आंखों से देखा जिस किसी व्यक्ति के घर सतगुरु श्री प्रताप सिंह ने चरण डाले वह व्यक्ति मस्ताने हो गए।

साखी

सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की सन्त जी के परिवार पर बड़ी कृपा थी। सन्त जी की पत्नी बीमार रहती थी। उनका सिर बहुत दुखता था। नींद नहीं आती थी। वह लगभग दस बारह वर्ष तक ठीक प्रकार से सो नहीं सकी। सिर में घाव हो जाते थे। सन्त जी ने बहुत उपचार करवाए परंतु स्वास्थ्य प्राप्ति न हुई। अंत में एक लेडी डॉक्टर ने उन्हें परामर्श दिया कि बीबी जी को बिजली के झटके देने से शायद वह ठीक हो पाएं। सन्त जी के मित्रों ने कहा कि यदि बिजली के झटके लगाए गए तो बाद में दवाई बिलकुल भी असर नहीं करेगी। घरवालों ने सलाह दी कि अब दवा नहीं खानी क्योंकि जब असर ही बिलकुल नहीं हो रहा तो खाली दवा खाते रहने से क्या लाभ।

कुछ समय बाद श्री भैणी साहब में होला-मुहल्ला होना था। फैसला किया गया कि सतगुरु महाराज से अर्ज करेंगे। यह विचार करके सन्त जी अपनी पत्नी को लेकर श्री भैणी साहब पहुंचे। वहां वह एक तम्बू में ठहरे जहां जाते ही बीबी जी को ऐसी नींद आई कि वह उस रात खूब सोई। बीबी जी की सतगुरु जी के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। सतगुरु महाराज तो जानी जान थे ही। उनके मन की ब्यथा सतगुरु जी ने तुरंत जान ली तथा बीबी जी पर अपनी कृपा दृष्टि कर ही दी उनके सिर का दर्द दूर हो गया। वह भली चंगी पूर्ण स्वस्थ हो गईं। इस घटना के पश्चात् वह पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहीं। उनको कोई कष्ट नहीं हुआ सन्त जी का कहना है कि उसके परिवार पर सतगुरु महाराज की परम कृपा है। सन्त जी के दो पुत्र इंग्लैंड में हैं। एक

वहां की समिति का सदस्य भी है। सतगुरु महाराज ने इनके घर अनेक बार चरण डाले और कृपा दृष्टि की।

जय श्री सच्चे पातशाह, संसार के कर्णधार, जगत के पालनहार, घर-घर के वासी, आप निवासी, ज्योतिस्वरूप, ईश्वर आदिनाशी, अलख निरंजन, सबके दुख भंजन।

बीबी जगदीश कौर

बीबी जगदीश कौर भले खुले सिख परिवार से हैं, पर इनका आनंद कारज नामधारी सिख परिवार में हुआ। उन्होंने भजन भी लिया हुआ है। वह पूरी श्रद्धा और मर्यादा में रहती हैं। यह लुधियाणा की ही रहने वाली हैं। उनके ऊपर सतगुरु जगजीत सिंह जी ने अपार कृपा की है। यह अफ्रीका में बड़ी मुसीबत में फंस गई थीं। आप उसी घटना पर आधारित साखी सुनाना चाहती हैं।

साखी

बीबी जगदीश कौर जी बताती हैं कि इनके पति को केन्या (नैरोबी) में नौकरी मिल गई थी और वह परिवार सहित वहां चले गए थे। 2 वर्ष तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा परंतु उसके बाद कुछ समस्या शुरू हो गई। 2 वर्ष बाद बीबी जगदीश कौर लुधियाणा आईं। इनके मन में आया कि मैं सतगुरु जी के खुले दर्शन कर लूं। और वचन वाणी भी कर लूं। यह सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह के दर्शन हेतु वह श्री भैणी साहब आईं। सच्चे पातशाह के दर्शन किए। सच्चे पातशह जी ने कहा, "बीबी! क्या तुमने हमारे से भजन लिया है।" बीबी कहने लगी, "सतगुरु महाराज! जद मेरा विवाह हुआ था मैंने तभी भजन ले लिया था। और मैं रोज नितनेम करती हूं। फिर सच्चे पातशाह जी ने कहा, "आप यहीं क्यों नहीं रह जाते?" अफ्रीका छोड़कर क्यों नहीं आ जाते? इस पर बीबी ने उत्तर दिया बड़ा मुश्किल है। वहां अच्छी नौकरी चल रही है। इस कारण यहां आना बड़ा कठिन है। उसके कुछ समय बाद मालिक ने इनके पति को दुखी करना शुरू कर दिया। वह न पैसे देता था और न इन्हें भारत आने की इजाजत ही देता था। इनके पति सरदार सर्वजीत सिंह ने तंग आकर अपना त्याग पत्र मालिक को दे दिया मालिक बड़ा धूर्त सा व्यक्ति था वह न ही उन्हें कोई दूसरी नौकरी ही करने देता और न ही इन्हें भारत आने की छूट ही दी। इन पर मुसीबतों के पहाड़ टूटने शुरू हो गए। इन्हें हर समय सतगुरु महाराज की याद आने लगी। इनके पति सरदार सर्वजीत सिंह को नौकरी छोड़े तीन महीने हो गए थे। तथा बेकार पड़े हुए थे। मालिक बहुत क्रोध में था। वह कहने लगा कि बड़ी कठिनाई से मैंने आप लोगों को यहां लाने के लिए परमिट लिया है और आप हमें छोड़कर जाना चाहते हो। मैं इस संबंध में आपकी कोई सहायता नहीं करूंगा। बीबी जी रोज सुबह सुखमनी का पाठ करती थी। एक दिन पाठ करते-करते उनको सतगुरु श्री राम

सिंह जी ने घोड़े पर सवार होकर दर्शन भी दिए थे। बीबी जी सुबह उठ कर स्नान करके सुखमनी का पाठ पूरे नियम से करती थी। उन्होंने कभी भी उस काम में नागा नहीं डाला। उस दिन जब सतगुरु श्री राम सिंह जी ने घोड़े पर सवार उनको दर्शन दिए तो वह उनके अंदर डयोढ़ी तक आ गए। तथा इनको दूर से ही हाथ उठाकर आर्शीवाद दिया उन्होंने भी दोनों हाथ जोड़कर माथा टेक दिया। अब उनके मन में विचार आया कि अब हमारा संकट कट जाएगा। अब सतगुरु महाराज जी कृपा होने वाली है। वही हुआ कुछ दिनों बाद उनके डालर भी मिल गए और भारत वापिस आने की अनुमति भी मिल गई। सब काम स्वयं ही ठीक होते चले गए। वही मालिक जो इनको डराता धमकाता था कि अगर आपने मेरी नौकरी छोड़ी तो मैं आपको किसी दुर्घटना में मरवा दूंगा, और कहता था कि आप किसी भी हालत में जिंदा बचकर नहीं जा सकते। उसी मालिक का मन अब एकदम बदल गया। और बड़े प्यार से इनको भारत जाने की अनुमति दे दी। हालांकि उसने इनको पूरे पैसे तो नही दिए। परंतु ये खुश थे कि इन्हें अपने देश जाने की अनुमति मिल गई है। अब यह भारत वापिस आकर दुबारा अपनी जिंदगी सुख से बिता सकते हैं। यह महान व्यथा केवल सतगुरु जी के कारण ही हुई।

दूसरी साखी

इनका बड़ा बेटा तीन साल पहले बीमार पड़ गया। इन्हें बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा। तब भी इन्होंने अरदास की तो सतगुरु श्री राम सिंह जी ने सपने में इनको दर्शन दिए। और कहा कि चिंता न करो काका ठीक हो जाएगा और सतगुरु जगजीत सिंह जी की भी इन पर अपार कृपा बनी रही है। सपने में इन्होंने यह भी देखा कि सतगुरु श्री जगजीत जी हवाई जहाज द्वारा वहां पधारे हैं। सपने में इन्होंने देखा कि इनका जहाज समुद्र में डूब रहा है तो उस समय सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी आए। उन्होंने कृपा की और इनके डूबते हुए जहाज को किनारे लगाया। तथा इनकी प्राण रक्षा की। इसके साथ ही इनका बेटा भी जो कितने दिनों से अस्पताल में बीमार चल रहा था अब बिलकुल ठीक और स्वस्थ हो गया है।

कुछ समय के पश्चात् बीबी जी स्वयं अस्वस्थ हो गई, परंतु सतगुरु जी की अपार कृपा से ठीक तथा स्वस्थ हो गई। तब से नित्य प्रति साढ़े तीन बजे उठकर स्नान करके पूजापाठ तथा नित्य नेम में बैठ जाती हैं। इनके बेटे महेन्द्रपाल सिंह का आनन्द काराज भी हो गया है। हालांकि इनकी श्रीमती भी खुले सिख परिवार

से है। पर उसने नाम लिया है। और पूरी नामधारी मर्यादाओं में रहती है। इनका पूरा परिवार सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के चरणों से जुड़ा हुआ है। बीबी जी का स्वास्थ्य भी अब काफी अच्छा हो गया है। बेटा भी स्वस्थ हो गया है। इन्होंने सतगुरु के चरणों में अर्ज की कि वह कोई सेवा बताएं। सतगुरु जी ने आदेश दिया कि आप लंगर में 10 हजार रुपए दे दें। तो यह लगातार दो साल तक लंगर में 10-10 हजार रुपए सेवा करती रहीं। हालांकि सतगुरु जी ने यह नहीं कहा कि वह हर साल 10 हजार रुपए दें। परंतु जब भी इनसे बन पाता है यह लंगर में सेवा करती हैं। सन्त हरनाम सिंह जी ने इनको भजन दिया था। तो इन्होंने कहा था कि आप दोनों पति पत्नी नित नियम करते रहें। अब यह न्यू जनता कालोनी में रहते हैं। वहां दो मंजिला इनका मकान है। ऊपर इनका परिवार रहता है। नीचे इनकी वर्कशॉप है। अब सतगुरु जी की कृपा से सब कुछ सुन्दर ढंग से चल रहा है। इनके दुख सतगुरु जी कृपा से छंटने शुरू हो गए हैं।

पिछले दिनों इनका पोता हुआ था। उसका नाम उस सच्चे पातशाह जी ने मान सिंह रखा था। बड़े बेटे को टाईफाईड हो गया। छोटा भी बीमार हो गया। यह बच्चा भी अस्पताल में दाखिल था। क्योंकि यह ऑप्रेशन द्वारा हुआ था। यह सच्चे पातशाह जी को अरदास करते रहे। अब सतगुरु जी की परम कृपा से सब कुछ ठीक है। सतगुरु महाराज कभी-कभी सपने में बच्चे को भी दर्शन देते हैं। जब बीबी जी की शादी हुई थी तब भी सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह श्री रामसिंह जी ने दर्शन दिए थे। उन्होंने सुबह उठकर फोटो देखा तो तब उन्हें पहचाना कि ये तो सतगुरु श्री रामसिंह जी महाराज हैं। उनके मन में तब से ही नामधारी सतगुरु महाराज के प्रति श्रृद्धा बनी हुई है। तब से ही बीबी उनके चरणों से जुड़ी हुई हैं।

धन्य हैं श्री भैणी साहब वाले सतगुरु महाराज जो अपने भक्तों के दु:खों का निवारण करते हैं। सुख प्रदान करते हैं। उनके बागों में बहार रहे यही इनका सत संकल्प रहता है। यही स्वयं परमात्मा स्वरूप हैं।

सतगुरु सब चिंता करें
हरें सकल सन्ताप
सतगुरु को जो जन भजे
रहे सदा निष्पाप।
जय श्री सच्चे पातशाह आखंड, अछेद अभेद सुवेद।

बीबी सतिन्दर कौर जिन्हें सब बीबी सतीन कौर कहते हैं (बैंकाक)

बीबी सतिन्दर कौर के पति का नाम सन्त चरणजीत सिंह है। इनका आनंद कारज 1975 में बैंकाक में ही हुआ था। बीबी सतिंदर कौर के पिता सन्त कृपाल सिंह जी को सतगुरु सच्चे पातशाह प्यार से बब्बर शेर कह कर पुकारते थे। बीबी सतिंदर कौर की दो बेटियां तथा एक बेटा है।

साखी

बीबी सतिंदर कौर के पति का बैंकाक में व्यापार में बहुत नुकसान हो गया। किसी ने इनको सुझाव दिया कि आप दुबई जाओ। वहां पर आप अपना अच्छा कारोबार कर सकते हैं। ये अपनी लड़कियों को मसूरी में दाखिल कराकर अपनी पत्नी को साथ लेकर दुबई चले गए। उस समय इनके बेटा पैदा नहीं हुआ था। यह बड़े सरल तथा साधु-स्वभाव के व्यक्ति हैं तथा प्रत्येक व्यक्तित्व पर जल्दी विश्वास कर लेते हैं। दुबई में इनको जो साझेदार मिले उन्होंने इनको बहुत लूटा तथा बहुत हानि पहुंचाई। इससे इनका मन बहुत खिन्न हो गया। यह बड़े उदास रहने लगे। वहां संत चरणजीत सिंह को विचार आया कि मैं श्री भैणी साहब जाकर सतगुरु महाराज के दर्शन करूं। और उनके दर्शन से संभवत: मेरे दिन अच्छे आ जाएं। इन्होंने अपना नया फ्लैट लिया, उसमें सामान रखा। नए फ्लैट में टैलीफोन भी नहीं था। अचानक दो नामधारी सिख इनसे मिलने आ गए। इन्होंने आकर सूचना दी कि दुबई में शुक्रवार को दीवान लगने वाला है। वहीं पर इनको यह भी ज्ञात हुआ कि सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी को दुबई में आए हुए 13 वर्ष हो गए हैं। मन बहुत दुखी था। उन्होंने भारत जाने के लिए पाकिस्तान विमान सेवा से भारत जाने की टिकट करवा ली थी परंतु सीट उपलब्ध न थी। उसके बाद ये नामधारी सन्तों के घर गए, वहां इनको समाचार मिला कि सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी दुबई पधारने वाले हैं। मन बहुत प्रसन्न हुआ। इन्हें ऐसा लगा कि सच्चे पातशाह ने मन ही मन उनकी कथा सुन-समझ ली है तथा अपने भक्त को दर्शन देने तथा उसका कष्ट हरण करने के लिए दुबई आ रहे हैं। सतगुरु अपने भक्तों को कभी भूलते नहीं तथा सदा अपने भक्तों के अंगसंग रहते हैं। सच्चे पातशाह जानी जान हैं तथा उन्हें पता रहता है कि उनका भक्त इस समय किन परिस्थितियों से गुजर रहा है। सन्त जी भागते-भागते घर पर

आए तथा अपनी पत्नी को यह शुभ समाचार सुनाया और यह भी सुनाया कि पता चला है कि सच्चे पातशाह का डेरा हमारे घर पर ही पड़ेगा। बीबी सतिंदर कौर के तो मारे खुशी के आंखों में आंसू निकल पड़े। जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। इससे कुछ समय पहले बीबी सतिंदर कौर को सपना आया था कि कहीं दीवान लगा हुआ है। बीबी सतिंदर कौर किसी लड़के का हाथ थाम कर सतगुरु जी को माथा टेकने लगी। सच्चे पातशाह जी ने पूछा "यह बेटा किसका है?" फिर आगे वचन किया, "इस बेटे को वापिस कर दो और सतगुरु से बेटे की मांग करो।" बीबी ने सपने में ही वह बेटा जहां से लाई थी वापिस कर दिया।

कुछ समय बाद सतगुरु ने इनके डेरे पर चरण डाले। इनके परिवार वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। सच्चे पातशाह जी ने इनको असीम खुशियां और अगणित संतोष दिए। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि सतगुरु उनके गरीबखाने पर चरण डालेंगे।

सच्चे पातशाह जी के साथ माता जी भी पधारी थीं। बीबी सतिंदर कौर ने माता जी से अर्ज की कि वह सतगुरु महाराज को अर्ज करें कि वह पुत्र की दाद दें। माता जी सतगुरु को अर्ज करना भूल गईं। बीबी सतिंदर कौर सतगुरु महाराज के कमरे में उनके दर्शन करने गईं और माता जी से इशारा करने लगीं। परंतु माता जी समझ न पाईं कि वह क्या कहना चाहती हैं। सतिंदर कौर ने दुबारा इशारा किया परंतु माता जी फिर भी न समझीं। बीबी ने हिम्मत करके सच्चे पातशाह जी को अर्ज करने का प्रयास किया। सतगुरु जी ने इनको मना कर दिया। और वचन किया कि अर्ज न करें। मैंनूं सब कुछ पता है। बीबी ने फिर दुबारा अर्ज करने का यत्न किया। सतगुरु जी ने फिर मना कर दिया और वचन किया, "तू दिल्ली डाक्टर मूसा कोल जा। और उसे मेरा नाम लेकर दिखा। यह मूसा एक मुसलमान डाक्टर है। इस पर सतगुरु जी की अपार कृपा रही है। यह रूस में अंग्रेजी डाक्टरी, होम्योपैथी और आयुर्वेदिक करने के पश्चात अक्युपैंचर का भी इसने अध्ययन किया है। पर इनकी प्रैक्टिस (धंधा) जम नहीं पाई। किसी के द्वारा इनका सच्चे पातशाह जी से परिचय हो गया। सच्चे पातशाह जी की इन पर बड़ी कृपा होने शुरू हो गई। आज इंग्लैंड में बहुत अच्छे स्थान पर रहते हैं। और इंग्लैंड की महारानी के बेटे राजकुमार चार्लस के भी यह डाक्टर हैं। तथा दुनियाभर से बड़े-बड़े लोग इनसे इलाज करवाने आते हैं। यह सब कुछ सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की कृपा के कारण ही हुआ है। डाक्टर मूसा कभी भी इस बात को भूलते नहीं हैं। इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। अगले साल फिर सच्चे पातशाह दुबई पधारे। उनके साथ 12 व्यक्ति और थे और बीबी

सतिंदर कौर के मन में इच्छा थी कि सच्चे पातशाह उनके घर पर ही सुबह की वार लगाएं। परंतु शाम को किसी के घर दीवान लगाना था। परंतु बिजली फेल हो जाने के कारण उस कार्यक्रम को रद्द करना पड़ा तथा शाम का दीवान सतिंदर कौर के डेरे पर ही लगा। हालांकि दुबई में आमतौर पर बिजली फेल नहीं होती। सच्चे पातशाह का पांच दिन रहने का कार्यक्रम था परंतु अचानक ही उन्होंने दो दिन के पश्चात ही दुबई छोड़ने का कार्यक्रम बना लिया। बीबी ने रोना शुरू कर दिया और पूर्वाजी को अर्ज की कि वह सच्चे पातशाह जी को अर्ज करें कि वह अभी जल्दी न जाएं। हमारा दिल अभी नहीं भरा। ट्रैवल एजंट को फोन किया गया, उसने कहा कि सीटें तीन दिन बाद ही मिल पाएंगीं। इस प्रकार बीबी सतिंदर कौर की अरदास सतगुरु जी ने परवान कर दी फिर सच्चे पातशाह जी ने इनसे वचन किया कि उन्हें इसकी माली हालत का पूरा ज्ञान है। वह अगले वर्ष इनको दुबारा बैंकाक ले जाने का प्रबंध करेंगे। दोनों पति-पत्नि को सतगुरु महाराज के वचनों पर पूरा विश्वास था। आस्था थी कि अब सतगुरु महाराज ने उन पर कृपा करनी ही है और इनके अच्छे दिन अवश्य आएंगे।

अगले वर्ष सतगुरु जी के वचनानुसार दोनों पति-पत्नि डा. मूसा के पास गए और सतगुरु महाराज का आदेश सुनाकर डा. मूसा आधे घंटे तक इनकी केस हिस्ट्री लिखते रहे। इस पर बीबी ने कहा कि डा. साहब उस पर कृपा तो सतगुरु ने करनी है। वे तो सतगुरु महाराज का हुकुम मानकर आपके पास आए हैं। डा. मूसा सतगुरु के प्रति उनकी श्रद्धा देखकर बड़े प्रसन्न हुए। क्योंकि उन्हें ज्ञान था कि कृपा तो सत्गुरु महाराज ही करने वाले हैं। उनका तो केवल नाम ही होना है। डा. मूसा बोले, ''यदि उनका सतगुरु जी पर इतना विश्वास है तो उनके मन की बात अवश्य पूरी होगी। बीबी ने कोई दवा नहीं ली। कोई इलाज नहीं करवाया। केवल मात्र सच्चे पातशाह पर ही विश्वास किया कि वह ही पुत्र प्रदान करेंगे। जैसा सच्चे पातशाह जी ने वचन किया था, बीबी और उनके पति घूम फिर कर दुबारा बैंकाक पहुंच गए। थोड़ा समय ही बीता था कि बीबी सतिंदर कौर के पांव भारी हो गए। समय बीतता गया और एक दिन समय से पहले उन्हे कुछ तकलीफ महसूस हुई तो वह अस्पताल गईं। वहां पर डाक्टर ने अल्ट्रासाउंड करके इनकी जांच की। डाक्टर ने बताया कि इन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा और आप्रेशन करके बच्चा पैदा होगा। यह सुनते ही बीबी सतिंदर कौर बहुत घबरा-सी गईं। उन्होंने अस्पताल से ही अपने पति को फोन किया और सूचना दी कि वह जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंच जाएं। क्योंकि डा. मेरे आप्रेशन की बात कह रही है। डा. ने बीबी सतिंदर कौर से डिक्लरेशन फार्म पर दस्तखत करा

लिए। उन्होंने उसके पति के अस्पताल पहुंचने पर उनसे कहा कि वह भी डिक्लेरेशन फार्म पर हस्ताक्षर कर दें। फिर डा. ने उनके पति से पूछा कि वह बताएं कि उनके बच्चे को बचाया जाए या बच्चे की मां को। सन्त जी बड़े हैरान हो गए। वह कहने लगे कि डाक्टर साहब आप क्या बात कर रहे हैं। डा. ने इनको बताया कि बच्चे और मां के बीच जो नाड़ी होती है जिसके द्वारा बच्चे का भोजन तथा प्राणवायु पहुंचती है उसमें गांठ लगी हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चा बहुत कमजोर है और उसकी प्राणवायु बिल्कुल नहीं पहुंच पा रही। यह बच्चा बहुत कमजोर पैदा होगा और इसका वजन बहुत ही कम होगा। सन्त जी ने डाक्टर से कहा कि आप किसी बात की चिंता न करें। आप इनका ओप्रेशन करें हमें अपने भगवान सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज पर पूरा भरोसा है। वह सब कुछ अच्छा ही करेंगे। बच्चा ओप्रेशन द्वारा पैदा किया गया। बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ था। उसका वजन साढ़े तीन किलो था। पैदा होने के बाद उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। डाक्टरों ने इनसे पूछा कि इनका भगवान कौन है? आप अपने भगवान का धन्यवाद अवश्य करें। डाक्टरों ने बताया कि बिलकुल ऐसा ही केस कुछ दिन पहले भी उनके पास आया था परंतु वे उस बच्चे को बचा नहीं पाए थे और आज तक उन्हें इस बात का बहुत दुख है। अब सन्त जी की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है। इनकी दोनों बेटियों की शादी भी सतगुरु जी की कृपा से हो गई है और एक बेटी तो बच्चे की मां भी बन गई है। यह बच्चा भी इसी डाक्टर की देखरेख में पैदा हुआ है। बीबी कहती है कि सतगुरु जी ने हमारे ऊपर अपार कृपा करके अच्छे दिन दुबारा दिखा दिए हैं तथा पुत्र का मुंह भी दिखा दिया है। हम किन शब्दों से सतगुरु महाराज का धन्यवाद करें।

जोगिन्दर सिंह सुपुत्र सन्त गुरवचन सिंह (न्यूयार्क)

सन्त जोगिन्दर सिंह का परिवार काफी समय पहले से नामधारी परंपराओं तथा मर्यादाओं में बंध गया था। सन्त जी की पत्नी बीबी अमरजीत कौर बचपन में सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की इकलौती बेटी बीबा जी के पास छुट्टियां बिताने प्राय: चली जाया करती थीं। तथा बीबा जी के साथ ही खेलना तथा पढ़ना लिखना होता था। ये दोनों एक प्रकार से पक्की सहेलियां बन गई थीं। एक के बिना दूसरी का दिल नहीं लगता था। बाद में बीबा जी का विवाह हो गया और एक लड़का पैदा हुआ। उधर बीबा जी की सहेली अमरजीत कौर का विवाह भी सन्त जोगिन्दर सिंह जी के साथ संपन्न हुआ। और इस प्रकार उनका परिवार भी सुख पूर्वक रहने लगा।

साखी 1994 की घटना

इधर सन्त जोगिन्दर सिंह जी का परिवार सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहा था कि अचानक सन्त जी की बीबी अमरजीत कौर के घुटनों में दर्द होने लगा। सन्त जी ने बहुतेरे इलाज करवाए पर दर्द ठीक न हुआ। घुटनों में इतना दर्द होने लगा कि खड़े हो पाना भी कठिन हो गया था।

एक रात सन्त जी की पत्नी को स्वप्न हुआ। उन्होंने सपने में बीबा जी के बेटे को देखा। जो उनके घुटनों पर अपने पैर से ठोकरें मार रहा था। सन्त जी की पत्नी ने सपने में ही बीबा जी से शिकायत की कि वह काका जी को ठोकरें मारने से रोके कि वह इस प्रकार अमरजीत कौर के घुटनों पर ठोकरें न मारे। अमरजीत कौर को बहुत दर्द हो रहा था। वह सपना अभी चल ही रहा था कि उनकी नींद खुल गई।

अगले दिन सन्त जी का श्री जीवन नगर में मेले में जाने का प्रोग्राम था। इसलिए सन्त जी सुबह जल्दी उठ गए। और उठकर स्वयं स्नान आदि किया। उसके पश्चात् अपनी पत्नी बीबी अमरजीत कौर को भी स्नान करवाया क्योंकि वह घुटनों के दर्द के कारण खुद तो उठकर खड़ी नहीं हो सकती थी। स्नान के बाद सन्त जी की पत्नी ने इनसे कहा कि वे सतगुरु के चरणों में अरदास करें। कि सच्चे पातशाह जी कृपा करके इस रोग को दूर कर दें। उधर गांव रायां में सतगुरु राम सिंह जी की याद में कोई कार्यक्रम चल रहा था। वहां पहुंच कर सन्त

जोगिन्दर सिंह जी ने सच्चे पातशाह जी को माथा टेका। और मन ही मन अरदास की कि सच्चे पातशाह जी मेरी पत्नी पर कृपा करें। जिस प्रकार से सच्चे मन से की गई अरदास सतगुरु अवश्य पूरी करते हैं, ठीक उसी प्रकार से सच्चे पातशाह जी ने उनकी अरदास भी सुन ली। और उनकी पत्नी पर सच्चे पातशाह जी की अपार कृपा हो गई।

जब सन्त जोगिन्दर सिंह जी वहां से लौट कर वापिस आए और अपने घर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि उनकी पत्नी अमरजीत कौर बड़ी प्रसन्न चित्त दिख रही थी। जो कि इस दर्द के कारण बुझी-बुझी रहती थी। और अपने आप खड़ी भी नहीं हो पाती थी। उसने सन्त जी के सामने ऊठक बैठक करके दिखाई। सन्त जी बड़े हैरान थे कि सच्चे पातशाह जी ने कृपा इतनी जल्दी कर दी। इस घटना से इनके तथा इनकी पत्नी के मन में सतगुरु महाराज के लिए अपार श्रद्धा हो गई।

कुछ दिन बाद सन्त जी को इनकी मौसी का लड़का बलदेव सिंह मिला उसने इनको कहा कि एक सुनार घुटनों के दर्द की दवाई देता है। जो शायद दो-तीन दिन बाद मिलेगा। दो-तीन दिन बाद सुनार ने दवाई दी। सुनारे की दवाई से केवल 6 दिन में ही इनकी पत्नी पूरी तरह से ठीक हो गई। घुटनों का दर्द बिलकुल जाता रहा और यह बिलकुल ठीक प्रकार से चलने फिरने लगी। सतगुरु महाराज की कृपा से इनके दो बेटे हैं, और एक बेटी। तीनों बच्चों की देखभाल भी अच्छी प्रकार से करती है और परिवार भी सतगुरु जी की कृपा से ठीक ढंग से चल रहा है।

जय सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज जो ईश्वर का अवतार हैं और संसार का कल्याण करने तथा कष्ट मुक्त करने के लिए इस धरती पर पधारे हैं।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवानि युगे-युगे।

सरदार ब्रजेन्द्र सिंह खरबन्दा सुपुत्र सन्त अमर सिंह (बैंकाक)

यह साखी बैंकाक में 13 जुलाई, 2001 तथा 14 जुलाई, 2001 को सुनाई गई। सरदार ब्रजेन्द्र सिंह जी खरबन्दा का कहना है कि उनका परिवार उनकी दादी जी के समय से नामधारी मर्यादाओं का पालन कर रहा है। दादी जी का स्वर्गवास श्री भैणी साहब में ही हुआ था। इनके पिता सन्त अमर सिंह जी सतगुरु प्रताप सिंह जी के चरणों से जुड़े हुए थे। और सतगुरु जी की अपार कृपा बनी रही। सतगुरु जी ने इनको अपनी अनेक यात्राओं में अपने साथ सारे देश में घुमाया। और वह एक बार इनको बैंकाक भी अपने साथ ले आए थे।

खरबन्दा दो साल पहले की एक घटना सुना रहे हैं। एक बार इनको दिल का दौरा पड़ गया। तथा वह मूर्छित हो गए। वह उस समय अपनी दुकान पर काम कर रहे थे। इनका बेटा इनको मिशन अस्पताल में ले गया। यह घटना 17 मई, 1999 की है। अस्पताल में इनके दो दिन टैस्ट आदि तथा जांच होती रही। परंतु यह पता न चल सका कि इनको क्या कष्ट है। डॉक्टरों ने इन्हें एक महीने बाद आने को कहा। यह घर वापिस आ गए। और नित्य प्रति दुकान पर जाने भी लगे। फिर कुछ दिनों बाद यह बेहोश होकर दुकान पर गिर पड़े। इन्हें फिर मिशन अस्पताल पहुंचाया गया। किसी प्रकार इनकी बेटी सुनीता को इनके बीमार होने की सूचना मिली। यह बैंकाक आ गई। इन्हें बैंकाक अस्पताल में दिखाने ले गए। डॉक्टरों ने इनके मैडीकल रिकार्ड देखकर कहा कि इन्हें कोई दिमाग की बीमारी नहीं है। संदेह प्रतीत होता है कि इन्हें दिल में कोई समस्या है। इन्हें Trademill पर पेटी बांध कर दौड़या गया। जो दिल के मरीजों का परीक्षण करने के लिए लगाई जाती है। अभी यह 3-4 मिनट ही उस कनवेयर पेटी पर दौड़े होंगे कि ये बेहोश होने लग गए। डॉक्टरों ने तुरंत मशीन बंद कर दी। फिर जीभ पर कुछ छिड़काव किया तो इन्हें एक घंटे के बाद होश आ गया। डॉक्टरों ने घोषित किया कि सरदार जी को हृदय रोग है। साथ ही रक्तवाह्य नलिकाएं भी रुकी हुई हैं। उन्हें दो दिन आराम करने को कहा गया। उन्हें गोलियां भी दी और कहा जब भी इन्हें तकलीफ हो इन गोलियों को जीभ के नीचे रख लेना। परंतु इन गोलियों से भी कोई लाभ नहीं हुआ। अगले दिन अस्पताल में इनका एन्ज्योग्राम किया गया। और वीडियो फिल्म ली गई। और इनको टी.वी. पर दिखाया गया। इसमें साफ नजर आ रहा था कि इनकी खून पहुंचाने वाली नसें बंद हो गई हैं। इसके बावजूद

भी डॉक्टरों ने इनसे खतरे की बात को छिपाया और इन्हें तसल्ली देते हुए कहा यह एक मामूली सी तकलीफ है। इसके लिए आपको एक छोटा सा दिल का ऑप्रेशन कराना होगा। डॉक्टरों ने इनको वह बिलकुल नहीं बताया कि यह दिल का एक बड़ा ऑप्रेशन बाई-पास सर्जरी है। खरबन्दा जी ने कहा कि डॉक्टर साहब मैं मरने से नहीं डरता। आप मुझे सच-सच बताइए कि इस ऑप्रेशन में बचाव की कितनी संभावना है। और मैं मर जाऊंगा या ठीक हो जाऊंगा। डॉक्टरों ने साफगोई से काम लेते हुए उन्हें बताया कि सच्ची बात तो यह है कि इसमें 60 प्रतिशत संभावना आपके बच पाने की नहीं है। 40 प्रतिशत हम उम्मीद कर सकते हैं कि आप स्वस्थ हो जाएंगे। और इसके लिए हम बाई पास सर्जरी करना चाहते हैं। उन्हें फिर घर भेज दिया गया और कहा गया कि वे कुछ दिन बाद बुलाएंगे। उसके बाद ये वहीं पर बेहोश होने लगे। दवाई का कोई असर नहीं हुआ। घरवालों ने डॉक्टरों से फिर संपर्क किया। डॉक्टरों ने कहा कि वे उन्हें तुरंत ले आएं। तथा अस्पताल में दाखिल करवा दें। एक थाई डॉक्टर थे डॉ. रिथुम। वह बहुत माने हुए डॉक्टर थे। बैंकाक के बहुत माने हुए सर्जन हैं। दो दिन तक उन्हें ग्ल्यूकोज चढ़ा रहा। थाई डॉक्टरों ने इनसे कुछ छिपाया नहीं था। फिर इन्होंने पूछा कि उस पर खर्चा कितना आएगा। तो डॉक्टरों ने कहा कि साढ़े तीन लाख बाहट जो थाई करेन्सी (मुद्रा) है खर्च आएगा। इन्हें एक फार्म दिया गया और कहा गया कि आप विचार करके इस फार्म पर अपने हस्ताक्षर कर दें। जिससे बाद में डॉक्टरों की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। डॉक्टर ने इन्हें आदेश दिया कि वह रात को कुछ न खाएं। खाली पेट सो जाएं। फिर इनकी पत्नी से भी डॉक्टरों ने डिकलरेशन हस्ताक्षर करवा लिए और खरबन्दा जी ने भी हस्ताक्षर कर दिए। आप मधुमेह के रोगी थे। दवाईयों से उनकी शूगर भी नियंत्रित कर ली गई। और जब ऑप्रेशन का समय हो गया तो यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि इनके ससुर सरदार शमशेर सिंह जी नरूला आएं तो तब इनको ऑप्रेशन के लिए अंदर ले जाया जाए। थोड़े समय बाद सेठ जी अस्पताल पहुंच गए। और उन्होंने भगवती की अरदास की और सतगुरु महाराज का चित्र इनको दिया। खरबन्दा जी की जेब में गुरु नानक जी का चित्र था। इन्होंने उस चित्र को माथा टेक कर अपने सिरहाने रख दिया था। और इसके नीचे सतगुरु महाराज का चित्र भी रख दिया। इसके बाद डॉक्टरों ने इनकी गले की दोनों नसों में दाएं और बाएं टीके लगा दिए। और अचानक उन्हें बेहोशी आ गई। मूर्छितावस्था में यह क्या दृष्य देखते हैं कि गुरु नानक जी एक विमान में पधारे हैं और वहां बड़ा तेज प्रकाश फैल गया है। उन्होंने आकर इनके शरीर पर हाथ रखा और डॉक्टरों से पूछा कि इनको क्या कष्ट

है? डॉक्टरों ने बताया कि उनके बच पाने की कोई उम्मीद नहीं है। फिर गुरु नानक देव ने डॉक्टरों से कहा कि अभी कुछ देर इंतजार करो। सतगुरु जगजीत सिंह जी को आने दो। अभी आप ऑप्रेशन न करना। गुरु नानक हैरान थे कि सतगुरु श्री जगजीत सिंह को आने में देरी क्यों हो गई। अचानक क्या देखते हैं कि एक तेज प्रकाश हुआ तथा सतगुरु जगजीत सिंह जी का विमान नीचे उतरा। और सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने गुरु नानक देव जी को प्रणाम किया। और गुरु नानक देव जी ने सतगुरु जगजीत सिंह जी को गले से लगा लिया। और अपना हाथ खरबन्दा जी के सर से उठाकर सतगुरु जगजीत सिंह का हाथ रख दिया और कहा, ''आज की गद्दी के आप मालिक हैं। आप ही इनकी रक्षा करो। सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने डॉक्टरों को आदेश दिया कि वे ऑप्रेशन करें। डॉक्टरों ने कहा कि शूगर के कारण अंदर सब कुछ खतम हो चुका है। परन्तु सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह ने कहा कि वे इस बात की कोई चिन्ता न करें। और ऑप्रेशन करें। ऑप्रेशन हुआ इन्हें 10 बोतल रक्त चढ़ाया गया और थोड़े समय बाद इनका खून बाहर निकलना शुरू हो गया। डॉक्टर हैरान थे कि अब क्या होगा। वे अब क्या करें? डॉक्टर बड़े परेशान थे। इनकी हालत इतनी खतरनाक थी कि इनका दुबारा ऑप्रेशन करना बड़ा खतरनाक था। पर कोई अदृश्य शक्ति थी जो डॉक्टरों को कह रही थी कि वह इनकी रक्षा करेगी। आप देर न करो, किसी बात की चिन्ता न करो। आप अपना काम किए जाओ। अगले दिन इनको 25 बोतल खून और दिया गया। इसके बाद इन्हें होश आया। सरदार ब्रजेन्द्र सिंह जी कहते हैं कि उनकी जीवन रक्षा सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने की है। हालांकि वह इनके बहुत बड़े उपासक नहीं रहे। यह हमेशा लाल रंग की नोकदार पगड़ी पहनते थे। और नामधारी होते हुए भी अपने आपको खुला सिख दिखाने की कोशिश करते थे। यह स्वभाव से कुछ जिद्दी भी रहे। हालांकि इनके पिता सतगुरु प्रताप सिंह जी के अनन्य भक्त थे। पर अब उन्होंने अपनी धारणा बदल ली है। अब इनको विश्वास हो गया है कि सतगुरु नानक देव और सतगुरु जगजीत सिंह जी में कोई अंतर नहीं है। और आज की गद्दी के जो मालिक हैं वह सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी ही हैं। वही ज्योति चली आ रही है। उन्होंने सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया, जिन्होंने उनकी रक्षा की और एक प्रकार से नया जीवन प्रदान किया।

बीबी नरजीत कौर (सास) तथा प्रेममाला (बहू), बैंकाक

बीबी नरजीत कौर का आनन्दकारज सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी की हजूरी में 16 फरवरी वर्ष 1955-56 में बैंकाक में हुआ था। उस दिन बसन्त पंचमी का दिन था। बीबी नरजीत कौर का विवाह सन्त जयपाल सिंह मनचंदा जी से हुआ था, इनके विवाह को 14 वर्ष हो गए थे और इन 14 वर्षों में इनकी तीन बेटियां पैदा हुईं। बीबी चाहती थी कि सतगुरु कृपा करें और इनको एक पुत्र की प्राप्ति हो। इनके पति सन्त जयपाल सिंह मनचंदा ने इनसे कहा कि वह सतगुरु जी के चरणों में अरदास करे।

एक रात की बात है कि बीबी नरजीत कौर गहरी नींद में सोई हुई थीं इनको सपने में सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी के दर्शन हुए। साथ में सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी भी विराजमान थे। बीबी ने सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी के चरणों में अरदास की कि इन्हें एक पुत्र प्रदान करने की कृपा करें। बीबी ने सतगुरु जगजीत सिंह जी के चरणों में हाथ जोड़ दिए। बीबी का सपना टूट गया और जाग आ गई। कुछ समय के पश्चात् सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी बैंकाक आए। वहां वे सेठ त्रिलोक सिंह जी के डेरे पर ठहरे। वहां पर अनेक जोड़े (पति पत्नियां) सतगुरु जी के दर्शन करने और पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना करने आए। बीबी नरजीत कौर भी अपने पति मनचंदा जी के साथ वहां सतगुरु जी के दर्शन करने आईं। जब सब लोग दर्शन कर चुके तो अचानक सच्चे पातशाह जी अपने स्थान से उठकर खड़े हो गए। और वचन किया, ''आप लोग जाएं अब उनके विश्राम का समय हो गया है। सच्चे पातशाह दरवाजे के बीचों-बीच खड़े हो गए। उस समय वहां कमरे में एक अन्य जोड़ा सन्त प्रीतम जी तथा उनकी पत्नी बीबी बेअन्त कौर भी उपस्थित थीं। बीबी नरजीत कौर ने प्रीतम जी की पत्नी बीबी बेअन्त कौर के कान में कहा कि वह सच्चे पातशाह के चरणों में अरदास करें कि सच्चे पातशाह उन्हें एक बेटा देने की कृपा करें। इन दोनों जोड़ों का विवाह एक ही दिन सच्चे पातशाह सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी की हजूरी में बैंकाक में हुआ था। बीबी बेअन्त कौर ने अपने पति प्रीतम जी के कान में बीबी नरजीत कौर की अर्जी पहुंचाई। सच्चे पातशाह मुस्कराकर सारा दृश्य देख रहे थे। वह तो जानी जान सर्वज्ञ हैं। उन्हें पता था कि इनकी क्या इच्छा है। फिर भी सतगुरु जी ने प्रीतम से पूछा कि बीबी नरजीत कौर ने कान में क्या कहा है? प्रीतम जी ने अर्ज

की, "हे गरीब नवाज़! आप कृपा करो और दोनों को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दो।" हम दोनों को तीन-तीन बेटियां हैं। आप कृपा करके एक-एक पुत्र का आशीर्वाद दो। सच्चे पातशाह जी ने वचन किया, "सतगुरु प्रताप सिंह के चरणों में अरदास किया करो। मैं क्या चीज हूं।" नरजीत कौर के पति मनचंदा जी सतगुरु जी के चरणों में गिरकर अरदास करने लगे, "हे सच्चे पातशाह करने कराने वाले आप ही हो। आप ही सतगुरु प्रताप सिंह जी हो। आप ही सततगुरु श्री जगजीत सिंह हो।" मनचंदा जी उठे और बीबी बेअन्त कौर सतगुरु जी के चरणों में गिर पड़ी। सब लोग रोने लग गए। सतगुरु जी ने फिर बचन किया, "एह बीबियां भगोती का भजन करके सतगुरु प्रताप सिंह के चरणों में अरदास करें। सतगुरु जी की कृपा दोनों जोड़ों (दम्पतियों) पर होगी।"

एक वर्ष के उपरांत प्रीतम जी के घर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसे दर्शन सिंह नाम दिया गया। तथा उससे अगले वर्ष में बीबी नरजीत कौर के घर भी पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम उन्होंने गुरमीत सिंह रखा। उन दिनों सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी लंदन के दौरे पर गए हुए थे। बीबी नरजीत कौर के पति मनचंदा जी ने सतगुरु महाराज को लंदन में तार भेजकर बेटा होने का शुभ समाचार दिया। तार भिजवाने पर सतगुरु महाराज ने जवाब में सेठ त्रिलोक सिंह जी के घर में टेलीफोन किया और कहा कि बीबी को मेरी ओर से बधाई दें। धन्य हैं सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज जिन्होंने बीबी नरजीत कौर के घर खुशियां प्रदान कीं।

दूसरी साखी

समय व्यतीत होता गया। और बीबी नरजीत कौर का बेटा गुरमीत सिंह धीरे-धीरे जवान होता चला गया और जब वह विवाह योग्य हो गया तो उसकी शादी प्रेममाला नाम की एक लड़की से वर्ष 1992 में बैंकाक में हो गई। शादी के बाद दोनों पति पत्नी ने फैसला किया कि वे दो साल तक कोई बच्चा उत्पन्न नहीं करेंगे। तथा उन्होंने अपने इस फैसले पर अमल भी किया। पर इसके बाद काफी यत्न करने पर भी कोई संतान नहीं हुई। काफी इलाज करवाए। कई डॉक्टरों के पास गए। पर डॉक्टरों ने यही कहा कि अभी कुछ समय और लगेगा। आपको काफी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस प्रकार 5 वर्ष निकल गए।

सच्चे पातशाह जी ने 1997 में बैंकाक का दौरा किया। वहां पर साध संगत को दर्शन दिए। तथा साथ ही घोषणा की कि बच्चों के लिए नामधारी स्कूल बैंकाक में खोला जाएगा। सतगुरु जी ने आदेश दिया है कि बीबियां, माताएं अपने-अपने बच्चों को स्कूल में दाखल करवाएं। कुछ लोगों ने इस स्कूल के

लिए अपने-अपने बच्चों के नाम लिखवा दिए। पर कुछ लोग झिझकते रहे कि कैसे वे अपने बच्चों को ईसाईयों के स्कूल से निकलवा कर इस नामधारी स्कूल में डालें। सच्चे पातशाह के पास सारी बीबियां (माताएं) आ रही थीं। और अपने-अपने बच्चे के नाम लिखवा रही थीं। परन्तु सतगुरु महाराज ने नरजीत कौर तथा उनकी बहू प्रेममाला की ओर एक बार भी नहीं देखा।

सच्चे पातशाह बैंकाक में बीबी ज्ञानन के पुराने घर में ठहरे हुए थे। बीबी नरजीत कौर अपनी बहू प्रेममाला को साथ लेकर सच्चे पातशाह के दर्शन करने गई, और वहां जाकर सतगुरु महाराज के चरणों में दुपट्टा फैला कर प्रार्थना की, "हे गरीब नवाज़! तुसी बच्चे दी दात देवो। मैं आपजी दे स्कूल विच ओहना नूं दाखिल करावांगी। मेरी बहू की शादी नू 5 साल हो गए ने पर बच्चा नहीं होया।" सतगुरु महाराज ने अर्ज सुनी और आदेश किया कि अपनी बहू प्रेममाला नूं कहो कि ओ अढ़ाई माला भजन दी ते एक माला भगवती दी रोज कीता करे।" अर्थात प्रेममाला को कहें कि वह अढ़ाई माला भजन गुरु मन्त्रा की और एक माला भगवती की रोज किया करे। सच्चे पातशाह ने यह भी कहा कि बीबियां (माताएं) बच्चे मांगने तो आती हैं पर अपने स्कूल में बच्चो का नाम नहीं लिखवातीं। प्रेममाला के लिए उन्होंने कहा कि सच्चे पातशाह अपने आप कृपा करेंगे। सतगुरु जी के इन बचनों के ठीक एक मास उपरांत प्रेममाला गर्भवती हो गई। डाक्टरों से अल्ट्रासाऊंड करवाया तो रिपोर्ट में पता चला कि गर्भ में दो बच्चे दिख रहे हैं। दूसरी बार फिर अल्ट्रासाऊंड कराया तो डाक्टरों ने बताया कि इस बार तीन बच्चे दिख रहे हैं। प्रेममाला को यह सुनकर एकदम सदमा सा पहुंचा। कि कहीं तो एक भी बच्चा नहीं हो रहा था और अब सतगुरु जी की कृपा से तीन बच्चे आ रहे हैं। इन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था। डॉक्टरों ने इन्हें हिदायत दी कि इन्हें बड़ी सावधानी बरतनी होगी। यदि गर्भपात हुआ तो तीनों बच्चों के खत्म होने की पूरी-पूरी आशंका है। इसलिए बहुत संभलकर रहना पड़ेगा।

समय बीतता गया। बीबी नरजीत कौर समय-समय पर डॉक्टरों द्वारा प्रेममाला की निरंतर जांच करवाती रहीं। 21 डॉक्टरों और नर्सों का एक दल तैयार किया गया। क्योंकि तीन बच्चों का गर्भ एक गम्भीर मामला था। कभी भी ऐमरजैंसी ऑप्रेशन करना पड़ सकता था। अंत में वह दिन भी आ गया जब प्रेममाला को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। उन्हें तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया। जहां उनका ऑप्रेशन किया गया। तीनों बच्चे स्वस्थ अवस्था में उत्पन्न हुए। जिनका वजन तौल इस प्रकार था।

पहला बच्चा 2.3 किलो का उसका नाम गुरदयाल सिंह रखा गया। दूसरा

बच्चा 2.45 किलो। जिसका नाम गंगा सिंह रखा गया। तीसरा बच्चा जो कि कन्या थी उसका वजन 1.75 किलो था। उसका नाम ज्ञान कौर रखा गया। सबसे छोटी ज्ञान कौर को तीन सप्ताह अस्पताल में रखा गया और तीन सप्ताह बाद यह अपने घर पर आ गए।

इन बच्चों के पैदा होने से 15 दिन पहले बीबी नरजीत कौर के अन्दर मांस बढ़ गया था, जिसके कारण इनका ऑप्रेशन किया जाना था। उन्होंने श्री भैणी साहब सच्चे पातशाह जी को फोन किया और अर्ज की हे सच्चे पातशाह जी! बहू नूं बच्चे होन वाले ने। डॉक्टरों ने मेरा ऑप्रेशन करना है। आप कृपा करो कि मेरा ऑप्रेशन सफल हो जावे।'' सतगुरु जी ने बचन किया, ''चण्डी दी वार और भजन दी वरणी करो। सच्चे पातशाह जी कृपा करेंगे।'' सच्चे पातशाह जी के वचनों के अनुसार दोनों वरणी कराई गई। इनका ऑप्रेशन सफल रहा। इनकी बहू प्रेममाला का कहना है कि सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी अकाल पुरुष हैं। इन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया है। वह उस दिन से भगवती की एक माला रोज करती है।

जब अगली बार सच्चे पातशाह जी बैंकाक गए तो बीबी ज्ञानन के घर चरण डाले। बीबी नरजीत कौर अपने पोते-पोतियों और बहू प्रेममाला को साथ लेकर सच्चे पातशाह जी के दर्शन करने तथा धन्यवाद देने उनके चरणों में गई। उसने सच्चे पातशाह जी से कहा कि उन्होंने एक बार में ही पूरा परिवार दे दिया है। सच्चे पातशाह मुस्करा पड़े।

धन्यवाद सतगुरु महाराज दीनों के दीन दयाल।

सूबा जोगिन्दर सिंह
सुपुत्र सन्त हवेला सिंह, जालन्धर, न्यूयार्क

सूबा जोगिन्दर सिंह जी का परिवार काफी समय से ही नामधारी संप्रदाय में आ गया था। सूबा जी के पिता नोकदार पगड़ी बांधते थे। परंतु सतगुरु, महाराज की उन पर बड़ी कृपा रही।

सूबा जी वर्ष 1968-69 में इंजीनियरिंग का डिप्लोमा करने हेतु सिरसा गए थे। एक बार सूबा जी अपने जगाधरी वाले जीजा जी को लेकर सच्चे पातशाह जी के दर्शन करने श्री जीवन नगर गए। सतगुरु जी ने सूबा जी के जीजा जी से पूछा, "एह मुंडा कौन ऐ न।" यह बालक कौन है? इनके जीजा जी ने कहा, "जालन्धर वाले सरदार हवेला सिंह जी का बेटा है। सच्चे पातशाह जी ने बचन किया, "नामधारी का बेटा होकर भी नोकदार पगड़ी बांधता है? पगड़ी सीधी कर।" सूबा जोगिन्दर सिंह जी कहने लगे, "सच्चे पातशाह जी आप ही कृपा करो।" इस पर सच्चे पातशाह जी ने इनकी दस्तार सीधी कर दी। फिर बचन किया, "असी ते दस्तार सीधी कर दित्ती है। अगों तो दस्तार सिद्धी ही रहेगी।" जोगिन्दर सिंह जी ने अर्ज की, "गरीब नवाज कृपा आप ने ही करनी है।" सतगुरु जी ने बचन किया, "साडी कृपा रहेगी" (हमारी कृपा बनी रहेगी) सूबा जोगिन्दर सिंह उन दिनों आई.टी.आई. में डिप्लोमा कोर्स कर रहे थे। जब वह सतगुरु जी के दर्शन करने के बाद सिरसा वापिस जाने लगे तो सच्चे पातशाह जी ने पूछा, "तू कल नूं कालज जावेंगा ते तेरे दोस्त वी कहनगे कि पहले नोकवाली पगड़ी बांधता था अब पगड़ी सिद्धी किदा हो गई।" अर्थात पहले तू नोकदार पगड़ी बांधता था अब सीधी कैसे हो गई।" जोगिन्दर सिंह जी ने उत्तर दिया कि सच्चे पातशाह! मैं उनको उत्तर दे दूंगा कि पहले मुझे अकल नहीं थी, अब सतगुरु महाराज ने बुद्धि प्रदान की है। अब समझ आ गई है। सच्चे पातशाह जी ने प्रसन्न होकर पीठ थपथपाई। और कहा, "मैं बहुत खुश हूं नामधारी सज के ही रहना।"

सूबा जोगिन्दर सिंह का आनन्दकारज सच्चे पातशाह जी की हजूरी में वर्ष 1973 में श्री भैणी साहब में सूबा दसोन्धा सिंह जी की पोती से संपन्न हुआ। सूबा जी होले मुहल्ले और अस्सूके मेले में निरंतर जाते रहे। बहुत नित्य नियम तथा भजन संध्या करते हुए सूबा जी के मन में आया कि सच्चे पातशाह जी नूं जफ्फी पानी है (गले मिलना है) यह विचार केवल भजन भक्ति के दौरान ही आता।

और इसके बाद या इसके पहले ऐसा विचार कभी नहीं आता था बाद में सूबा जी सोचने लगते कि कैसी मूर्खों वाली बात मन में आ रही है। कहां वह अकाल पुरुष और कहां मैं एक तुच्छ सा शरीर। ऐसा विचार सूबा जी के मन में सात-आठ वर्ष तक आता रहा।

एक बार सूबा जी के छोटे भाई के रिश्ते की बात चल रही थी। विवाह साहिबाबाद-गाजियाबाद में करने की बात थी। लड़की का भाई सूबा जी को मिलने के लिए आया। इसी संबंध में बातचीत के दौरान वह कहने लगा कि आनन्द कारज के बाद वह चाहते हैं कि उनका भाई साहिबाबाद में ही स्थाई रूप से बस जाए। जिससे उनकी बहन अपने परिवार के निकट संपर्क में रह सके। असल में बात यह थी कि उनका भाई घर जवाई बन कर रहे। उनको बिलकुल भी पसन्द नहीं आई। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह संबंध बनाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि वह अपने भाई को बेचना नहीं चाहते। हमने तो आपकी लड़की अपने घर ले जानी है। इस प्रकार वहां रिश्ते की बात नहीं बन पाई।

सूबा जी सात भाई हैं। तथा आपस में बड़ा प्रेम है। सच्चे पातशाह जी ने सूबा जी पर कृपा करनी थी इसलिए हुक्म हुआ कि सभी भाइयों को सतगुरु जी ने श्री भैणी साहब में बुलाया है। सूबा जी अपने पिता तथा चार भाईयों सहित सच्चे पातशाह जी के चरणों में प्रात: 6 बजे उपस्थित हो गए। सच्चे पातशाह जी ने बचन किया, ''जोगिन्दर तैनू पता है कि मैं त्वानूं ऐथे क्यों बुलाया है? सूबा जी हाथ जोड़कर अर्ज की, ''गरीब नवाज! आप अकाल पुरुष हैं। आपके मन की बात हम नहीं जान सकते। सच्चे पातशाह जी ने वचन किया, ''श्री भैणी साहब सरोवर बनना है। मैं चाहता हूं कि सरोवर का कार्य आपके घर से आरंभ हो। सूबा जी उनके पिताजी तथा चारों भाई जोर से हंस पड़े। सच्चे पातशाह बोले जोगिन्दर हंस क्यों रहे हो। सूबा जी ने अर्ज की, ''गरीब नवाज हमें पता चल गया है कि हमारे परिवार पर आपकी कृपा होनी है। आप हम पर कृपा करके मिट्टी से उठाकर ऊंचा ले जाना है। ऐथे ऐने सिख बैठे ने, आप जी हुकम करो, कई सरोवर बन सकदे ने।'' यह सुनकर सच्चे पातशाह बहुत प्रसन्न हुए। और वचन किया, ''मैनूं पतासी त्वाडा परिवार मैनूं कदी ना न करेगा'' मुझे यह पहले से पता था कि आपका परिवार मुझे कभी इन्कार नहीं करेंगा। और फिर उन्होंने जोर से पीठ थपथपाई। फिर सूबा जी ने अर्ज की, ''गरीब नवाज आप कृपा करो कि हम सभी भाई इकट्ठे ही रहें और आपके चरणों से सदा जुड़े रहें। सतगुरु का वचन हुआ, ''त्वाडा परिवार एक रहेगा।'' इस प्रकार सच्चे पातशाह जी की अपार कृपा से सूबा जी का परिवार इकट्ठा ही रहा।

कुछ समय बाद जालन्धर के चड्डा परिवार से इनके भाई के लिए रिश्ता आया। हालांकि लड़की वाले खुले सिख थे। फिर भी सूबा जी लड़की को देखने चले गए और उनसे बोले, ''देख बीबी हम नामधारी हैं और सतगुरु जगजीत सिंह जी के सिख हैं। हमारे घर साड़ी नहीं पहनी जाती। कच्छा ते कमीज सलवार पहनी जाती है। जो नाम सतगुरु जी देंगे उसी का जाप करना होगा।'' अगर ये शर्तें मंजूर हो तो बात आगे चलाएं। लड़की ने नम्रता पूर्वक कहा, ''आप जैसे कहोगे मैं वैसे ही करूंगी।'' दहेज आदि कुछ नहीं लिया भले सच्चे पातशाह ने मंजूरी दें दी थी कि लड़की खुले परिवार से थी। जब सतगुरु जगजीत सिंह जी ने संयोग बनाया तो वही आनन्द कारज भी करेंगे।'' सच्चे पातशाह बड़े प्रसन्न हुए और आदेश दिया, पांच हजार लांगर विच दे देओ। सूबा जी आनन्दकारज करने के पश्चात् सच्चे पातशाह जी को मिलने गए। सच्चे पातशाह बाहर ही मिल गए। सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि पांच हजार रुपए पूर्वा जी को दें। यह कहकर सच्चे पातशाह आकर चले गए। सूबा जी ने पूर्वा जी से विनती की कि वह सतगुरु महाराज से कुछ अर्ज करना चाहते हैं। पूर्वा जी ने कहा कि वह अर्ज करने के लिए अंदर चले जाएं। सूबा जी अंदर चले गए। वहां पर सतगुरु बिलकुल अकेले ही बैठे थे। सतगुरु जी अकाल पुरुष हैं सर्व अर्न्तयामी भी हैं। वह अंदर एक आराम कुर्सी पर बैठे हुए थे। सूबा जोगिन्दर सिंह सच्चे पताशाह जी से इधर-उधर की बातें करते रहे। सच्चे पातशाह जी ने वचन किया, ''जोगिन्दर जिस काम के लिए तुम आए हो वह काम करो। सूबा जोगिन्दर सिंह को उत्साह मिला और अर्ज की गरीब नवाज आप खड़े हो जाओ मैं जफ्फी मारना चाहता हूं। सतगुरु जी तुरंत खड़े हो गए और बाहें फैलाकर बोले आप जफ्फी पा लो। सूबा जी ने जफ्फी डाली और मस्ती में सनकर रह गए। इस प्रकार सच्चे पातशाह जी ने सूबा जी की यह इच्छा भी पूरी कर दी। जो उनके मन में पिछले आठ-दस वर्षों से चल रही थी। अब सूबा जी ने बाहर का खाना पीना सब छोड़ दिया। सच्चे पातशाह ने सूबा जी के पूरे परिवार पर बड़ी कृपा की है। एक दिन सच्चे पातशाह जी ने रछपाल सिंह जी से कहा। जालन्धर वाले सूबा जोगिन्दर सिंह के बेटे का रिश्ता हमने कर दिया है। रछपाल सिंह जी ने अर्ज की, ''गरीब नवाज! आप सूबा जी से एक बार पूछ लीजिए। सच्चे पातशाह जी ने कहा, ''मैं जोगिन्दर को जानता हूं। वह मेरी बात अवश्य मान लेगा। वे सभी बच्चे मेरे अपने ही हैं। मेरी आज्ञा से बाहर नहीं हैं। सतगुरु महाराज जी ने फिर कहा कि वह सूबा जोगिन्दर सिंह तथा इनको फोन करके बुलाएं। रछपाल सिंह जी ने सूबा जी को फोन करके सतगुरु जी का आदेश सुनाया तो सूबा जी तुरंत अपने बेटे को लेकर मिलने के

लिए आ गए। सच्चे पातशाह जी ने इनको ऊपर बुलाया और कहा हमने आपके बेटे सोनी का रिश्ता तय कर लिया है। सूबा जी कहने लगे महाराज इसकी आपको बधाई हो। सच्चे पातशाह जी ने बचन किया अब रछपाल के साथ आगे की बात कर लो और सूबा जी ने रछपाल जी से आगे की सभी बातें तय कर ली। इस प्रकार सूबा जी के बेटे का रिश्ता सतगुरु जी की कृपा से हो गया।

सरोवर की सेवा के लिए आप कृपा की

सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि सूबा जी आप पांच लाख रुपए की सेवा करो। सूबा जी ने प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह! पहले कृपा करके माया का प्रबंध कर दीजिए। सच्चे पातशाह अति प्रसन्न हुए और आदेश दिया, ''सवा लाख दे दो। और बाद में कहा कि वह 50 हजार रुपए अभी दे दें। सूबा जी ने दुबई में अपने भाईयों को फोन किया और सारी बात बताई कि किस प्रकार उनके परिवार पर सतगुरु महाराज की अपार कृपा बरस रही है और माया के प्रबंध के लिए किस प्रकार सच्चे पातशाह जी ने अनुकम्पा की है। और सरोवर की सेवा के लिए 50 हजार रुपए देने को कहा है। भाईयों ने कहा कि वह जल्दी ही रुपयों का बन्दोबस्त करके भेजने का यत्न करेंगे। दुबई में एक सिख ने एक मरसिडीज गाड़ी खरीदी जब वह सिख गाड़ी को चलाकर अपने घर की ओर आ रहा था तो वह गाड़ी बंद हो गई। वह किसी प्रकार गाड़ी को धकेलता हुआ सूबा जी की वर्कशॉप में ले गया। भाईयों ने बड़ी कोशिश की मगर वह गाड़ी स्टार्ट न हुई। उस सिख युवक ने उन भाईयों को कहा कि वह यह गाड़ी 6 हजार ध्राम में बेचने को तैयार है। भाईयों ने कहा कि वे इस गाड़ी के केवल 3 हजार ध्राम ही दे सकेंगे। सिख युवक जान गया और अपनी नई शानदार मरसिडीज कार 3 हजार ध्राम में बेच दी। सूबा जी के भाई देर रात तक यत्न करते रहे पर वह गाड़ी स्टार्ट न हुई। और परेशान होकर सारे भाई सो गए। छोटे भाई ने सच्चे पातशाह के चरणों में अरदास की, ''हे सच्चे पातशाह! आप कृपा करो। आज यह कार हमने बेचनी है। जितना इसका लाभ होगा आपके चरणों में हम भेंट कर देंगे। परसादा (भोजन) तैयार करके सच्चे मन से अरदास की। उनकी अरदास सच्चे पातशाह जी ने मंजूर कर ली। सुबह हुई तो कार स्टार्ट करने की एक बार कोशिश की कि कार स्टार्ट हो जाए। उन्होंने गाड़ी का जैसे ही सैल्फ घुमाया तो कार स्टार्ट हो गई बिना किसी मरम्मत के। ये बहुत प्रसन्न हो गए। एक घंटे के बाद एक ग्राहक भी आ गया। सूबा जी के भाई ने गाड़ी के 6 हजार ध्राम मांगे। परन्तु ग्राहक ने 5 हजार ही दिए इस प्रकार 50 हजार का बन्दोबस्त हो गया। और शीघ्र ही सारा धन

गुरुजी को जालन्धर भेज दिया गया। सूबा जी ने पैसा मिलने पर सरोवर की सेवा के लिए सतगुरु जी के चरणों में भेंट कर दिया। जिस दिन सूबा जी पच्चास हजार रुपए लेकर श्री भैणी साहब जाने वाले थे उसी दिन सन्त दयाल सिंह सच्चे पातशाह जी के पास गए और अर्ज करी कि आज कम से कम चालीस हजार रुपए जरूर चाहिए। सच्चे पातशाह जी ने कहा, ''तू चालीस हजार मांगता है मैं तुझे 50 हजार दूंगा। थोड़ी देर के बाद ही सूबा जी की माताजी पच्चास हजार रुपए लेकर सतगुरु जी के चरणों में हाजिर कर दिए। सतगुरु जी तो सर्वज्ञ, सर्वज्ञाता हैं ही। जो वह चाहेंगे वही होगा भी। यह बात सन्त दयाल सिंह जी ने स्वयं सूबा जी को बताई। सूबा जी के चार भाई इस समय दुबई में हैं। और उनमें आपस में बहुत प्रेम है। सभी सतगुरु जी के परम भक्त हैं तथा ईश्वर विश्वासी हैं। उनके मन में हर समय सतगुरु जी का ध्यान रमा रहता है जो कल्याणकारी हैं।

एक से अनेक

सतगुरु जी की कृपा अनेक।
लाख विघ्न हो रहे न एक॥

सतगुरु महाराज ईश्वर का स्वयं रूप है। उनकी कृपाओं की कोई सीमा नहीं। वह अनन्त हैं, असंख्य हैं। सतगुरु श्री प्रताप सिंह एक बार पंजाब में जिला जालन्धर के दौरे पर गए थे। चार-पांच गांवों का दौरा अर्थात् भ्रमण हो गया। परन्तु जिस जिले के सूबा दसौंधा सिंह थे वह उस समय सम्मिलित न हो सके। उनका गांव फिल्लौर के नजदीक था। परम्परा के अनुसार उन्हें सतगुरु के दौरे के समय उनका वहां आना, सम्मिलित होना आवश्यक था। सतगुरु अपने भक्तों को चिन्तामुक्त तो करते ही हैं। उन्होंने रत्नसिंह माहीवालिया को भेजा कि वह सूबा जी को बुला लाए। उस समय गन्ने की खेती का समय चल रहा था। कोई सहायता न होने के कारण उन्हें अकेले ही सब काम निपटाना पड़ता था। यही कारण था कि वह इच्छा रखते हुए भी सतगुरु महाराज के दौरे में सम्मिलित न हो सके। रत्न सिंह द्वारा संदेश प्राप्त होने पर वह सारा काम धंधा छोड़कर भागते हुए सतगुरु महाराज के श्री चरणों में उपस्थित हुए।

सतगुरु जानी जान थे। वह उनकी सब चिंताएं मुक्त करना चाहते थे। उन्हें अपने कर्तव्य पर आरूढ़ देखना चाहते थे। उन्हें आते हुए देखा तो वह अपनी माया दिखाने के लिए पीठ मोड़ कर खड़े हो गए। भक्त भगवान से दूर तो नहीं हो सकता। कबीर कहते हैं—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागूं पांव।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो मिलाय॥

सामने जाते ही सतगुरु महाराज ने फटकार लगाई कि वह अपने कर्तव्य से क्यों बदल रहे हैं तब सूबा जी ने हाथ जोड़कर विनति की कि महाराज मैं अकेला हूं। खेती का समय है। यदि मैं ध्यान न दूं तो खेती नहीं होगी। यह सुनकर सतगुरु का सारा क्रोध जाता रहा। वह कहने लगे, ''अरे दसौधा सिंह! तू कहता है कि तुम अकेले हो। देखना मैं यहां गांव बसा दूंगा। तेरे को काम की कोई चिन्ता नहीं होगी। काम संभालने वाले अनेक प्राणी उपस्थित हो जाया करेंगे। बस फिर क्या था गुरु महाराज की कृपा बरस गई। समझो ईश्वर स्वयं कृपा करने बैकुंठधाम से चलकर वहां पहुंच गए। उनके यहां एक पुत्र ने जन्म लिया और वह था निरंजन

सिंह। और उसके आगे 8 लड़के और 6 लड़कियां उत्पन्न हुईं। कुल 14 जीव। बस गांव बस गया। सब चिंताएं जाती रहीं। निरंजन सिंह के आठ लड़कों में से एक है सरदार सिंह। उसका पुत्र बहादुर सिंह है जो लन्दन में रहता है। उसे सतगुरु महाराज जगजीत सिंह जी का आशीर्वाद प्राप्त है। वह तीन होले मुहल्ले करवा चुका है। और दो और करवाने की इच्छा रखता है।

सन्त रणजीत सिंह, सुपुत्र सरदार हरी सिंह गांव रसाड़ा, जिला जालन्धर

एक कहावत प्रसिद्ध है कि पारस मणि लोहे को अपना स्पर्श देकर सोना बना देती है। बरफ अथवा शीतलता पास आने पर गर्मी भाग जाती है। सतपुरुष की प्राप्ति अथवा संगति प्राप्त होने पर दुष्टता तथा दुर्जना भाग जाती है। उसमें सज्जनता के गुणों का प्रवेश होने लगता है। यही चमत्कार हमने एक नहीं अनेक बार नामधारी पन्थ के महान सन्त ईश्वर स्वरूप सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह के जीवन में अनेक बार देखे हैं तथा प्रायः देखने को मिलते रहते हैं। इन्हीं चमत्कारों में से एक को यहां प्रस्तुत करते हुए मुझे परम प्रसन्नता हो रही है।

सरदार रणजीत सिंह धर्म-कर्म तथा आचरण से नामधारी नहीं थे। इन पर सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की परम कृपा हुई। यह अत्यंत रोचकता तथा आस्था से परिपूर्ण है। यही नहीं यह घटना दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन गई है। यह समाज कल्याण तथा समाजोद्धार का एक प्रबल माध्यम भी है।

सरदार रणजीत सिंह एक सिख जमींदार के घर उत्पन्न हुए। उनके मन में विदेश जाने तथा वहां जाकर धन कमाने की इच्छा जागृत हुई। वह किसी प्रकार अनेक रास्तों से होकर अवैध रूप से जर्मनी पहुंच पाने में सफल हो गए पर वहां पहुंच कर भी उन्हें कोई विशेष काम या व्यवसाय नहीं मिला। सन 1980 में एक चमत्कारी घटना घटी। और सरदार रणजीत सिंह जी महीने भर के लिए अपने भाई के पास इंग्लैंड चले गए। वहां उन्होंने पंजाबी भाषा के एक समाचार पत्र 'देश प्रेम' में एक समाचार पढ़ा कि नामधारी सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज अपनी साध संगत को दर्शन देकर कृतार्थ करने के लिए पधारने वाले हैं। 'देश प्रेम' समाचार पत्र में उनका व्यापक कार्यक्रम भी प्रकाशित हुआ था। सरदार रणजीत सिंह जी ने बहुत यत्न किए पर वह सतगुरु महाराज के पावन दर्शन न कर पाए। परन्तु सतगुरु महाराज का चित्र देखकर उनके मन में उनके प्रति श्रद्धा तथा प्रेम अवश्य जाग पड़ा। उन्होंने मन में यह दृढ़ निश्चय किया कि वह सतगुरु महाराज के दर्शन अवश्य करेंगे।

अपनी छुट्टियां समाप्त होने पर उन्होंने ट्रोंटो (कनाडा) के लिए प्रस्थान किया। जहाज में उन्होंने मांस भोजन भी किया और मद्य सेवन भी किया। ट्रोंटो पहुंचने पर उनका सामान खो गया। अगले दिन वह अपने मित्र के साथ अपना खोया हुआ सामान खोजने के लिए ट्रोंटो के हवाई अड्डे पर गए। तब न तो उनके

केश बढ़े हुए थे और न ही दाढ़ी बढ़ी हुई थी। देखने में वह सहजधारी दिखाई देते थे। हवाई अड्डे पर उन्होंने बहुत से नामधारी सिखों को देखा। जिनमें सन्त सूबा रेशम सिंह जी भी थे। रणजीत सिंह संत सूबा रेशम सिंह जी के पास गए। और पूछा कि वे सब लोग यहां किसे लेने के लिए आए हैं। सूबा रेशम सिंह जी ने उन्हें बताया कि सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज पधारने वाले हैं। वे सब उनके स्वागत के लिए ही यहां आए हैं। रणजीत सिंह जी ने सूबा से विनती की कि वह सतगुरु महाराज के दर्शन करना चाहते हैं। इसके पश्चात् वह एक शराब के अड्डे पर चले गए जो हवाई अड्डे पर ही था। वहां जाकर वह मदिरा का सेवन करना चाहते थे। सूबा रेशम सिंह जी ने बड़े हैरान होकर कहा, ''आप सतगुरु के दर्शन भी करना चाहते हैं और मदिरा पान भी करना चाहते हैं। पर रणजीत सिंह सूबा रेशम सिंह जी की बात पर ध्यान दिए बिना ही चले गए और वहां जाकर शराब के तीन-चार पैग पी लिए। थोड़ी देर के बाद उन्हें बुलाने के लिए एक नामधारी सज्जन दौड़ते हुए आए। उसने कहा कि सतगुरु महाराज पधार गए हैं। यदि आप दर्शन करना चाहते हैं तो जल्दी चलें।'' यह सहजधारी परन्तु मांस मदिरा का सेवन करने वाले रणजीत सिंह सतगुरु के पास आए और उनको सतसिरी अकाल कह कर उनके चरण छुए। सतगुरु महाराज ने उनके मुंह से आ रही शराब की दुर्गन्ध की परवाह न करते हुए वह कहने लगे, ''हुन कर लै दर्शन। बुहत दिनां दा याद करदा रेया सैं।'' इसके पश्चात् सतगुरु ने हुकम किया, ''अज्ज तो मांस ते शराब छोड़ दे।'' रणजीत सिंह जी ने सतगुरु जी से वायदा किया,यदि उसे विलायत का वीजा दिलवा देंगे, वह शराब मांस छोड़ देगा।

रणजीत सिंह जी ने तीन-चार मेले गांव में करवाए परन्तु सतगुरु महाराज का आदेश मानकर उन्होंने केश धारण नहीं किए। रणजीत सिंह 1996 में भारत आए। ते इंग्लैंड जाने से पैहले सतगुरु श्री जगजीत सिंह के दर्शन करने हेतु श्री भैणी साहब गए। दीवान लगा हुआ था। रणजीत सिंह भी साध-संगत के साथ बैठ गए। उस दिन किसी का भोग था। इसके पश्चात् सच्चे पातशाह उसके बेटे के सिर पर दस्तार सजा रहे थे। उसी समय रणजीत सिंह के मन में आया कि सच्चे पातशाह जी मेरे सिर पर भी दस्तार सजा देंगे। इस घटना के अभी दो मिनट भी नहीं बीते थे कि एक संत जी आए और कहने लगे, सच्चे पातशाह आपको बुला रहे हैं। उन्होंने जाकर सच्चे पातशाह के चरणों में प्रणाम किया। सतगुरु जी ने उन्हें बुलाया और सिर पर से परना उतार कर दस्तार सजा दी। इसी समय उनके मन में विचार आया कि सतगुरु जी तो जानी जान हैं। वे हृदय की बात जान लेते हैं। उनसे संसार में कुछ भी छिपा नहीं है। उनकी इच्छा जानकर ही तो सच्चे

पातशाह ने उनके सिर दस्तार सजा दी। अब सतगुरु जी इन्हें कोई वस्त्र भेंट करें। उसी समय सतगुरु जी दीवान से उठकर चले गए। और रणजीत सिंह जी अपने गांव रसौड़ा के लिए प्रस्थान कर गए। अचानक सच्चे पातशाह ने अपनी कार उनके सामने रोक ली। विस्मित होकर रणजीत सिंह ने सच्चे पातशाह से प्रार्थना की, ''हे सच्चे पातशाह ! आपने पगड़ी तो रख दी है अब इसकी रक्षा भी आप ही करना। सच्चे पातशाह ने हुकम दिया, ''चिन्ता मत करो'' उस दिन से रणजीत सिंह पक्के नामधारी और बाद में केशधारी सिख बन गए।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं, ''यो माम पश्यति सर्वज्ञ सर्वत्र मयि पश्यति।'' अर्थात जो मुझे सब जगह देखता है, मैं उसे सब जगह देखता हूं। सच्चे पातशाह सच्चिदानन्द सतगुरु महाराज सर्व व्यापक हैं। उनकी जो भक्ति करता है, वह उसकी भक्ति करते हैं। जो उन्हें भजता है वह उसे भजते हैं।

सतगुरु का व्यवहार तो प्रकृति का सा है। जिस प्रकार प्रकृति अनेक गुणों से परिपूर्ण है। जयशंकर प्रसाद एक स्थान पर लिखते हैं—

''मेरा स्मित ही जिसे निरखना वह देख सकता है चन्द्रिका को।'' अर्थात मेरे इसी चन्द्रमा की मुस्कान के समान है। सतगुरु की मुस्कान प्रकृति की मुस्कान है। जो प्रत्येक फल-फूल, पत्ते, कली, कुंज में व्याप्त है। उर्दू के एक शायर ने अपने एक शेर में कहा है—

तेरा ज़ेरे लब तवस्सुम तो चमन लुटा रहा था।
मेरी तंग दामनी ने लिए फूल चीदा चीदा॥

प्रकृति, परमात्मा तथा सतगुरु महाराज की कृपाओं की कोई सीमा नहीं है। वह तो असीम तथा अनन्त है। उनमें कोई कमी नहीं थी। यदि कमी एवं अभाव था तो मुझ में, क्योंकि वह असीम और मैं ससीम। मेरा ही आंचल बहुत छोटा था जो उस सतगुरु महाराज की कृपाओं को सारा नहीं समेट पाया अपने छोटे से ससीम आंचल में चुन-चुन कर कुछ ही बटोर पाया। कदम-कदम पर सतगुरु महाराज की लीलाएं अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होती हैं हम केवल उन्हें देख मात्र सकते हैं। उनका आनन्द ले सकते हैं। निम्न को तृप्त कर सकते हैं।

एक बार सरदार रणजीत सिंह जी सतगुरु महाराज को श्री भैणी साहब फोन किया, प्रार्थना की कि वह सतगुरु महाराज के चरणों में एक मंहगी-जापानी कार भेंट करना चाहते हैं। जिसकी कीमत बत्तीस लाख थी। सतगुरु जी ने कहा कि जापानी कार किसी ने भेंट कर दी है। तीन महीने के पश्चात सतगुरु ने उन्हें फोन किया और कहा कि वह अफ्रीका गए थे। वहां एक छोटा सा विमान उन्होंने देखा

है। उसका मूल्य बावन लाख है। फिर सतगुरु महाराज ने कहा कि तू 32 लाख दे दे बाकी के 20 लाख वह किसी और से ले लेंगे। रणजीत सिंह ने प्रार्थना की, "हजूर मैं आपको 40 लाख भेजूंगा। आधे घंटे के पश्चात् पत्नी घर वापिस आई तो रणीजीत सिंह जी ने सतगुरु महाराज से हुई बातचीत के बारे में उसे बताया। साथ ही यह भी बताया कि उन्होंने सतगुरु महाराज को चालीस लाख रुपये देने की पेशकश की है। उनकी पत्नी के मन में भी सतगुरु महाराज के प्रति अपार श्रद्धा थी। उन्होंने आग्रह किया कि वह अभी सतगुरु महाराज को फोन करें और कहें कि वे विमान की पूरी कीमत 52 लाख ही देंगे। चालीस लाख नहीं। यह सुनकर सतगुरु महाराज बहुत प्रसन्न हुए। यह घटना 1997 की है। सतगुरु महाराज ने उन पर वह कृपा की कि उनकी प्रशंसा करने के लिए रणजीत सिंह के पास शब्द नहीं थे। रणजीत सिंह का कहना है कि इंग्लैंड में उनके पास बहुत भूमि है। वहां पर वह हरी गोभी की खेती करते हैं। इस वर्ष पाले और कोहरे के कारण गोभी की फसल बहुत सी नष्ट हो गई। पर इनका नुकसान नहीं हुआ। उस वर्ष गोभी के दाम इतने बढ़ गए कि उन्होंने उसमें 52 लाख अधिक लाभ कमाया। रणजीत सिंह का कहना है कि सतगुरु महाराज तो सच्चे सौदे के व्यापारी हैं। एक तरफ से लेते हैं और दूसरी ओर से दे देते हैं। वह गुरु नानक के ही अवतार हैं। वह कृपा सिंधु हैं। सर्वगुण खान हैं। परमेश्वर सच्चिदानन्द हैं।

दूसरी घटना

सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज के जीवन का एक-एक क्षण चमत्कारपूर्ण घटनाओं से पूर्ण है। कदम-कदम पर उनके चमत्कार दिखाई देते हैं। वह अपने भक्तों का प्रतिपल कल्याण करते चले जा रहे हैं।

यह दूसरी घटना दिसम्बर 2000 की है। सरदार रणजीत सिंह जी ने कूका मार्किट गार्डन इंग्लैंड में आए विदेशी नागरिक अवैध रूप से अपने फार्म पर काम करने के लिए रख लिए। भले उन्हें यह ज्ञात था कि यह काम अवैध एवं कानून के विरुद्ध है। पर विदेशी खेत मजदूर बहुत सस्ते पड़ते हैं। इस कारण अधिकतर ऐसे लोगों को ही अपने फार्मों में काम पर लगा लेते हैं। एक दिन रणजीत सिंह के फार्म पर पुलिस ने छापा मार दिया। और अवैध रूप से काम कर रहे 8 खेत मजदूरों को पकड़ लिया। इंग्लैंड में इस अपराध का दण्ड बड़ा कठोर था। एक मजदूर को अवैध रूप से काम पर रखने का जुर्माना पांच हजार पौंड था। इसके अलावा जेल भेजने का भी प्रावधान था। रणजीत सिंह घबरा गए। वह इसके लिए सतगुरु महाराज से प्रार्थना करना नहीं चाहते थे। पर उनकी पत्नी जो सतगुरु

महाराज को अकाल पुरुष के रूप में देखती थी और उनके प्रति उसके मन में अपार श्रद्धा एवं आस्था थी, उसने अपने पति रणजीत सिंह जी से आग्रह किया कि वह सतगुरु महाराज को इस विपत्ती के बारे में अवगत कराएं। हारा क्या न करता। पत्नी की बात मानते हुए सतगुरु महाराज को अपनी राम कहानी बता दी। सच्चे पातशाह ने बड़े ध्यान से उनकी बात को सुना और कहा—"तुसी दस दिन तक इक माला भगवती दी जपो ते इक माला नाम दी जपो। सब ठीक हो जाएगा।" रणजीत सिंह जी ने सतगुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी पत्नी के साथ पूरे दस दिन एक माला भगवती की और एक माला नाम की जपी। दस दिन के पश्चात् उनको सूचना मिली की आठों विदेशी नागरिक जो उन्होंने अवैध रूप से काम पर रखे हुए थे। अदालत ने उन्हें छोड़ दिया है। पुलिस ने उनसे पूछताछ भी नहीं कि। इस प्रकार एक बड़ी मुसीबत सतगुरु महाराज की अपार कृपा से टल गई।

जिसको राखे साईयां मार सके न कोय।
बाल न बांको करी सकै जो जग बैरी होय॥

जिसकी रक्षा करने वाले स्वयं परमात्मा रूप सतगुरु महाराज हों उनका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। इसलिए आओ सच्चे मन से सतगुरु महाराज के चरणों में मन लगाएं। उनकी भक्ति करें और संसार के समस्त सुख प्राप्त करते हुए अन्त में भगवान के परमधाम को प्राप्त करें।

सतगुरु महाराज की जय

सन 2005 का होला मेला सन्त रणजीत सिंह ने सन्त बहादुर सिंह जी के साथ मिलकर श्री भैणी साहब में किया। इसी मेले में सन्त रणजीत सिंह जी ने सतगुरु जी पर अपार श्रद्धा प्रकट करते हुए दुनिया की सबसे महंगी मरसडीज कार 'मेबैक' सतगुरु जी को भेंट की। इस कार की कीमत पांच करोड़ से अधिक है। रणजीत सिंह जी वही सिख हैं जो नौकरी की तलाश में भटक रहे थे और सतगुरु जी के दर्शन और कृपा से आज करोड़ों की गाड़ी सतगुरु जी को भेंट की। उनका कहना है कि मैंने कुछ नहीं किया, यह माया तो सतगुरु जी की दी हुई है।

बीबी नरिन्दर कौर पत्नी सन्त जसवन्त सिंह नैरोबी वाले

स्व. सन्त जसवन्त सिंह नैरोबी वाले एक खुले सिख थे। अच्छे धनी एवम् खाते-पीते थे। तथा बीबी नरिन्दर कौर एक नामधारी विश्वासों तथा मर्यादाओं में बंधे हुए परिवार से थीं। विवाह के पश्चात् वह दुःखी भी थी और चिंतित भी। वह अपने सतगुरु को याद करती रहती थी। वह प्रार्थना करती कि सतगुरु आप कृपा करो जिससे इनका खाना-पीना छुड़वा दें। क्योंकि सन्त जी बड़े जिद्दी स्वभाव के थे, क्रोधी थे। इसलिए उनसे बहस करने का कोई सवाल ही नहीं था। सतगुरु सच्चे पातशाह श्री प्रताप सिंह जी ने बीबी नरिन्दर कौर की फरियाद सुन ली। उन्होंने अफ्रीका का दौरा किया और अपने सन्तों को कहा कि वे इनके कान पकड़ कर इन्हें भजन दो। बस इससे काया कल्प हो गई। तथा उन्होंने माला पकड़ ली। खाना-पीना सब छूट गया। शराब की बोतलें फेंक दीं तथा सतगुरु के अनन्य भक्त बनकर रह गए। सतगुरु प्रताप सिंह जी के शरीर छोड़ने पर उनका बड़ा बुरा हाल था। वह कहते थे कि मेरा सतगुरु मुझे धोखा दे गया है। अब इस माला का क्या लाभ उन्होंने माला एक तरफ रख दी पर खाने-पीने की दृष्टि से उन्होंने नामधारी मर्यादा का पूरा पालन किया। सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने जब गद्दी संभाली तो दो-तीन वर्ष बाद नैरोवी गए। वहां पर सन्त जसवन्त सिंह जी ने उन पर सतगुरु प्रताप सिंह जी के दर्शन हुए और उन्हें पता चल गया कि उनमें और सतगुरु प्रताप सिंह जी में कोई फर्क नहीं है। वही ज्योति, वही लौ, वही प्रकाश उनके अंदर भी है। इस घटना का बखान बीबी नरिन्दर कौर ने श्री भैणी साहब 17 अक्तूबर 2001 को आश्विन के मेले के भोग वाले दिन किया।

सर्वप्रथम आप बीबी नरिन्दर कौर का परिचय सुनिए। यह सतगुरु जी की बड़ी भक्तिन हैं। जिनको सतगुरु जी के अलावा कुछ भी और नहीं सूझता। सारा संसार ही उसको सतगुरु जी के इर्द-गिर्द ही घूमता नजर आता है। अपने छोटे से दो बेटों और अपने पति को छोड़ कर श्री जीवन नगर और श्री भैणी साहब जाकर सच्चे बातशाह की बेटी बीबा जी से इनका इतना स्नेह हो गया कि यह अपने बच्चों को भूल गई। अपना पति अपना घर परिवार भूल कर यह यहां पर आ गईं। और बीबा जी के साथ, बीबा जी की देख रेख, बीबा जी की संगीत विद्या और बाकी ज्ञान जब तक बीबा जी का आनंद कारज नहीं हो गया उनके साथ ही रहीं। उसके बाद भी यह सतगुरु जी की सेवा में श्री भैणी साहब में ही रहीं। तथा बच्चों को संगीत विद्या की शिक्षा देती रहीं।

प्रथम साखी

एक बार बीबी नरिन्दर कौर अपने पति और अपने भाई सरदार सुरजीत सिंह जी के साथ तथा अपना छोटा बच्चा अमृत पाल को जो उस समय अढ़ाई माह का था। कार में लेकर मुम्वासा की तरफ (नैरोवी से 300 किमी.) छुट्टियां बिताने के लिए चले गए। ये लोग छुट्टी मनाकर जब वापिस आ रहे थे, तो रास्ते में कभी सन्त जसवन्त सिंह जी गाड़ी चलाते तो कभी इनके भाई सरदार सुरजीत सिंह। रास्ते में एक छोटा सा पुल आया जिसके ऊपर से इनको जाना था। बच्चा जो कि सोना चाहता था इसलिए वे गाड़ी रोक कर ये तीनों सन्त जसवन्त सिंह, उनकी पत्नी बीबी नरिन्दर कौर और बीबी जी के भाई सरदार सुरजीत सिंह अगली सीट पर बैठ गए। तथा बच्चे को पिछली सीट पर लिटा दिया। साथ में उसे दूध की बोतल दे दी। जब वे पुल के ऊपर चढ़े तो ढलान पर अचानक कार की ब्रेक फेल (बेकार) हो गई, इन्होंने बड़ी कोशिश की कि गाड़ी को काबू में लाया जाए, किसी प्रकार की कोई कठिनाई न आए और किसी से कोई टक्कर आदि न होने पाए। परंतु फिर भी इनकी गाड़ी एक गोरे की गाड़ी से टकरा कर पुल से नीचे एक सूखी नदी में रेत और पत्थरों पर जा गिरी। गाड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो गए। और बुरी तरह से गाड़ी तहस-नहस हो गई। इससे गाड़ी ने पहले सड़क पर दो तीन चक्कर काटे और उस समय सब के मुंह से उच्चारण था, "धन्य सतगुरु श्री राम सिंह जी महाराज सच्चे पातशाह" गाड़ी टेढ़ी होकर पत्थर के ऊपर रुक गई। सन्त जी किसी प्रकार कार का दरवाजा खोलकर बाहिर निकले। ऊपर से कार वाले गोरे की पत्नी ने शोर मचाना शुरू कर दिया, "बचाओ बचाओ" इनकी तरफ इशारा करके। ये लोग इतना नीचे थे बाकी के लोग इनकी सहायता करना चाहते थे इन तक पहुंच ही नहीं पा रहे थे। नीचे जाकर कार तक पहुंचने का कोई मार्ग नजर नहीं आ रहा था। थोड़ी देर बाद सन्त जी का साला सरदार सुरजीत सिंह हिम्मत करके गाड़ी से बाहिर निकला तथा अपनी बहिन बीबी नरिन्दर कौर को भी बाहिर निकाला। पीछे मुड़कर देखा तो ऐसे लगा जैसी उनकी सांस रुक गई है। काके की आवाज नहीं आ रही थी। तथा काका कहीं नजर भी नहीं आ रहा था। बीबी नरिन्दर कौर घबरा गई। सन्त जी कहने लगे, "जिस सतगुरु सच्चे पातशाह ने हमें बचाया है। प्रार्थी की रक्षा की है। वह काके की भी अवश्य रक्षा करेंगे। कार का पीछे का दरवाजा खोला तो देखा पीछे वाली सीट पर काका सोया हुआ था। पीछे पीठ लगाने वाली सीट आ गई थी तथा काका बड़े आराम से दूध पी रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसे यह पता तक नहीं था कि गाड़ी की दुर्घटना हुई है और गाड़ी इतनी नीचे जा के गिरी हुई है। वह सतगुरु महाराज

सच्चे पातशाह श्री राम सिंह जी की कृपा से सुरक्षित था। सन्त जी ने अपने साले सरदार सुरजीत सिंह को घर भेजा कि वह बच्चों को लेकर घर जाए। और दूसरी कार लेकर आए ताकि वे लोग वापिस जा सकें। पर यह भी बता दिया कि घर जाकर किसी को भी इस दुर्घटना के बारे में न बताए जिससे लोग घबरा न जाएं। उनके कहे अनुसार सरदार सुरजीत सिंह अपनी बहिन तथा बच्चे को लेकर गए और घर पर छोड़ दिया साथ ही वह दूसरी कार लेकर वापिस आए। बीबी नरिन्दर कौर ने घर जाकर सतगुरु महाराज श्री राम सिंह सच्चे पातशाह जी की तस्वीर पर माथा टेका और कोटि-कोटि धन्यवाद किया, ''कि सच्चे पातशाह ! आज आपने ही साडी सबदी जान दी रक्षा कीती है।'' छोटे काके अमृत पाल ने जब सतगुरु श्री राम सिंह जी का चित्र देखा तो अचानक बोल पड़े अपनी तोतली भाषा में, ''वही सच्चे पातशाह ही तो थे जेड़े सानूं वोत्थे दर्शन दित्ते सी'' अर्थात् यही सच्चे पातशाह ही तो थे जिन्होंने हमें वहां दर्शन दिए थे। बीबी नरिन्दर कौर को ज्ञान हो गया कि सतगुरु राम सिंह जी महाराज ने ही प्रत्यक्ष रूप में वहां आकर हमारी जान की रक्षा की है। गाड़ी की हालत देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि इस दुर्घटना में से कोई भी शरीर बचा होगा परंतु सतगुरु महाराज अपने भक्तों को कभी कोई कष्ट नहीं होने देते। उनके साथ-साथ रहते हैं। और जब भी कोई घड़ी आ जाए तुरंत रक्षा करते हैं। देखने वाले चकित हो जाते हैं।

कुछ समय पश्चात् सतगुरु, श्री प्रताप सिंह जी अफ्रीका पधारे। तो सन्त जसवन्त सिंह जी ने उन्हें यह घटना सुनाई। बाद में सच्चे पातशाह जी ने दीवान में यह साखी सारे साध संगत को सुनाई। कि किस प्रकार सच्चे पातशाह सतगुरु श्री राम सिंह जी ने बालक की प्राण रक्षा की।

बीबी नरिन्दर कौर ने सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के दर्शन बहुत पहले किए थे। जब वह सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी के साथ अफ्रीका के दौरे पर दो तीन बार गए थे। उस समय सतगुरु श्री जगजीत सिंह को बाबा जी साहब जादे जगजीत सिंह कहा करते थे। उस समय बीबी नरिन्दर कौर ने कुछ महिलाओं के साथ मिलकर एक स्त्री जत्था बनाया था। इस जत्थे में पांच माईयां थी। इसमें अमृत पाल सिंह की सास। उसकी सास की मां, तथा बीबी नरिन्दर कौर की सास भी थी। बीबी जी इसकी सचिव थीं। इनको प्रचार करने का कार्य दिया गया था। इन्होंने पैसे इकट्ठे करके और पत्र लिखकर, सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी से अर्ज की थी कि वह अफ्रीका आएं। तथा साध संगत को दर्शन दें। सतगुरु प्रताप सिंह जी दो तीन शरीरों के साथ जहाज पर आए। तथा बाकी साध संगत 20-25 व्यक्ति समुद्री जहाज से नैरोबी पहुंचे। उसमें साधु सिंह सन्त गुरुद्वार सिंह भी

आए थे। अफ्रीका का एक महीने भर का दौरा था। बीबी नरिन्दर कौर के मन में सतगुरु प्रताप सिंह जी के प्रति इतनी श्रद्धा भावना थी। इतना आदर सम्मान था। उनके मन में आया कि सच्चे पातशाह आ रहे हैं। इनके लिए एक नई गाड़ी ली जाए। जिससे कि सच्चे पातशाह अफ्रीका का दौरा कर सकें। बीबी नरिन्दर कौर ने अपने पिता से अपने मन की बात कह दी। उनके पिता ने अपने बेटे सरदार सुरजीत सिंह से कहा कि तुम्हारी बहिन इस प्रकार सतगुरु महाराज को भेंट करने के लिए गाड़ी लेने की कह रही हैं। भाई सुरजीत सिंह इनको अपनी कार में एक शोरूम में ले गए। वहां उन्होंने इनको एक अमेरिकन स्वचालित (आटोमैटिक) कार दिखाई। शोरूम के मालिक ने जब जबरदस्ती इनको उस अमेरिकन गाड़ी में बिठाकर काफी दूर तक घुमाया। इनको गाड़ी में बैठकर बड़ा सुख प्रतीत हुआ। परंतु उनके पास उस समय इतने पैसे नहीं थे। उन्होंने मालिक से कहा कि वह इनकी एक गाड़ी रख ले। तथा कार की कीमत के पैसों की इनसे किस्तें कर ले। अचानक एक चमत्कार हुआ। सतगुरु महाराज की कृपा बरसी और शोरूम के मालिक ने इनकी बात मान ली। उसने इनकी गाड़ी रख ली तथा बाकी पैसों की किस्ते कर दीं। जब सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी हवाई अड्डे पर पहुंचने वाले थे तो उस गाड़ी पर सरकार से अनुमति प्राप्त करके सफेद ध्वज लगा दिया तो इन्होंने गाड़ी पिछली ओर लगाई। आशा थी कि सतगुरु झंडे वाली गाड़ी में ही आएंगे। साथ ही मन में यह भी इच्छी थी कि सच्चे पातशाह उनकी अपनी गाड़ी में ही बैठें। अचानक बारिस आरंभ हो गई। आंधी चलने लगी। सच्चे पातशाह श्री प्रताप सिंह एक छोटे रास्ते से बाहिर निकलकर जहां उनकी गाड़ी खड़ी थी आए। तथा उनकी गाड़ी में बैठ गए। बाद में वह मांडे वाली गाड़ी आई। पर सतगुरु उस गाड़ी से नहीं उतरे। तथा इनकी गाड़ी में ही घूमते रहे। सन्त जसवन्त सिंह जी तथा सुरजीत सिंह जी उनकी गाड़ी चलाते रहे। एक महीन भर सबने बड़े सुख तथा आनंद से समय बिताया। बीबी जी ने सोध रख ली तथा सतगुरु जी का बड़े प्रेम श्रृद्धा से लंगर बनाती रहीं। तथा सतगुरु जी बड़े प्रेम से इनका बनाया हुआ लंगर खाते रहे। यहां पर सतगुरु प्रताप सिंह जी ने वचन किया, ''मैं ते पनीरी लगा चलेयां। आपे इक दिन रंग लाएगी'' अर्थात् मैं तो पौध लगाकर जा रहा हूं, अपने आप एक दिन यही पौध बढ़े फूलेगी।

तीन-चार दिन बाद बीबी नरिन्दर कौर श्री भैणी साहब आईं उस समय सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की सुपुत्री बीबा शायद तीन-साल की रही होंगी। यह सतगुरु जी की इकलौती सन्तान थी। जो कि 22 साल बाद पैदा हुईं। अफ्रीका में सूचना मिली कि बीबी जी प्रकट हुई हैं। गुरु राम सिंह जी के बाद किसी

सतगुरु महाराज जी के घर कन्या पैदा नहीं हुई थी। सबसे बड़ी खुशी यह हुई कि गुरु घर में कन्या प्रकट हुई है। अब सब लड़कियों का भविष्य बहुत सुंदर बनने वाला था। इनको भी लड़कों के समान राग विद्या सीखने की खुली छूट हो गई और वह भी किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकती थीं। श्री भैणी साहब आकर बीबी नरिन्दर माताजी के दर्शन करने गई। बीबा जी माताजी की गोद में बैठी थी। बीबी नरिन्दर कौर का मन था कि वह बीबा जी को उठाएं तथा उसे अपना स्नेह प्रदान करें। उन्होंने उनको बुलाया। हालांकि बीबा कभी किसी अन्जान व्यक्ति के पास नहीं जाती थीं। पर उस दिन सतगुरु जी की न जाने कौन सी महिमा थी कि बीबा उनकी गोद में आकर बैठ गई। बाद में जब ये कार में बैठीं तो जब यह मण्डी जा रहे थे तो यह उनकी गोदी में लेटी रहीं तथा उसने बीबी नरिन्दर कौर को छोड़ा ही नहीं। ये लोग सतगुरु जी के डेरे पर ऊपर वाले कमरे में ठहरे हुए थे। सच्चे पातशाह जी नीचे वाले कमरे में थे। माताजी ने हंस कर सच्चे पातशाह जी से वचन किया, ''बीबी नरिन्दर कौर ने ते साडी बीवा ते कोई जादू कीता ऐ।'' अर्थात् बीबी नरिन्दर कौर ने हमारी बीवा पर कोई जादू सा कर दिया है। सच्चे पातशाह जी ने मजाक में कहा, ''तूं बचके रयीं तेरे ते वी ओह जादू न कर देवे।'' अर्थात् तुम बचकर रहना कहीं तुम पर भी वह जादू न कर दे। सच्चे पातशाह जी को नरिन्दर कौर के भाई अवतार सिंह से बड़ा प्रेम था। वह उनको अपने साथ ही भैणी साहब ले आए। और बच्चे की इच्छा के अनुसार उसको हवाई जहाज चलाने की बाकायदा फ्लाईंग क्लब से ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) दिलवाया। बाद में उसका आनंद कारज भी करवाया। भाई अवतार सिंह को राग विद्या सीखने का बड़ा शौक था। सच्चे पातशाह जी ने उनको बड़े-बड़े उस्तादों के पास सारे भारत वर्ष में भेजा। तथा राग विद्या (संगीत) का उच्च ज्ञान दिलवाया। वह राग विद्या में इतने निपुण हो गए कि उन्होंने लंदन में बड़े-बड़े उस्तादों के सामने अलबर्ट हाल में तबले की जुगलबंदी की। वहां पर दुनिया के बड़े-बड़े कलाकार आए थे। सच्चे पातशाह के आदेशनुसार भाई अवतार सिंह ने अपनी कला का अनूठा प्रदर्शन किया और उसका पारिश्रमिक के रूप में एक पैसा भी नहीं लिया। कुछ समय के पश्चात् उन्हें कैंसर हो गया और पांच वर्ष तक वह बीमार रहे। सच्चे पातशाह जी उनका पूरा ध्यान रखते। वह उन्हें दिखाने के लिए डॉक्टरों को बुलवाते। उनका पूरा इलाज करवाते तथा उन पर अपनी पूरी कृपा दृष्टि बनाए रखते। एक साल सच्चे पातशाह जी अस्सू के मेले में प्रयोग में महीने भर से लेकर पूरे एक वर्ष तक बाहिर नहीं गए। कहने का अर्थ यह कि वह श्री भैणी साहब से दूर नहीं गए ताकि वह भाई अवतार सिंह के आस-पास ही रह सकें। तथा उनको

दर्शन देते रहें। तथा उनको हर प्रकार की सुरक्षा प्रदान करते रहें। भाई अवतार सिंह का भी सच्चे पातशाह जी के पास रहने से दिल लगा रहता। एक दिन बाहिर से कोई विशेषज्ञ डॉक्टर बुलाए गए। हंसपाल जी डॉक्टर को लेकर आए। जब डॉक्टर को बाहिर तक छोड़ने सच्चे पातशाह जाने लगे तो भाई अवतार सिंह जी ने हंसपाल जी का कुर्ता पकड़ लिया तथा पास बुलाया। और विनती की, ''हंसपाल जी तुसी सच्चे पातशाह जी के बड़े नेड़े ओ। त्वाडी गल्ला सच्चे पातशाह जी नईं मोड़दे। आप जी सच्चे पातशाह जी से अर्ज करो कि मैनू हुन छुट्टी दे देओं। अर्थात् हंसपाल सिंह जी आप सच्चे पातशाह जी के बहुत पास रहते हो आपकी बात को सच्चे पातशाह जी मना नहीं करते। इसलिए आप सच्चे पातशाह जी से प्रार्थना करो कि वह मेरे को छुट्टी दे दें। हंसपाल जी हैरान परेशान हो गए। कि अब वह यह दुखद समाचार किस प्रकार सच्चे पातशाह जी को जाकर सुनाएं। सच्चे पातशाह जी ने हंसपाल जी से पूछा, ''अवतार ने की केहा है।'' हंसपाल जी ने हाथ जोड़कर अर्ज की, सच्चे पातशाह जी! अवतार कैहन्दा है, ''कि मैंनू हुण छुट्टी दे दोंओ'' अर्थात् अवतार कहता है कि ये सच्चे पातशाह आप मुझे अब छुट्टी दे दो।'' सच्चे पातशाह सतगुरु जी यह सुनकर हैरान रह गए। फिर पूछा, ''क्या सच्ची विच अवतार छुट्टी मंग रिया सी''। क्या सच में ही अवतार छुट्टी मांग रहा था? हंसपाल जी आंखें नीचे करके अपना सिर झुका दिया। एक प्रकार से सतगुरु जी ने भाई अवतार सिंह जी की अर्ज मंजूर कर ली। तथा परवानगी दे दी। उसके बाद उनकी तकलीफ बिलकुल जाती रही जैसे कि उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक हो गया हो। सब लोग प्रसन्न हो गए। कि अवतार सिंह ठीक हो गया है। इस प्रकार वह एक हफ्ता भर ठीक रहा। एक दिन अचानक सच्चे पातशाह जी ने साध संगत से कहा कि तैयारी करो अवतार सिंह को छोड़ने जाना है। लोगों ने कहा सच्चे पातशाह जी आप क्या बात कर रहे हैं। अवतार तो ठीक-ठाक है।'' सच्चे पातशाह जी ने उत्तर दिया, ''नहीं उसकी चढ़ाई का समय आ गया है। वह बड़ी शांति के साथ 40 वर्ष की अवस्था में इस संसार से विदा हो गया। जब यह दुखद समाचार संगीत जगत में पहुंचा तो भारत के कोने-कोने से चोटी के कलाकारों शान्ताप्रसाद, अल्लाहरखा, इमराद खान, सितारवादक विलायत खान ने अपने सहयोगी भेजे। सब लोग अवतार सिंह जी के भोग पर श्री भैणी साहब में सम्मिलित हुए। बीबी नरिन्दर कौर का कहना है कि सतगुरु जगजीत सिंह ही भगवान कृष्ण हैं। वह ही भगवान राम हैं। जिस रूप में उन्हें याद करो वह भक्तों को उसी रूप में दर्शन देते हैं। जब सतगुरु श्री जगजीत जी ने देखा कि उनकी सुपुत्री बीवा बीबी नरिन्दर कौर के साथ इतनी

हिलमिल गई हैं। तो उन्होंने बीबी नरिन्दर कौर से कहा कि वह अब बीवा जी के साथ ही रहे। इस पर उन्होंने सत-वचन कहा। और वह वापिस गई ही नहीं। और बीवा जी के साथ माताजी की एक भतीजी भी आ गई रहने के लिए। ताकि दोनों बच्चों का दिल लगा रहे। सतगुरु सच्चे पातशाह जी का कई-कई दिन का दौरा लगता था। यह बच्ची अपने पिता के लिए बड़ी चिंतित रहती। और उदास रहती तथा वैराग्य में आ जाती तथा रोने भी लगती। बीबी नरिन्दर कौर बीवा जी को समझाने के लिए कहा करती कि वह भगवती की माला करके अरदास करें। सतगुरु जल्दी वापिस आ जाएंगे। बीवा जी ने उन पर विश्वास करके भगवती का जाप किया। और कहा कि मैंने पाठ कर लिया है। अभी तक सतगुरु श्री भैणी साहब क्यों वापिस नहीं आए। उन दिनों सतगुरु श्री भैणी साहब में ही रहते थे। बीबी नरिन्दर कौर ने उनको समझाने के लिए कहा कि उसने ठीक प्रकार से अरदास नहीं की। या पाठ जाप आदि नहीं किया। बहुत देर हो गई है मन ही मन बीबी भी घबरा गई कि यदि अरदास स्वीकार न हुई तो छोटी बच्ची घबरा जाएगी। और उसकी मन में बीवा का इतना विश्वास नहीं रह पाएगा। तो बीबी जी ने सतगुरु महाराज के चरणों में अरदास की। हे सच्चे पातशाह आप कृपा करके जल्दी वापिस आ जाओ। इनकी अरदास सच्चे पातशाह जी ने स्वीकार ली। और अचानक बिना किसी कार्यक्रम के कार का हार्न सुनाई दिया। और सच्चे पातशाह जी ने दर्शन दे दिए। सब बच्चे रोने लगे। उनकी खुशियों का ठिकाना न रहा। सच्चे पातशाह जी ने कहा कि वह तो बच्चों को लेने के लिए आए हैं।

दूसरी साखी

एक बार सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी दौरे पर बैंकाक गए। वहां से आगे वह अफ्रीका चले गए। दौरा बहुत लंबा हो गया था। घर में उदासी छा गई थी। बच्ची बीवा जी रोने लगी थीं। वह अपने पिता सतगुरु जी को याद करने लगी थीं कि वह कब लौटेंगे। वह कब उनके साथ खेलेगी। मीठी-मीठी प्यारी बातें करेगी। बीबी नरिन्दर कौर जी ने बच्ची का मन रखने के लिए समझाया कि वह चालीस दिन तक पाठ करें। और अरदास करें। उस छोटी बच्ची ने चालीस दिन तक पाठ किया। चालीस दिन निकल गए। सच्चे पातशाह श्री भैणी साहब वापिस नहीं आए। शाम को बीबी नरिन्दर कौर भी उदास हो गईं। और सारे कमरे की चिटकनी अंदर से बंद करके कमरे में बैठ गई। कमरे में छोटा बिजली का लट्टू जल रहा था। थोड़ी सी रोशनी थी बाकी अंधेरा था। अचानक सबसे बाहिर का दरवाजा खटकने की आवाज सुनाई दी। उन दिनों श्री भैणी

साहब में आस पड़ोस में कोई रहता नहीं था, डर भी लगता था अकेले में। बीबी नरिन्दर कौर ने सोचा कि कौन आया है? उन्होंने दरवाजा खोलकर देखने का प्रयास तक नहीं किया। अचानक बीच का दरवाजा खटकने लगा। बीबी नरिन्दर कौर और डर गई। वह सतगुरु को याद करने लगी कि सच्चे पातशाह रक्षा करो। कौन आया है। मैं बच्चों की रक्षा कैसे करूंगी। अचानक जिस कमरे में बच्चे सो रहे थे और बीबी नरिन्दर कौर बैठी थी, वह दरवाजा खुल गया तो कमरे में रोशनी आई तो बीबी क्या देखती है कि सच्चे पातशाह स्वयं दरवाजे पर खड़े हैं। बीबी को सुध-बुध न रही और एकदम उठकर सतगुरु महाराज के चरणों में माथा टेक दिया। वह कहने लगी, ''मैं बच्चों को अभी उठाती हूं।'' सच्चे पातशाह बोले कि वह अभी बच्चों को न उठाएं। और वचन किया, ''असी थोड़ी देर विच फेर आवांगे।'' हम थोड़ी देर में फिर आएंगे। फिर अचानक सच्चे पातशाह गायब हो गए। बीबी ने उठकर सारे कमरों की चिटकनी देखी। वह देखकर चकित हो गई कि अंदर से सभी कमरों की चिटकनियां बंद थीं। पर यह तीन दरवाजे कैसे खुल गए। सच्चे पातशाह जी आए उन्होंने दर्शन दिए और फिर चले गए। फिर भी चिटकनी अंदर से बंद थी। दो-तीन दिन बाद सच्चे पातशाह जी अपने विदेश दौरे से वापिस लौटे हालांकि बीबी नरिन्दर कौर अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर बीवा जी के पालन-पोषाण के लिए, पढ़ाने-लिखाने के लिए, संगीत की शिक्षा देने के लिए सतगुरु जी के चरणों में आ गई थीं। उन्हें विश्वास था कि उनके बच्चे पढ़ाई में पीछे नहीं रहेंगे। उनके बच्चे उनकी माताजी के पास अमृतसर में आ गए। उन्होंने वहां पर खूब पढ़ाई की दोनों भाई अमृतपाल सिंह और हरपाल सिंह पढ़-लिखकर इंजीनियर बन गए। उनमें से एक अमेरिका में नौकरी कर रहा है। दूसरा कनाडा में अच्छी नौकरी पर है। बच्चों की शिक्षा उनके नाना सन्त सूरत सिंह ने दी। मैं बीबी नरिन्दर कौर का बार-बार धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने अपना समय निकालकर सच्चे पातशाह का यश मुझे सुनाया, उसका बखान किया। बीबी नरिन्दर कौर का कहना है कि सच्चे पातशाह को संगीत का महान ज्ञान है। प्राचीन काल की संगीत कला, शास्त्रीय संगीत का सच्चे पातशाह को जितना ज्ञान है इतना आज तक किसी बड़े से उस्ताद को भी नहीं है। बड़े-बड़े उस्ताद तथा संगीत के पंडित उनकी धाक मानते हैं।

जय सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी सतगुरु महाराज।

सतगुरु अति अनमोल वंदे, सतगुरु अति अनमोल।
सतगुरु का हर शब्द ज्ञान का, हृदय बिठाकर तोल वंदे॥
सतगुरु अति अनमोल।

सतगुरु जी की अपार कृपा

—बावा निरंजन सिंह

पाकिस्तान अभी बना नहीं था। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने पाकिस्तान बनने से दो साल पूर्व कहा था कि जो व्यक्ति अपनी सुरक्षा चाहते हैं वे रावी नदी पार करके दूसरी ओर जाकर भारत में बस जाएं। जिन्होंने उनकी बात मान ली वे समय से पहले इधर आकर सुख से रहने लगे और जिन लोगों ने उनकी बात नहीं मानी वे दु:ख उठाने पर विवश हो गए।

बावा निरंजन सिंह की सतगुरु जी के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे उन्हें अकाल पुरुष मानते थे। पर कुछ समय के पश्चात इनके मन में अहंकार आ गया और वे सतगुरु महाराज की निन्दा करने लगे। बाद में इन्हें अपनी भूल का आभास हुआ और वे सतगुरु प्रताप सिंह जी महाराज के चरणों में आ गए। सतगुरु महाराज तो दया निधि थे; दया के समुद्र। उन्हें तो अपने भक्तों की रक्षा करनी होती है। वे अपने भक्तों को कभी दु:खी नहीं देख सकते। पुत्र कुपुत्र होता है, परंतु माता कुमाता नहीं होती। सतगुरु ही भक्तों के माता-पिता हैं। वे तो अपने भक्तों का दु:ख दूर करने में विश्वास करते हैं। अत: सतगुरु जी ने बावा जी को फिर अपना लिया उन्हें आशीष दी। इसके बावजूद बावा जी का मन पूरी तरह से निर्मल नहीं हुआ।

लगभग 2 साल पहले उनके मन में श्री भैणी साहब दर्शनों के लिए जाने का विचार आया। वह देखना चाहते थे कि अब वहां पर कैसा वातावरण है। सब कहते थे कि अब वहां पर स्वर्ग समान सुख है। परन्तु बावा जी चाहते थे कि वह श्री भैणी साहब तब जाएं जब सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज वहां पर न हों। तीन-चार महीने उनके मन में यही विचार आता रहा। सतगुरु जगजीत सिंह जी ने कृपा की, उनका एक नज़दीकी संबंधी भेजकर उन्हें खुद ही बुलवा लिया। तब बावा जी जी ने सतगुरु के चरणों में पड़कर क्षमा मांगी। सतगुरु तो दया के सागर ठहरे। उनका हृदय बड़ा विशाल है। उन्होंने बावा जी की अनेक त्रुटियां देखते हुए भी उन्हें क्षमा कर दिया। सच्चे पातशाह बावा जी के सब अपराधों को भूल गए और उन्हें अपने हृदय से लगा लिया। इससे पहले सतगुरु महाराज करीवाला गांव गए थे। तब बावा निरंजन सिंह की यह हालत थी कि उन्हें रोटी-कपड़े की भारी कठिनाई हो रही थी। वहां सतगुरु से मेल हुआ तो उन्होंने सतगुरु से घर चलने के लिए प्रार्थना की। सतगुरु महाराज तो अपने भक्तों की प्रार्थना स्वीकार कर ही

लेते हैं। जब श्री सतगुरु जी बावा जी के घर पहुंचे तो हालात देखकर उनकी आंखों में आंसू छलक पड़े। थोड़े ही दिनों में सतगुरु महाराज की बावा जी पर अनंत कृपा बरस पड़ी। यह घटना सुनकर सुदामा पर श्री कृष्ण की अपार कृपा का स्मरण हो आता है। तीन मुट्ठी चावल के बदले में भगवान श्री सच्चिदानन्द कृष्ण ने सुदामा को तीनों लोकों की सम्पदा प्रदान कर दी थी और मन में यही आ रहा था कि उन्होंने सुदामा को अभी भी कम दिया है।

इधर सतगुरु महाराज की कृपा होने की देर थी कि बावा निरंजन सिंह जी के घर में किसी चीज का अभाव नहीं रहा। बावा निरंजन सिंह सतगुरु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करके धन्य हो गए। उनमें ऐसी तबदीली आ गई जो गतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज की कृपा से ही सम्भव थी।

साधु का मौन भंग नहीं होने दिया

—संत कुलदीप सिंह

यह घटना संत कुलदीप सिंह जी की आंखों देखी है।

संत कुलदीप सिंह के पिता का नाम श्री महेन्द्र सिंह है और इनका गांव है करीवाला।

करीवाला गांव में दिलीप सिंह मांगेवाला नाम के एक साधु हैं जो साल में एक महीना मौन धारण करते हैं। पिछली बार जब उन्होंने मौन धारण किया तो उन्हें आठ दिन बाद पेट में दर्द रहने लगा। डाक्टर ने टीका लगाना चाहा तो उन्होंने टीका लगवाने से इन्कार कर दिया। उन्हें प्रतीत हो रहा था कि इस बार वह अपना मौन व्रत पूरा नहीं कर पाएंगे। जब उन्हें देसी दवा लाने के लिए पूछा गया तो उन्होंने मसतान गढ़ की ओर संकेत कर दिया। रात को उन्होंने सोचा कि वे सतगुरु जी के पास जाएंगे। पर हुआ ऐसा कि प्रात: सतगुरु जी स्वयं चलकर वहां पधार गए। जब संत जी को पता चला तो वे उनके दर्शनों के लिए गए और उन्हें साधु के दर्द के बारे में बताया। सतगुरु महाराज तुरंत उठे और कच्चे रास्ते से होते हुए वहां पहुंचे।

सतगुरु जगजीत सिंह जी ने महात्मा जी को आशीर्वाद दिया और वे बिना किसी प्रकार की दवा के ठीक हो गए। उनके पेट का सब दर्द जाता रहा। फिर उन्होंने मेला करवाया। वहां 10 किलो घी का प्रसाद बनवाया और संगत में बांटा। सतगुरु जी ने उन्हें मौन भंग न करने के लिए कहा। महात्मा जी ने अपना मौन व्रत पूरा किया और सतगुरु जी की कृपा से वे अब बिल्कुल ठीक हैं। उन्हें कोई कष्ट नहीं। सतगुरु जगजीत सिंह जी महामृत्युञ्जय का जाप हैं। जो उनका एक बार भजन कर लेता है, जाप कर लेता है वह समस्त व्याधियों से मुक्त हो जाता है।

सतगुरु का नाम कवच है

—संत साधु सिंह

संत साधु सिंह के पिता का नाम संत चन्दा सिंह है। उनका गांव एलनाबाद से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सतगुरु जी ने उन पर अपार कृपा की है। वे मुक्तसर वर्णी में रहते थे। उनका लड़का वहीं लंगर में सेवा करता था। उनके बेटे को किसी ने काम पर भेजा तो उसका पैर टेलीविज़न की तार में फंस गया, जिससे वह गिर पड़ा। गिरने से वह बेहोश हो गया। इसे इलाज के लिए सिरसा भेजा गया। वहां पर वह दो दिन और दो रात बेहोश पड़ा रहा।

उधर संत साधु सिंह की वर्णी में सतगुरु जी ने सपने में दर्शन दिए और कहा कि वह घर जाकर अपने बेटे की देखभाल करें। और सतगुरु जी के चरणों में अरदास करें कि बेटा स्वस्थ हो। डाक्टरों ने एक तरह से लड़के को मृत घोषित कर दिया था। पर सतगुरु जी ने कृपा करके उसे नया जन्म प्रदान किया। अस्पताल से घर आ गया है। वह सतगुरु जी की कृपा से ठीक हो गया था। सतगुरु जी का नाम एक प्रकार का कवच है। जिस प्रकार कवच पहने हुए व्यक्ति पर तीर तलवार अथवा भाले के प्रहार का कोई प्रभाव नहीं होता, उसी प्रकार सतगुरु जी का नाम स्मरण मात्र ही अनेक विघ्न वाधाओं, विपत्तियों का नाश कर देता है। शास्त्रों में अनेक प्रकार के मंत्र कवचों का वर्णन किया गया है, जैसे शिव कवच, ब्रह्म कवच, काली कवच। विश्वास किया जाता है कि इन कवच मंत्रों का पाठ करने से अनेक विपत्तियां नष्ट हो जाती हैं और मनुष्य हर प्रकार से सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार सतगुरु जी का नाम स्मरण भी एक सुदृढ़ कवच है। इनका नाम स्मरण करते रहने से मनुष्य पूर्णतया सुरक्षित रहता है। यहां तक कि मृत्यु भी टल सकती है, जैसे संत साधु सिंह के लड़के की मृत्यु टल गई और उसे नया जीवन मिला।

जा को राखे साईंया मार सके न कोय
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय॥

डाक्टर नू अपना कम करन दयो

—संत नरेन्द्र सिंह खुराना

श्री नरेन्द्र सिंह खुराना के छोटे भाई सुखवीर सिंह की तबीयत खराब हो गई और उसे बहुत कष्ट रहने लगा। कोई अम्लपित्त बतलाता था और कोई अल्सर। अंत में, बहुत दिन बाद, निदान यह हुआ कि उसकी रीढ़ की हड्डी में कोई ख़राबी थी जिसके लिए आप्रेशन किया जाना जरूरी था। निदान करते-करते बहुत देर हो गई थी जिससे उसके शरीर के निचले भाग में पक्षाघात हो गया। निचले भाग में हलचल नहीं के बराबर थी। डाक्टरों का कथन था कि रीढ़ की हड्डी का लंबा आप्रेशन होगा। पर इसके बाद भी यह निश्चित नहीं था कि शरीर का निचला वाला भाग काम करना शुरू कर दे। अर्थात् आप्रेशन की कामयाबी की पूरी आशा नहीं थी।

नरेन्द्र सिंह के पास और तो कोई चारा था नहीं, उन्होंने सतगुरु जगजीत सिंह जी से बैंकाक में प्रार्थना की। सतगुरु जी ने पूछा कि क्या आप्रेशन 7 दिन के लिए टाला जा सकता है, जिससे 7 दिन के भीतर कोई और उपचार समझ में आ सके और आप्रेशन की आवश्यकता न पड़े। पर चार डाक्टरों के दल ने यह विचार बताया कि 24 घंटे में आप्रेशन आवश्यक है नहीं तो जो नस मृत हो गई है उसके ठीक होने की संभावना बिल्कुल समाप्त हो जाएगी। भले ही आप्रेशन के बाद भी इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह नस अवश्य ही ठीक हो जाएगी। इसके बाद सच्चे पातशाह जी से फिर फोन पर बात हुई तो उन्होंने आज्ञा दी कि जैसा डाक्टर कहते हैं वैसा ही करने दो।

उसके बाद उन्होंने सुखवीर सिंह को पूसा रोड पर कॉलमेट अस्पताल में दाखिल किया। रात को अस्थि चिकित्सक डा. मखानी ने सब जांच आदि कर ली। केवल एक स्कैनिंग शेष रह गई थी। सुबह 7 बजे वह भी हो गई और 8 बजे जैसे ही आप्रेशन के लिए ले जाने के लिए चद्दर हटाई तो देखा कि पैर के अंगूठे में कुछ हरकत थी। डाक्टर बड़ा हैरान था कि ऐसा कैसे हो गया क्योंकि यह खून के दौरे के बिना संभव नहीं था और खून का दौरा जो प्रारंभ हो गया है, आप्रेशन के बिना संभव नहीं था। यह अवश्य कोई दैवी चमत्कार हुआ था।

डाक्टर ने आप्रेशन एक दिन के लिए टाल दिया। अगले दिन पैर के अंगूठे की हरकत और बढ़ गई। डाक्टर ने देखा तो कहा कि आशा बढ़ गई है। पहले

से अच्छा है। हलचल बढ़ रही है। धमनियों में रक्त प्रवाहित होने लगा है। यह तो अच्छा लक्षण है!

सातवें दिन तक उसकी एक टांग में काफी हरकत शुरू हो गई। डाक्टरों ने फिर विचार किया और कहने लगे कि अब आप्रेशन की आवश्यकता नहीं है; अब दवाइयों से ही इसे स्वस्थ करने का यत्न करेंगे। पर उनके चिकित्सा-विज्ञान में यह एक अलौकिक घटना थी। यह एक ऐसा चमत्कार था जो उनकी बुद्धि से परे था। इन सात दिनों में सच्चे पातशाह जी जहां भी होते अस्पताल में टेलीफोन करके सुखवीर का हाल-चाल पूछते। सातवें दिन उन्होंने पूछा कि अब डाक्टर क्या कहते हैं। फोन पर जब वे पूछते थे तो ऐसा आभास होता था जैसे वे जानते सब हों परन्तु अनजान बन कर पूछ रहे हों। जब उन्हें डाक्टरों का विचार बताया तो मुस्करा कर कहने लगे, जैसा डाक्टर कहते हैं वैसा ही करते जाओ। श्री सतगुरु जी ने जो आज्ञा दी थी कि सात दिन रुक जाओ, डाक्टरों को रुकना पड़ा।

अब सुखवीर सिंह बिल्कुल ठीक हैं। सारा काम-काज, व्यापार आदि संभालते हैं। डा. मखानी का कहना है कि उसने अपने समूचे सेवाकाल में ऐसा कोई रोगी नहीं देखा। जो इस प्रकार ठीक हुआ हो। यह श्री सतगुरु जी ने स्वयं कृपा की थी। नरेन्द्र सिंह कहते हैं कि सतगुरु जी से तो बढ़कर दोस्त, मित्र, गुरु, अभिभावक नहीं मिल सकता जिनके साथ हम अपने दु:ख सुख भी बांट सकते हैं। वे स्वयं अकाल पुरुष हैं, जानी जान हैं तथा सभी विधाओं के स्वामी हैं।

न जाने किस रूप में नारायण मिल जाए

—संत हरभजन सिंह

संत जी जन्म से ही नामधारी हैं। पहले नोक वाली दस्तार बांधते थे। पहली बार नासिक जिले में दृगतपुरी में सतगुरु जगजीत सिंह जी के दर्शन हुए। अपने एक मित्र का संस्कार करके रात को लौटे तो ये बहुत उदास थे। प्रातः सतगुरु जी ने दर्शन दिए। उन्हें कहा कि वह सीधी दस्तार बांधा करें। सतगुरु जी इनके हर काम के उद्घाटन आदि पर दर्शन देते थे। पहली बार जब आए थे तो संत जी पच्चीस-तीस लाख रुपये का व्यापार साल में करते थे। इसके बाद सतगुरु जी की कृपा से इनका व्यापार बढ़ता चला गया। आज कल यह लगभग 8-9 करोड़ रुपये का काम साल भर में करते हैं।

एक बार 20 करोड़ का टैंडर था। इनकी इच्छा थी कि इन्हें काम मिले। तब भी सतगुरु जी ने दर्शन दिए और सात उंगलियां दिखाकर इशारा किया। जब टैंडर खुला तो 7 प्रतिशत नीचे से इन्हें मिल गया। और दूसरा पौने सात प्रतिशत पर था। इस तरह इन्हें काम मिल गया। सतगुरु जी की कृपा से इनका काम बढ़ता ही गया। इन्हें धन-दौलत की कोई कमी न रही। अब भी कोई कमी नहीं है।

संत जी पचपन वर्ष के हैं। इनके चार पुत्र हैं। बड़ा साथ में व्यापार करता है। दूसरा एम-काम में पढ़ता है। तीसरा इंटर में है और चौथा इंजीनियरिंग में है। सब शाकाहारी हैं। औरंगाबाद में पांच-छः परिवार नामधारी हैं। वहां सतगुरु जी ने आनन्दाश्रम का उद्घाटन भी किया। वहां एक बहुत बड़ा संगीत सम्मेलन भी हुआ। पहले सन् 1989 में लखनऊ में संगीत सम्मेलन हुआ था। संगीत सम्मेलन के आयोजन में ढाई लाख रुपये का खर्चा था। सम्मेलन प्रारंभ तो हो गया पर पैसे का प्रबंध पूरा नहीं था। उस्ताद विलायत अली खान और कई संगीतज्ञों को हजारों रुपये देने थे। यही सोच रहे थे कि यह प्रबंध कैसे पूरा हो कि इतने में सतगुरु जी की कृपा हो गई। 'न जाने किस रूप में नारायण मिल जाएं' वाली बात हुई। कोटा से एक व्यक्ति आया और चैक दे गया। इस प्रकार सच्चे पातशाह की कृपा से कोई काम रुकता नहीं है। अगले दिन औरंगाबाद से फिर एक बैंक ड्राफ्ट आ गया। संगीत सम्मेलन के ढाई लाख रुपये के खर्चे के बाद भी पैसा बच गया। अब उन्हें कोई चिंता नहीं होती। जब भी कोई काम सोचते हैं तो सतगुरु महाराज की कृपा से अपने आप सब काम पूरे

हो जाते हैं। सच्चे पातशाह जी अकाल पुरुष हैं। उनकी इच्छा यही है कि अपने पास माया न रखें। संत हरभजन सिंह साधु-संतों तथा लंगर के लिए खर्चा कर देते हैं। सतगुरु जी कृपा से इन्हें किसी प्रकार की कोई चिंता नहीं। इसी भाव को लेकर कबीर जी ने कहा है :-

सांई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाय।

सब कुछ सतगुरु का दिया है

—सूबा महिन्दर कौर (बीबी ज्ञानन)

सूबा महिन्दर कौर का कहना है कि उन पर सतगुरु सच्चे पातशाह जी की अपार कृपा है। वह चाहती हैं कि उन पर सतगुरु जी की कृपा दृष्टि बनी रहे। वह बताती हैं कि वह दूसरों के कपड़े सिल-सिल कर मुश्किल से घर का गुज़ारा चलाती थीं और कहां अब उन पर इतनी कृपा हो रही है कि वह पूरे होला मुहल्ला का खरचा कर रही हैं। वह कहती हैं कि आज उनके पास जो कुछ भी है सतगुरु जी की कृपा का ही परिणाम है। उनके पांच बच्चे हैं। उनमें से चार कन्याएं हैं और एक बालक। लड़का कपड़े का व्यापार करता है। व्यापार अच्छा चल रहा है। उनके पति पहले छोटी सी नौकरी करते थे अब दुकान संभालते हैं। वह कहती हैं कि जिस प्रकार सतगुरु जी ने उन पर कृपा की है उसी प्रकार सब पर करें।

सूबा महिन्दर कौर के पति का विश्वास है कि जब-जब धरती पर धर्म का नाश होता है, अत्याचार बढ़ता है तो भगवान स्वयं अवतार लेते हैं। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने कहा है:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भिवति भारत,
अभ्युत्थान मधर्मस्य तदात्मानम् स्त्रजाम्यहम्
परित्राणाय साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म संस्थापनार्थाय संभावानि युगे युगे ॥

श्री रामचन्द्र जी ने अवतार लेकर रावणादि अनेक असुरों का संहार किया। भगवान ने श्री कृष्ण का रूप धर कर कंसादि अनेक राक्षसों का वध किया। भगवान ने गुरु नानक के रूप में अवतार लिया और जनमानस के हृदय में सत्य और प्रेम की ज्योति प्रज्वलित की तथा डोलते हुए विश्वासों को स्थिर किया। ईश्वरवादी प्रणालियों को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने सच्ची मानवता का प्रचार किया और हर प्रकार के भेदभाव दूर करने का प्रयास किया।

इसी प्रकार भगवान अलग-अलग नामों से प्रकट होते रहते हैं। कभी राम जी के रूप में और कभी कृष्ण के रूप में। कभी गुरु नानक के रूप में और कभी गुरु गोविन्द सिंह जी के रूप में। कभी सच्चे पातशाह सतगुरु श्री राम सिंह जी के रूप में और कभी अकाल पुरुष सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज के रूप में। नाम भले भिन्न-भिन्न हों पर शक्ति एक ही है। विष्णु सहस्त्र नाम स्तोत्र में

भगवान विष्णु के एक हजार नामों का वर्णन है। उसमें कहा गया है, अनेक रूप, रूपाय, विष्णुदे प्रभु विष्णवे। संत जी कहते हैं कि इनके इतने कौतुक हैं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। सतगुरु जी की माया अपरंपार है। पर एक बात अवश्य है कि सतगुरु जगजीत सिंह जी पूर्ण रूप से ईश्वरावतार हैं और जिस प्रकार गीता में कहा गया है कि—

यो मां पश्यति सर्वत्र
सर्वत्रमयी पश्यति।

अर्थात जो भक्त भगवान को भजता है। भगवान उसे उसी प्रकार भजते हैं। इसीलिए सतगुरु भले कहीं भी हों अपने भक्तों के कल्याण के लिए उन्हें दर्शन देते रहते हैं।

बिचौलिया दा कोई लेना-देना नहीं

—सूबा सेवा सिंह

एक बार यमुना नगर में दीवान था। दीवान में सतगुरु महाराज जगजीत सिंह जी ने कहा कि संत कड़े वाले तथा संत मोहन सिंह से मेल नहीं रखना चाहिए। सूबा सेवा सिंह जी ने संत मोहन सिंह से भजन लिया हुआ था। वे सोचने लगे कि यदि संत जी आ जाएं तो उन्हें क्या कहा जाए? परंतु सतगुरु जी से इस बारे में बात नहीं की थी। जब सतगुरु जी जाने के लिए तैयार होकर कार में बैठे तो उन्होंने कहा कि वे अब देहरादून जा रहे हैं। वहां पर मेला है। पर वहां बोलने वाले कम हैं। इसलिए पांच-छह व्यक्ति यहां से साथ चलो। सच्चे पातशाह जी के अनुसार छह व्यक्ति वहां गए।

जब सतगुरु जी दूसरे दिन देहरादून से प्रस्थान करने के लिए कार में बैठने लगे तो सूबा सेवा सिंह की तरफ देखा। सतगुरु जी की आज्ञा पाकर वे अपना सामान लेकर साथ चल पड़े। संत जी गाड़ी के पास खड़े हो गए थे। भीड़ बहुत थी। किसी ने उन्हें गाड़ी में अगली सीट पर बिठा दिया। रास्ते में सच्चे पातशाह जी ने चंडी दी वार का पाठ किया। फिर वे उनसे पूछने लगे कि यदि किसी लड़की का कोई बिचोलिया संबंध कराए, और शादी के उपरांत यदि बिचोलिया से संबंध अच्छे न भी रहें तो लड़की अपने ससुराल का घर छोड़ नहीं देती। इसी प्रकार यदि कोई भजन देता है वह सतगुरु राम सिंह जी से मिलाप करवाता है। सतगुरु जी ने कहा कि यदि भजन देने वाले से बिगड़ भी जाए तो कोई अंतर नहीं पड़ता।

इस युक्ति से संत सेवा सिंह के मन का संशय दूर हो गया। इससे इनके मन में सतगुरु जी के वचन के प्रति विश्वास और सुदृढ़ हो गया। फिर रास्ते में छतरपुर पहुंच कर सतगुरु जी ने गाड़ी रुकवा दी और कहा कि वह वहां उतर जाएं। थोड़ी देर में पीछे से और साथी आ जाएंगे। उनके साथ यमुना नगर पहुंचने का सतगुरु जी ने आदेश दिया। इससे सूबा सेवा सिंह को पूर्ण विश्वास हो गया कि सतगुरु स्वयं अकाल पुरुख ही हैं।

सन् 1972 में जब सब स्थानों पर सतगुरु महाराज श्री राम सिंह के शताब्दी समारोह मनाए जा रहे थे, सच्चे पातशाह इंग्लैंड जा चुके थे। वहां से आदेश हुआ कि पूरबा जी, सूबा सेवा सिंह, सतगुरु जी का ड्राईवर प्रीतम सिंह, रणधीर सिंह और गुरबचन सिंह को अफ्रीका भेजो।

ये लोग पहले दिल्ली, फिर मुंबई और फिर मुंबई से समुद्री जहाज में अफ्रीका को चले। ये अपना भोजन स्वयं बनाते थे। एक दिन ये जहाज का नियंत्रण कक्ष देखने गए। वहां जहाज के कप्तान ने इन्हें देखा। वह कहने लगा कि अपना पानी अलग रखना, खाना अलग पकाना आदि यह सब वहम है। यह सब पाखंड है। इन बातों में विश्वास नहीं रखना चाहिए। वहां एक हैंडल (दस्ता) था उसे देखकर ये लोग पूछने लगे कि यदि इसे खींचा जाए तो क्या होगा। यह सुनकर कप्तान कहने लगा, इसे खींचने पर जहाज डूब जाएगा। तब उन्होंने उसकी युक्ति का उत्तर देते हुए बताया कि यह नित्य कर्म, कर्मकांड, पूजा, शुद्ध आहार विहार जीवन रूपी जहाज को पार लगाने के लिए सतगुरु जी के दिए हुए हैंडल हैं। यदि इन पर अमल न करें तो यह जीवन रूपी जहाज भी भवसागर में डूब जाएगा। इन्होंने कप्तान को बताया कि जिस प्रकार वह केवल जहाज को नियंत्रित करते हैं। वे सारे संसार के नियंता हैं। यह तर्क सुनकर जहाज का कप्तान बहुत प्रभावित हुआ। उसने इनको सारा नियंत्रण कक्ष (कंट्रोलरूम) दिखाया। जब मुम्वासा पहुंचे कप्तान ने सतगुरु जी के दर्शन किए। इन्हें विश्वास हो गया कि सतगुरु ही स्टीमर के मालिक हैं। परमेश्वर इन्हीं में निवास करता है।

एक दिन की बात है सूबा सेवा सिंह पेहोवा गए फिर वहां से मारकंडे के पास सरदार सुरेन्द्र सिंह के पास जाने का उनका कार्यक्रम था। वहां गए। सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि पहले वे अकाली थे। नामधारी परिवार में उनका विवाह हुआ था। एक बार उनका अमृतसर जाना हुआ। वहां उन्होंने अमृत छक लिया। वे कट्टर अकाली बन गए। उन्हें नामधारियों के पास जाने से रोका गया। और कहा गया कि वे उल्टी बातें करते हैं। एक दिन उनके ससुर ने उनसे श्री भैणी साहब चलने को कहा। इस पर पहले तो सुरेन्द्र सिंह ने बहुत मना किया पर बाद में श्री भैणी साहब चलने के लिए सहमत हो गए। वे श्री भैणी साहब चले जा रहे थे कि अचानक रास्ते में विचार आने लगा। वे सोचने लगे कि लोग कहते हैं कि सतगुरु जगजीत सिंह जी श्री गुरु गोविन्द सिंह जी का अवतार हैं। यदि यह सब सत्य है तो सतगुरु जी मुझे अपने पास बिठाकर घर का सारा हाल चाल पूछेंगे? वहां पहुंचे तो सतगुरु जी अपने आसन पर विराजमान थे। उसके थोड़ी देर बाद सच्चे पातशाह जी ने किसी को भेजकर उन्हें अपने पास बुलाया। फिर सारे परिवार का कुशल समाचार पूछा। ये सतगुरु जी से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने नाम ले लिया। वे कट्टर नामधारी बन गए।

एक बार सूबा जी का अफ्रीका जाना हुआ। वहां ये कीर्तन करते थे। वहां उन्हें सरदार ज्ञान सिंह मिले। उन्होंने बताया कि उनकी दो कन्याएं थीं। उन्होंने

सतगुरु जी के चरणों में अरदास की। पर फिर उनके घर कन्या ने ही जन्म लिया। वे निराश हो गए। वे सतगुरु जी को कोसने लगे। सतगुरु जी पर से उनका विश्वास उठ गया। थोड़ी देर में सच्चे पातशाह जी वहां प्रकट हुए और कहने लगे कि उन्होंने स्वयं उनके घर कन्या दी है। और अब उनके घर पुत्र होंगे। वे फिर कुछ देर बाद स्वप्न में प्रकट हुए और लड़का दे गए। उन्होंने यह भी बताया कि उनके घर पुत्र जन्म किस दिन होगा। ठीक उसी दिन उनके घर पुत्र का जन्म हुआ। कुछ समय बाद फिर एक और पुत्र उत्पन्न हुआ।

1981 की बात है। सच्चे पातशाह का दीवान लगा हुआ था। साढ़े 3 बजे जब भोग पड़ा तो लखबीर सिंह सतगुरु जी के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गए। जब वे आसन पर विराज गए तो उन्होंने कहा कि उनकी आंखें खराब हो गई हैं। कुछ समय पहले उन्होंने जब डाक्टर को दिखाया तो डाक्टर ने उनकी एक आंख को मृत अथवा बेकार घोषित कर दिया था। और दूसरी आंख का आप्रेशन कर दिया था। अब उन्हें एक आंख से ही नजर आता है। वे विनती करने लगे कि सतगुरु जी सब कुछ कर सकते हैं। सर्व समर्थ हैं। अगर उन्हें दूसरी आंख से भी दिखने लगे तो वह अखंड पाठ करवाएंगे। थोड़े दिन बाद एक चमत्कार हुआ। उन्हें जिस आंख से बिल्कुल नहीं दिखता था और जिसे डाक्टर ने मृत अथवा बेकार घोषित कर दिया था उससे भी दिखने लग गया। फिर उन्होंने अखंड पाठ करवाया। इस प्रकार सतगुरु अपने भक्तों की रक्षा करते चले जा रहे हैं।

सतगुरु की महिमा बड़ी जग में अपरमपार।
सतगुरु जी की कृपा से विकसे सब संसार॥

सतगुरु से मांगना आना चाहिए

—संत अजीत सिंह चीमा

आप सतगुरु श्री जगजीत सिंह के बालमित्र रहे हैं। ये बाल्यावस्था में इकट्ठे खेला करते थे। सतगुरु जी ने बहुत समय पहले इन्हें नौकरी छोड़ने का आदेश दिया था परंतु यह उनकी आज्ञा का पालन न कर सके। फिर जब अवकाश प्राप्त हुए तो सतगुरु जी ने फिर इन्हें बुलाकर कुछ समय के लिए अकादमी का कार्यभार संभालने के लिए कहा। इन्होंने चार वर्ष इस संस्थान में कार्य किया। इसे काफी ऊंचा उठाया। इसका विकास किया।

इसी बीच इनका छोटा भाई जो इंग्लैंड में रहता था, भारत आ गया और उसने आकर राजनीति में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। उसने संत चीमा जी से विनती की कि वह सतगुरु जी से कह कर उसे पंजाब विधानसभा का चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस से टिकट दिलवाएं। उसके कहने पर आप सिरसा सतगुरु जी के पास गए। सतगुरु जगजीत सिंह जी ने कृपा की और उसे टिकट दिलवा दी पर इनका भाई चुनाव हार गया। फिर जब दुबारा चुनाव आए तो सरदार हरविन्द्र सिंह हंसपाल जी संसदीय बोर्ड के सदस्य थे। सतगुरु जी ने इन्हें टिकट देने को कहा। दुर्भाग्यवश जिले से कांग्रेस का प्रधान उनके विरुद्ध खड़ा हो गया तब उसने सतगुरु जी से कृपा करने की प्रार्थना की जिस पर सतगुरु जी ने हंसकर उनकी पीठ थपथपाई। इसका परिणाम यह हुआ कि इनके छोटे भाई पंजाब विधानसभा के विधायक चुन लिए गए। संत चीमा जी कहते हैं कि सतगुरु जी तो कृपा करते हैं परंतु उनसे मांगना आना चाहिए।

संत चीमा जी जब पाकिस्तान से लौटे तो उनकी धार्मिक भावनाएं लगभग समाप्त हो चुकी थीं। उनके मन में विचार आया कि यदि सतगुरु जगजीत सिंह जी सचमुच में गुरु हैं तो वे स्वयं उसे भजन देंगे। सतगुरु ने उसकी मनोकामना जान ली। उस पर कृपा दृष्टि बरसी और उसे स्वयं भजन दिया। सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज उसे अपना मित्र मानते हैं। उनके मन से साम्यवाद की विचारधारा जाती रही। और यह सतगुरु जी के चरणों में लग गए। अब भी इनकी जमीन है। तीन हजार रुपये पैंशन आती है। परंतु सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के प्रेम में बंधे हुए से यहीं रहते हैं। यह समझते हैं कि वे अपने जीवन को सतगुरु के चरणों में रहकर सफल बना रहे हैं।

जिला कपूरथला में इनके पिताजी को जमीन अलाट हुई थी। सन् 1969 में इनके पिताजी का देहांत हो गया। सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी इन दिनों अफ्रीका में थे। उन्होंने इनको तार देकर बताया कि इनके पिताजी परम पुरुष की

ज्योति में लीन हो गए हैं। सतगुरु जी ने संदेश दिया कि वे अभी नहीं आ सकते। पर बरसी पर अवश्य आएंगे। बरसी पर उनके घर सतगुरु जी, संत इन्द्र सिंह चक्रवर्ती जी आदि अनेक विद्वान आए। उनके मित्र श्री खजान सिंह मोदी भी वहां आए। श्री मोदी ने अपने मन में सोचा कि श्री जगजीत सिंह जी यदि सचमुच में ही सच्चे पातशाह अंतर्यामी हैं तो वे आवाज़ देकर मुझे बुलाएंगे। तभी मैं उनसे भजन पूछूंगा। वहां दीवान लगा था। दीवान में पंडित गोपाल सिंह जी ने लगभग 150 लोगों को भजन दिया। फिर सतगुरु जी कहने लगे, ''खजान सिंह तुम क्यों छिप रहे हो?'' यह सुनते ही वह इतने भाव-विभोर हो गए कि वहीं मंच पर लेट गए। उन्हें सच्चे पातशाह के चरणों में लिटाया गया। वह 15 मिनट मूर्छित रहे। फिर सतगुरु जी की आज्ञा से उन्हें भजन दिया गया।

पहले उनका साढ़े चार एकड़ का फार्म था। अब नीलोखेड़ी में उनका 80 एकड़ का फार्म है जो **''ढिल्लों फार्म''** के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। वह सच्चे पातशाह से मिलने के बाद 15 वर्ष जिए। 15 वर्ष बाद उन्हें पक्षाघात हुआ। वह कुछ दिन बाद ठीक हो गए। एक दिन वह अपनी नित्य क्रिया से निवृत्त होकर बैठे तो कहने लगे कि बहुत से नामधारी सिख इकट्ठे हो रहे हैं और सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी आए हैं। उन्होंने बच्चों से कहकर चारपाई बिछवाई। वहां बैठकर उनके मिलाने के लिए सतगुरु प्रताप सिंह की फोटो मंगवाई और उन्हें नमस्कार करने लगे। उन्होंने उसी पल प्राण त्याग दिए।

उस दिन एक बीबी पटियाले से आई थी। उसने जब सतगुरु महाराज को नमस्कार किया तो उन्हें उनमें गुरु नानक देव जी के दर्शन हुए। उसने घरबार त्याग दिया और सतगुरु जी की शरण में आ गई उनसे भजन लिया। वह कहने लगी कि अब उसका घरबार यही है।

सच्चे पातशाह की महिमा अपार है। उनके कौतुक अनेक हैं। उनकी माया असीम है तथा उनकी कृपा का सागर अथाह है।

जालंधर जिले के पास एक गांव है। वहां एक युवक को कैंसर रोग हो गया था। वहां लोग उसे अनेक अस्पतालों में लेकर गए। जांच करवाई। परंतु सब जगह डाक्टरों ने उसे मना कर दिया। तब उसके पिता उसे सतगुरु जी के पास ले आए। सतगुरु जी ने उस पर दृष्टि डाली और कहने लगे कि इसे तो कुछ भी नहीं है। सच्चे पातशाह का चमत्कार हो गया। वह युवक कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गया। वह अब भी इन्हीं के पास रहता है। सतगुरु के पास बहुत ही नम्रता तथा प्रेम है। जो भी सच्चे मन से अरदास करता है उस पर वे अवश्य कृपा करते हैं। वे लुधियाने में कई रोगियों का उपचार करवाते हैं। वे 16-17 लाख निर्धनों पर खर्च करते हैं। यहां वृद्धाश्रम में वृद्धों को बड़े प्रेम से रखा जाता है। सच्चे पातशाह उन लोगों का स्वयं ध्यान रखते हैं।

सतगुरु एक अथाह सागर हैं

—श्री दर्शन सिंह चान्ना (नैरोबी)

श्री चान्ना जी का कहना है कि सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज के जितने चमत्कार एवं कौतुक उन्होंने देखे हैं उनकी गणना नहीं की जा सकती। सतगुरु महाराज एक अथाह सागर की भांति हैं। उनकी तह तक पहुंचना या यों कहिए कि उनकी माया का पार पाना मानव मात्र के लिए कठिन ही नहीं असंभव है। उनकी कृपा दृष्टि प्राप्त करना ऐसे ही है जैसे कोई समुद्र में से एक बूंद जल प्राप्त कर ले। श्री दर्शन सिंह सन् 1979 की एक घटना बताते हैं।

श्री दर्शन सिंह, महामंत्री नामधारी संगत कीनिया के दो मामा थे जिनमें से एक का नाम श्री गुमेंद्र सिंह विरदी था और दूसरे का नाम श्री सुरेंद्र सिंह विरदी। यह घटना उन दिनों की है जब युगांडा के राष्ट्रपति ईदी आमीन हुआ करते थे। उन्हीं दिनों युगांडा में ईदी आमीन की सरकार के विरुद्ध विद्रोह हो गया और वह राजधानी कम्पाला से भाग खड़ा हुआ। इसी गड़बड़ में उनके छोटे मामा श्री सुरेंद्र सिंह की मृत्यु हो गई। यह मामा जी श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी से बड़ा प्रेम करते थे और उनमें उनकी बड़ी श्रद्धा थी। उन्हीं दिनों सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी का नैरोबी जाने का कार्यक्रम था और रविवार के दिन विमान द्वारा वे नैरोबी पहुंच रहे थे। उससे एक दिन पूर्व शनिवार की रात को श्री दर्शन सिंह अपने बड़े मामा के घर उनसे मिलने गए थे। उन्होंने अपने मामा को सूचित किया कि सतगुरु जी प्रात: विमान द्वारा वहां पहुंच रहे हैं। इसलिए वह सच्चे पातशाह के स्वागत के लिए हवाई अड्डे पर चलें। दर्शन सिंह के मामा ने दर्शन सिंह से बात सुनी और उत्तर दिया ''देखेंगे। पता नहीं हवाई अड्डे पर आ भी सकूंगा या नहीं। वैसे भी सतगुरु जी का प्रेम-स्नेह छोटे भाई छिन्दा के साथ ही था। मेरे साथ वह बात नहीं थी।''

रात बीती। सवेरा हुआ। सतगुरु जी का विमान नैरोबी के हवाई अड्डे पर उतरा। सतगुरु जी कहने लगे कि वे यहां से सीधा पहले गुमेन्द्र सिंह के घर उसके भाई का शोक प्रकट करने और उस संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए जाना चाहते हैं। यह सुनकर सब लोगों ने सच्चे पातशाह से प्रार्थना की। वे कहने लगे ''सतगुरु देव! पहले आप अपने निवास स्थान पर पधारें। थोड़ी देर विश्राम करें और फिर उनके घर चलें।'' परंतु सतगुरु न माने। ऐसा प्रतीत होता था कि सतगुरु

जी बड़े मामाजी के मन की भावना को जान चुके थे। वे उन पर कृपा दृष्टि करना चाहते थे कि उनके मन का भ्रम दूर हो जाए।

जब उपस्थित सभी भक्तों को यह विश्वास हो गया कि सतगुरु जी सीधे वहीं जाएंगे तो इन लोगों ने फोन द्वारा मामा जी के घर में सूचना दी कि सतगुरु सीधे उन्हीं के घर पधार रहे हैं। इसलिए वे लोग सतगुरु महाराज के स्वागत की तैयारी करें, तो मामा जी के परिवार ने सोफे पर आसन लगाया। पर सच्चे पातशाह तो सच्चे पातशाह थे। उनमें तो मर्यादाएं कूट-कूट कर भरी हुई थीं। वे परमात्मा स्वरूप अभिमान तथा अहंकार से लाखों नहीं करोड़ों मील दूर थे। वे तो जन-जन के हृदय में वास करने वाले थे। जन-जन की आत्मा का रहस्य पहचानते थे वे भला कोई ऐसा कार्य कर सकते थे जिसमें कोई मर्यादा भंग होती हो। उन्होंने सोफे पर बिछाए गए सुंदर आसन पर बैठने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि वे तो शोक प्रकट करने के लिए आए हैं। कोई ऐश्वर्यपूर्ण सत्कार स्वीकार करने नहीं आए। वह अन्य जनों की भांति सबके साथ इस पृथ्वी माता का ही आसन ग्रहण करेंगे। अर्थात् नीचे ही बैठेंगे और वे सबके साथ नीचे भूमि पर ही बैठ गए। संभवत: उनके चरण स्पर्श से धरती भी धन्य हो गई होगी।

मामा जी के परिवार के लोग यह देखकर हैरान हो गए कि अभी कल ही की बात है जब मामा जी ने कहा था कि सतगुरु जी को उनके परिवार के साथ कोई प्रेम तथा लगाव नहीं था। दर्शन सिंह ने अपने मामा को जताया कि सच्चे पातशाह ने उन पर किस प्रकार कृपा की है और वे हवाई अड्डे से सीधे उनके घर पर ही पधारे हैं।

नैरोबी में दीवान (संत समागम) का कार्यक्रम था, वहां सब संगत ने रोज आना था सतगुरु जी के पावन दर्शन करने और उनका वचनामृत का पान करने के लिए। पर निरंतर दो दिन बीत गए और मामा जी दीवान में नहीं आए। ऐसा प्रतीत होता था कि उनका मन अभी राग द्वेष एवं मिथ्याभिमान से मुक्त नहीं हुआ था। मामा की मनोदशा का सतगुरु महाराज को आभास हो ही गया था। दीवान का तीसरा दिन था जब दर्शन सिंह मामा जी को किसी प्रकार समझा-बुझाकर दीवान में ले ही आए। जब भोग के उपरांत कीर्तन समाप्त हुआ तो सारी साध-संगत बीच में मार्ग छोड़कर दोनों और उठकर खड़ी हो गई। सच्चे पातशाह साध-संगत के बीचों बीच बने रास्ते पर चल रहे थे। जब सतगुरु जी, दर्शन सिंह और उसके मामा के पास पहुंचे तो दोनों ने हाथ जोड़कर सतगुरु के चरणों में शीश झुका दिए।

यह देखकर सतगुरु मुस्कराए और कहा ''देखेया! मेरा मुंडा त्वानूं खिच के

लै आया न।'' इस घटना से मामा जी को ज्ञान प्राप्ति हुई और वह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज के चरण कमलों में विलीन हुए और अंत में अकाल पुरुष के धाम को प्राप्त हुए।

दर्शन सिंह के मामा के बेटे मद्यसेवी तथा मांसाहारी थे। वे इन अभक्ष्य वस्तुओं को त्याग नहीं रहे थे। दर्शन सिंह उनके इस स्वभाव से दु:खी था। उसने सच्चे पातशाह से प्रार्थना की कि वे उन पर भी अपनी कृपा दृष्टि डालें जिससे उनका यह अभक्ष्य तथा अभोज्य खानपान टूट जाए और उनका जीवन भी शुद्ध एवं सात्विक हो जाए। इस पर सच्चे पातशाह कहने लगे—''दर्शन सिंह! चिंता की कोई बात नहीं। वे भी यह सब छोड़ देंगे। मामा जी के बेटे इतने बीमार पड़ गए कि डाक्टरों ने उनका मांस और शराब खाना-पीना सब बंद करवा दिया। तीन वर्षों से यह सब अब बंद है। सच्चे पातशाह का वचन खाली नहीं जाता। उनका वचन वह अमोघ अस्त्र है जो लक्ष्य को बेंध कर फिर उनके पास लौट आता है।

सन् 1985 की बात है। सूबा रेशम सिंह इंग्लैंड से नैरोबी आए थे। उनके टिकट के अनुसार वह वहां कुछ घंटे ही रह सकते थे। वहां से उनका दाग-सलाम जाने का कार्यक्रम था। दर्शन सिंह तथा उनके मित्रों ने रेशम सिंह से प्रार्थना की कि वह दो-तीन दिन रह जाएं। और वह उनकी बात मान गए। सूबा रेशम सिंह जी के इस निर्णय से सबको अच्छा लगा। कारण यह कि सूबा रेशम सिंह भी संत स्वभाव के व्यक्ति हैं। सोध (ब्रत) धारण करने वाले सोधी हैं और प्रवचन भी अच्छा कर लेते हैं। नैरोबी की साध-संगत ने बड़ा आनंद उठाया।

अगले दिन यात्रा दलाल (Travel Agent) के पास गए। उसे टिकट दिखाया और कहा कि अगले दिन के विमान में निश्चित करवा दें। यात्रा दलाल ने टिकट देखा तो उसने ध्यान दिलाया कि इस टिकट के अनुसार यात्रा भंग नहीं की जा सकती थी। अब यह टिकट बेकार हो गया है। इसलिए उन्हें अब नया टिकट लेना होगा। भले ही दर्शन सिंह तथा उनके साथियों ने उसे यह समझाने का यत्न किया कि इस बात का उन्हें पहले पता नहीं था पर विमान सेवा के अधिकारी नहीं माने और अपनी पहली बात पर बल दिया कि उन्हें अब नया टिकट ही खरीदना होगा। इन लोगों ने अपनी कठिनाई सूबा जी को नहीं बताई। हर कठिनाई पड़ने पर सच्चे पातशाह को ही कष्ट देना पड़ता है। एक बालक जब अपने आपको असमर्थता एवं कठिनाई में घिरा हुआ पाता है तो माता-पिता को ही तो कहता है। उसे अपनी बात कहते कोई किसी प्रकार का संकोच नहीं होता।

इसी प्रकार भक्त लोग जब अपने आपको किसी कठिनाई में घिरा हुआ पाते हैं तो सच्चे पातशाह के आगे झोली फैलाकर समस्याओं का समाधान मांग लेते

हैं। मीरा ने भी असमर्थता में कह दिया था। **''मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।''** **''रघुवर! तुझको मेरी लाज।''** इत्यादि। दर्शन सिंह और सूबा सतनाम सिंह ने भी खड़े होकर सच्चे पातशाह से अरदास की कि हे सच्चे पातशाह! हमारी लाज रखना। मन में विचार आया इस समस्या को लेकर विमान सेवा के प्रबंधक को मिला जाए। संभव है वह इस समस्या का कोई समाधान निकाल दें। वे लोग प्रबंधक महोदय से भेंट करने चले गए। एक चमत्कारी घटना हुई। वह कहने लगा—'आप लोग सीटों का बंदोबस्त करो वह इन्हीं टिकटों को उचित एवं यात्रा योग्य बना देगा।' इस पर सूबा सतनाम सिंह और दर्शन सिंह दोनों नीचे गए और सतगुरु जी के भरोसे पर पूछा कि दो सीटें मिल जाएंगी क्या? कुछ देर पहले उसी व्यक्ति ने कहा था कि विमान की सभी सीटें पूरी हो गई हैं तथा कोई सीट उपलब्ध नहीं है। अब वह व्यक्ति कहने लगा कि दो सीटें उपलब्ध हो सकती हैं। ये लोग फिर भागे-भागे ऊपर प्रबंधक के पास पहुंचे और दो सीटों की उपलब्धता के बारे में उसे सूचित किया जिस पर उसने उन्हीं टिकटों की उपयोगिता बढ़ा दी। इस पर इस संकट की घड़ी में सतगुरु सच्चे पातशाह ने हमारी अरदास स्वीकार की और इस घोर संकट एवं मानसिक चिंता से मुक्ति दिलाई। इस सारी असुविधा तथा परेशानी का सूबा रेशम सिंह जी को ज्ञान नहीं हुआ और वह विमान द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रानी के साथ अगले पड़ाव पर चले गए।

सूबा रेशम सिंह अपनी श्रीमती के साथ चले गए पर दर्शन सिंह और सूबा सतनाम सिंह सतगुरु महाराज का पावन स्मरण करते हुए और धन्यवाद करते हुए कितनी देर तक आंसू बहाते रहे। वे सोच रहे थे कि हे सच्चे पातशाह आपने किस प्रकार इतनी दूर होकर भी हमें संकट तथा मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाई। वास्तव में देखा जाए तो यह सोचना कि सच्चे पातशाह हमसे दूर हैं हमारी ही महान मूर्खता तथा हमारे अल्पबुद्धि होने का लक्षण है। कहीं पूर्ण ब्रह्म भगवान किसी से दूर हो सकते हैं क्या? सतगुरु जी की कृपा दृष्टि उनकी सामर्थ्य एवं शक्तियां सदैव अपने भक्तों के साथ-साथ रहती हैं। धन्य धन्य श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी सच्चे पातशाह।

यह घटना सन् 1993 की है

संत रणजीत सिंह फिलोरा लैस्टर में रहते थे। सच्चे पातशाह का इंग्लैंड की यात्रा का कार्यक्रम था। दर्शन सिंह ने संत रणजीत सिंह से कहा कि सतगुरु जहां-जहां जाएंगे। हम लोग भी उनके साथ-साथ ही जाएंगे और सच्चे पातशाह के दर्शनों का लाभ प्राप्त करेंगे। सतगुरु जी की यात्रा इस प्रकार थी। लंदन से लीड्ज़

फिर बरमिंघम फिर लैस्टर और फिर वापिस लंदन। बरमिंघम में दीवान आयोजित किया गया। दीवान में दर्शन सिंह तथा रणजीत सिंह भी बैठे थे। दर्शन सिंह ने रणजीत से कहा कि सतगुरु जी न तो उनकी ओर देखते हैं और न मुस्कराते हैं। वे उनकी ओर किसी प्रकार का ध्यान भी नहीं दे रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके दु:खी विचार सच्चे पातशाह तक पहुंच गए। रात को सोने का समय आया। ये दोनों सोने के लिए जाने की अनुमति लेने के लिए सच्चे पातशाह के पास उपस्थित हुए। सच्चे पातशाह ने दोनों को अपने पास बुलाया। मुस्कराए और फिर इन दोनों की कमर में चुटकी भरी। इन दोनों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। गले रूंध गए। तन मन गद्-गद् हो गया। सतगुरु जी के प्रेम और भक्ति में तन बदन सराबोर हो गए। मन में उठ रहे संकल्प विकल्प सब शांत होकर विचारों में शीतल मंदाकिनी प्रवाहित होने लगी।

सन् 1967 की एक घटना

दर्शन सिंह के पिता ने नौकरी छोड़ दी। इनके मामा के साथ साझेदारी में व्यापार शुरू किया। सच्चे पातशाह का नैरोबी में आगमन था। वे कहने लगे कि उन्हें व्यापार अलग शुरू करना चाहिए था। प्रभु की इच्छा को कौन टाल सकता था। सतगुरु जी के मन में यह विचार आने की देर थी कि कारण बन गया।

दो महीने के भीतर ही उसके मामा देश छोड़कर किसी दूसरे देश में चले गए। इनका निर्माण व्यापार स्वतंत्र हो गया। अच्छा समय यापन होता रहा। दर्शन सिंह की गुड़गांव में शादी हुई। दो कन्याओं ने जन्म लिया। ये लोग 1988 में अश्विन मास के मेले में आए। बाहर बरामदे में बड़े ठाकुर जी की लड़कियां, दर्शन सिंह की लड़कियां, काकू जी की बालिका और बीबी जी की बिटिया खेल रहे थे। सच्चे पातशाह उंगली पर गिन रहे थे कि आठ लड़कियां खेल रही हैं। बृहस्पतिवार का दिन था। सच्चे पातशाह ने मौन व्रत धारण किया हुआ था। वे उंगुलियों पर गिनकर संकेत कर रहे थे। अगले दिन माता जी ने सतगुरु महाराज जी से प्रार्थना की कि वे कृपा करें और दर्शन सिंह के घर में पुत्र रूप में प्रसाद प्रदान करें।

उन्हीं दिनों इनकी पत्नी गर्भवती थी। पर सास तक को भी इस बात का अहसास नहीं था। माता जी के प्रार्थना करने पर सच्चे पातशाह परम प्रसन्न हुए। उनकी प्रसन्नता के प्रमाण स्वरूप दर्शन सिंह के घर मार्च मास में पुत्र का जन्म हुआ। जिसका नाम सच्चे पातशाह ने दयाल सिंह रखा। तब से दर्शन सिंह निरंतर अपनी आय का दशांश देते हैं और नैरोबी में गुरुद्वारे पर धन खर्च कर रहे हैं।

नैरोबी में सब लोग नि:संकोच दशांश देते हैं। उनका यह विश्वास है कि यह सारा धन श्री सतगुरु जी का ही दिया हुआ है। वे सब प्रसन्नता से धर्म के कामों पर खर्च तो करते हैं पर मन में कबीर की यह वाणी समाई रहती है—

मेरा मुझमें कछु नहीं जो कछु है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागै है मोर॥

अर्थात् यह सब सच्चे पातशाह का ही दिया हुआ है। इसमें उनका कोई योगदान नहीं है। संभवत: उन भक्तजनों के मन में रहीम के इस दोहे का भी मनन होता रहता होगा—

देनदार कोई और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मोहि पर करें तोत नीचे नैन॥

अर्थात् देने वाले तो सतगुरु जी हैं और वही अपनी श्रद्धा एवं भक्ति से यह धन धर्म के कार्यों पर खर्च कर रहे हैं।

वैनकूवर की घटना

—सूबा रेशम सिंह

सूबा रेशम सिंह जी सन् 1972 में कनाडा के टोरंटो नगर में गए। अभी उनके विदेश गमन की प्रक्रिया चल रही थी और उन्हें वहां गए अभी छः मास ही हुए थे जब इस घटना की उन्हें सूचना प्राप्त हुई।

सरदार सुच्चा सिंह संधू वैनकूवर में कृषि का कार्य करते थे। उनके फार्म पर तीन-चार सौ के लगभग लोग कार्य करते थे। उनके वाहन प्रातः श्रमिकों को लाते थे तथा सायं को वे उन्हें उनके घरों में पहुंचा देते थे।

एक दिन उनके फार्म के एक श्रमिक ने एक महिला से दुर्व्यवहार कर दिया। स. सुच्चा सिंह के पुत्र ने क्रुद्ध होकर उसे पीट दिया। पीटने से उसे गहरी चोट लग गई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने संधू जी के पुत्रों पर हत्या का अभियोग लगाकर मामला दर्ज कर दिया।

मुकदमे की अंतिम पेशी थी। उन्होंने न्यायालय में जाना था इससे कुछ दिन पूर्व उनके बड़े बेटे स. गुरसेव सिंह को स्वप्न में श्री सतगुरु राम सिंह जी के दर्शन हुए और सतगुरु जी ने कहा कि वह किसी प्रकार की चिंता न करें। परदेस में गुरु अपने भक्तों के अंग-संग रहते हैं। वह हर प्रकार से उनकी रक्षा करते हैं। उसे विश्वास हो गया कि सतगुरु जी कृपा करेंगे और वे लोग बच जाएंगे।

मुकदमे की तारीख के दिन जब वह अपनी मोटर में अदालत में जा रहे थे, रास्ते में लाल बत्ती हो गई। वे देखकर हैरान हो गए, जब लाल बत्ती में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के दर्शन हुए। वे मुस्कराए। गुरसेव सिंह ने सतगुरु जगजीत सिंह जी के कभी दर्शन नहीं किए थे। वह पहचान न सका कि वह कौन महानुभाव हैं। उधर स्थानीय लोगों ने सोचा कि अब नामधारी लोग जेलों में पहुंचेंगे। गुरसेव सिंह को सांत्वना हुई कि सतगुरु जी उनके अंग-संग हैं और वे निश्चित रूप से उनकी रक्षा करेंगे।

वे अदालत में पहुंचे। थोड़ी देर बाद न्यायाधीश अपने आसन पर आकर बैठ गया। गुरसेव सिंह क्या देखते हैं कि श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी न्यायाधीश के पीछे खड़े हैं और मुस्करा रहे हैं। न्यायाधीश आधा घंटा कुछ सोचता और लिखता रहा। फिर उसने उन लोगों को मुक्त कर दिया। गुरसेव सिंह ने घर आकर अपनी आंखों देखा कौतुक सुनाया। उनके परिवार के लोगों ने गुरुओं के चित्र

उन्हें दिखाए। फिर पूछा कि इनमें से किस गुरु महाराज ने उन्हें दर्शन दिए हैं तो उन्होंने श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के चित्र की ओर संकेत किया। अब सब लोगों को यह पता चल गया कि श्री भैणी साहब में बैठे अकाल पुरुख श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी को अपने भक्तों की किस प्रकार चिंता रहती है और वहीं बैठकर कृपा करके अपने भक्तों की रक्षा कर देते हैं।

उन दिनों सूबा रेशम सिंह, रेशम सिंह मस्ताना के साथ रहते थे। श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी का भारत से फोन आया। 59 मिनट तक इन लोगों की श्री सतगुरु जी के साथ बात होती रही। श्री सतगुरु जी ने सूबा रेशम सिंह को आदेश दिया कि वैन्कूवर में कुछ नामधारियों पर हत्या का अभियोग लगाया गया था और श्री सतगुरु रामसिंह जी ने उन्हें दर्शन देकर उनकी रक्षा की थी, इसका पूरा समाचार लाए।

उसी दिन सूबा रेशम सिंह जी ने खाने-पीने का सामान लिया और गाड़ी पर सवार होकर वैनकूवर के लिए प्रस्थान कर गए। वे तीन रात और चार दिन में वहां पहुंचे। वहां पर सब लोगों ने यह अलौकिक चमत्कार सूबा जी को सुनाया। सूबा रेशम सिंह ने टोरंटो आकर श्री सतगुरु जी को फोन करके सूचित किया कि उन्होंने स्वयं परम कृपा करके उन लोगों को हत्या के अभियोग से बचा लिया है। श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी ने यह आभास नहीं होने दिया कि यह सब उनकी ही कृपा थी।

सन् 1992 में सूबा रेशम सिंह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के दर्शनार्थ श्री भैणी साहब आए थे। उनकी बाईं टांग में दो-तीन महीने से बहुत दर्द चल रहा था। दर्द में कोई आराम नहीं आ रहा था। उनके मन में विचार आया कि इस कष्ट के बारे में श्री सतगुरु से प्रार्थना क्यों न की जाए। उन्होंने श्री भैणी साहब में श्री सतगुरु जी के निजी सचिव संत तरसेम सिंह को कहा कि वह सच्चे पातशाह जी को उनके इस दर्द के बारे में प्रार्थना करें। संत तरसेम सिंह ने सच्चे पातशाह जी के चरणों में प्रार्थना कर दी। सतगुरु महाराज ने संत तरसेम सिंह द्वारा सूबा रेशम सिंह को बताया कि उसकी प्रार्थना सच्चे पातशाह के दरबार में स्वीकार हो गई है।

रमेश नगर गुरुद्वारा दिल्ली में है। श्री सतगुरु जी दीवान पर बैठे हुए थे। सूबा रेशम सिंह सतगुरु जी पर चॅवर डुला रहे थे। सूबा रेशम सिंह देखकर विस्मित हो गए।

सच्चे पातशाह जी अपने हाथों से अपनी बाईं टांग को दबा रहे थे और सूबा रेशम सिंह को देखकर मुस्करा रहे थे। सच्चे पातशाह जी ने सूबा रेशम सिंह को

दो बार संकेत किया पर सूबा रेशम सिंह कुछ समझ न सके। जब तीसरी बार फिर सच्चे पातशाह जी ने अपनी बाईं टांग दबाते हुए संकेत किया तो पास बैठे भक्तों ने सूबा जी को बताया कि उन पर सतगुरु जी की कृपा हो गई है। इसके तुरंत बाद सूबा जी को ध्यान आया कि उनकी बाईं टांग का दर्द जाता रहा है। अब दर्द का कहीं आभास मात्र न था।

इस प्रकार सच्चे पातशाह जी अपने भक्तों पर चुपचाप बिना किसी को बताए कृपा कर देते हैं तथा उनके समस्त कष्ट हर लेते हैं। इस बात को तीन वर्ष हो गए हैं। सूबा रेशम सिंह की टांग में फिर कभी दर्द नहीं हुआ।

इस घटना के एक वर्ष बाद सूबा रेशम सिंह के साथ एक और अद्भुत घटना घटी। वह केनाज में सीयर्स नामक कंपनी में मिस्त्री का काम करते थे। उन्हें ग्राहकों की शिकायतों को देखने तथा दूर करने के लिए पच्चास सौ किलोमीटर दूर तक जाना पड़ता था। इन्होंने सोध रखी हुई थी। इस कारण बाहर अन्न एवं जल वर्जित था। सूबा जी सूखे बादाम तथा काजू अपने साथ गाड़ी में रखते थे। जब भूख लगती तो खाकर समय काट लेते। इससे शरीर में पानी की कमी हो गई। इस कारण जिगर में पित्त की थैली में पथरी (यकृताश्गरी) हो गई। दर्द होने लगा। डाक्टरों को दिखाया गया। डाक्टरों ने परामर्श दिया कि शल्य चिकित्सा द्वारा पित्त की थैली को ही निकलवा देना चाहिए क्योंकि उसमें से पथरी को निकाला नहीं जा सकता।

सूबा रेशम सिंह ने श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी की सेवा में प्रार्थना की कि उसके जिगर में पित्त की थैली में पथरी हो गई है। डाक्टर आपरेशन के लिए कह रहे हैं। यह सुनकर सच्चे पातशाह जी ने आदेश दिया कि वह आपरेशन करवा लें। इस पर सूबा जी ने फिर सतगुरु जी से प्रार्थना की कि वह आपरेशन के लिए तैयार हैं परंतु इसके लिए पहले उसे पेट के बाल साफ करवाने पड़ेंगे। इसलिए यदि सतगुरु जी कृपा करें तो यह बिना आपरेशन के ही ठीक हो जाएगा और पथरी अपने आप निकल जाएगी। इस पर सतगुरु जी ने सूबा रेशम सिंह को कहा कि वह डा. नंद किशोर से संपर्क करें। सूबा जी ने टेलीफोन द्वारा डा. नंद किशोर से संपर्क किया। डा. नंद किशोर ने उनको कहा कि वह अपचनशील एवं कठोर भोजन न करें। डाक्टर ने कुछ और प्रतिबंध भी लगा दिए। सूबा जी को पूरा विश्वास था कि सतगुरु जी की कृपा हो चुकी है परंतु वे इसका श्रेय डाक्टर को देना चाहते हैं। वे यह कभी नहीं कहते कि यह उनकी कृपा से हुआ है। इस प्रकार सूबा रेशम सिंह एक-दो महीने के पश्चात अस्पताल में गए। उन्होंने अपने सभी परीक्षण करवाए। लगभग आधा घंटा डाक्टर उन्हें एक्स-रे की मशीन के

बीच लिटा कर देखते रहे और निरीक्षण-परीक्षण करते रहे पर पित्त की थैली में कोई पथरी दिखाई नहीं दी। डाक्टर विस्मित हो रहे थे कि यह चमत्कार कैसे हो गया!

जनवरी/फरवरी-1993 में श्री सतगुरु जी का टोरंटो की यात्रा का कार्यक्रम था। सच्चे पातशाह जी का निवास सूबा रेशम सिंह के ही घर पर था। बड़ी रौनक लगी हुई थी। टोरंटो में रह रहे पच्चीस-तीस परिवारों के लिए यह अति सौभाग्य का विषय था कि श्री सतगुरु जी उन्हें दर्शन देने तथा उन्हें कृतार्थ करने स्वयं पधारे हैं। यहां के लोग अनेक वर्षों से उनके पधारने की राह देख रहे थे। सच्चे पातशाह जी ने सूबा जी को आदेश दिया कि वह थाईलैंड का फल दरयान लेकर आएं।

साध संगत अधिक आई हुई थी। इसलिए सूबा जी को नींद पूरी करने का अवसर नहीं मिल पाया था। इस प्रकार वह उनींदे थे। गाड़ी चलाते हुए उन्हें नींद आ गई थी। मोटर साठ-सत्तर किलोमीटर की गति से भाग रही थी। सूबा जी को कोई सुध नहीं रही थी। वह गहरी नींद में सो गए थे। यातायात की लाल बत्तियों के पास दो खंभे थे। गाड़ी उन खंभों से निकल एक ओर दस-बारह फुट के खड्डों में कूद कर नीचे खेत में जाकर बंद हो गई। गाड़ी के नीचे तेल की टंकी फट गई। पानी की टंकी भी फट गई। खेत में खड़े पौधे सूबा जी के कानों को छूने लगे थे। इससे इनकी नींद खुल गई। पहले तो उन्हें समझ ही न आया कि वह कहां पहुंच गए हैं। फिर उन्हें पता चला कि नींद की हालत में कार अपने आप चलकर खड्डे में गिरकर खेतों में पहुंच गई है।

उधर, उस समय घर पर सूबा रेशम सिंह की पत्नी श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी से प्रार्थना कर रही थी कि वे सूबा जी की रक्षा करें। सच्चे पातशाह की आंखें बंद थीं। उन्होंने आंखें खोलीं और कहा कि वे सूबा जी की रक्षा ही तो कर रहे थे। तीनों लोकों के जानी जान अकाल पुरुख को सब दिखाई दे रहा था। यह घटना रविवार वाले दिन, जब सभी खेत मजदूर छुट्टी मनाते हैं, हुई। अचानक दो गोरे मजदूर भागते हुए वहां आ पहुंचे। उन्होंने कहा कि वे सहायता करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने सूबा जी को सलाह दी कि वह किसी प्रकार कार को चलाकर ऊपर सड़क तक ले जाएं। नहीं तो खेत का मालिक अपने खेतों के हुए नुकसान के मुआवजे की मांग करेगा। भले आयल चैंबर और रेडिएटर को हानी पहुंच चुकी थी, सूबा जी ने सच्चे मन से सतगुरु जी का स्मरण करते हुए गाड़ी की चाबी घुमाई। कार स्टार्ट हो गई। वह उछल कर ऊपर सड़क पर आ पहुंची। सूबा जी को इस दुर्घटना में थोड़ी सी खरोंच ही आई।

अधिक चोट नहीं लगी। बाद में बीमा कंपनी ने कार के हुए नुकसान का पूरा भुगतान कर दिया।

इस प्रकार सच्चे पातशाह जी ने अपार कृपा करके सूबा जी की प्राण रक्षा कर दी। इसके बाद एक बार फिर गाड़ी चलाते हुए सूबा जी सो गए। जब गाड़ी 70-80 किलोमीटर की गति से दौड़ रही थी, श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी प्रकट हुए और सूबा जी को जगाया। इस प्रकार दुर्घटना होते-होते टल गई।

वीर चंद के भाई नू कैंसर हस्पताल विच दर्शन दीते

—सूबा सतनाम सिंह (नैरोबी)

यह तंजानिया की घटना है, जहां पुराने नामधारी वीर चंद अग्रवाल रहते थे। अब वह इस संसार में नहीं हैं। उनका देहांत हो चुका है। जिस दिन श्री वीर चंद की दुर्घटना हुई, उस दिन उन्होंने सूबा सतनाम सिंह से तीन-चार घंटे वार्तालाप किया। उन्होंने श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के कुछ कौतुक उन्हें बताए। वे घर से पाठ करके आए थे। वे सूबा सतनाम सिंह के साथ चार बजे से 12 बजे तक बातचीत करते रहे। उन्होंने बताया कि वे किसी से यह बात न बताएं। लगभग 1 बजे उनकी दुर्घटना हो गई। उसके पश्चात वे बोल न सके और फिर वे भगवान को प्यारे हो गए।

वीर चंद ने एक तो श्री सतगुरु राम सिंह जी के बारे में उन्हें बताया कि किस प्रकार श्री सतगुरु राम सिंह जी के उन्हें सपने में दर्शन हुए। वीर चंद निरंतर चार-चार घंटे नाम सिमरण करते थे। उनके बड़े भाई को कैंसर का रोग था। वे इलाज के लिए मुंबई के अस्पताल में भर्ती थे। वीर चंद अपने बड़े भाई की खबर लेने तथा हाल पूछने के लिए तंजानिया से मुंबई आए थे। वह यह जानकर अति प्रसन्न हुए कि सच्चे पातशाह जी उनके भाई को दर्शन देने की कृपा करेंगे।

वीर चंद सतगुरु जी को लेने उनके डेरे पर चले गए। वहां साध संगत आती जा रही थी। बहुत समय निकल गया। सच्चे पातशाह जी अस्पताल न पहुंच सके। रोगियों से मिलने का समय समाप्त हो गया। वीर चंद ने सच्चे पातशाह जी से प्रार्थना की कि अब वे आज्ञा करें कि क्या करना चाहिए। इस पर उन्होंने कहा कि वे आज नहीं जा पाएंगे। वे कल जाएंगे। इसलिए वह चले जाएं।

वीर चंद आज्ञा लेकर अस्पताल चले गए। जब वह अपने भाई के कमरे में गए, वह देखकर हैरान हो गए कि उनके भाई वैराज्ञपूर्ण मनोस्थिति में बैठे हैं। वे अपनी पत्नी से कह रहे थे कि उसने सतगुरु जी के चरणों में माथा क्यों नहीं टेका अथवा प्रणाम क्यों नहीं किया? वीर चंद को देखकर वह कहने लगे कि वीर चंद तुम्हें रास्ते में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी अवश्य मिले होंगे। उन्होंने बताया कि सतगुरु जी यहां से अभी उठकर गए हैं। इस प्रकार सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी अपने भक्त और वीर चंद को दर्शन दे आए और उसकी पत्नी को दर्शन नहीं दिए।

सन् 1989 में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी की लंदन की यात्रा थी। सूबा सतनाम सिंह जी नैरोबी में अपने घर में बैठे थे। एक दिन लंदन से उनके जीजा जी का फोन आया। उन्होंने सूचित किया कि इन दिनों सच्चे पातशाह जी की लंदन की यात्रा चल रही थी। वे लोग उनके साथ अनेक स्थानों पर गए। पूरा आनंद सब लोग उठा रहे थे। डेनमार्क तथा टोरंटो से भी साध-संगत सच्चे पातशाह जी के दर्शन करने के लिए लंदन पहुंची हुई थी। सूबा सतनाम सिंह अपने तीन भाइयों के साथ बात करने लगे थे कि लंदन के लोग कितने भाग्यशाली हैं कि दिन रात सच्चे पातशाह के पवित्र दर्शनों के आनंद उठा रहे हैं। और सबका मन इस बात के लिए लालायित होने लगा कि वे भी अपने परिवारों सहित श्री सतगुरु जी के दर्शनों का लाभ प्राप्त करें। सभी भाईयों ने निर्णय किया कि वे तीन चार दिन के लिए अपने व्यापार से छुट्टी पाकर श्री सतगुरु जी के दर्शनों को चलें। भले उन दिनों दो-अढ़ाई सौ मजदूर इनके निर्माण कार्य पर लगे हुए थे। छोटे और बड़े भाई का भारतीय पासपोर्ट था, इस कारण जल्दी वीजा ही नहीं बन सका। वे न जा पाए। जिनके पास इंग्लैंड के पासपोर्ट थे, वे तुरंत तैयार हुए।

जहाज का टिकट लिया और लक्ष्य के लिए प्रस्थान कर दिया। कुल 15 व्यक्ति इंग्लैंड के लिए चल पड़े। जहाज में जब भोजन दिया जाने लगा तो विमान परिचारिका ने बताया कि उन लोगों के लिए शाकाहारी भोजन उपलब्ध नहीं था। ये लोग हैरान हो गए कि विमान में 12-14 घंटे की यात्रा करनी पड़ेगी और फिर बच्चों को वे लोग क्या खिलाएंगे।

इससे पहले विमान सेवा को यह लिखकर दिया गया था कि वह सब लोग पूरी तरह से शाकाहारी हैं, फिर भी शाकाहारी भोजन का कोई प्रबंध नहीं किया गया था। पर सतगुरु जी अपने भक्तों को भूखा कैसे रहने देते। अचानक सूबा जी ने एक स्टीवार्ट को पहचाना जो उनके साथ नैरोबी में पढ़ा था। उन्होंने उसे कहा कि वह उनके लिए शाकाहारी भोजन का प्रबंध करे। वह प्रथम श्रेणी से इनके लिए खाने के लिए फल ले आया। इससे आगे का विराम कायरो में था। वहां विराम पौन घंटे का था। पर उड़ान आधा घंटा देर से हुई। जब विमान उड़ा तो इन 15 लोगों के लिए शाकाहारी भोजन कहां से आ गया! ऐसा प्रतीत हुआ कि यह सारी कृपा सच्चे पातशाह जी की थी। वे सर्व अंतर्यामी तथा तीनों लोकों के ज्ञाता भला अपने भक्तों को भूखा कैसे रहने देते?

प्रात: 9 बजे लंदन पहुंचे। वहां जोगेंद्र सिंह के घर पर पहुंचे। उनके घर से वहां स्थानीय मुद्रा लेनी थी क्योंकि केन्या में विदेशी मुद्रा के बारे में कुछ प्रतिबंध थे। पर उन्होंने अपनी विवशता बताई और पौंड मुद्रा वे उन्हें न दे सके। यह लोग

घबरा गए कि विदेश में पैसे के बिना कैसे होगा! परंतु सतगुरु जी के होते चिंता की क्या बात थी। वे तो संग-संग थे। वे अपने भक्तों की सब कठिनाइयों को जानते थे। उनके समाधान को लेकर सदा खड़े रहते।

मैं चिंता क्यों कर करूं मम चिंते क्या होय।
मेरी चिंता हरि करें जिन सिरजा सब कोय॥

सूबा जी ने लंदन में अपनी बहन को फोन करके पूछा कि क्या किसी गाड़ी का प्रबंध हो पाएगा? इस पर उनकी बहन ने कहा कि एक घंटे में वह उन्हें इसके बारे में सूचित करेंगी। एक घंटे के पश्चात् उनकी बहन ने सूचित किया कि उन्होंने अपने किसी निकट संबंधी से वैन का प्रबंध कर दिया है पर उन्हें वहां आकर गाड़ी लेनी पड़ेगी। इसके पश्चात् सूबा जी गाड़ी लेने साऊथ-हाल में माता जोगेंद्र कौर के घर आ पहुंचे। इस प्रकार करते-करते शाम के सात बज गए। तब ये लोग लंदन से निकल पाए।

उस समय सच्चे पातशाह जी लीडज़ में थे। यह स्थान लंदन से काफी दूर है। माता जी के बड़े पोते ने इनको एम-1 मार्ग पर डाल दिया और मानचित्र पर समझा दिया। उसने पता बताने के स्थान पर टेलीफोन का नंबर दे दिया। वे उस सड़क पर एक घंटा तक चलते गए। रास्ते में एक पेट्रोल पंप आया। सूबा जी ने सोचा क्यों न गाड़ी में पेट्रोल दिखा लें। जब पेट्रोल दिखवाया तो पता चला कि गाड़ी के इंजन में एक बूंद भी तेल नहीं था। यदि ऐसे ही चलते रहते तो गाड़ी का इंजन बंद हो जाता। पर सतगुरु ऐसे कैसे होने देते? वे जानी जान हैं। वे जानते थे कि उनके भक्त जन कितनी दूर से उनके दर्शनों के लिए आ रहे हैं। उनका कष्ट तो काटना ही था। पूरा एक गैलिन तेल डाला। सच्चे पातशाह जी के बारे में बातचीत करते रात के 12 बजे लीडज़ में पहुंचे। वहां टेलीफोन बूथ ढूंढ़ते-पूछते सिटी सेंटर पहुंच गए। वहां यह देखकर हैरान हो गए कि वहां पर एक भी फोन नहीं दिख रहा था। चलते-चलते रिहायशी इलाके में पहुंच गए। गाड़ी को एक पेट्रोल पम्प पर रोका। वहां खड़े पुलिस वाले से टेलीफोन के बूथ के बारे में पूछा। वहीं रास्ते में खड़े दो लड़के मिल गए। उनसे भी पूछा। उनमें से एक लड़का कहने लगा कि जिस स्थान पर आपने जाना है वह स्थान तो सामने ही है। ये लोग हैरान हो गए कि इन लड़कों को यह कैसे जान पड़ा कि उन्होंने कहां जाना है। तब उन लड़कों ने बताया जिस प्रकार के वस्त्र आपने पहन रखे हैं तथा पगड़ियां पहन रखी हैं वैसे लोग इस सामने वाले घर में ही रहते हैं।

इतने में सूबा जी के जीजा जी उस सामने वाले घर से बाहर निकले। उन्होंने बताया कि वहीं पर सच्चे पातशाह जी का निवास है। सबने श्री सतगुरु जी के

दर्शन किए। उनके दर्शनों से तन मन पवित्र हो गया। सब चिंता और अशांति जाती रही। सूबा जी और उनके साथियों ने सतगुरु जी का धन्यवाद किया और कहा कि सच्चे पातशाह जी की मोहिनी शक्ति किस प्रकार उन्हें अपने चरणों में खींच कर ले आई है। इंग्लैंड में बिना पते कहीं पहुंच पाना बिल्कुल संभव नहीं होता। जब सूबा जी तथा बाकी के लोगों ने घर में प्रवेश किया तो सब देखकर हैरान हो गए कि सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जी अपने भक्तों का स्वागत करने के लिए मुस्कराते हुए खड़े हैं। लोगों की मन:स्थिति ऐसी थी कि सभी राग द्वेश से मुक्त हो गए थे।

सबने श्री सतगुरु जी के चरणों में प्रणाम किया सब प्रेम से गद-गद हो गए। गला रूंध गया। सच्चे पातशाह जी ने इनसे पूछा कि वह कितनी छुट्टी लेकर आए हैं? उनके पीछे उनकी पत्नी आ रही थी। वह कहने लगी। छुट्टी देने वाले भी साथ ही आए हैं।

सन् 1989 की एक और चमत्कारी घटना

सूबा सतनाम सिंह की कंपनी को इंग्लैंड जाने से पहले एक ठेका मिला था। उन दिनों व्यापार का काम कम हो गया था। चिंता व्याप्त हो रही थी। उनके पिताजी भी नहीं रहे थे। एक रात को सूबा सतनाम सिंह के भाई को सपना आया। सपने में उनके पिताजी तथा सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के दर्शन हुए। सूबा जी के पिता सच्चे पातशाह जी की सेवा में प्रार्थना कर रहे थे कि वे बच्चों पर कृपा करें। इस पर सच्चे पातशाह जी कहने लगे कि अभी-अभी तो उनके बेटों को चार करोड़ रुपए का ठेका दिलाया है। यह पहली बार ऐसा सपना आया था। यह कहते-कहते सूबा जी का गला रूंध गया। वह प्रेम से गद-गद हो गए। सच्चे पातशाह जी की कृपा की याद आते ही उनके नेत्रों से अनवरत अश्रुपात होने लगा। कुछ समय बाद मन को धैर्य बंधाकर सूबा जी आगे कहने लगे कि उनके भाई का मन तो भर आया पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि ठेका तो केवल चालीस लाख रुपये का ही था। यह ठेका उन्हें इंग्लैंड जाने से पहले मिला था। किसी दूसरी बहुराष्ट्रीय कंपनी को पूरा ठेका मिला था। जो उन्होंने आगे छोटे-छोटे ठेकेदारों को बांट दिया था। छोटे भाई ने उस कंपनी के बड़े अधिकारी को कहा कि वह अपने सतगुरु जी के पावन दर्शनों के लिए इंग्लैंड जा रहे हैं। वहां से लौटकर वह यह काम प्रारंभ करेंगे। वह अधिकारी भी धार्मिक विचारों का व्यक्ति था। वह उनकी इस बात को मान गया। उनका यह ठेका बढ़ता गया। जब यह ठेका समाप्त हुआ और सूबा जी के भाई ने इस ठेके का अंतिम प्रमाण

पत्र बनाया तो चालीस मिलियन अर्थात् चार करोड़ रुपए का था। इस प्रकार सच्चे पातशाह जी ने सपने में उनके भाई को चार करोड़ रुपये के ठेके का जो वचन दिया था वह पूरा हो गया।

इस अकाल पुरुख की महिमा का क्या कोई वर्णन कर सकते हैं। इन्हें तो अपने भक्तों के हर दु:ख-सुख की पूरी सूचना रहती है। वे सब भक्तों के कष्टों को दूर करते रहते हैं। इनके भाई ने उसके बाद अपने सब भाईयों को अपने इस सपने का उल्लेख किया और सुनाया। उसी समय सब भाईयों ने आंखें बंद करके हाथ जोड़कर सच्चे पातशाह जी का ध्यान करके उनका कोटि-कोटि धन्यवाद किया और कहा कि हे सच्चे पातशाह जी आप ही हमारे परम पिता परमेश्वर हैं। आप हम बच्चों पर कृपा बनाए रखें।

इस घटना के कुछ समय बाद सूबा सतनाम सिंह के भाई नरेन्द्र सिंह श्री भैणी साहब आए। और सच्चे पातशाह जी के दर्शन किए। उन्हें प्रार्थना की कि अगला होला 1994 का उन्हें प्रदान करने की कृपा करें। सच्चे पातशाह जी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन पर कृपा कर दी और उनके परिवार को 1994 का होला प्राप्त हुआ। नरेन्द्र सिंह ने जब बहुत से लोगों की ओर से प्रार्थना की कि उनका भी जी चाहता है कि उन्हें भी होला का जिम्मा मिले और वे भी इसे सम्पन्न कराएं तो सच्चे पातशाह जी मुस्कराए। वे कहने लगे कि क्या वे इस विषय पर गंभीरता से बात कर रहे हैं क्योंकि होला मुहल्ला के लंगर पर लाखों रुपये खर्च होते हैं। हजारों की संख्या में साध संगत दर्शन करने आती है। दिन रात लंगर चलता है। देसी घी का प्रयोग होता है। सच्चे पातशाह जी ने कहा कि आप सोच विचार कर लो। नरेन्द्र सिंह ने सब तरफ देखा कि उसे माताजी दिख जाएं पर भीड़ बहुत थी और इस भारी जनसमूह में माताजी कहीं नहीं दिखी। नरेन्द्र सिंह को तब अपने पिता का कथन स्मरण आया कि धर्म के कार्य में लंबा चौड़ा सोच-विचार नहीं करना चाहिए। फिर भाईयों में इतना प्रेम है और सभी धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। कोई भी उनकी बात से इन्कार नहीं करेगा। नरेन्द्र सिंह ने ठाकुर जी से प्रार्थना की और कहा कि उसने पूरी तरह से सोच विचार लिया है; उनके परिवार से होला होना चाहिए। नरेन्द्र सिंह ने तत्काल एक कागज पर इसके लिए प्रार्थना-पत्र लिखकर सच्चे पातशाह जी के चरणों में रख कर माथा टेका और प्रार्थना भी की।

सच्चे पातशाह जी ने प्रार्थना-पत्र पढ़ा, मुस्कराए और फिर प्रार्थना स्वीकार कर ली। परवानगी दे दी। इस पर सूबा जी के परिवार पर सच्चे पातशाह जी की एक बार फिर कृपा दृष्टि हुई। इस प्रकार होला प्राप्त हुआ और फिर नरेन्द्र सिंह

ने टेलीफोन द्वारा नैरोबी में इसकी सूचना भी दे दी। और कह दिया कि उसकी होले की प्रार्थना सच्चे पातशाह जी ने अत्यंत कृपा करते हुए स्वीकार कर ली है। इस पर सब भाईयों ने सतगुरु जी की जय जयकार की। सब में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। जैसे सतगुरु महाराज ने अपार सम्पदा उन्हें प्रदान कर दी हो।

अब इतने पैसे का प्रबंध करने का प्रश्न था। इतने पैसे का प्रबंध कैसे हो गया? यह कृपा भी सच्चे पातशाह जी ने ही की और उस चार करोड़ रुपये के ठेके से इतना लाभ हुआ कि होला आराम से हो गया। सच्चे पातशाह जी के निर्धन से निर्धन भक्त की भी यह इच्छा होती है कि सतगुरु जी उसे होले की जिम्मेवारी प्रदान करें। विशेष कर वे लोग जो नीचे से उठकर सच्चे पातशाह जी की कृपा से धन कमा कर आगे बढ़ते हैं, प्रगति करते हैं और समृद्धि प्राप्त करते हैं।

जो हम भले बुरे सो तेरे

—बीबी पवन जीत कौर

भेंटकर्ता : मैं इस समय बीबी पवन जीत कौर जी के पास में उपस्थित हूं। इनका सौभाग्य है कि इन पर सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज की असीम कृपा रही है। कभी प्रत्यक्ष में और कभी स्वप्न में सतगुरु महाराज ने इन्हें अपने दर्शनों से कृत-कृत्य किया है। मैं इनसे प्रार्थना कर रहा हूं कि सतगुरु महाराज की अपार कृपा के बारे में अपने अनुभव सुनाकर हम सबको कृतार्थ करें।

बीबी पवन जीत कौर जी : गरीब नवाज, दीनबंधु पतित पावन सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी तथा सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी का मैं जितना भी धन्यवाद करूं उतना ही कम है। मेरा रोम-रोम, श्वास-श्वास सतगुरु महाराज के चरणों में सदैव रमा रहे यही मेरी अंतर्रात्मा की पुकार है। हे दीनानाथ, हम भले हैं या बुरे हैं, हम जैसे भी हैं तुम्हारे हैं। जो हम भले बुरे सो तेरे।

हमने हे सतगुरु महाराज आपका आंचल पकड़ा है। उसे हम छोड़ने वाले नहीं हैं। भगवान जब भक्तों के प्रेमपाश में बंध जाते हैं तो उन्हें कोई अलग नहीं कर सकता। सूरदास नेत्रहीन थे। भगवान श्री कृष्ण की उपासना किया करते थे। भगवान अपना हाथ छुड़ाने लगे तो सूरदास बोल उठे।

बांह छुड़ाए जात हो निवल जानिकै मोय।
मन से जो जा पाओगे तो जानूं गो तोय॥

मेरी लाज तो आपके हाथ में है। गोस्वामी तुलसीदास राम के उपासक थे। तो उन्होंने भी भाव विभोर होकर कह दिया—'रघुवर तुमको मोरी लाज।'

सन् 1961 में हम लोग दिल्ली आए थे। सतगुरु महाराज की हम पर अपार कृपा रही। मेरे चार पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। मेरी पुत्रियों के संबंध सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी ने ही कराए। उनके ही आशीर्वाद से मेरी पुत्रियां परम सुखी हैं। मेरे पुत्र भी सज्जन स्वभाव तथा हर प्रकार से योग्य हैं। सतगुरु महाराज की कृपा से उनमें छल-कपट लेश मात्र भी नहीं है।

बीबी पवन जीत कौर आगे सुनाती हैं—हम बंगलौर घूमने गए थे। नांदेड (हजूर साहब) भी गए नानक झीरे के भी दर्शन किए। वहां से जब हम थक कर लौटे तो रात को हैदराबाद में अपनी बड़ी बेटी के घर में रुके। जिस समय हम नानक झीरे से लौटे तो मैं बहुत थक चुकी थी। स्नान किया और फिर आकर

तख्तपोश (दीवान) पर लेट गई। प्रात: 9 बजे का समय था। सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी के समय में संत आला सिंह हमारे परिवार के बहुत माने हुए संत हुए हैं। मैं अचानक सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी और संत आला सिंह जी के दर्शन करने लगी। वे अकस्मात बैठे हुए दिखाई दिए। संत आला सिंह सतगुरु जी से पूछने लगे, "हे सच्चे पातशाह, संत सेवा सिंह जी के पास जो सम्पदा है वह उन्हें कहां से प्राप्त हुई?" सच्चे पातशाह ने कहा कि संत सेवा सिंह जी ने तो कोई तप-भक्ति की नहीं और न ही उन्होंने कोई दान पुण्य ही किया है। अत: यह सारी सम्पदा सतगुरु श्री जगजीत सिंह की कृपा का ही फल है।

इतने में मेरी आंख खुल गई। मैंने यह बात सबको बताई। यह सुनकर सब हैरान हुए। मेरा मन अति प्रसन्न हुआ। लगा जैसे आज सर्वस्व प्राप्त हो गया। वे दया का सागर हैं। वे दोनों हाथों से भर-भर सम्पदा लुटाते हैं। कृपा की दृष्टि करते हैं। उजड़े हुए बाग में बहार ले आते हैं। निराशा को आशा में बदल देते हैं। सारे सपने साकार कर देते हैं। साक्षात प्रकट होकर दर्शन भी देते हैं। हाल चाल भी पूछते हैं और विनोद भी करते हैं। उनमें प्रसन्नता एवं सुख का अपार भंडार भरा है। जो चाहे अपने सच्चे दिल से अरदास करके प्राप्त कर ले।

बीबी पवन जीत कौर सतगुरु महाराज की लीलाओं का बखान करती हुई आगे कहती हैं कि वे एक बार अस्वस्थ हो गईं। उनकी दाईं टांग में हिलाते-डुलाते दर्द होता था। बहुतेरे उपचार किए। बड़ा लड़का स्वयं डाक्टर है। वह उसके घर भी महीना भर रहीं। पर दर्द ठीक नहीं हुआ। पीड़ा से विवश होकर सतगुरु महाराज से प्रार्थना करते हुए बोली—हे सच्चे पातशाह, मेरा कष्ट हरो। मुझे या तो आप स्वस्थ कर दो या फिर मुझे अपने अकाल पुरुष धाम में भेज दो। यह कष्ट अब मुझसे नहीं सहा जाता।

हम लुधियाना गए। वहां मेरी लड़की डाक्टर और दामाद भी डाक्टर है। उन्होंने मेरा बहुत इलाज किया पर आराम न आया। फिर सबने परामर्श दिया कि मैं स्केनिंग करवाऊं। स्केनिंग भी करवाई। पता चला कि एक नस बहुत पतली पड़ गई है। जब यह दूसरी नाड़ी में चली जाती है तो पीड़ा बढ़ जाती है। पीड़ा से दु:खी होकर मैंने समझ लिया कि अब मेरा बचना मुश्किल है। पर साथ ही यह विचार आता था कि मेरा प्राणांत बेटी के घर में न हो। मैं मरने से पहले अपने घर में पहुंचना चाहती हूं। मैं बेटी और दामाद से कहने लगी कि मुझे मेरे घर दिल्ली पहुंचा दो। यहां इन्दिरा काण्ड के बाद हम लोग सोम बिहार में रहने लगे थे। वहां पांचवीं मंजिल पर डाक्टर मूसा रहते थे और तीसरी मंजिल पर हम थे। सतगुरु महाराज बैंकाक गए हुए थे। मैं दर्द से परेशान थी। भक्त और भगवान का

संबंध भी बड़ा अजीब सा होता है। शास्त्रों ने भक्ति के नौ प्रकार बताए हैं। इसे नवधा भक्ति कहते हैं। इसका सख्य भाव है, तो दास्य भाव भी तथा अन्य अलग-अलग भाव भी हैं। जब हम भगवान की भक्ति मित्र भाव से करते हैं तो भगवान को अपना सखा समझते हैं। हम भगवान से प्रेम भी करते हैं, उपालंभ में भी देते हैं। विनोद भी करते हैं और तब भगवान से कोई बात बलपूर्वक भी मनवा सकने की स्थिति में होते हैं। और भगवान सर्व शक्तिमान होते हुए भी हमारा आग्रह मानने पर विवश हो जाते हैं।

बीबी पवन जीत जी सतगुरु महाराज से नाराजगी प्रकट करती हुई कहती हैं, यदि आपने मुझे ठीक नहीं किया तो मैं अपने प्राण श्री भैणी साहब छोड़ दूंगी। इस पर सतगुरु महाराज नाराज होने की बजाए हंस दिए। उन्होंने कहा यदि तुम श्री भैणी साहब से चली जाओगी तो क्या ठीक हो जाओगी?

श्रद्धा का आंचल कितना दृढ़ होता है। मैंने उनके प्रति श्रद्धा का आंचल कस कर पकड़ लिया और फिर कह उठी—सच्चे पातशाह, ठीक तो मुझे आपने ही करना है। मैं बड़ी कठिनाई में हूं और कठिनाई में मूर्ख व्यक्ति विवेक खो बैठता है।

मैं दिल्ली पहुंची। दिल्ली में कुछ दिन बीत गए। सतगुरु बैकांक में थे। वे वहां से लौट आए परंतु मुझे दर्शन नहीं दिए। मैं बहुत रोती बिलखती रही। पता चला वह चले गए हैं। कुछ दिन बाद फिर सतगुरु लौट आए। तब उन्हें पता चला कि मैं बहुत परेशान हूं। आसा दी वार समाप्त होते ही उन्होंने संतों के हाथ एक रुक्का लिखकर दिया कि आप लोग चलो, मैं अभी आता हूं। फिर आपको क्या बताऊं सतगुरु और मेरे बीच जो झगड़ा हुआ वह मैं जानती हूं या मेरे सतगुरु महाराज अथवा वहां जो साधु संगत मौजूद थी। मैंने अपने मन का रोष प्रकट करते हुए कहा कि मैं मर रही हूं और आपको बैंकाक की सैर सूझ रही है? क्या मेरी श्रद्धा भक्ति में कुछ कमी थी? मैं आपकी बड़ी भक्त न सही छोटी सी सेविका तो हूं।

प्रेम की लड़ाई सतगुरु महाराज बड़ी अंतर्मन से सुनते रहे, मुस्कराते रहे और फिर हंसने लगे। मेरी आंखें उनके चरणों में रमी हुई थीं। सच्चे पातशाह मेरे उपालंभ सुनते जा रहे थे। वे उपस्थित लोगों से कहने लगे—''इसे कुछ मत कहो। यह जो कहती है उसे कहने दो।''

उन्हें तो मेरी हालत का पता ही था। मेरे मन में कितनी श्रद्धा थी उस अकाल पुरुष के प्रति, इसे सभी जानते थे। मन की अटपटी वाणी से उदगार निकालती गई। उन्होंने कृपा कर दी। ऊपर से डा. मूसा को बुलवाया। डा. मूसा को बुलाने

का तो एक बहाना मात्र था। कृपा तो वस्तुत: उन्होंने ही की थी। डा. मूसा के कंधे पर हाथ रखकर वे बोले, ''डाक्टर साहब यह मेरी जत्थेदार है। इसे जल्दी ठीक करो। जहां दो मालिशें होती हों वहां चार करो। यह बहुत जल्दी ठीक होनी चाहिए। इसकी मुझे बड़ी चिंता लगी है।'' सच्चे पातशाह अभी वहीं थे कि मैं उठकर बाहर चली गई। पंडित जी कहने लगे सच्चे पातशाह, जत्थेदार तो उठकर बाहर चली गई है। सच्चे पातशाह ने कहा, ''वाह जी वाह, जत्थेदार जी, आप तो चलकर बाहर आ गए हैं।'' मैंने कहा ''मैं यूं ही इतने दिन रोती और कष्ट सहती रही। उसी दिन कृपा कर देते तो तभी ठीक हो जाती। फिर सतगुरु महाराज से मैंने एकांत में प्रार्थना की कि घर के लोग मुझे स्नान नहीं करने देते। कहते हैं कि मैं विस्तर पर पड़ी रहूं। यहीं पर शौच इत्यादि भी करूं। परंतु मैं रात को डेढ़ बजे उठकर स्नान कर लेती थी।'' सतगुरु महाराज ने मेरी बात सुनकर कहा कि तुम स्नान कर लेती हो, बहुत अच्छा करती हो। स्नान कभी नहीं त्यागना चाहिए भले कितना ही कष्ट क्यों न हो? सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी के चरणों में प्रार्थना किया करो। वे ही सब प्रकार के दुखों के हरने वाले हैं। बस इतना कह कर सच्चे पातशाह चले गए।

भेंटकर्ता : बीबी जी! आप अपने बच्चे की आप-बीती सुना रहे थे; कृपया आगे बताएं।

बीबी जी : हरिद्वार में कुम्भ का मेला था। सबने यह सलाह बनाई कि कुम्भ के मेले में जाना है। मेरे बड़े लड़के ने जाने से मना कर दिया। मेरे बेटे को थोड़ा-थोड़ा बुखार था। मैंने कहा कि यदि सिटी नहीं जा सकता तो मैं भी नहीं जाऊंगी। पर मन जाने के लिए बड़ा उत्सुक हो रहा था। सच्चे पातशाह के दर्शन करने थे। कुम्भ का मेला बड़ा भव्य मेला है। इसलिए वहां जरूर जाएंगे। हम लोग बड़े लड़के को नाराज करके हरिद्वार चले गए। वापसी के समय माताजी थीं। कवि जी थे। सच्चे पातशाह ने आदेश दिया कि लड़के बस द्वारा चले जाएं। माताजी, कवि जी, और मेरा लड़का साथ में जोखीराम ड्राइवर था, हम सब कार में आए। रास्ते में माताजी की गोदी में लड़के का सिर और कवि जी की गोदी में लड़के की टांगे थीं। माताजी कहने लगीं—''तू लड़के का ध्यान नहीं रखती। लड़का स्वस्थ नहीं था। अच्छा किया साधु संगत के दर्शन हो गए। सच्चे पातशाह के दर्शन हो गए। मैंने कहा गरीब निवाज़! अब तो लड़के को कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। दोनों माताओं की गोद में लेटा हुआ है। दिल्ली पहुंचे। कुछ दिन बाद काके को पीलिया हो गया। सतगुरु जी की कृपा से ठीक हो गया। सतगुरु जब भी कृपा करते थे, मुझे साढ़े तीन-चार बजे दर्शन देते थे। एक दिन प्रात: दर्शन देकर कहने

लगे—''मैं विशेष कर दो कामों के लिए दिल्ली आया हूं। एक तो तुम्हारे काके को स्वास्थ्य प्रदान करने और दूसरा बीबी इन्दिरा जी (इन्दिरा गांधी) को सफल कराने। मैंने कहा—गरीब नवाज! बीबी इन्दिरा अच्छी हैं।

सच्चे पातशाह ने कृपा की। इन्दिरा जी भी जीत गईं। वे बहुत वोटों से जीती थीं। और सतगुरु की कृपा से मेरा लड़का संतोष सिंह भी अच्छा हो गया। बड़ी कृपा की है उस पर। वह स्वस्थ है। इन्दिरा जी ने भी बहुत दिनों तक राज किया। मुझे खुशी है कि आगे जैसा समय मैंने मांगा वैसा मिला। वे सचमुच परवरदिगार हैं!

मेरे बच्चों को जीवनदान दिया

—संत सुरेंद्र सिंह विर्दी (कनाडा)

संत जी शुरू से ही नामधारी सिख नहीं थे। सन् 1984 में संत जी ने सरदार रेशम सिंह मस्ताना जी से भजन प्राप्त किया और वे नामधारी परिवार में सम्मिलित हो गए। यह अकेले ही अपने पूरे परिवार में नामधारी हैं। इनके बच्चों पर सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज की अपार अनुकंपा हुई है।

इनके पुत्र का जिगर खराब हो गया था। इन्होंने भारत आकर जांच करवाई। डाक्टरों ने बायाप्सी क्रिया द्वारा जिगर का टुकड़ा निकाल कर उसकी जांच की। उन्होंने बताया कि इसका जिगर बदलना पड़ेगा। यह लड़का उस समय 18 वर्ष का था। संत जी इसके लिए बड़े चिंतित हो गए। उन्होंने अपनी पत्नी से विचार किया कि इसके लिए क्यों न सतगुरु महाराज से अरदास की जाए। उन्होंने सूबा रेशम सिंह जी से प्रार्थना की कि वह उनके घर आकर वर्णी कर दें।

सूबा जी ने कृपा की और आकर उनके घर वर्णी कर दी और सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना की। अगले रोज बच्चे को फिर डाक्टर के पास दिखाने के लिए ले गए। डाक्टर ने फिर जांच की। और कहा कि जिगर के कार्य प्रणाली में सुधार होना शुरू हो गया है। सप्ताह भर में यकृत की कार्य प्रणाली सामान्य हो गई। डाक्टर यह चमत्कार देखकर हैरान हो गया। क्योंकि ऐसा कभी होता नहीं। यकृत जैसा अवयव एक बार काम बंद कर दे तो फिर ठीक होना कठिन हो जाता है। लड़के के भीतर पानी की एक बूंद भी न जा पाती थी। संत जी की धारणा है कि वह यह सब सच्चे पातशाह की कृपा का ही फल था।

अब दूसरे लड़के पर भी सच्चे पातशाह की अपार अनुकंपा हुई। जब वह पढ़ने लगता तो आंखों के आगे अंधेरा छा जाता। आंखों से पानी निकलने लगता। डाक्टरों को दिखाया पर कुछ समझ में न आ सका।

कुछ दिनों बाद सच्चे पातशाह सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज का कैनेडा में आगमन हुआ। संत जी ने सतगुरु महाराज से प्रार्थना की। सतगुरु महाराज ने कहा कि चालीस दिन आंखों में पानी के छींटे लगाओ। सतगुरु कृपा करेंगे। उसके बाद दो-चार दिन ही पानी के छींटे आंखों में लगाए थे कि आंखें ठीक हो गईं। कुछ समय बाद दूसरी लड़की को भी यकृत की समस्या हो गई। एक्स-रे में कुछ दिखाई न दिया। इसी प्रकार छः महीने बीत गए। बाद में सच्चे पातशाह वहां पधारे तो उनके चरणों में प्रार्थना की। इस लड़की से सच्चे पातशाह

का बड़ा स्नेह है। यह लड़की भजन पाठ भी खूब करती है। एक रात सच्चे पातशाह ने उसे सपने में दर्शन दिए और कहा कि बेटी पिंकी! तू अभी तक ठीक नहीं हुई। सुबह होने पर लड़की ने दो रोटी खाई। उसे बहुत भूख लगी। संत जी का कहना है कि सच्चे पातशाह की हमारे सारे परिवार पर बड़ी कृपा रही है और इस परिवार में हर प्रकार से सुख मंगल है।

सतगुरु होवें जहां सहाई।
कष्ट क्लेश नहीं देते दिखाई॥

सतगुरु हृदय-हृदय में निवास करते हैं

—सेठ प्यारा सिंह (बैंकाक)

सन् 1970 में सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज ने बैंकाक में दर्शन दिए। वहां पर सेठ प्यारा सिंह जी ने सतगुरु महाराज के चरणों में प्रार्थना की कि होला उनको देने की कृपा करें। सतगुरु जी ने आज्ञा की कि वह दीवान में आएं और फिर प्रार्थना करें। सेठ प्यारा सिंह दीवान में पधारे और फिर होला उसे देने की प्रार्थना की। सतगुरु महाराज मुस्कराए। उनकी कृपा दृष्टि हो गई और अगले वर्ष होला मुहल्ला (सम्मेलन) से तीन मास पूर्व सतगुरु बैंकाक में पधारे और प्यारा सिंह से होला मुहल्ला के स्थान के बारे में पूछा। सेठ जी सच्चे पातशाह के दर्शन करके परम प्रसन्न हुए। उन्होंने होला सम्मेलन के लिए स्थान दिखाया। सेठ प्यारा सिंह का विचार था कि वह कोई नई भूमि खरीदें। उस पर अपना मकान बनवाएं और फिर वहीं पर होला मुहल्ला का आयोजन करें। सतगुरु महाराज तो हृदय-हृदय में निवास करते हैं उनसे भला कौन सी बात छिपी रह सकती थी। वे सेठ प्यारा सिंह का मनोभाव समझ गए। उन्होंने आदेश दिया कि प्यारा सिंह अगले साल का होला करें। इस वर्ष का होला किसी अन्य श्रद्धालु भक्त जन को प्रदान किया जाएगा। सच्चे पातशाह जानते थे कि सेठ प्यारा सिंह को अभी भूमि लेनी है। उस पर मकान का निर्माण कराना है। इसलिए सेठ जी को इस आयोजन के लिए समय की आवश्यकता थी। क्योंकि वे जानते थे कि तीन महीने में होला नहीं हो सकता था। इस प्रकार सच्चे पातशाह ने कृपा की और उन्हें एक बड़े धर्म संकट से उबार लिया।

सेठ प्यारा सिंह बैंकाक में एक प्रातः उठे, सतगुरु जी का ध्यान किया और फिर जमीन देखने के लिए पैदल ही घूमते-घुमाते निकल पड़े। रास्ते में चलते हुए जमीनों के एक दलाल (बिचौलिए) ने उन्हें देख लिया। वह पूछने लगा कि वे क्या देख रहे थे? सेठ जी ने उसे कहा कि उन्हें अपना बंगला बनाने के लिए भूमि की आवश्यकता है। दलाल ने पास की जमीन उन्हें दिखाई और फिर पूछा कि क्या वह जमीन लेने के इच्छुक हैं? सेठ जी ने सच्चे पातशाह का ध्यान करके जमीन देखी। जमीन अच्छी थी। सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हो सकती थीं। जमीन उन्हें पसंद आई। दलाल सेठ जी को उस जमीन की मालकिन एक स्थानीय थाई महिला के पास ले गया। बस अब क्या था, सतगुरु जी की कृपा बरसने लगी। न ही इसमें उस दलाल की कोई चतुराई थी और न ही प्यारा सिंह

की। सब प्रबंध सच्चे पातशाह ने श्री भैणी साहब में बैठे-बैठे संपन्न करवा दिए। जमीन मिल गई। सच्चे पातशाह ने सेठ प्यारा सिंह को वचन दिया था कि इन पंद्रह महीनों के समय में बंगला तैयार होगा। वह उसमें जाकर रहने लगेंगे और वहीं पर होला मुहल्ला का आयोजन किया जाएगा। सतगुरु महाराज का कथन सत्य हुआ। सच्चे पातशाह तो अंतर्रात्मा में निवास करते हैं। उन्हें तो स्मरण करने की देर होती है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है—

यो माम् पश्चात सर्वत्र,
सर्वतर भार्य पश्चात ॥

अर्थात्, उन्हें जो सब स्थानों पर देखता है, भगवान भी अपने भक्तों को सर्वत्र देखते हैं। वे अपने भक्तों की हर इच्छा पूर्ण करने को उद्यत रहते हैं। पर इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है विश्वास और आस्था की। अपने भक्त की श्रद्धा भक्ति पर पसीज कर वे धन्ना भक्त के घर पत्थर से प्रकट हो गए। अपनी भक्त मीरा की रक्षा के लिए वे विष से अमृत बन गए। विषधर नाग से पुष्पमाल में परिवर्तित हो गए।

कुछ समय पश्चात् सेठ जी अपनी पत्नी और बच्चों को जमीन दिखाकर दलाल को साथ लेकर मालकिन के पास पहुंचे। सेठ जी ने जमीन की कीमत के बारे में पूछा कि वह क्या दाम मांगती हैं। दलाल ने सेठ जी को बताया कि वह महिला 2800/- रुपये मीटर के हिसाब से दाम मांगती है। उस समय उस स्थान पर जमीन का भाव 3500/- से 4000/- रुपये का चल रहा था। सेठ जी ने उस महिला से कहा कि वह दाम कुछ कम करे। इस पर सतगुरु जी की उस थाई महिला के मन में प्रेरणा हुई और उसने एक सौ रुपया कम कर दिया। इस पर सेठ जी ने उसे कहा कि वह 2500 रुपये में जमीन का सौदा कर दे। हालांकि सेठ जी जानते थे कि उस इलाके में जमीन का भाव अधिक था। 2600/- रुपये में जमीन का सौदा तय हो गया। सेठ जी ने ब्याना दिया और रसीद ले ली।

उस समय वहां पक्की सड़क नहीं थी। बिजली नहीं थी और पानी का प्रबंध भी नहीं था। वहां पर एक तालाब सा बना हुआ था। सेठ जी ने सोचा कि वह मुश्किल में ही पड़ गए हैं। पर सेठ जी का सतगुरु महाराज पर पूरा विश्वास था। वह जानते थे कि पृथ्वी अपना स्थान बदल सकती है पर सतगुरु का वचन अटल है। उन्होंने सतगुरु का नाम लेकर मकान का निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया। मकान का नक्शा पास हो गया। जैसे ही नक्शा पास हुआ, सड़क बननी शुरू हो गई और बिजली के खंभे लगने शुरू हो गए। और फिर बिजली भी महाराज की

वाद वाणी की भांति जगमगाने लगी। निर्माण कार्य तो सेठ जी ने नक्शा पास होने से पहले ही प्रारंभ कर दिया था। उन्हीं दिनों सरकार ने सड़क को चौड़ा करने का निर्णय लिया और सेठ जी को लिखकर देने को कहा कि सरकार उनकी जमीन के आगे से या पीछे से एक सौ मीटर जमीन काट सकती है। सेठ जी ने वैसा ही लिखकर दे दिया और अपने हस्ताक्षर कर दिए। इस प्रकार समय से पहले ही उनका भवन बनकर तैयार हो गया। 120 व्यक्ति भारत से गए थे। उनके निवास का भली-भांति प्रबंध पूरा हो गया।

सच्चे पातशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी ने मेले से 6 मास पूर्व बैंकाक में दर्शन दिए। उन्होंने वहां वर्णी नामक हवन का आयोजन करवाया। 24 घंटे भजन तथा होम चलता रहा। वहां पानी की बड़ी समस्या थी। सतगुरु महाराज की अपार कृपा से वहां कुआं खोदा गया था। जिसमें से सतगुरु महाराज की मधुर वाणी के समान मधुर जल निकला तथा सदा के लिए समस्या समाप्त हो गई। उस भवन में चार-चार सौ वर्ग मीटर के 16 फ्लैट बनवाए गए। भोजन आदि का प्रबंध सबसे नीचे वाले फ्लैट में किया गया। सच्चे पातशाह ने सेठ जी पर वह अपार कृपा की, और एक महीना वहां पर रहे। फिर वे वहां से आगे अफ्रीका चले गए।

संतों के मन की गहराई को संसार में आज तक कोई नाप नहीं सका। सारा संसार प्रकृति द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलता है पर संत महात्मा प्रकृति को अपने मार्ग पर चलाते हैं क्योंकि वह मार्ग जो सतगुरु दिखाते हैं या अन्य संत महात्मा दिखाते हैं वही शाश्वत मार्ग होता है। सतगुरु वहां पर 15 दिन के पश्चात् फिर बैकांक लौट आए। वे वहां फिर लगभग पौने तीन महीने रहे और अपने अमूल्य उपदेशों द्वारा साध-संगत को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहे। प्रातः सायं नाम स्मरण और प्रवचन चलते। सेठ प्यारा सिंह की सम्पत्ति अब तीस करोड़ रुपये की हो गई है। इनकी पुरानी फर्म मैसर्स भगवान सिंह एंड संस 105 वर्ष पहले स्थापित हुई थी। तथा सतगुरु महाराज की कृपा से अब वे करोड़ों रुपयों के माल का निर्यात करते हैं।

एक घटना सतगुरु महाराज की कृपा की सेठ प्यारा सिंह ने सुनाई। वह कहने लगे कि एक बार सतगुरु जी बैंकाक आए हुए थे। उन्होंने सेठ प्यारा सिंह को कहा कि वे अफ्रीका की यात्रा पर जा रहे हैं। वह भी उनके साथ चलें। सतगुरु जी के सच्चे सेवक किसी भी हालत में अपने सतगुरु महाराज की आज्ञा की अवहेलना थोड़े ही कर सकते हैं। पर साथ ही उन्होंने हाथ जोड़कर सतगुरु जी से यह प्रार्थना की कि उन्हें अल्सर (ब्रण) की समस्या है। इस पर सच्चे

पातशाह ने कहा कि वह दिल्ली आ जाएं और वे उन्हें किसी अच्छे डाक्टर को दिखवाएंगे तथा उनका उपचार करवाएंगे।

सेठ प्यारा सिंह अपने निजी डाक्टर को साथ लेकर दिल्ली आ गए। उन्हें आदेश हुआ कि वह दिल्ली में आयुर्विज्ञान संस्थान में जाकर डा. मदान को दिखाएं। डा. मदान ने सारे एक्सरे तथा रिपोर्टें आदि देखीं। पूरा निरीक्षण-परीक्षण करने के पश्चात डा. मदान ने कहा कि उन्होंने भली प्रकार देख लिया है और उन्हें अल्सर इत्यादि कुछ नहीं है। वे पूर्ण स्वस्थ हैं। इस पर सेठ जी ने पुरानी जांचों के आधार पर कहा कि उन्हें तो अल्सर था और वह कह रहे हैं कि उन्हें कोई अल्सर नहीं है। यह इतना बड़ा अंतर क्यों और कैसे? इतनी देर में बत्ती चली गई और अंधेरा हो गया। डा. मदान ने उन्हें कहा कि वह यह सारे कागज आदि घर जाकर रोशनी में देखेंगे।

अगले दिन सेठ जी फिर डाक्टर के पास गए। डा. मदान कहने लगा कि उनके विचार में ये पुराने एक्सरे आदि सब गलत हैं और या फिर डाक्टर ने जांच की रिपोर्ट गलत लिखी है। डा. मदान ने अपनी रिपोर्ट लिखकर दी और उसमें स्पष्ट कहा कि सेठ प्यारा सिंह जी को कोई अल्सर आदि नहीं है। सेठ जी ने सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना कर दी। सच्चे पातशाह मुस्कराए और फिर आदेश दिया कि अब वह अफ्रीका चलने की तैयारी करें। धन्य-धन्य सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज। किसी प्रकार अपनी परम कृपा से अपने प्यारे भक्त को बीमारी से मुक्ति दिला दी। जिससे अफ्रीका की यात्रा में उन्हें कोई कष्ट एवं असुविधा न हो। डा. मदान के पास भेजने का तो एक बहाना मात्रा था और सेठ जी के मन को धैर्य बंधाना था। ठीक एवम् स्वस्थ तो सेठ सतगुरु सच्चे पातशाह की कृपा से पहले ही हो गए थे। सेठ जी ने सतगुरु जी के साथ डेढ़-दो महीने अफ्रीका तथा इंग्लैंड का भ्रमण करते रहे। और अपना परलोक सुधारा। दिन रात सच्चे पातशाह के दर्शन किए। यह सेठ जी का अहोभाग्य था और पूर्व जन्मों के पुण्य कर्म की उन्हें सतगुरु जी के चरणों में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। गुरु नानक देव जी ने कहा है कि

''हुकम बिना झूले नहीं पाता''

अर्थात् यह सतगुरु सच्चे पातशाह की इच्छा ही थी कि उन्हें स्वास्थ्य लाभ हुआ। धन्य-धन्य श्री सतगुरु जी।

जा को राखे साईयां मार सके न कोय।
बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय॥

सतगुरु जी जिसकी रक्षा करना चाहें उन्हें कोई मार नहीं सकता।

लंदन वापसी

सच्चे पातशाह श्री सतगुरु महाराज अफ्रीका से लंदन पधारे। सेठानी जी साथ थीं। सेठानी जी की भी सतगुरु महाराज में बड़ी श्रद्धा भक्ति थी। वह साथ-साथ रहतीं और साध संगत के लिए लंगर प्रसाद आदि बनातीं और सेवा करतीं। अचानक उनकी एक आंख से रक्त बहने लगा। वहां "आसा की वार" का कार्यक्रम होता था। सेठानी जी भी सेठ जी के साथ आसा की वार सुनने जाती थीं। पर एक दिन वह आसा की वार सुनने न गईं। सच्चे पातशाह भी इस मौके पर वहां जाते थे। और मौन रखते थे। पर इस दिन सच्चे पातशाह ने मौन नहीं रखा। सेठानी जी को आसा की वार में न आए देखकर सच्चे पातशाह ने पूछा कि बीबी प्रकाश कौर आसा की वार सुनने आज क्यों नहीं पधारीं? तो सेठ जी ने उन्हें बताया कि प्रकाश की आंख से खून बह रहा था इसलिए वह नहीं आ पाईं। यह सुनते ही सच्चे पातशाह ने साध संगत को बीबी प्रकाश कौर के लिए दस मिनट भजन कीर्तन करने का आदेश दिया। सच्चे पातशाह तो कृपा कर ही चुके थे।

मूकम करोति वाचालम् पङ्गुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपया तमहं वर्ण परमानंद माधवम्॥

अर्थात सच्चे पातशाह जो पूर्ण परमात्मा का स्वरूप हैं। उनकी कृपा मात्र से गूंगा बोलने लगता है। लूला पहाड़ चढ़ने लगता है। मैं उन्हें वचन करता हूं।

सेठानी जी को डाक्टर को दिखाया गया। डाक्टर का कहना था कि इनकी आंख से खून बहने का कारण यह था कि इनकी आंख की एक नाड़ी फट गई थी। और उसी कारण इनकी एक आंख की ज्योति चली गई है। डाक्टर ने उन्हें सलाह दी कि वह उन्हें दिल्ली ले जाएं और वहीं इनका इलाज होगा। जब सच्चे पातशाह अपने डेरे पर पधारे तो सेठ जी ने उन्हें डाक्टर की जांच रिपोर्ट सुनाई। इस पर सच्चे पातशाह ने कहा कि बीबी प्रकाश कौर को कोई कष्ट नहीं है वह केवल आराम करना चाहती थीं। सेठ जी उन्हें दूसरे दिन सुबह फिर डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने आंख से पट्टी खोली। डाक्टर की हैरानी का कोई ठिकाना न था। उसे अपने पर ही विश्वास नहीं हो रहा था। सेठानी प्रकाश कौर जी की आंख बिल्कुल ठीक थी। उनकी आंख की ज्योति पुनः लौट आई थी। डाक्टर को कुछ समझ नहीं आ रहा था पर सेठ जी को सब कुछ समझ में आ गया। यह सतगुरु महाराज की कृपा का फल था। और कुछ नहीं। सेठ जी और सेठानी फिर साध संगत और परमपिता सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह की सेवा में तन मन धन से जुट गए।

सन् 1993 की एक घटना

सेठ प्यारा सिंह की टांग में भयंकर पीड़ा होने लगी थी। वह रात भर तड़पते रहे। सच्चे पातशाह बैंगलोर और ऊटी पहाड़ पर गए हुए थे। उन्होंने वहां से सेठ जी को टेलीफोन किया और बीबी प्रकाश कौर का हाल पूछा। सेठ जी ने विनम्र प्रार्थना की कि प्रकाश तो ठीक है। पर उसकी अपनी टांग में भयंकर पीड़ा हो रही है। इस पर सतगुरु महाराज ने उन्हें कहा कि उनके भाई सेठ विजेंद्र सिंह के पास इसकी दवाई है वह उनसे दवा लेकर खाएं। या फिर बैंकाक में एक हकीम सत्यनारायण से इसके लिए दवाई ले लें।

सेठ जी ने हांगकांग फोन किया तो हकीम सत्यनारायण वहां पर न मिला। फिर उनके भाई विजेंद्र सिंह ने कहा कि यह उनकी अपनी बनाई हुई दवाई है ले लें। पर सेठ प्यारा सिंह ने वह खाने से इंकार कर दिया। इस बात में आठ-दस दिन बीत गए। पर पीड़ा में आराम न हुआ। सच्चे पातशाह दिल्ली पहुंचे। उन्होंने बैकांक में सेठ प्यारा सिंह को फोन किया और बीबी प्रकाश कौर का हाल पूछा। इस पर सेठ जी ने बताया कि प्रकाश तो आपकी कृपा से ठीक है पर उनकी टांग की पीड़ा अभी नहीं गई। इस पर सतगुरु महाराज ने पूछा कि उन्होंने दवाई खाई है कि नहीं तो सेठ जी ने कह दिया कि वह कोई दवाई नहीं खाएंगे। आप ही कृपा करके उनकी यह पीड़ा हर लें। सच्चे पातशाह दया और कृपा के समुद्र तो हैं ही, *''कौन सी कमी है या रब तेरे खजाने में''*वाली बात है। सतगुरु इच्छा मात्र से सब के कष्ट हर सकते हैं। वह सहज स्वभाव से बोल पड़े '' अच्छा भाई ठीक हो जाओगे। सेठ जी दोपहर का भोजन अपने भाई के साथ बैठकर खाते थे। वह नित्य की भांति दोपहर का भोजन खा रहे थे कि उनके भाई ने पूछ लिया कि क्या वह उनकी दवाई खा रहे हैं। इस पर सेठ जी ने कहा कि उन्होंने दवाई फेंक दी है। सच्चे पातशाह ने उन्हें कहा है कि उन्हें जल्द ही आराम हो जाएगा। इस बात को हुए अभी एक ही दिन बीता था कि उनके दर्द का कहीं नाम-निशान न था। दर्द जा चुका था। सच्चे पातशाह की वाणी से छंदों का चमत्कार था कि पीड़ा समाप्त हो चुकी थी। और सेठ जी स्वास्थ्य लाभ कर चुके थे।

सच्चे पातशाह जी की कृपा से बच्चे का अपना खून बनना शुरू हो गया

—संत लखबीर सिंह (सिरसा)

संत लखबीर सिंह जी का विवाह दिल्ली में हुआ था। उनके बड़े साले की दो लड़कियां तथा एक लड़का है। जबसे लड़का उत्पन्न हुआ उसका अपना खून नहीं बनता था। डाक्टरों का कहना था कि उसके अंदर रक्ताणुओं की कमी थी। यही कारण था कि उसका स्वत: खून नहीं बनता था। प्रारंभ में सर गंगा राम अस्पताल में उसकी जांच हुई थी तथा उसकी रीढ़ की हड्डी का आपरेशन भी हुआ था पर कोई असर नहीं हुआ। स्थिति वही रही। वहां के डाक्टर का कहना था कि उसे दिल्ली दे आयुर्विज्ञान संस्थान में ले जाएं। वहां उसकी अच्छी चिकित्सा की जाएगी। इसके साथ वहां खर्च भी कम होगा।

बच्चे को डाक्टर की सलाह के अनुसार आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती करवाया गया। वहां उसकी हर प्रकार से जांच आदि प्रारंभ हो गई। हर महीने उस लड़के को एक इंजेक्शन लगाना पड़ता था जो बड़ा महंगा था। इंजेक्शन चार पांच वर्ष तक चलता रहा। सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज की संत लखवीर सिंह जी पर बड़ी कृपा थी। वे सिरसा में निरंतर सेवा करते रहे। जब भी संत लखवीर सिंह जी अपने ससुराल दिल्ली आते तो उनके साले की पत्नी उनसे कहती कि वह सतगुरु महाराज के चरणों में प्रार्थना करें कि लड़का अच्छा हो जाए। निर्णय यह हुआ कि जब भी सच्चे पातशाह सिरसा आएं तो उनको वहां बुलवा लें। अब सतगुरु जी की कृपा होनी थी और दु:खों का अंत होना था। सतगुरु जी का सिरसा जाने का कार्यक्रम बना। संत जी ने अपने साले को सूचना भेजी कि वह लड़के को लेकर वहां आ जाए। संत जी के लेखनानुसार उनका साला बच्चे को लेकर वहां पहुंच गया।

वहां पहुंच कर संत लखवीर सिंह ने बच्चे को लेकर सतगुरु जी के चरणों में प्रार्थना की। वह कहने लगे—"हे गरीब नवाज़! इस बच्चे पर कृपा करो और इस बेचारे को रोग से मुक्त कर दो।" उन्होंने सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना की कि इस बच्चे का रक्त नहीं बन रहा। उन्होंने यह भी कहा कि डाक्टरों का कहना है कि वह 20-22 वर्ष तक ऐसे ही रहेगा। अब सब लोग दवाइयों से हार गए हैं। अब आप ही अपनी परम कृपा से बच्चे को रोग मुक्त करें।

सतगुरु सच्चे पातशाह ने बच्चे की ओर अपनी कृपा दृष्टि डाली। उन्होंने कहा कि डाक्टरों की पर्चियां आदि सब कागज लेकर वे श्री भैणी साहब पहुंचें संत जी ने सतगुरु महाराज की आज्ञा सिर आंखों पर ली। माथा टेका और वापिस आ गए। ईश्वर इच्छा की बात है सतगुरु जी के श्री भैणी साहब दर्शनों के लिए वे श्री भैणी साहब न जा सके।

कुछ समय के पश्चात सतगुरु सच्चे पातशाह फिर दिल्ली पधारे। तब संत लखवीर सिंह के साले की पत्नी ने सतगुरु महाराज के चरणों में प्रार्थना की। इस पर सतगुरु कहने लगे कि उन्हें श्री भैणी साहब आने के लिए कहा गया था वे वहां पर क्यों नहीं आए। कुछ दिनों के पश्चात संत जी का साला अपने परिवार के साथ और संत लखवीर सिंह जी को साथ लेकर श्री भैणी साहब गया। वह डाक्टरों की पर्चियां आदि कागज पत्र भी साथ ले गया। क्योंकि श्री भैणी साहब गए बिना सतगुरु की कृपा न होगी। उन्होंने लड़के को लेकर फिर सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना की। सतगुरु अपने सेवक रछपाल सिंह से पूछने लगे—"इनका क्या करना है?" इस पर रछपाल सिंह कहने लगा—"सतगुरु महाराज कृपा तो आपने ही करनी है।" फिर सतगुरु महाराज ने आदेश दिया कि इन्हें रोपड़ में वैद्य सरदार सिंह बर्मा वाले के पास भेजो। इस पर रछपाल सिंह ने उन्हें बताया कि वे रोपड़ में जाएं और हकीम सरदार सिंह बर्मा वाले को दिखाएं। वे डाक्टरी पर्चियां आदि भी साथ ले जाएं।

सतगुरु महाराज का आदेश पाकर संत लखवीर सिंह उनका साला और पत्नी बच्चे को साथ लेकर रोपड़ चले गए। वहां वे वैद्य सरदार सिंह के घर पहुंचे। वैद्य सरदार सिंह पहले बर्मा में रहते थे। वहां उन्होंने चीन की जड़ी बूटियों का ज्ञान प्राप्त किया था। उन्हीं वनौषधियों से दवाई बनाकर वह रोगियों की चिकित्सा करते थे। उन्होंने वैद्य जी को प्रार्थना की कि इस प्रकार सतगुरु महाराज ने उन्हें इस बच्चे की चिकित्सा के लिए उनके पास भेजा है। वे डाक्टरी रिपोर्ट भी साथ लाए हैं। वैद्य जी से बात करके पता चला कि वह भी सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह का परम भक्त है। वैद्य सरदार सिंह की बात सुनकर ये लोग भी हैरान हो गए कि इस बच्चे पर सतगुरु महाराज की कृपा हो चुकी है। यहां भेज कर उन्होंने एक प्रकार का बहाना ही बनाया है। कृपा सतगुरु स्वयं करते हैं। परंतु उसका श्रेय स्वयं न लेकर किसी और को देते हैं। वैद्य जी ने आगे बताया कि इस रोग का इलाज तो लंबा था पर अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही। इस प्रकार ये लोग वहां से वापिस दिल्ली आ गए। संत लखवीर सिंह को अब पूरा विश्वास हो चुका था कि सतगुरु महाराज ने बच्चे पर अपनी अपार कृपा करके

उसे पूर्णतया रोगमुक्त कर दिया है। परंतु उनके साले की पत्नी प्रभु की इस माया को समझ न सकी। वास्तव में प्रभु की माया को समझ पाना हर एक के बस की बात नहीं होती। महाकवि सूरदास जैसे संत पुरुषों ने कहा है—

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल।
काम क्रोध को पहरि चोलना,
निंदा सब्द रसाल॥

अर्थात् हे प्रभु! मैं तो साधारण बुद्धि का जीव हूं। काम क्रोध में लिपटा पड़ा हूं। राग द्वेष मुझे प्रिय हैं। दूसरे की निंदा-चुगली करने में सुख प्राप्त होता है। उस स्थिति में मैं उस परम सच्चिदानंद की माया का पार कैसे पा सकता हूं।

सं. लखवीर सिंह के साले की पत्नी सोचती रही कि वैद्य जी ने उसके बच्चे को कोई दवाई क्यों नहीं दी। अज्ञानी पुरुष उस अकाल पुरुष की माया को नहीं समझ सकता। वह सतगुरु का शरीर हाड़-मांस का बना हुआ तो देखता है पर यह नहीं जान पाता कि उसमें ज्योति वही उस परम पुरुष की है जो गुरु नानक देव में थी। वही सतगुरु सच्चे पातशाह परम परमेश्वर मानव तन धारण करके आए हैं और साध-संगत जन-साधारण का कल्याण कर रहे हैं। या भक्त जनों के दुःख दूर कर रहे हैं। वे एक अवतारी पुरुष हैं। जन मानस को सन्मार्ग गामी बना रहे हैं। श्रीमद्भग्वदगीता में भगवान स्वयं कहते हैं—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतं,
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानम् स्रजाम्यहम।
परित्राणाय साधुणाम विनाशाय च दुष्कृताम
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

अर्थात् जब-जब भी संसार में लोगों का धर्म पर से विश्वास उठ जाता है तो मैं धर्म को पुनः संस्थापित करने के लिए, संत जनों की रक्षा करने के लिए बुराईयों का नाश करने के लिए युग युग में अवतार लेता हूं। कलियुग में कभी वह गुरु नानक के रूप में पधारे और कभी गुरु गोविंद सिंह के रूप में कभी गुरु राम सिंह जी महाराज के रूप में और कभी सच्चे पातशाह, सतगुरु परम परमेश्वर, अकाल ज्योति, दया के समुद्र, जन-जन के हृदय की भाषा पढ़ पाने में समर्थ महाराज श्री जगजीत सिंह जी के रूप में।

अगले महीने दिल्ली के आयुर्विज्ञान संस्थान के डाक्टरों ने फिर टीका लगा दिया। उससे अगले महीने डाक्टरों ने फिर पूरी जांच की। वे सब देखकर हैरान रह गए। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह बालक पूरी तरह से सामान्य और रोगमुक्त हो गया था। उसके अंदर अपना खून बनने लग गया था। इस प्रकार

यह डाक्टरी चिकित्सा के इतिहास का एक चमत्कार ही था। डाक्टर बच्चे के माता-पिता को बधाई देने लगे कि यह जो कुछ हुआ है किसी दैवी शक्ति का चमत्कार है। इतनी सफलता प्रदान कर पाना, किसी मनुष्य के सामर्थ्य से बाहर की बात है। उन्होंने लिख दिया कि बच्चा अब पूरी तरह से रोगमुक्त है। इसे अब इंजेक्शन अथवा टीके की कोई आवश्यकता नहीं। डाक्टरों ने फिर पूछा कि उन्होंने बाहर से किसी दूसरी दवा का सेवन किया था तो माता-पिता ने बताया कि उन्होंने कोई दवा नहीं दी। सब कृपा सच्चे पातशाह श्री सतगुरु महाराज की ही है।

दूसरी घटना

श्री भैणी साहब से माताजी का टेलीफोन द्वारा संदेश मिला जिसमें कहा गया था कि माई रक्खी जो भजन कीर्तन किया करती थी और प्रभुभक्ति में लीन रहती थी बीमार हो गई है। उन्हें पक्षाघात हो गया है। उन दिनों सतगुरु श्री सच्चे पातशाह श्री जीवन नगर की ओर गए हुए थे। माताजी का कहना था कि सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना करें कि माता रक्खी को बहुत कष्ट है इसलिए उन पर कृपा करें। उन्हें आर-पार एक ओर कर दें। उनके कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि माता रक्खी कष्टों से मुक्ति प्राप्त करें। या तो वह स्वास्थ्य लाभ करें या प्रभु उन्हें अपने धाम में स्थान दे दें। क्योंकि माताजी का कष्ट नहीं देखा जाता।

संत लखवीर सिंह जी ने स्कूटर लिया और श्री जीवन नगर के इलाके में पहुंच कर सतगुरु जी के दर्शन किए। उन्होंने सतगुरु जी के चरणों में पूज्या माताजी द्वारा टेलीफोन पर दिया गया संदेश उन्हें विनम्रतापूर्वक सुनाया। सच्चे पातशाह ने संत लखवीर सिंह जी द्वारा दिया गया माता का संदेश सुना और फिर आदेश दिया कि वह (संत लखवीर सिंह) सिरसा पहुंच कर श्री भैणी साहब फोन कर दें और कहें कि माता रक्खी के लिए वर्णी जो एक प्रकार का हवन होता है करवा दिया जाए। संत लखवीर सिंह जी सिरसा पहुंचे और फोन करके माताजी को सतगुरु महाराज का वर्णी करवाने का संदेश सुना दिया। सतगुरु माई रक्खी की देह पर कृपा करेंगे।

अगले दिन वर्णी (हवन) करवा दी गई। बस उसी दिन माई रक्खी के कष्ट सतगुरु जी ने काट दिए। वह भव बंधनों से मुक्त होकर सतगुरु जी के परम धाम को प्रस्थान कर गईं। ऐसा अंत परम संतजनों को ही प्राप्त होता है। जीवन भर सतगुरु जी की पावन भक्ति में लीन रहीं और अंत में शरीर त्याग कर उनके परम

लोक को प्राप्त हुईं। वास्तव में प्रभु भजन कीर्तन ईश्वर प्राप्ति की एक ऐसी सीढ़ी है जिसके द्वारा मनुष्य अति शीघ्र सतगुरु के परमधाम को प्राप्त होता है।

एक स्थान पर भगवान विष्णु को देवर्षि नारद कहने लगे, "प्रभु! आपको आपके भक्तजन निरंतर खोजते रहते हैं परंतु आप मिलते ही नहीं। नारद जी का प्रश्न सुनकर भगवान नारायण मुस्करा कर कहने लगे :

"नाहम वसामि बैकुंठे,
योगिणाम हृदयेऽपि नच।
मम भक्ता: यत्र गायंते,
तत्र स्तिष्ठामि नारद॥"

अर्थात् हे नारद! ये लोग समझते हैं कि मैं अपने बैकुंठ धाम में रहता हूं। पर सच बात तो यह है कि मैं बैकुंठ में नहीं रहता। मैं योगियों, यतियों, मुनियों, तपस्वियों के हृदय में भी नहीं निवास करता जो दिन रात ध्यान लगाकर मेरी भक्ति किया करते हैं। मेरे भक्त जहां बैठकर मेरे भजन गाया करते हैं। मेरा शब्द-कीर्तन किया करते हैं, मैं वहां अवश्य रहता हूं।

इसी प्रकार माई रक्खी जो दिन-रात सतगुरु जी का भजन कीर्तन किया करती थी, भगवान ने उन्हें अपने धाम में स्थान दिया।

तीसरी घटना

सिरसा में एक वृद्ध रहता था जो कैंसर से पीड़ित था और बीमारी में बुरी तरह से तड़प रहा था। वह चाहता था कि उसे मौत आ जाए और इस कष्ट से उसको मुक्ति मिल जाए पर मौत भी उसकी ओर क्रूर दृष्टि नहीं डाल रही थी। जीवन तो उसके भाग्य में रह ही नहीं गया था। उसे सतगुरु की अद्‌भुत शक्ति का पता चला। उसे यह भी पता चला कि सतगुरु श्री जीवन नगर में पधारे हुए हैं। वह किसी प्रकार सच्चे पातशाह के दरबार में पहुंचा और करबद्ध प्रार्थना की कि हे प्रभु उसको कष्टों से मुक्ति दिलाओ।

सतगुरु महाराज दौरे पर जाने वाले थे। उन्होंने पूरवा जी से कहा कि वह नित्य नियम के पश्चात अरदास कर दें। अगले दिन पूरवा जी ने नित्य नियम के बाद अरदास कर दी। बस अरदास करने की देर थी कि वह वृद्ध सांसारिक कष्टों से मुक्त हो गया। वह सतगुरु जी के धाम को प्राप्त हो गया। दूसरे दिन सच्चे पातशाह का फोन आया। वे पूछने लगे कि लखवीर जी उस वृद्ध का क्या बना? लखवीर जी ने उत्तर दिया कि आपकी कृपा से उसके कष्ट कट गए थे। और वह यह नश्वर शरीर त्याग कर आवागमन के चक्र से मुक्त होकर सतगुरु महाराज

श्री प्रताप सिंह के चरणों में चला गया और ज्योति-ज्योति में लीन हो गई। सतगुरु जी ने उत्तर दिया कि परमात्मा की यही इच्छा थी। संत जी का कहना है कि यह इच्छा वास्तव में सच्चे पातशाह की ही थी।

चौथी घटना : वसंत मेला

वसंत का मेला एक बड़ी घटना मानी जाती है। यदि यह मेला सतगुरु जी की हजूरी में हो तो इसकी महिमा बहुत बढ़ जाती है। सिरसा की साध-संगत ने सच्चे पातशाह के चरणों में प्रार्थना की कि आप कृपा करके मेले की परवानगी अपनी हजूरी में दें। सच्चे पातशाह ने हुकम किया कि वह उनकी गाड़ी के चालक गुरमुख से बात करें। सच्चे पातशाह कभी-कभी फैसला अपने सेवक से करा देते, साध-संगत ने सच्चे पातशाह की गाड़ी के चालक से बात की। तब गुरमुख कहने लगा अभी इसका समय नहीं है। समय पर इसकी सूचना दे दी जाएगी। आगे दो तीन बार सच्चे पातशाह का सिरसा में जाना हुआ पर बात करने का अवसर प्राप्त न हो पाया। सिरसा की साध-संगत ने आशा नहीं छोड़ी। उसको विश्वास था कि सतगुरु उन पर कृपा अवश्य करेंगे।

सच्चे पातशाह का थाईलैंड जाने का प्रोग्राम बना। संत लखवीर सिंह जी ने यात्रा का कार्यक्रम देखा। उसमें सिरसा के मेले का नाम था। सब लोग बड़े उत्सुक थे। उनकी अरदास जारी रही। सुबह-सुबह सच्चे पातशाह का फोन आ गया। उन्होंने संत लखवीर सिंह से पूछा कि श्री जीवन नगर की लाईन कैसी है? फिर उन्होंने बताया कि वे 14-15 तारीख को श्री जीवन नगर के दौरे पर जाना चाहते हैं। अवतार सिंह को फोन पर संदेश दिया गया कि वह भारतीय समय के अनुसार 12 बजे बैंकाक में सच्चे पातशाह से फोन पर बात करें। श्री जीवन नगर की टेलीफोन लाईन काम नहीं कर रही थी। लखबीर सिंह जी ने अपना स्कूटर उठाया और सरदार अवतार सिंह के गांव को चले गए। श्री अवतार सिंह जी पर सच्चे पातशाह की अपार कृपा रही थी। श्री जीवन नगर के झगड़ों-तनावों का फैसला सतगुरु जी की ओर से अवतार सिंह जी ही सुनाते हैं। यह फैसला सच्चे पातशाह का फैसला माना जाता है। सतगुरु का कहना है कि किसी नामधारी को अदालत में जाने की आवश्यकता नहीं है, जहां झूठी कस्में लेनी पड़ती हैं। नामधारी परिवारों के झगड़ों का फैसला नामधारी अदालतें ही करेंगी। अनेक संत, सूबे सच्चे पातशाह ने जज नियुक्त किए हैं। लखवीर सिंह जी सरदार अवतार सिंह को सिरसा लेकर आए और सूचना दी कि अब सतगुरु 19 तारीख के स्थान पर 15 तारीख को आ रहे थे। वह सच्चे पातशाह जी को प्रार्थना करें

वसंत का मेला सिरसा की साध-संगत को देने की कृपा करें। इस पर अवतार सिंह जी कहने लगे कि ऐसा प्रतीत होता है कि सतगुरु आप लोगों के लिए ही आ रहे थे। वे कहने लगे कि 17 तारीख का नित्य नियम और 18 तारीख का दीवान इन्हें मिल सकता है। इस संबंध में सच्चे पातशाह को फोन कर दिया गया।

सच्चे पातशाह को साध-संगत की मन की अरदास पहुंच जाती है। वह अंतर्यामी हैं। अपने बच्चों के मन की दशा हर समय इन्हें ज्ञात रहती है। वे चाहते हैं कि वे साध-संगत को प्रसन्नता प्रदान करते रहें। इस प्रकार सच्चे पातशाह सिरसा 17 तारीख को आए और वहां की साध-संगत को अपनी हजूरी में वसंत मेला दिया।

सतगुरु ने मेरी पत्नी को सपने में दर्शन दिए

—संत सेवा सिंह

संत जी का सारा जीवन सतगुरु जी की कृपा से सम्पन्न है। सतगुरु जी की कोई भी कथा ऐसी नहीं है जो भुलाई जा सके। इन पर सच्चे पातशाह की हर प्रकार से पूर्ण छाप है। शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक दृष्टि से भी। यह सतगुरु महाराज की कृपाओं के बारे में अपने-अपने अनुभव सुनाकर हमें धन्य बना रहे हैं।

इनका कहना है कि तीन-चार साल पहले इनकी दाईं नासिका से पानी टपकना प्रारंभ हो गया। अनेक स्थानों पर डाक्टरों से जांच करवाई। चिकित्सा ली, पर कोई लाभ नहीं हुआ। दो मास पर्यंत इनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। इस पर इन्होंने अपनी बेटी से परामर्श किया कि जुकाम नजला अथवा प्रतिश्याम तो नहीं है, मगर फिर भी पानी निरंतर बह रहा है। तब उसने दिल्ली में आयुर्विज्ञान संस्थान के विशेषज्ञों को दिखाया। डाक्टर ने नासिका से आने वाला पानी बोतल में लेकर उसकी जांच की, तो पता चला कि इनके दिमाग में छेद हो गया है। यह पानी वहीं से आ रहा है। उसके लिए आपरेशन करना आवश्यक होगा। नहीं तो संक्रमण (इन्फैक्शन) होने की अशंका थी। वहीं अस्पताल में संत जी का बेटा भी डाक्टर है।

कुछ ही दिनों में सब जांचें संपूर्ण हो गईं तथा आपरेशन की तिथि निश्चित हो गई। इन्हें सच्चे पातशाह पर अगाध श्रद्धा थी। इसलिए ये उनकी आज्ञा के बिना आपरेशन नहीं करवाना चाहते थे, परंतु सबने इन्हें कहीं भी जाने के लिए रोक दिया। आपरेशन के लिए शुक्रवार का दिन निश्चित था। बुधवार को प्रातः बताया गया कि सच्चे पातशाह श्री सतगुरु महाराज उसकी पत्नी से सपने में पूछ रहे थे कि वह उदास क्यों है? उसने बताया कि उनके पति का सिर का इतना बड़ा आपरेशन होने जा रहा है। इसी कारण वह चिन्तित है। तब सतगुरु महाराज जी मुस्करा उठे। उन्होंने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि उठो, संत जी को किसी आपरेशन की आवश्यकता नहीं है।

बुधवार को नाक से आने वाला पानी स्वतः बंद हो गया। जब बृहस्पतिवार को उनकी बेटी उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाने के लिए ले जाने के लिए आई तो संत जी ने उसे बताया कि उनके नाक से पानी आना बंद हो गया है। उसने सोचा कि शायद वे आपरेशन के डर से ऐसा कह रहे हैं। वह 10 दिन तक निरंतर देखती

रही। उसे जब उनका स्वास्थ्य ठीक लगा तो उसने वहां के एक डाक्टर से बात की। डाक्टर कहने लगा कि यदि पानी आना बंद हो गया है तो आपरेशन की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार सच्चे पातशाह ने सपने में आकर अपनी कृपा बरसा दी और संत जी एक गंभीर रोग से मुक्त हो गए।

कुछ वर्ष पूर्व जब संत जी बैंकाक गए थे तो इन्हें एक रोग से बड़ा कष्ट हो गया था। लौटकर जब डाक्टरों को दिखाया तो उनकी टांग का एक्सरे किया गया। पता चला कि उसकी टांग की हड्डी में विरल (क्रेक) है। वहां प्लास्टर तो लगा नहीं सकते थे इसलिए इन्हें पूर्ण आराम करने का परामर्श दिया गया। इन्हें देखने के लिए सच्चे पातशाह भी पधारे। उन्हें ध्यान आया कि सतगुरु महाराज ने पहले भी उनके अनेक बार कष्ट हरे हैं। इस बार भी यह कष्ट वही दूर करेंगे। सतगुरु महाराज संकट मोचन ठहरे। शुद्ध मन से ध्यान करने तथा प्रार्थना करने पर सब प्रकार के कष्टों एवं संकटों से मुक्ति प्रदान करते हैं। उनके दर्शन करने की इच्छा से यह पूछने के लिए टेलीफोन किया कि वे कब पधार रहे हैं? सतगुरु जी की कृपा से टेलीफोन उन्होंने स्वयं ही उठाया। सतगुरु जी ने जब तबियत का हाल पूछा तो संत जी ने सतगुरु जी के दर्शनों की इच्छा प्रकट की। सच्चे पातशाह ने उन्हें शाम के समय बुला भेजा। शाम को जब वह अपनी धर्मपत्नी के साथ वाकर के सहारे वहां पहुंचे तो चलकर उनके पास गए। सतगुरु जी ने उन्हें देखकर कहा कि वे अब तो ठीक लग रहे हैं और भली प्रकार चल सकते हैं। बस सतगुरु महाराज का इतना कहना था कि उन्हें कोई कष्ट नहीं रहा और वह पूर्ण स्वस्थ हो गए।

तब से दो साल बीत गए हैं, उन्हें अब चलने में किसी दूसरे के सहारे की आवश्यकता नहीं है।

27 अप्रैल, सन् 1922 को बैंकाक में उनका जन्म हुआ। थाईलैंड में उनकी माताजी की तबियत बड़ी खराब हो गई। वहां डाक्टर ने कह दिया कि उनका इलाज नहीं हो सकता। और कहा कि इन्हें भारत ले जाओ वहां इनका इलाज संभव है। इस पर वह अपना सारा व्यापार छोड़कर भारत आ गए। सन् 1945 में विश्वयुद्ध शुरू हो गया और वह फिर वापिस नहीं जा सके। सतगुरु जी की अपार कृपा रही है उन पर।

सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी ने सन् 1959 में शरीर त्याग दिया था। उनका संत जी से बहुत प्यार था। संत सेवा सिंह जी पटियाला में रहते थे। पटियाले बीड़ नामे का झगड़ा चल रहा था। महाराज बीर सिंह और सतगुरु सच्चे पातशाह पटियाला हाई कोर्ट में आते थे तो वे उनके पास ठहरते थे। जब सतगुरु

प्रताप सिंह जी ने शरीर का परित्याग किया तो उनका तम्बू आदि बनाने का काम था। उनके भोग पर लगभग 1 लाख लोग आए थे। उनका काम तो छोटे स्तर पर था। तब सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने आज्ञा दी कि टेंटों का प्रबंध करना है। संत जी की सब ओर जान पहचान थी। उन्होंने सारा प्रबंध ठीक कर लिया। नामधारी सिक्खों में संत सेवा सिंह जी सतगुरु जी के काफी करीब थे। उन पर सच्चे पातशाह की बहुत कृपा रही है। उनकी दिल्ली में कृष्णा नगर में दुकान 'नामधारी टैंट हाउस' के नाम से सुचारु रूप से चल रही है। पूरे देश में उनकी ख्याति है। उनके परिवार पर सतगुरु जी की पूरी कृपा रही है। सतगुरु सच्चे पातशाह के लिए सब समान होते हैं। वे किसी से पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं करते परंतु उसकी अंतर्आत्मा साफ शुद्ध और निर्मल होनी चाहिए। उसमें छल कपट का कोई लक्षण नहीं होना चाहिए। ठीक उसी प्रकार जैसे जौहरी शुद्ध रत्न की पहचान करके उसका मूल्यांकन करता है, खोटे अथवा मुलम्मे का नहीं। सतगुरु जी का समीप्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम शुद्ध स्वर्ण बन अथवा निर्मल हृदय लेकर उनके पास जाएं। फिर सतगुरु महाराज की कृपा में कोई कमी नहीं होती। वह बरसती है और निरंतर बरसती है। इतना बरसती है कि उसे बटोरने के लिए धरती आकाश भी छोटे पड़ जाते हैं।

सतगुरु परम महान हैं, सतगुरु परम विशाल।
सतगुरु शोभा धाम हैं, सतगुरु परम कृपाल॥

सतगुरु ने माता को सपने में कहा कि अपना बेटा मुझे दे दो

—संत गुरबचन सिंह

संत जी चीचा मंगला जिला अमृतसर के रहने वाले हैं । ये अब जिला सिरसा में रहते हैं । इनका परिवार नामधारी नहीं था। इनकी माता जी पर सतगुरु जी का थोड़ा प्रभाव था । क्योंकि इनके पीहर में सब सतगुरु जी को मानते थे और उनमें पूरी आस्था तथा श्रद्धा रखते थे।

जब गुरबचन सिंह 18-19 के थे तो उनकी माता जी को सतगुरु प्रताप सिंह जी ने दर्शन दिए थे और कहा था कि यह लड़का तुम्हारे पास नहीं रहेगा। यह बालक मुझे दे दो। जब उन्होंने यह बात उनके पिताजी को बताई तो उन्होंने बात हंसी में टाल दी। उन्होंने उसे सतगुरु के पास भेजने से इंकार कर दिया पर उनका मन सतगुरु के चरणों में जाने के लिए ललक उठा। उनके पास किराए के लिए पैसे नहीं थे। ये अपने मामा जी के साथ अमृतसर से सात दिन में पैदल सिरसा पहुंचे। तब इन्होंने केश भी नहीं रखे थे और यह बड़ी शौकीन तबीयत के थे। ये कुश्ती बगैरह भी लड़ते थे। वहां सतगुरु चौक में मेले में आए थे।

शाम को पंडित गोपाल सिंह जी का दीवान था। गुरबचन सिंह सतगुरु महाराज के दर्शनों के इच्छुक थे। वे सीढ़ियों में ही बैठ गए। जब सतगुरु जी को देख कर उन्होंने माथा टेका तो वे कहने लगे—"बेटा! आ गया। उन्होंने सिर पर बहुत प्यार किया। फिर कहने लगे—मैंने तो पहले ही कह दिया था कि यह बालक मुझे दे दो। सतगुरु पूछने लगे कि दीवान में क्यों नहीं आए? तो उन्होंने बताया कि केश न होने के कारण संकोच हो रहा था। पर उनकी इच्छा संत बनने की थी। इस पर प्यार से सतगुरु जी ने कहा कि वह उन्हीं का बच्चा है और आदेश किया कि वह संत तेजा सिंह से भजन ले ले। उनके पास जाकर सच्चे पातशाह का आदेश सुनाया तो उन्होंने स्नान करके आने को कहा। संत जी ने पूछा कि वह जत्थेदार बनना चाहते हैं या उन जैसा ही संत बनना चाहते हैं? सतगुरु जी की इच्छा भी बताई तो उन्होंने कहा कि संत बन जाएंगे। जब भजन पूछ लिया तो वे भजन करने लगे।

कुछ समय पश्चात् सतगुरु प्रताप सिंह जी ने शरीर छोड़ दिया तो गुरबचन सिंह ने सरदार निरंजन सिंह से कीर्तन सीखा और शब्द आदि पढ़ने लगे। वे

जमीन पर काम करते थे। नहरों से खेतों में पानी लगाना पड़ता था। पानी ऊपर चढ़ता था। पुल पर पानी रोकने के लिए लोहे की मोटी फही हटानी पड़ती थी। एक रात बारह बजे जब वह फही हटाने लगे तो रस्सा किसी के हाथ से छूट गया और वह बीच में गिर गए। एक ओर पानी था और दूसरी ओर लोहे की फही। इतने में सतगुरु जी का ध्यान आया कि उन्होंने उस संकट की घड़ी में उनके सिर पर हाथ रखा था। बस सतगुरु का नाम स्मरण करने की देर थी। वह तुरंत वहां से निकल गए। कोई हानि नहीं पहुंची। वहां से छूटते ही आगे सतगुरु प्रताप सिंह खड़े नजर आए। तब वे शरीर त्याग चुके थे। यह सपने मात्र की घटना नहीं थी। सतगुरु जी ने साक्षात दर्शन दिए और जीवन दान दिया। वरना जीवन और मृत्यु में बहुत कम अंतर रह गया था। जब उन्हें होश आया तो सतगुरु महाराज अदृश्य हो चुके थे। फिर संत सेवा सिंह ने आकर घाव पर पट्टी आदि की। चोट पर बहुत दर्द हो रहा था। प्रातःकाल सतगुरु फिर पधारे और हाल पूछने लगे। वे कहने लगे—वास्तव में तुम्हारी आयु इतनी ही थी। अब आयु बढ़ा दी गई है।

सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने इन्हें अपने पास रखा। वे प्रीतम सिंह को साथ लेकर अपनी जमीनों की बात करने के लिए गए थे। तब सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने अकेले में अंदर बुलाकर उनके गिरने और चोट लगने की बात बता दी। फिर जानवर आदि बेच कर कीर्तन करने की आज्ञा दी। शाम को सब पशु बेच दिए। इनकी पत्नी को पता चला तो वह रोने लगी कि गुजारा कैसे चलेगा! कीर्तन से पेट कैसे भरेगा! जमीन का ठेका देने के लिए जो पैसे थे उनमें से 400/- रुपए कम हो गए थे। वे सतगुरु के पास पैसों के लिए गए। सच्चे पातशाह जब प्रसाद आदि खाकर बाहर निकले तो अकेले ही थे। एक-डेढ़ कि.मी. चलने के बाद पूछने लगे कि क्या बात है? फिर जगजीत नगर मेले में पैसे लेने के लिए भेजा। वहां इन्हें 500/- रुपए मिले। उनमें से 400/- रुपए देकर भी 100/- रुपए बच गए। फिर सतगुरु जी के साथ कीर्तन करने के लिए अनेक स्थानों पर गए। संत निरंजन सिंह जी उनके विद्या गुरु हैं और सतगुरु तो सर्वस्व ही हैं। 15-20 वर्ष पूर्व दमदमे के उत्सव में प्रसाद बनाने की आज्ञा दी। प्रसाद बनाना नहीं आता था। परंतु सतगुरु जी की कृपा से प्रसाद में बहुत मिठास आई। आनंद उत्पन्न हुआ। प्रसाद बनाना एक रसायण समझा जाता है। यह कला योग से उत्पन्न होती है। इसमें मनोयोग की आवश्यकता है। एकाग्रता की आवश्यकता है। मनोयोग और एकाग्रता सतगुरु महाराज की कृपा के बिना लाख यत्न करने पर भी नहीं मिलते। वे बहुत ही सुंदर कीर्तन करते हैं। दरबार में सतगुरु जी की कृपा से भाव-विभोर हो जाते हैं। तब उनके शब्द, छंद, लय-लय से आनंद और भक्ति

एवं श्रद्धा के स्वर फूटने लगते हैं। तन्मयता उत्पन्न हो जाती है। हो भी क्यों न! सतगुरु जी की महिमा का मान जो ठहरा।

प्रभु के कीर्तत में तो स्वयं प्रभु का निवास होता है। एक बार देवर्षी नारद भगवान विष्णु से पूछने लगे कि हे प्रभु! आपके भक्त आपको खोजते रहते हैं परंतु आप उन्हें मिलते नहीं। उन्हें दिखाई नहीं देते आप। इस पर भगवान नारायण मुस्कराकर कहने लगे—

नाहम वसामि बैकुंठे, योगिणाम हृदयेऽपि न च,
मम भक्ता: यत्र गायंते तत्र स्थिष्ठामि नारद।

अर्थात् हे नारद मैं बैकुंठ धाम में भी निवास नहीं करता। मैं योगियों के हृदय में भी नहीं रहता। जहां मेरे भक्त भाव-विभोर होकर मेरा कीर्तन करते हैं, मेरे भजन गाते हैं, मैं वहां निवास करता हूं।

इसलिए कीर्तन महति है। कीर्तन ही सच्चे पातशाह तक पहुंचने का एक मुख्य साधन है, एक सोपान है। इसके अतिरिक्त जो संत जन कीर्तन करते तथा करवाते हैं वे ही भक्तजनों तथा साधु संगत को ईश्वर तक पहुंचाने में सहायता देते हैं। यह एक महान पुण्य का कार्य है।

केशी स्नान कर तेरी टी.बी. दूर हो जाएगी

—संत महिंदर सिंह (बाली नगर, दिल्ली)

संत जी का कथन है कि उनका जीवन तो सतगुरु जी का ही फल है। सतगुरु जी का जीवन तो अलौकिक घटनाओं से भरा पड़ा है। सबसे पहले सन् 1961 में संत जी को डाक्टरों ने यक्षमा (टी.बी.) बतलाई थी। उन्हें स्वयं के बारे में कुछ पता नहीं था। इसी बीच इन्हें एक नामधारी सिख मिले। उन्होंने बताया कि अगर सतगुरु जी एक नजर देख लें अर्थात् उनकी कृपा दृष्टि हो जाए तो कैसा भी रोग हो सब ठीक हो जाएगा। तब यह नामधारी नहीं थे। क़रोल बाग में रहते थे।

एक दिन वह सिख सायं चार बजे उनके पाए आए और कहने लगे कि सतगुरु सच्चे पातशाह पधारे हैं। चलो उनके दर्शन करके पवित्र हो जाएं। तब यह आठवें दिन केश स्नान किया करते थे। यह उसी तरह उनके साथ चले गए। रामगढ़ संत हरबंस सिंह के घर में आसा की वार लगी थी। वहां उन्हें साथ ले गए। भोग का समय आया तो यह हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। सतगुरु जी पधारे, उन्होंने एक नजर देखा और फिर पूछने लगे कि क्या बात है। इन्होंने तब बतलाया कि छाती में कोई तकलीफ है। सच्चे पातशाह ने पूछा था आप केश स्नान करके आए हो या नहीं। तब इन्होंने उत्तर दिया कि केश स्नान आठवें दिन करते हैं। तब सतगुरु महाराज ने उन्हें रोज केश स्नान करने के लिए कहा और साथ में बताया कि उनके रोग की यही एकमात्र महान औषधि एवं उपचार है।

सतगुरु महाराज की बात का उनके मन में ऐसा विश्वास हुआ कि घर आकर सब दवाएं फैंक दीं। घर के लोग बड़े परेशान हुए। वे कहने लगे कि विश्वास वह भले किसी संत महात्मा में रखें पर डाक्टर की दवाएं अवश्य खाते रहें। पर उनकी बातों का इनके मन पर कोई प्रभाव न हुआ। इनके मन में एक बात जम कर बैठ गई कि सतगुरु महाराज झूठ नहीं हो सकता। इनके कमजोर शरीर को देख कर सब लोग कहने लगे कि शायद इन पर किसी जादू टोने का असर है। तब इन्होंने सांत्वना दी कि ऐसी कोई बात नहीं है। वह फिर सच्चे पातशाह से प्रार्थना करेंगे। कुछ समय पश्चात् पहाड़गंज में संत सुच्चा सिंह के घर में सतगुरु महाराज पधारे। वह संत जी के साथ सतगुरु महाराज के दर्शनों को गए। सतगुरु महाराज ने हाल पूछा तो वह कहने लगे कि हाल तो ठीक है। आपकी परम कृपा है। परंतु घर परिवार के लोग बड़ा तंग करते हैं। सतगुरु महाराज ने फिर कहा कि आप केश स्नान किए जाओ यही आपका सफल उपचार है, इसके तीन महीने बाद इन्होंने

डा. हांडा, आर्य समाज रोड, रामाकृष्ण मिशन और जोशी अस्पताल, इन तीनों स्थानों पर जांच करवाई। सभी टैस्ट करवाए। सब जगह डा. ने संतोषजनक बताया और कहा कि यह पूरी तरह से ठीक हैं। इन्हें कोई कष्ट नहीं है, इससे इनकी सतगुरु महाराज पर श्रद्धा बढ़ती गई। सतगुरु जी की अपार कृपा से यह रोगमुक्त हो गए और फिर इन्हें आज तक कोई कष्ट नहीं हुआ।

इस घटना के एक वर्ष बाद इन्हें ध्यान आया कि सतगुरु महाराज ने हम पर अपार कृपा की है इसलिए इन्हें भजन करना चाहिए। यह सोचकर इन्होंने पूरा व्यापार बंद कर दिया। इन दिनों इन्हें काफी चिंता रहती थी कि नया-नया काम शुरु किया है वह चले गए तो काम में परेशानी हो सकती है। पर इन्हें तो संसार से विरक्ति सी हो गई थी। ये संत तेजा सिंह सरसे वाले के पास गए। यह उनसे कहने लगे कि वह कुछ अपना सुधार करने आए हैं। उस समय इन्होंने कमीज और पैंट पहन रखी थी। संत जी कहने लगे कि मन का सुधार करने से पहले तन का सुधार कर लो। फिर इन्हें रात के 8 बजे स्नान करने का आदेश दिया। इसके बाद श्री जीवन नगर और इसके आस-पड़ोस के हल्पकी में घुमाया। जिसने भी उनके बारे में पूछा तो यही कहा कि यह दिल्ली से पधारे हैं। इन्हें साथ (दीक्षा) दी है। सच्चे पातशाह ने 8 दिन वहां रखा और गुरु घर के दर्शन करवाए। उन संत जी पर सतगुरु महाराज की अपार कृपा थी। उन्होंने सच्चे पातशाह से अर्ज की कि वह महिंदर सिंह के घर में चरण डालें। सतगुरु जी इन्हें यही कहते थे कि वह वाणी पढ़ लें अथवा भजन कर लें। वचन न करें। वाणी से थक जाएं तो भजन कर लें। और यदि इससे थक जाएं तो वाणी पढ़ लें। संत जी सतगुरु महाराज की बात बहुत मानते थे। आठ दिन बाद संत जी पूछने लगे कि छमाही हो गई है या नहीं? तब उन्होंने बताया कि एक वर्ष हो गया है। इस पर संत जी कहने लगे—"घर चले जाओ।" गुरू नानक देव जी का मत गृहस्थी छोड़ने के लिए नहीं कहता। तुम्हें घर बैठे ही सब कुछ मिल जाएगा। तुम्हारा जीवन इसी जन्म में सुधर जाएगा। संत जी ने इन्हें ये कुछ वचन पालन करने के लिए कहा—किसी से छल-कपट नहीं करना। सदा सच बोलना। यदि कोई तुम्हारे साथ छल करेगा तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।

इन्हें सतगुरु जी पर बहुत भरोसा हो गया। इनके पास कुछ भी पैसे नहीं थे फिर भी इनके साथ मनोरथी घटनाएं घटनी शुरू होने लगीं। ये करोल बाग वाले अपने मकान में आए। आकर स्नान किया। घर में ये अकेले ही नामधारी सिख थे। प्रातः जब यह स्नान करके घर से निकले तो आर्य समाज रोड बैंक आफ इंडिया के पास पहुंचे। इन्हें एक लाला जी मिले। वे पूछने लगे कि ज्ञानी जी आप

कहां थे? इन्होंने बताया कि इन्हें ऐसी जगह चाहिए जहां पावर लगी हो। उन्होंने बताया कि उनके घर जगह है और लेने के लिए कह दिया। सन् 1961-62 की बात है। जब एक कमरा किराये पर लेने के लिए पगड़ी 10,000/- रुपए थी और उनके पास बिलकुल पैसे नहीं थे। संत जी ने लाला जी को बताया कि जगह तो उन्हें चाहिए पर उनके पास देने के लिए पैसे नहीं हैं। लाला जी ने कमरे की ताली देते हुए कहा कि किराया एक महीने के बाद देना 300/- रुपए। यह राशि इस कमरे का किराया थी। उन्होंने लाला जी से कहा कि न तो चबूतरा है और न ही शाफट है। इस पर लाला जी ने 300/- रुपए देते हुए कहा—"भीतर मेरे कारखाने से उठा लो और शाफट बाजार से ले लो। एक तो किराया भी नहीं दिया और ऊपर से लाला जी ने पैसे भी अपने पास से दे दिए। आजकल के युग में ऐसे कोई नहीं करता। उन्होंने शाफट डाल दी और मोटर कारखाने से ले आए। सच्चे पातशाह की कृपा बरसनी शुरू हो गई। तीसरे दिन जब स्नान आदि करके वहां आए तो एक सज्जन पधारे और पूछने लगे कि आप क्या काम करते हैं? इस पर यह कहने लगे कि काम करने के लिए तो इन्हें चाहिए। वह सज्जन संत जी से पूछने लगे कि उनका एक साझीदार था उससे उनका हिसाब हो गया है या नहीं। वह कहने लगे हिसाब तो नहीं हुआ। कुछ पैसे लेने हैं। उन्होंने उस साझीदार को 880/- रु. देने थे। उन्हें 400/- रु. दिए और कहने लगे कि बाकी रुपयों के बदले में उनके घर से 2 फुट का एक अड्डा ले लो। और वे हिसाब स्वयं कर लेंगे। यह एकदम अनहोनी बात थी।

कुछ दिन बाद एक सरदार जी उन्हें मिले वह पूछने लगे कि कहां रहते हो? इस पर संत जी ने कहा कि रहने के लिए जगह तो ले ली है और काम धंधा कोई करना है। उनकी खारी बाबली में दुकान थी। उन्होंने 500/- रु. देते हुए कहा वह जो भी माल तैयार करें वह केवल उन्हीं का है। संत जी कहने लगे कि वह पूरा नहीं आधा ही माल दे सकते हैं। वह सज्जन फिर भी मान गए। इन 500/- रु. से वह औजार आदि ले आए। संत जी कुछ दिन बाद किसी से मिलने मोरी गेट गए। वहां एक और सज्जन मिले। वह कहने लगे कि इन्हें तीन फुट का खराद बेचना है। कोई खरीदने वाला हो तो बताएं। इस पर संत जी कहने लगे कि खराद तो वह स्वयं लेना चाहते हैं पर उनके पास इसके लिए पैसे नहीं हैं। यह सुनकर वह सज्जन कहने लगे कि पैसों की कोई बात नहीं। पैसे बाद में दे दें। वह खराद ले जाएं। यह सब तो सतगुरु महाराज की कृपा का फल था। सब काम अपने आप ही बनते जा रहे थे।

संत जी ने काम का श्रीगणेश कर दिया। इनका पहले जो साझीदार था जब

उसे इनके काम करने का पता चला तो उसने भाव घटा कर 30/- रु. कर दिया पर संत जी ने अपना भाव 37/- रु. ही रखा। बाकी लोग 2 महीने का उधार देते थे और उनका भाव कम था। लोग संत जी को अधिक भाव देकर नकद दाम देकर भी उनसे हाथों-हाथ माल ले जाते थे। यह सब सतगुरु महाराज की ही कृपा थी जो इतनी अनोखी घटनाएं हो रही थीं। संत जी भजन भी सारा दिन करते रहते थे और काम भी। लोग अपने आप पैसे दे जाते थे। महीने बाद संत जी आए और पूछने लगे अच्छे भले सब छोड़-छाड़ कर सतगुरु महाराज के पास चले गए थे, आपने यह संसार में फंसा दिया। आए गए की सेवा करने के लिए पास पैसे भी नहीं होते। अगर खुले पैसे पास में हों तभी कुछ सेवा कर सकते हैं। संत जी कहने लगे—"तुम्हें पैसे अधिक चाहिए तो उसका भी तरीका बताता हूं। वह यह कि रोज शाम को जितने पैसे बचें साधु-संतों में बांट देना। तुम्हारे पास धन-दौलत की कोई कमी नहीं रहेगी।"

उन्होंने वैसे ही करना शुरू किया। शाम होते-होते बचे हुए पैसों के फल आदि लेते और साधु संतों में बांट देते। इस प्रकार उनका काम धीरे-धीरे बढ़ता गया। जहां एक मशीन थी वहां इनके पास 6 मशीनें हो गईं। लोग नकद भुगतान करके माल ले जाते थे। कुछ समय पश्चात संत तेजा सिंह आए। वे लोगों के घर दीवान लगाते थे। संत महिंदर सिंह उनमें भाग लेते वहीं रात को 12 बज जाते। फिर सुबह लंगर में लग जाते। एक-दो दिन बाद संत तेजा सिंह जी ने पूछा कि काम पर नहीं जाना क्या? तो कहने लगे—"काम पर कैसे जाएं? रात को यहीं 12 बज जाते हैं और सुबह लंगर आदि में व्यस्त हो जाता हूं।" संत जी ने वचन किया कि कोई बात नहीं काम तो सतगुरु महाराज की कृपा से चल रहा है। सतगुरु महाराज की अपार कृपा से काम ठीक चल रहा था। कारीगर अपने आप आकर काम शुरू कर देते थे और लोग स्वयं पैसे देकर माल ले जाते थे।

इनके तीन लड़कियां और तीन लड़के हैं। दो लड़कियों और दो लड़कों की अच्छे घरों में शादियां हो गई हैं। ये एक बार 26 जनवरी को संत तेजा सिंह जी के पास गए। वहां उन्हें बुखार था। उन्होंने इन्हें दिल्ली चलने के लिए कहा ताकि किसी अच्छे डा. को दिखाया जा सके। यह वहां से संत जी के साथ हिसार आए और सरदार दिलीप सिंह के पास 4 दिन रहे। फिर उन्हें संत जी ने दिल्ली जाने का आदेश दिया। उसके बाद उन्हें कुछ वचन इस प्रकार कहे:

एक तो सतगुरु जगजीत सिंह जी अकाल पुरुष हैं। इन्हें सांसारिक जीव मत समझें। दूसरे सच्चे पातशाह का जो आदेश है उसे कभी टालना नहीं। इन्होंने जरा-सी लापरवाही की और एक घटना घट गई। एक बार सच्चे पातशाह थाईलैण्ड

आए तो महिंदर सिंह जी ने इन्हें घर चलने को कहा। इस पर उन्होंने उन्हें पहले हंसपाल जी की कोठी चलने का आदेश दिया। वहां जाकर कहने लगे कि तुम घर चलो, हम स्नान करके और प्रसाद खाकर आते हैं। ये संत बलवंत जी के साथ चल पड़े। इन्हें उनका होने वाला दामाद मिल गया। उसे भी साथ ले लिया। रास्ते में पांच मिनट के लिए लड्डू लेने के लिए रुके। इसके बाद जब घर पहुंचे तो पता चला कि सच्चे पातशाह घर आकर भी लौट गए हैं। ये बड़े हैरान हुए कि इन्हें तो केवल रास्ते में पांच मिनट का समय ही लगा और सतगुरु महाराज स्नान करके, प्रसाद खाकर, घर से चक्कर लगाकर भी चले गए! सतगुरु महाराज अंतर्यामी हैं। संत जी एक बार श्री भैणी साहब गए। तब वर्षा हो रही थी। ये मन में सोचने लगे कि आज तो सतगुरु जी के दर्शन कठिन हैं पर जब यह वहां रात के 8 बजे पहुंचे तो देखा कि सतगुरु महाराज हाथ में छाता लिए बाहर ही खड़े हैं। यह देखकर यह अत्यंत आनंदित हुए। गद् गद् हो गए। भक्त के स्वागत के लिए भगवान खड़े थे।

गोस्वामी विंदु जी ने ठीक ही कहा है—

''प्रबल प्रेम के पाले पड़कर।
प्रभु को नियम बदलते देखा॥
अपना मान टले टल जाए।
जन का मान न टलते देखा॥''

सच्चे पातशाह ने उनकी अंतात्मा की भावना जान ली और स्वयं उन्हें मिलने अथवा दर्शन देने के लिए पधार गए।

सतगुरु ने उन्हें पंथ रत्न की उपाधि दी

—मास्टर निहाल सिंह

मास्टर जी पर सतगुरु सच्चे पातशाह की अति कृपा रही है। एक बार उन्हें विषैले सांप ने डस लिया था। परंतु सतगुरु जी की कृपा से वे स्वस्थ हो गए। सारा विष जाता रहा। वे अपने जीवन के अनुभव सुना रहे हैं।

मास्टर जी का कथन है कि वह सच्चे पातशाह सतगुरु जी की कृपा से ही चल फिर रहे हैं। सन् 1945 में वह श्री भैणी साहब गए थे। फिर देश विभाजन के बाद श्री जीवन नगर में ''सतयुग'' नाम के पत्र का संपादन करने लगे। फिर श्री गुरु हरि सिंह महाविद्यालय प्रारंभ हुआ। उसके ये मुख्याध्यापक बन गए। बहुत दिनों के पश्चात् दलजीत कौर जी ने मास्टर जी को छुट्टी लेकर घर जाने के लिए कहा। पर मास्टर जी ने यही कहा कि सतगुरु महाराज जब आज्ञा देंगे वे तभी जा पाएंगे। तब वे छुट्टी मिलने पर अपने परिवार के पास दिल्ली आए। वहां संत सेवा सिंह जी के पास एक ज्योतिषी आया हुआ था। मास्टर जी का ज्योतिष विद्या में अधिक विश्वास नहीं था पर वह श्रीमती जी के साथ विवेकानंद आश्रम में पंडित जी के पास गए। श्रीमती जी ने पूछा कि मास्टर जी को छुट्टी कब मिलेगी तो पंडित जी ने हिसाब लगाकर पूछा कि वह नौकरी कहां करते हैं। जब उन्हें यह बताया गया कि वह श्री जीवन नगर में सतगुरु श्री जगजीत सिंह के पास हैं तो पंडित जी ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा कि सतगुरु तो महान पुरुष हैं, उनकी लीला बेअंत है। आप तो बड़ी भाग्यवान हैं जो उनकी सेवा में हैं। आप सदा उनकी आज्ञा से ही छुट्टी लेकर आना। उनकी दो कन्याएं और दो बालक हैं। सब बड़े सुखी हैं।

सन् 1985 में दिल्ली में होला हुआ तो सच्चे पातशाह ने उन्हें पंथ रत्न की उपाधि प्रदान की। सन् 1993 में नई दिल्ली में विश्व पंजाबी सम्मेलन हुआ जहां सेवा के बदले ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें पुरस्कार दिया। सतगुरु जी ने सतयुग का प्रधान संपादक इन्हें ही बनाए रखा। उन पर सच्चे पातशाह की सदा कृपा बनी रही। सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी की महिमा का वर्णन शब्दों द्वारा नहीं किया जा सकता।

सन् 1969 से मास्टर जी गुरु हरि सिंह महाविद्यालय के मुख्याध्यापक रहे। उन्हीं दिनों सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी चढ़ाई कर गए और सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी गद्दी पर विराजमान हुए। एक रात मास्टर जी को इतनी भयानक

के लिए कहा। सतगुरु जी ने उसे स्नान कराने के लिए कहा। पर कोई भी उसे हाथ लगाने के लिए तैयार न हुआ माता जी ने उसकी सेवा की। उसे स्नान करवाया। उसके कपड़े बदले। चार-पांच दिन में उसे मुक्ति मिल गई। तब उसका अंतिम संस्कार किया गया। जिसे कोई स्पर्श करने के लिए भी तैयार नहीं था उसे भी सतगुरु ने शरण दी और उसका जीवन उद्धार किया।

एक बार एक बुजुर्ग ने सतगुरु जी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। जब सतगुरु संत मनजिंदर सिंह के घर आए तो उन्हें प्रार्थना की गई कि एक वृद्ध आप के दर्शन करना चाहता है। सतगुरु जी ने कहा कि स्कूटर पर जा कर उस आदमी को घर से बाहर आने के लिए कहो। वैसा ही किया गया। जब उस वृद्ध ने आकर सतगुरु जी को माथा टेका तो उस घर की महिलाओं को पता नहीं चल रहा था कि सतगुरु कौन से हैं। उन्होंने सोचा था कि कोई अच्छी सेहत वाले संत होंगे। सतगुरु तो बड़े ही दुबले शरीर के थे। सतगुरु ने जब उस बुजुर्ग का हाल पूछा तो उसने अपना मधुमेह रोग ठीक करने के लिए प्रार्थना की। उसे 40 वर्षों से मधुमेह का रोग था। सतगुरु जी ने उसे शराब छोड़ने के लिए कहा। सतगुरु जी ने उसे शराब के दोष बताए और कहा कि शराब पीने से बुद्धिनाश होता है। उन्होंने इसके अनेक प्रमाण भी दिए। उसने सतगुरु जी से दवाई ले ली। तीसरे दिन उसका रोग (शुगर) ठीक हो गया। फिर उसने आंखें ठीक करने की प्रार्थना की। सतगुरु जी ने उसे रात को आंखों में सूरज मुखी का तेल डालने को कहा तथा समुद्र के पानी से आंखें धोने के लिए कहा। वह तेल रोज डालता रहा। कुछ समय बाद उसकी आंखें ठीक हो गईं और स्वास्थ्य भी अच्छा हो गया।

उसके बाद एक बार संत जी दिल्ली से वापिस जा रहे थे तो उस वृद्ध ने बताया कि उन्हें गुरु गोबिंद सिंह जी ने दर्शन दिए थे तथा सतगुरु उन्हीं का रूप हैं। उनके रूप में साक्षात गुरु गोबिंद सिंह जी के दर्शन प्राप्त होते हैं, उसके कुछ दिन बाद वह वृद्ध स्वर्ग सिधार गया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उसे सतगुरु जगजीत सिंह के रूप में दर्शन दिए थे।

सच्चे पातशाह संत बलकार सिंह जी की बात मानते थे। एक बार सच्चे पातशाह ने कहा कि वह अनार खा लें। उसने बताया कि अनार नहीं लगे केवल फूल ही हैं। संत जी ने उसे कान में कहा कि यदि तुम सतगुरु को सतवचन कह देते तो तुम्हें अनार ही मिल जाते। जैसे गुरुनानक ने बाला से कहा था कि झाड़ से मिठाई खा ले और उसे मिठाई मिल गई थी। इस प्रकार के वचनों को विश्वास के साथ मान लेना चाहिए।

सतगुरु जी के पास एक नेरीडस कार होती थी। संत जी उस समय 17 साल

के थे। प्रीतम सिंह नाम का चालक था। सतगुरु जी का चालक गुरमुख सिंह मुंबई से नई कार ला रहा था। सतगुरु जी ने श्री भैणी साहब से दिल्ली जाना था। दिल्ली जाने के लिए प्रीतम सिंह ने कार स्टार्ट की पर कोई आवाज आने लगी। आवाज आने पर उसने गाड़ी बंद कर दी। सच्चे पातशाह के कार में बैठने पर उसने फिर कार स्टार्ट की पर वही कड़-कड़ की सी आवाज फिर आई। जब उसने सच्चे पातशाह को बताया कि मोहिनी आई तो प्राती रूठ गई। उन दिनों उनके पास एक जीप भी थी। बड़ी कठिनाई से धक्का आदि लगा कर स्टार्ट की। आठ दस लोग उसमें सवार होकर दिल्ली जा रहे थे। पर अंबाले में नई कार मिल गई। फिर उसमें सब दिल्ली गए फिर वह कार भी ठीक करवा ली और वह ठीक चलने लगी।

गुरुमहाराज सर्व सिद्धियों के समुद्र हैं। सभी शक्तियों के स्वामी हैं। समस्त विधाओं के गुरु हैं। ये चमत्कार हम लोगों के लिए महान विस्मय की बात है। पर सच्चे पातशाह के लिए ठीक इसे ही जैसे कोई नदी से शीतल जल की बूंद मांगे और नदी कह दे कि जितनी तुम्हारी सामर्थ्य है भर कर ले आओ। वे पूर्ण पर ब्रह्म हैं। विस्मय की बात तो यह है कि समस्त शक्तियों के इतने विशाल भंडार होते हुए भी वह कभी नहीं कहते यह उन्होंने किया है।

सतगुरु को अर्ज की सारे बेटे मर गए हैं, आप कृपा करो

—संत सुच्चा सिंह

संत जी सतगुरु प्रताप सिंह जी का बार-बार धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस पृथ्वी पर नामधारी पंथ को चलाया; इस की स्थापना की। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने इन लोगों को मिर्जापुर गांव दिया। जब ये लोग यहां आए तो इनके पूर्वज फिरोजपुर के पास बांगले तहसील में थे। वहां सतगुरु जी ने लिखित आदेश दिया कि जो उनका सिंह है वह वहां न रहकर सिरसा के पास श्री जीवन नगर में जाकर रहे। कुछ नामधारियों ने प्रार्थना की कि सतगुरु यदि आज्ञा करें तो नामधारी सिख चले जाएं। उन्होंने प्रसन्न हो कर इजाजत दे दी। ये सब लीडर चले गए। सुबह उठकर उन्होंने देखा कि वहां फसल तैयार खड़ी है और सामान साधन भी पड़ा है। फिर उन्होंने वहां गुड़ बनाया। सबने सोचा कि पहले सतगुरु जी के पास ले जाना चाहिए। ये बैलगाड़ी में 30-40 मन गुड़ भरकर सतगुरु महाराज के पास गए। वहां जब उन्होंने माथा टेका तो सतगुरु पूछने लगे कि वे क्या लाए हैं। तब उन्होंने बताया कि वे सतगुरु महाराज को भेंट करने की इच्छा से गुड़ लाए हैं। वह गुड़ सारी साधु संगत में बांटा गया। सतगुरु महाराज बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि बाबा जी जो थे उनके दादा -परदादा लगते थे। वे कहने लगे कि आप लोग बड़े अच्छे स्थान पर बैठे हो।

संत जी पर सतगुरु महाराज जगजीत सिंह जी की भी अपार कृपा रही है। संत नगर में संत त्रिलोक सिंह नाम का एक डाक्टर था। सतगुरु जगजीत सिंह जी के आर्शीवाद से उस के घर बेटा हुआ था। पर वह बहुत बीमार हो गया। और वह इस संसार को छोड़कर चला गया। इधर संत जी का बेटा चला गया। उधर एक सिंह सतगुरु जी की चिट्ठी लेकर चला गया जिसमें लिखा था कि पांच-सात लोग एक महीने भर के लिए वर्षा (हवन) के लिए आ जाओ। सबने कहा कि संदेश भेज दो कि अमीर घर में बच्चा चला गया है इसलिए सतगुरु जी से कहा कि वे किसी दूसरे गांव की बारी लगा दें पर संत जी नहीं माने। वह कहने लगे कि अब भजन की बारी मिली है जो समय पड़ने पर ही मिलती है। इसलिए कल सुबह चले जाएंगे। उन्होंने अपनी पत्नी से भी कहा कि अगर उसका मन न लगे तो वह भी भोग के उपरांत आ जाए। वर्णियों में भगवती की माला और भजन होता है। पांच सिख भगवती की माला का जाप करते हैं। हर दो घंटे के पश्चात

सिंह बदलते रहते हैं। जब संत जी पहुंचे तो सतगुरु बाहर जा रहे थे। सतगुरु जी को जब संत जी की पत्नी ने माथा टेका तो वह रो पड़ी। उन्होंने रोने का कारण पूछा तो बताया कि एक बच्चा पहले जा चुका था और एक अब चला गया है। इसलिए मन बड़ा उदास है। सतगुरु जी ने भजन और भगवती की 2-1/2 माला करने का आदेश दिया। सुच्चा सिंह को आदेश दिया कि वह सिंह ले जाकर वहां भोग पड़ने के बाद वर्णी करवाएं। एक महीने के बाद यह साध संगत ले गए और अपने घर जाकर वर्णी की। सतगुरु जी ने वचन किया कि अब बच्चा होगा और उसके जन्म लेते ही उन्हें सूचना अवश्य दें। अगला बच्चा कार्तिक की पूर्णिमा की रात को हुआ। संत जी उसी समय बताने के लिए श्री जीवन नगर चले गए। सुबह संत जी पहुंचे तो सच्चे पातशाह उसी समय बाहर से आ पहुंचे। वे उसी समय उन्हें साथ लेकर बच्चे के पास गए। वहां जाकर चरण स्पर्श किया। अरदास की और आदेश दिया कि बच्चे को यहां से तो ले जाओ फिर पुल के पास जो इनकी जमीन थी वहीं सतगुरु जी गए और कहने लगे कि यहां मकान बनाओ और बच्चे को यहां ले आओ। सच्चे पातशाह ने वचन किया कि जहां तुमने मकान बनाया है वहां तो गांव बन जाएगा। खूब रौनक तथा चहल पहल हो जाएगी। संत जी बच्चे को उसी मकान में ले आए। परिवार के काफी लोग गांव में रहते थे। कुछ समय के पश्चात वह स्थान काफी बस गया; आबाद हो गया।

कुछ वर्ष के पश्चात बच्चा काफी बीमार हो गया। डॉ. त्रिलोक सिंह की दवा दी पर कोई लाभ नहीं हुआ। तीन दिन बाद सच्चे पातशाह वहां आ गए। बच्चे के माता-पिता ने बच्चे को उनके आगे लिटा दिया। सतगुरु ने कहा कि डॉ. त्रिलोक सिंह की दवाई दो। बच्चा ठीक हो जाएगा। सतगुरु की अपार कृपा से बच्चा जवान हो गया।

एक बार सच्चे पातशाह साध संगत के साथ साहजहांनपुर गए। वहां बड़ा भारी मेला लगा। वहां एक वृद्ध बाबा जी तथा माता जी थे। सतगुरु जी ने बताया कि ये भाई और बाबा गुरु अमरदास के कुल से संबंध रखते हैं। जब सच्चे पातशाह वहां से चलने लगे तो दोनों ने उन्हें गुरुनानक देव का रूप, भगवान कृष्ण का रूप और राम का अवतार बताया और उनसे विनती की कभी-कभी उन्हें दर्शन अवश्य दिया करें। सच्चे पातशाह ने कहा कि वे अब वहां आया करेंगे।

एक बार संत धर्म सिंह वहां से धन इकट्ठा करके आ रहे थे तो इन्हें ठगों ने घेर लिया। इतने में उसने सतगुरु का नाम समरण किया। इससे वे लुटेरे वहां से भाग गए। सतगुरु जी ने वह स्थान देखा जहां लुटेरों ने संत धर्म सिंह को घेरा था। फिर वचन किया कि यहाँ लुटेरे नहीं रहेंगे।

एक बार नदियों में पानी अधिक था। एक नदी में कम था। वहां से दिल्ली आने के लिए कुल मिलाकर 6-7 कारें तथा जीपें थी। सतगुरु ने हुकम दिया कि कोई भी जीप या कार पानी में न ले जाएं। वे स्वयं कारें और जीप पानी से निकालेंगे। सतगुरु जैसे-जैसे कारें आगे ले जा रहे थे वैसे-वैसे ही पानी हटता जा रहा था। कारें सूखी वहां से निकल गईं। एक कार वाले अभी पीछे थे। उनमें से एक ने सोचा कि जितनी बड़ी सतगुरु की कार है उतनी ही बड़ी हमारी है। हम खुद ही कार पानी में से निकाल कर ले जाते हैं। पर पानी में पहुंचते ही कार बंद हो गई। तब सतगुरु साध संगत से नाराज होने लगे। कि उनकी आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया गया।

संत समागम हरि कथा एक पंथ दो काज

—महेंद्र सिंह

इनकी साखियां सबसे निराली हैं। सतगुरु जी के उपकार लिखे नहीं जा सकते चमत्कार तो इसी जन्म तक साथ देते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे प्राप्त किया हुआ ज्ञान इसी जन्म तक साथ देता हैं। कहा गया है:

जो सुल्तान! कहा हौ मियां
तेरी कौन बड़ाई।

सतगुरु राजाओं के राजा हैं; सम्राटों के सम्राट हैं। संत जी उन्हें मियां कहकर संबोधन करते हैं। वे अपनी बीती सुना रहे हैं।

सन् 1972-73 की बात है। गांव खुर्द कला में जब संत गुरचरण सिंह जी के पिता का देहावसान हुआ तो चारों भाई इस अवसर पर आए थे। क्योंकि उनकी रिश्तेदारी थी। वहां सतगुरु जगजीत सिंह जी भी पधारे हुए थे। तब संत ज्ञान सिंह जी का दीवान लगा हुआ था। इनका कीर्तन बहुत ही मोहक होता था। वहां दीवान में कीर्तन सुनकर इनका मन भावुक हो गया। इन्होंने अरदास की कि कोई ऐसा साधु भेजो जो घर बैठे ही अंदर ज्ञानोपार्जन कर दे। अंतरात्मा को आलोकित कर दे। लोक परलोक सुधर जाएं। क्योंकि घर में उनके बच्चे छोटे होने के कारण दूर नहीं जा सकते थे। जब सत्संग समाप्त हुआ तो सतगुरु जी श्री जीवन नगर चले गए। चारों भाई रात को वहीं रहे। फिर उसके बाद उन्हें श्री गंगा नगर जाना था। इलाहानाबाद से संत जी को गाड़ी बदलनी थी। वहां उन्हें वह साधु मिल गया जिसके लिए उन्होंने अरदास की थी। वे संत ज्ञान सिंह जी थे जो उनके साथ गए। वे हर समय उनके साथ ही रहते थे तथा भजन पूजा आदि करते रहते। जिस साधु की उन्होंने इच्छा की थी सतगुरु जी ने इन्हें उससे मिलवा दिया था। पर उन्हें यह बात समझ में नहीं आई कि संत जी रात के 12 बजे से 2 बजे तक विश्राम करते थे। कुछ दिन बीतने पर संत ज्ञान सिंह जी ने कहा कि अब आप दोनों आराम से भजन कर सकते हैं। तब उन्हें ध्यान आया कि यह तो सच्चे पातशाह ने उन पर कृपा की है। पहले महिंदर सिंह जी ने बाग में कुटिया बनाने की सोची फिर मोघे बनाने का विचार किया परंतु वहां भी पानी सदा नहीं रहता था। फिर उन्होंने घर के पास ही कुटिया बनाने का विचार किया। संत जी के आदेशानुसार कच्ची कुटिया बनाई गई। संत जी गुरुद्वारे में संक्रांति के दिन उपदेश देते थे तथा बढ़ावा गरीबों में बांट देते थे। वे सदा यही उपदेश देते थे कि पवित्र मन ही भजन बंदगी

में सफल होता है। वे महिलाओं को भी यही उपदेश देते थे कि पवित्र होकर भोजन बनाना चाहिए। ऐसे भोजन का खाने वाले पर अच्छा प्रभाव होता है। ऐसा शुद्ध भोजन खाने वाले का मन भी शुद्ध रहेगा। वे सबको धार्मिक कृत्य, संध्या वंदन आदि करने का उपदेश देते।

इनसे प्रभावित होकर सभी भाईयों के घरों में नित्य नियम होने लगा। सबके घरों में सतयुग सा वातावरण बन गया।

कुछ समय बाद संत जी ने उपदेश दिया कि सतगुरु जी से भजन लेकर आओ। सतगुरु जी ने एक संत जी से भजन दिलवा दिया पर महेंद्र सिंह जी ने उनसे गुरुदीक्षा देने को कहा। सच्चे पातशाह ने फिर भजन करने का तरीका बताया। तब से वे नित्य नियम करने लगे। इससे उनकी चित्रकृति एकाग्र होने लगी। सात वर्ष बाद संत ज्ञान सिंह जी का बेटा उन्हें आकर ले गया। संत जी ने उपासना का अभ्यास अच्छी तरह से करवा दिया था। उन्हें अनेक वर्णियां याद हो गईं।

कुछ समय पश्चात महेंद्र सिंह रेलगाड़ी द्वारा कहीं जा रहे थे। वहां परमार्थ के वैरागी वचन कर रहे थे। उनसे प्रभावित होकर किसी ने कहा कि उनके घर स्वामी जी आते हैं। जो बहुत ही विद्वान हैं और ब्रह्म ज्ञानी हैं। वे विचार सागर के बारे में अर्थात वैचारिक गहनता के बारे में उपदेश देते थे। उन्होंने देखा कि विचार सागर तथा गुरुवाणी का सिद्धांत एक ही है। यही अद्वैतवाद है। स्वामी शिवराम दास का मन एकाग्र नहीं होता था। जब इनका मन एकाग्र होने लगा तो सच्चे पातशाह ने आज्ञा दी कि प्रेम भक्ति किया करो। फिर एक वर्ष और उपासना करते बीत गया। इसी प्रकार एक साल और बीत गया। सतगुरु जी की आज्ञानुसार स्नान मर्यादा से करते रहे। एक साल बाद सतगुरु जी की कृपा होनी शुरू हुई और निज स्वरूप का सुख प्राप्त होने लगा। इससे नित्य नियम का समय और बढ़ा दिया। धीरे-धीरे और अधिक सुख प्राप्त होने लगा। ये अपने आप को भूलने लग गए। निज स्वरूप का साक्षात्कार होने लगा। उनके अनुसार गरीबों की निवाजने अथवा उनकी सेवा करने के कारण सतगुरु का नाम गरीब नवाज पड़ा। लोगों ने इन्हें इस बात का अधिकारी बनाया जिससे ये जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाएंगे। सतगुरु जी ने यही उपदेश दिया कि उनके पास जाकर मन ही मन अरदास करनी चाहिए।

संत महेंद्र सिंह जी प्रातः तीन चार घंटे नित्य नियम करते थे। धीरे-धीरे उन्हें सुख प्राप्त होने लगा। ये अपने आप को भूलने लगे। ये अपने आप को सुख-स्वरूप समझने लगे। इन्हें निज-स्वरूप का दर्शन होने लगा। सतगुरु सब निर्धनों

पर कृपा करते हैं। इनके पास खुले खजाने होते हैं, इन्हें भक्ति का मार्ग तो स्वामी शिवराम दास तथा संत ज्ञानसिंह जी ने दिखाया पर दोनों महापुरुष सतगुरु जी की कृपा से ही मिल पाए। यह सबके धन्यवादी हैं। अरदास में यह दोनों संतों को भी धन्यवाद करते हैं। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने कहा था कि ब्रह्म विद्या ही संसार में सबसे उत्तम विद्या है। इससे सुख-दुःख दोनों का आभास नहीं होता। इनके साथ सतगुरु के चमत्कार तो भरे पड़े हैं। इन पर सतगुरु जी की अपार कृपा है। ये जोत से जोत जलाते हुए परमार्थ का मार्ग दिखाते जा रहे हैं। यह हर जन मानस के हृदय में प्रेम और भक्ति की वाटिका खिलाते चले जा रहे हैं जहां सुगंध है, सौरभ है और सुख है।

संत सभागम हरि कथा एक पंथ दो काज।

सतगुरु की अपार कृपा

—संत बक्शीस सिंह

❑ **भेंटकर्त्ता :** संत बक्शीस सिंह जी, आप पर सचचे पाताशाह श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी की बड़ी कृपा रही है। इस संबंध में आप अपने अनुभव सुनाने की कृपा करेंगे?

● **संत बक्शीस सिंह :** पहली बात तो यह है कि जब हिंदुस्तान और पाकिस्तान बना था तब जमीन-जायदाद के कारण पार्टीबाजी बन गई थी। कैरों इन लोगों की बड़ी मदद करते थे। एक तरफ कैरों की पार्टी थी, दूसरी तरफ महाराज निहाल सिंह की पार्टी थी। केस चलने के दौरान उन्होंने जमीन की बेदखली के आर्डर दे दिए थे। वहां पुलिस को बारंबार आना पड़ा। यह सतगुरु प्रताप सिंह जी के समय की बात है। सतगुरु जी की आज्ञा थी कि दखल भी देना और झगड़ा भी नहीं करना। तब वहां पर बहुत शोर-शराबा हुआ। उस समय वहां कच्चे रास्ते थे। पुलिस ने हमें भागने के लिए राइफलें भर लीं और पोज़िशनें ले लीं और हमें भागने की चेतावनी दे दी। तभी वहां बड़े जोर से आंधी आई जो लगभग आधा-पौना घंटा रही। उसके बाद बारिश भी आ गई। इस आंधी और बारिश में उन लोगों का कुछ पता न चला कि वे कहां से आए थे और कहां चले गए। उस समय हमारे साथ कुछ महिलाएं भी थीं। उनमें से कुछ महिलाओं को रात को बच्चे भी हुए थे। वस्तुतः उस समय पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक थी। फिर सतगुरु जी की आज्ञा मिली कि साध-संगत! आपने यहीं रहना है, कहीं जाना नहीं। उस समय सतगुरु जी के पास एक जीप होती थी, जो इन टेड़े-मेढ़े कच्चे रास्तों पर चला करती थी। उस समय यह भी ड्राइवर होते थे। सतगुरु जी उस जीप पर बैठ गए और हाथ जोड़कर बोले—साध-संगत! आपको बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। मैं इससे कब ऋणमुक्त हो सकूंगा।

इस घटना से हमारे ऊपर कतल का केस बना दिया गया था। हम हिसार जेल में थे। यह तब की बात है।

❑ जिसमें महाराज वीर सिंह जी थे, क्या आप उस केस की बात कर रहे हैं?

● नहीं! यह दूसरा, बाद का केस है। सतगुरु हमें दर्शन देने वहां जाते थे। जेल में एक आदमी था जिसे फांसी की सजा हुई थी। उसने हमसे कहा कि आप मेरी ओर से सतगुरु से प्रार्थना करें कि मेरी फांसी मुआफ हो जाए। हमने सतगुरु जी से वैसी ही प्रार्थना कर दी। सतगुरु जी ने कहा कि उसे कहना कि वह स्वस्थ

हो, निराश न हो, सतगुरु कृपा करेंगे। उस व्यक्ति की चंडीगढ़ होईकोर्ट में अपील चल रही थी। कुछ ही दिनों बाद उसकी अपील मंजूर हो गई। उसकी फांसी की सजा बीस साल की कैद में बदल गई। उस व्यक्ति ने बतलाया कि उसने प्रातः काल एक स्वप्न देखा था जिसमें सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज स्वयं उसके कंधे पर हाथ रखकर कह रहे थे कि तू फ्रिक न कर, तुझे फांसी नहीं होगी। वह व्यक्ति गैर-नामधारी था और अब भी जीवित है। यदि आप चाहें तो उससे मिलकर पूछ सकते हैं।

❑ क्या आपको सजा हो गई थी?

● हमें बीस साल की सजा हो गई थी। हम वहीं सजा भोग रहे थे। सतगुरु हमें वहां दर्शन देने के लिए आते थे। इसी प्रकार मेरे एक मामे का लड़का है, जिसका नाम गुरुमुख सिंह है। वह बीमार था। उसका आपरेशन होना था। उसे लुधियाना में स्वामी दयानंद हस्पताल में आपरेशन के लिए दाखिल किया गया। परंतु डाक्टरों ने उसे जांच के बाद जवाब दे दिया कि उसका आपरेशन नहीं हो सकता। फिर सतगुरु के पास आदमी गए और प्रार्थना की कि उसे डाक्टरों ने जवाब दे दिया है। उन्होंने कहा कि उसे लुधियाना के क्रिश्चियन हस्पताल में दाखिल करवाओ। उसे क्रिश्चियन अस्पताल में दाखिल करवाया गया। वहां के डाक्टरों ने भी जांच क़े बाद जवाब दे दिया। सतगुरु के आगे फिर स्थिति स्पष्ट करते हुए प्रार्थना की गई। इस पर सतगुरु जी ने कहा कि आप डाक्टरों से कहो कि मेरी आज्ञा है कि वे आपरेशन करें। उसका आपरेशन किया गया। आपरेशन सफल रहा और वे अब भी पूरी तरह स्वस्थ हैं। उसका घर यहां से 3-4 किलोमीटर दूर है। यदि आप चाहें तो स्वयं जाकर उससे सारा हाल पूछ सकते हैं। यह सारी कृपा सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की है। इस घटना को अभी 8-9 महीने ही हुए हैं।

❑ आपको क्या लगता है कि सतगुरु अकाल पुरुष हैं?

● जी हां। सतगुरु अकाल पुरुष हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। बल्कि अकाल के भी अकाल पुरुष हैं। जो वचन कहते हैं, वे बिल्कुल सत्य वचन होते हैं। मैं आपको सतगुरु प्रताप सिंह जी के समय की बात बतलाता हूं। हम पहले सामान्य सिख थे, नामधारी सिख नहीं थे। मेरी माता जी, मेरे ननिहाल वाले नामधारी थे। मेरे ननिहाल वाले सतगुरु हरि सिंह जी के समय से नामधारी थे। वे दो-तीन पीढ़ियों से नामधारी थे। मुझसे बड़ी मेरी 5-6 बहनें हैं। उस समय स्त्रियां सामान्यतया काले कपड़े पहनती थीं। ''होला'' का समय था। मेरी माता जी ने काला सूट पहना हुआ था। उस समय साध-संगत सतगुरु जी से प्रार्थना कर रही

थी कि महाराज जी हमारे घर भी चरण डालिए। तब सतगुरु ने पूछा कि यह स्त्री कौन है जो प्रार्थना कर रही है कि सतगुरु जी हमारे घर भी चरण डालें। सतगुरु जी को मेरी माता जी का परिचय दिया गया और सतगुरु जी ने मेरी माता जी के घर में चरण डाले।

❑ क्या उस समय आप पैदा नहीं हुए थे?

● अजी नहीं, मेरा जन्म 5-6 बहनों के बाद हुआ था। सतगुरु प्रताप सिंह जी के आर्शीवाद से हम बाद में तीन भाई हुए थे।

❑ उन्होंने यह नहीं कहा कि आप सफेद कपड़े पहनों?

● मैं आपको सारी बात विस्तार से बताता हूं। फिर उन्होंने कहा कि इनको भजन दो। हमारे पिता जी ने कछारा पहनना शुरू कर दिया। सतगुरु की कृपा से मेरे पिता जी ने भी 12 साल अंदर बैठकर भजन-अभ्यास किया था। उन्होंने किसी चीज से वास्ता न रखा। किसी के जन्म पर कोई खुशी नहीं और किसी कि मरण पर कोई गम नहीं। जब मेरे पिता जी तीन साल अंदर रहे तो उस समय मैं छोटा था, इसलिए मुझे कुछ याद नहीं है। उसके बाद मेरे पिता जी ने आठ साल खेती-बाड़ी का काम किया, पिता जी फिर एक दिन भजन के लिए अंदर बैठ गए। तब माता जी ने पिता जी से कहा कि आप पहले कृपया गेहूं की तैयार फसल को संभाल लीजिए, बाद में भजन पर बैठें। परंतु पिता जी उस समय उपराम थे। उन्हें गेहूं से कोई वास्ता न था। उस समय मेरी तीन बहनों का विवाह हो चुका था। हम दो भाई और एक बहन थी। उस समय बोड़ बैठा हुआ था। हमारी माता जी हमें वहां ले जाती थीं। और वापस घर में आकर पशुओं को चारा-पानी, दूध दोहना और लंगर-पानी का प्रबंध करती थीं। हमारे पिता जी अंदर ही रहते थे। एक रात पिता जी घर से कहीं चले गए। हम सब 15 दिन तक उन्हें ढूंढते रहे। तब एक दिन किसी ने आकर सूचना दी कि आपके पिता जी एक खेत में अर्धमूर्छित पड़े हुए हैं। हम सब गए और उन्हें उठाकर घर ले आए। उसके बाद वे 9 साल तक जीवित रहे।

❑ उनके वहां गिरने और बेहोश होने का क्या कारण था?

● वस्तुत: उन्होंने दुनियादारी छोड़ दी थी। केवल एक चादर ओढ़ते थे और अपने भजन में लीन रहते थे। यह सब कुछ सतगुरु प्रताप सिंह जी की कृपा प्रसाद का फल था।

एक संत आला जी हुए हैं। ये सब लोग उन्हें जानते थे। एक बार उनके दाएं कंधे में दर्द हुआ। उन्हें जगह-जगह कई डाक्टरों को दिखाया गया। बाहर के

देशों में भी ले गए। परंतु उन्हें आराम नहीं आया। फिर लोगों ने सलाह दी कि उन्हें मेरे पिता संत गुलाब सिंह जी के पास ले जाएं। मेरे पिताजी बातचीत नहीं करते थे। वे संत जी को मेरे पिताजी के पास ले आए और उनसे प्रार्थना की कि वे कृपा करें। मेरे पिताजी ने अपना हाथ उनके पीड़ा वाले कंधे पर फेरा। उनका वह दर्द चला गया। परंतु वह दर्द मेरे पिताजी के कंधे पर आ गया। वस्तुत: यह सारी कृपा सतगुरु प्रताप सिंह जी की है, परंतु उन्होंने इसका सम्मान मेरे पिताजी को दिया।

अलौकिक चमत्कार

—संत ऊधम सिंह

संत ऊधम सिंह लाहौर जिले के एक गांव भैरोवाल के रहने वाले हैं। श्री हरविंदर सिंह हंसपाल जी के निवास पर इनसे मेरी भेंट हो गई तो सतगुरु प्रताप सिंह के साथ संपर्क की कोई घटना मैं पूछ बैठा। मेरा इतना पूछना था कि संत जी तो दीवाने से हो गए। आंखों में आंसुओं की धारा उमड़ पड़ी और कंठ रूंध गया। काफी देर बाद बोलने की हालत में आए और बोले, ''सतगुरु जी की कृपा क्या बखान करूं मैं! जिंदा ही आज उनकी मेहरबानी के कारण हूं।'' उन्होंने बताया, ''यों तो सतगुरु जी से हमारी मुलाकात देश विभाजन के पहले ही हो गई थी। नामधारी परिवार था। सब ठीक-ठाक चल रहा था कि सन् 1949 में एक दिन मैं जब एक ऊंची दीवार के पास खड़ा था, वह भर-भराकर मेरे ऊपर गिर पड़ी। टनों मलबा मेरे ऊपर गिर गया। साथियों ने समझ लिया कि अब ऊधम सिंह के जिंदा बचने का तो सवाल ही नहीं उठता। खैर, सबने मिल कर मलबा हटाया। कई घंटे मलबा हटाने में लगे पर अभी मेरे जख्मी बदन में ईंट पत्थर पड़े थे। साथियों ने मेरा हाथ खींचकर मलबे से बाहर निकाला। हड्डियां टूट चुकी थीं तथा अंतड़िया फटकर बाहर निकल आईं थीं। पेशाब की नली अंदर धंस गई थी। फिर भी सतगुरु की कृपा से मैं जिंदा था।'' संत ऊधम सिंह के चेहरे पर ऐसे भाव उभर रहे थे जैसे कल की ही घटना सुना रहे हों।

आगे कहने लगे, ''तुरंत ऐलनाबाद में भर्ती कराया गया। हालांकि इलाज करने वाला सिख डाक्टर बड़ा अच्छा था। पर उसने निराश होकर जवाब दे दिया कि वह कुछ नहीं कर सकता। वहां से मुझे सिरसा के सरकारी अस्पताल में ले जाया गया। सतगुरु जी को इसकी खबर मिली तो सिरसा अस्पताल में मिलने आए। फिर मेरे सिर पर दाहिना चरण रख कर वचन किया, 'फिकर न कर, तगड़ा हो जाएगा।'' संत ऊधम सिंह अति विभोर होकर कहते हैं, ''सतगुरु का चरण पड़ते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर में कोई प्रकाश की धारा बह रही हो, पीड़ा भी काफी कम हो गई। सिरसा का डाक्टर काफी दयालु था। उसने मेरे पेट के कई आपरेशन किए। अपने घर से खाना मंगवा कर खिलाया। तीन-चार महीने इलाज के बाद 25 प्रतिशत आराम आ गया। इसके बाद मुझे राजस्थान के एक बड़े अस्पताल में ले जाया गया। वहां तीन डाक्टरों की टीम ने मेरा उपचार किया। यहां भी कई आपरेशन हुए। 4-5 महीने में काफी आराम आ गया। इसके बाद

एक वर्ष श्री जीवन नगर में रहा और वहां स्वस्थ हुआ। वहां कई साल खेती की। बाद में नैनीताल के तराई इलाके में सपरिवार रह कर खेती करता रहा।' संत जी ने कहा, सतगुरु प्रताप सिंह जी के देहावसान कर जाने के बाद मुझ पर सतगुरु जगजीत सिंह जी की पूरी कृपा बनी रहती है।

''आठ-दस साल पहले की एक घटना है, एक बार मैं सतगुरु जगजीत सिंह जी से मिलकर रामपुर के लिए वापस लौटा। टिकट लेकर गाड़ी में चढ़ गया। एक स्टेशन पर मैंने किसी से पूछा कि क्या रामपुर आ गया? मुझे लगा किसी ने हां कह दिया है। ट्रेन के डिब्बे में भारी भीड़ थी। मैं खिड़की से ही नीचे कूद गया। यात्रियों से विनती की कि मेरे सामान के नग नीचे फेंक दें पर किसी ने न सुनी। इसी बीच गाड़ी चल पड़ी, मुझे सामान की चिंता थी। मैंने चलती ट्रेन की खिड़की पकड़ ली और लटक गया।

''धीरे-धीरे गाड़ी ने रफ्तार पकड़ ली। अजीब मजबूरी में फंस गया था। हाथ छोडूं तो रेल के नीचे आ जाता और खिड़की पकड़े रहने की ताकत भी चुकती जा रही थी।

''अचानक एक अलौकिक घटना घटी। मुझे अनुभव हुआ कि पीछे से मुझे सतगुरु सिंह जी ने पकड़ा और उठा कर नीचे पत्थरों पर लिटा दिया है। मेरे बदन पर खरोंच तक न आई थी। उधर गाड़ी का कांटा बदलने वाला कर्मचारी यह सब देख रहा था। वह मेरे पास आया कि यह गाड़ी से लटकने वाला बाबा घायल हो गया होगा। वह मेरे पास आया तो देखकर हैरान रह गया कि मुझे तो कोई चोट तक नहीं आई। उसने मुझसे जिंदा रहने का रहस्य पूछा तो मैंने बता दिया कि सतगुरु जी ने स्वयं अपने हाथों से पकड़ कर उतारा है। लेकिन मैंने उदासी से कहा कि मेरा सामान गाड़ी में रह गया, वह कर्मचारी बोला, बाबा आपका सामान तो आपके पास ही रखा है। मैं हैरत में था क्योंकि सतगुरु जी ने मेरा सामान भी मेरे पास पहुंचा दिया था।''

ऊधम सिंह कहते हैं, ''मैंने तो सतगुरु से विनती भी नहीं की थी पर धन्य हैं सतगुरु जी जो पल-पल की फिकर रखते हैं। बाद में वह कर्मचारी मुझे स्टेशन मास्टर के पास लेकर गया और सारी रहस्य कथा सुनाई। स्टेशन मास्टर भी भावुक हो उठा। उसने कहा, फिकर न करो, अभी रामपुर जाने वाली एक गाड़ी आएगी। वह यहां रुकती तो नहीं पर हम किसी तरह उसे रोककर आपको गाड़ी में बैठा देंगे।

''थोड़ी देर बाद गाड़ी आई। स्टेशन मास्टर ने गाड़ी रोकी और मुझे डिब्बे में बैठाया। उसने विनती की कि वह मुझे ठीक तरह से रामपुर स्टेशन पर उतार दें।

''इस तरह मैं सतगुरु जी की कृपा से दूसरी बार भी मौत के मुंह से बच गया। आजकल मुझे पेशाब की तकलीफ फिर जारी है।

''मैंने सतगुरु जी से विनती की है कि आपने बचाया ही क्यों था, और बचाया है तो यह तकलीफ क्यों दे रहे हो। सतगुरु मुस्कुरा दिए थे, बोले, चिंता न करो, जल्दी ही ठीक हो जाओगे।

अंत में संत जी बोले, ''बाताओं ऐसे सतगुरु जी की कृपा का कहां तक बखान करूं!''

चोरी गया माल वापिस मिला

—संत भजनीक सिंह

संत भजनीक सिंह के परिवार पर सच्चे पातशाह सतगुरु प्रताप सिंह जी की अपार कृपा रही है। इनके पिता सच्चे पातशाह जी के वचनानुसार सन् 1934 में मंडी सुकेत गए तथा वहां जाकर जमीन खरीदी। मंडी में ही उन्होंने कपड़े का व्यापार किया और सतगुरु प्रताप सिंह जी और सतगुरु जगजीत सिंह की कृपा से सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लगभग तीस साल पहले की घटना इन्होंने सुनाई जब सतगुरु प्रताप सिंह जी के देहांत के पश्चात उनकी गद्दी पर सतगुरु जगजीत सिंह जी विराजमान हो चुके थे। भजनीक सिंह जी के घर अचानक चोरी हो गई और घर की महिलाओं के तमाम सोने के जेवरात चोर ले गए। घर के सब लोग बहुत दु:खी थे परंतु चोरी का कोई सुराग न मिला।

अस्सू का मेला था। सचचे पातशाह सतगुरु जगजीत सिंह जी प्रयोग में बैठे थे। किसी ने सच्चे पातशाह को इस चोरी की सूचना दी और उन्होंने संत भजनीक सिंह जी को संदेश भेजा कि वह कोई चिंता न करें, सतगुरु रामसिंह जी कृपा करेंगे। कुछ दिनों के बाद भजनीक सिंह जी श्री भैणी साहब मेले में आए और दीवान में सच्चे पातशाह से प्रार्थना की। सच्चे पातशाह सतगुरु जगजीत सिंह ने वचन किया कि वह किसी बात की चिंता न करें। परंतु इनकी चिंता दूर न हुई। यह देखकर सतगुरु जगजीत सिंह जी ने फिर वचन किया कि सुबह पौने सात बजे वह अखंड पाठ रखवाएं जिसका भोग परसों सुबह पौने-चार बजे पड़ेगा तथा सच्चे पातशाह अपने सामने भोग डलवाएंगे। उन्होंने भजनीक जी को कहा कि वह पाठ रखवा कर अपने घर सुकेत की ओर प्रस्थान करें, परसों ठीक पौने चार बजे जब पाठ का भोग पड़ेगा उसी सतय उनका चोरी गया माल उनके घर पहुंच जाएगा।

भजनीक जी सच्चे पातशाह के आदेश के अनुसार पाठ रखवा कर चंड़ीगढ़ चले गए और रात अपने बेटे के पास रहे। दोपहर के समय उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह उनके साथ श्री भैणी साहब चले क्योंकि अगले दिन पाठ का भोग पड़ना था। वह सच्चे पातशाह का वचन भूल चुके थे। परंतु सच्चे पातशाह उनको कैसे भूलने देते। उसी समय सुकेत (घर) से उनके बेटे की लाइटनिंग काल आई कि कुछ व्यक्ति घर पर बैठे हैं और कह रहे हैं कि चोर मिल गया है और वह तमाम चोरी का माल वापिस देने को तैयार हैं। लड़के ने कहा कि पिता जी जिस

भी हालत में बैठे हैं तरंतु टैक्सी से चल पड़ें और घर पहुंचें, उस समय उन्हें सच्चे पातशाह का वचन याद आया और भजनीक जी टैक्सी पर सुकेत मंडी के लिए चल दिए और रात 7-8 बजे पहुंचे।

उनके घर पर दो व्यक्ति बैठे थे जो चोरी करने वाले व्यक्ति से परिचित थे तथा भजनीक जी को अपने गांव ले जाने के लिए आए थे। पहले तो भजनीक जी घबरा, गए कि रात को कोई लूट न ले फिर साहस करके थाने से दो-तीन सिपाही ले कर उनके साथ गांव चल दिए। उन्होंने उस चोर के घर ले जाकर उनका परिचय उससे करवाया। वह अंदर जाकर सोने-जेवरात की गठरी लाया और हाथ जोड़ कर उनके हवाले कर दी और क्षमा-याचना की। वह चोर फौज से रिटायर हो चुका था और उसने कहा कि उससे घोर अपराध हुआ था परंतु वह माल को पचा न सका और पिछली दो रातों में सफेद वस्त्रों में कुछ सिख हाथ में बरछे और तलवारें लेकर उसे डराते और धमकाते रहे हैं कि यदि वह माल वापिस न करेगा तो वे उसे मार देंगे। डर के मारे उसक़े प्राण सूख रहे थे। उस चोर ने विनय की कि उसको पुलिस के हवाले न करें और आज से वह भजनीक जी की पत्नी को अपनी बहन मानेगा। जब भजनीक जी चोरी का माल ले कर घर पहुंचे तो उस समय सुबह के ठीक पौने चार बजे थे। इस प्रकार सच्चे पातशाह का वचन पूरा हुआ। धन्य हैं सतगुरु जगजीत सिंह जी।

पुत्र-रत्नों की प्राप्ति

—संत भजनीक सिंह

संत भजनीक सिंह व उनके पिता हरबंस सिंह श्री सतगुरु प्रताप सिंह के प्रति असीम भक्ति भाव रखते थे और इनके परिवार पर सतगुरु प्रताप सिंह जी की बड़ी कृपा थी। सतगुरु प्रताप सिंह जी के देह त्यागने से एक वर्ष पहले की घटना है। सतगुरु जी और उनके निजी सेवक भाई वजीर सिंह और संत रतनसिंह लांगरी भी सुकेत आए। भजनीक सिंह की पत्नी के दो-तीन महीने में गर्भ गिर जाया करता था। बहुत चिकित्सा करवाई परंतु कोई फर्क नहीं पड़ा। पत्नी को लेकर भजनीक सिंह थाईलैंड भी गए और योग्य डाक्टरों से परामर्श किया।

भजनीक जी को किसी ने बताया कि सतगुरु के लांगरी रतन सिंह के पास इन रोग की दवाई है। उसने संत रतन सिंह से प्रार्थना की कि उनकी पत्नी के लिए उन्हें दवाई दे दें। उस समय सच्चे पातशाह सतगुरु प्रताप सिंह जी आराम कर रहे थे। उस समय इनकी पत्नी फिर से गर्भवती थीं। संत रतन सिंह लांगरी ने कहा कि वे सच्चे पातशाह से इस बारे में प्रार्थना करें। सच्चे पातशाह जी ने उठने के बाद स्नान किया व प्रसाद छकते समय भजनीक सिंह को अपने पास बैठा लिया और उनके आने का कारण पूछा। भजनीक सिंह ने अपनी व्यथा सुनाई और प्रार्थना की कि वे उस पर कृपा करें और दवाई दें। दो मिनट सतगुरु जी चुप रहे। फिर वचन किया ''भजनीक दवाई दी तां कोई लोड़ नहीं, एह बच्चा रहणा नहीं, अगला असीं जाण नहीं दियांगे। सतगुरु कृपा करनगे। बच्चा राजी खुशी होएगा, कोई दवाई दी लोड नहीं' यह सुनकर भजनीक जी नमस्कार कर चले गए और कुछ दिनों बाद बच्चा गर्भ में ही नष्ट हो गया।

कुछ महीने पश्चात सतगुरु प्रताप सिंह जी फिर मंडी आए और भजनीक सिंह के घर चरण डाले और पूछा ''भजनीक, सुनाओं की हाल है?'' अभी तक कोई उम्मीद नहीं थी। इसलिए वह कुछ न कह सका। मुंह से केवल इतना निकला, सच्चे पातशाह जी आप जी दी कृपा हो ही जाएगी।'' सच्चे पातशाह समझ गए कि अभी बात नहीं बनी है। वचन किया—''पता नहीं कोई समय दा फर्क है या मेरे वचन विच कोई फर्क पै गया, पर तुसी फिक्र न करो।'' उंगलियों पर गिन कर वचन किया, ''सच्चे पातशाह कृपा करनगे, साध संगत कृपा करेगी, सतगुरु जरूर कृपा करनगे।'' इस प्रकार तीन वचन एक साथ कहे और फिर कहा, ''जदों काका होएगा, मेरे तों बगैर मेला नहीं करना। मेरे कोलों समय लै के

मेला करना। असीं सपरिवार आवांगे'' इसके बाद सच्चे पातशाह श्री भैणी साहब चले गए और कुछ दिनों बाद अपनी देह त्याग दी।

एक साल के अंदर-अंदर लड़का पैदा हुआ। उन्होंने कोई दवाई नहीं ली। जब भजनीक सिंह के घर लड़का हुआ, उस समय सतगुरु जगजीत सिंह जी गद्दी पर विराजमान थे। भजनीक सिंह ने सतगुरु जगजीत सिंह जी के चरणों में प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह जी काका हुआ है कृपा करो, मेला करने की तारीख दो।'' सच्चे पातशाह सतगुरु जगजीत सिंह ने उसी अंदाज में वचन किया जैसे सतगुरु प्रताप सिंह जी ने एक साल पहले किया था, ''तेरे नाल वचन कीता होया है मैं आपे तारीख देनी है और साडा सारा परिवार आना है।''

इस प्रकार उन्होंने सतगुरु प्रताप सिंह जी का वचन दोहराया। यह सुनकर भजनीक सिंह को ज्ञान हो गया कि सतगुरु जगजीत सिंह सच्चे पातशाह सतगुरु प्रताप सिंह जी की ही ज्योति हैं और दोनों में कोई अंतर नहीं है।

पूर्व वचन के अनुसार सतगुरु जी और सारा परिवार बड़े ठाकुर जी, छोटे ठाकुर जी आदि सब लोग सुकेत आए और मेला किया। क्योंकि सतगुरु प्रताप सिंह ने तीन बार वचन किया था अतः भजनीक सिंह के तीन लड़के हुए।

जाओ हरपाल से कैमरा ले आओ

—संत अवतार सिंह

संत अवतार सिंह जी ने सच्चे पातशाह के संबंध में बताया:

जहां तक सतगुरु जी का संबंध है, मैं समझता हूं कि वे अंतर्यामी हैं। वे हर हृदय में उठ रहे संकल्पों को भली प्रकार जानते हैं। उनका इस पृथ्वी पर आने का उद्देश्य ही जगत कल्याण है। वे जब भी इस इलाके में पधारते हैं तो सबसे पहले उन लोगों को दर्शन देते हैं जो स्वयं चलकर उनके दर्शनों के लिए नहीं पहुंच पाते। हमारे टिब्बे के पास एक डेरा है जिसमें जसवीर सिंह नाम का एक लड़का रहता है। जसवीर सिंह के पिता का नाम गुरदीप और दादा का नाम गुज्जर सिंह है। उस लड़के जसवीर सिंह को सतगुरु जी ने दर्शन दिए। सच्चे पातशाह जब भी पधारते हैं तो एक बार ही दर्शन देते हैं। जसवीर को सतगुरु जी ने दूसरी बार भी दर्शन दिए। तीसरे दिन जब सवेरा हुआ तो अवतार सिंह भी गुरु जी के साथ थे। टिब्बे पर केवल हल्की जिप्सी गाड़ियां ही चढ़ पाती थीं। सतगुरु जी ने कहा कि गाड़ियां रोक दो। तो सतगुरु महाराज की आज्ञा का पालन करते हुए गाड़ियां रोक दी गईं। अवतार सिंह जी कहते हैं कि सतगुरु महाराज ने उन्हें आदेश दिया कि उस लड़के से मिलकर आना है। जब हम लोग लड़के से मिलने के लिए जाने लगे और थोड़ा सा आगे जाने पर सतगुरु जी ने मुझे कहा कि मैं हरपाल से कैमरा ले लूं। हरपाल दूसरी गाड़ी में था। उसे गाड़ी से उतार कर उससे कैमरा ले लिया गया। जब हम लोग उस लड़के के घर पहुंचे तो वे लोग बड़ी मस्ती में आ गए थे। और अपने अनुसार वे सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज से बातें कर रहे थे। हरपाल समझ गया कि गुरु जी की फोटो खींचनी है। इसीलिए कैमरा मंगवाया है। जब सतगुरु महाराज के साथ उस लड़के जसवीर की फोटो खींची तो वह लोट-पोट हो गया। उसके घर के लोग भी हैरान रह गए। हमने उनके हैरान होने का कारण पूछा तो वे कहने लगे कि सतगुरु जी किस प्रकार उनके पास आए हैं। और फिर जसवीर के बारे में बताया कि वह किस प्रकार सतगुरु जी के साथ फोटो खिंचवाने की हठ कर रहा था। वे कहने लगे कि वे तो गरीब लोग हैं। उन्हें नहीं मालूम कि गुरु जी से किस प्रकार समय लिया जाए और किस प्रकार उनके साथ फोटो खिंचवाया जाए। हम समझ नहीं पा रहे कि आप लोग किस प्रकार यहां पधारे और सतगुरु महाराज ने किस प्रकार बच्चे जसवीर की मनोकामना पूर्ण की। अब उन्हें विश्वास

हो गया है कि गुरु जी सच्चे पातशाह सारी बात जानते हैं। वे हृदय पर लिखा पढ़ सकते हैं।

एक दूसरी घटना भी है और वह यह कि प्रीतम सिंह सारगढ़िया नाम के एक व्यक्ति हैं जो पहले श्री जीवन नगर में रहते थे। अब वह कृपाल पट्टी चले गए थे। उनके पास भी सतगुरु जी प्राय: आते रहते थे। श्री भैणी साहिब से वह भी उनके साथ आए थे। मस्तान गढ़ पहुंच सतगुरु जी कहने लगे कि वह थक गए हैं इसलिए वे वहां आराम करेंगे। इस पर सारा सामान उतार लिया गया। पुलिस वालों को भी गुरु जी ने वर्दी उतार कर विश्राम करने का आदेश दिया। कल सुबह ही कहीं दूसरे स्थान पर जाना होगा।

अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि गुरु जी ने मुझे कहा कि अवतार सिंह तैयार हो जाओ। अभी चलना होगा। गुरु जी ने आदेश दिया कि मौज खेड़े चलो। अभी आपको कारण बताता हूं। फिर कहने लगे कि प्रीतमसिंह को मिलने जाना है। हम जब वहां पहुंचे तो देखकर विस्मय का ठिकाना न रहा कि वहां तो सब तैयारियां की गई थीं। मैंने सतगुरु जी से पूछा कि उन्होंने अपने आने की कोई सूचना भिजवाई थी उन्हें क्या? या आप जानते थे कि ये लोग आपको याद कर रहे हैं। सतगुरु कहने लगे कि प्रीतम सिंह के अंगूरों के बगीचे हैं। जब अंगूरों को पानी देने का समय आता है तो आपको भी पता चल जाता है कि बगीचे में खाद-पानी देना है। इसी प्रकार वे कहने लगे कि उन्हें भी पता चल जाता है कि उन्हें कहां कौन याद कर रहा है।

श्रीमदभगवदगीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं:

यो माम पश्यति सर्वत्र।

सर्वत्र मयि पश्यिति॥

अर्थात जो मुझे सब जगह याद करता है, भजता है, देखता है तो मैं भी उसे सब जगह देखता हूं, याद करता हूं तथा भजता हूं।

इससे स्पष्ट दिखाई देता है कि सच्चे पातशाह की वाणी और गीता की वाणी में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक ही हैं।

नहर विच जा रहे हो क्या बीमा कराया है?

—संत अमर सिंह

प्रश्न : संत जी सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह के संपर्क में आप निरंतर चलते आ रहे हैं। आप पर उनकी महती कृपा भी रही है और बनी भी हुई है। इसलिए आप कृपा कर कोई आपबीती घटना सुनाइये जिससे यह घटना पढ़ने तथा सुनने वालों के मन में सतगुरु महाराज के प्रति आस्था और प्रेम बढ़े।

उत्तर : पाकिस्तान सन् 1947 में बना था। उसके बाद मैं सन् 1948 में श्री जीवन नगर आ गया था। सबसे पहले सच्चे पातशाह श्री गुरु प्रताप सिंह जी की कृपा हुई थी और हमारा डेरा नकौड़ेशाह स्थान पर लगवाया था। पर वहां दिल नहीं लग पा रहा था। क्योंकि दूसरे रिश्तेदार सारे अमृतसर तथा फिरोजपुर में थे। मैं चाहता था कि मैं भी उधर ही चला जाऊं। मेरी माता जी ने सच्चे पातशाह से प्रार्थना की कि लड़का नकौड़ेशाह में रहना नहीं चाहता वह कहता है कि वहां उसका दिल नहीं लगता। इस पर सच्चे पातशाह ने मेरी माता जी को कहा कि बीबी चिंता मत कर उसका जी मैं लगा दूंगा। तू किसी प्रकार की चिंता मत कर। सच्चे पातशाह मुझे नकौड़े से ले आए और यहां मुझे सेवाएं देने लगे। उन्होंने एक-एक करके जितनी सेवाएं मुझे दीं वे सब मैंने कीं।

पहले सतगुरु जी के पास नीना नाम की एक कुतिया थी। उसकी देखभाल का काम मुझे सौंपा गया। उस कुतिया का एक बच्चा सतगुरु के भाई निहाल सिंह जी को भी दिया गया। उसके बाद उन्होंने मुझे सतगुरु जगजीत सिंह जी के पास भेजा। उनके साथ मेरा बड़ा नजदीकी रिश्ता था। फिर मुझे उन्होंने अनेक काम धंधे सीखने के लिए कहा। उसके पश्चात उन्होंने मुझे मिस्त्री गुरदीप सिंह के पास काम सीखने के लिए भेजा। वह ऐसा लुहार था जो रहट कुआं बनाता था। मैं भी काम सीख कर उसके पास रहट बनाने लगा था। एक साल में मैं पूरी तरह प्रशिक्षित मिस्त्री बन गया। अब मुझे रहट बनाने का सारा काम आ गया था। उसके बाद सतगुरु जी ने कृपा करके अपनी गाड़ी का ड्राइवर बना लिया।

मैंने साढ़े तीन वर्ष तक कार के चालक के रूप में कार्य किया। सतगुरु प्रताप सिंह जी के समय में जो खराद की वर्कशाप बनाई गई थी, मुझे उसमें लगा दिया गया। सतगुरु जी ने एक मिस्त्री गंडा सिंह जी को कहा कि वह इसे काम सिखाएं। गंडा सिंह ने अपने नौकर रतन सिंह को कहा कि वह एक थाल में मिश्री और पगड़ी डाल कर ले आए। मुझे संतों को माथा टेकने का आदेश दिया गया।

गंडा सिंह जी स्वयं गुजरांवाला के निवासी थे। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया "तुम नामी मिस्त्री बनोगे।" मैंने पांच-छः साल तक उनके साथ काम किया। उनकी गाड़ियों, ट्रकों आदि का सारा काम मेरे जिम्मे था। जब मैं शुरू में श्री जीवन नगर में आया था तो यहां कोठी के पास 15-20 फुट गहरी एक नहर थी। एक बार उसमें एक शराबी का ट्रक गिर गया। उसने ट्रक निकालने के लिए सतगुरु जी से प्रार्थना की। गुरु जी ने अमर और बड़े बेटे को बुलाया और ट्रक निकालने का आदेश दिया। नहर बहुत गहरी होने के कारण ट्रक निकालना काफी कठिन कार्य था, पर क्योंकि सतगुरु सच्चे पातशाह ने आदेश दिया था इसलिए ट्रक तो हर हालात में निकालना ही था।

अतः हमारे पास जो जर्मनी का ट्रैक्टर था 'लैस बुलडॉग', उससे ट्रक निकालने की योजना बनाई। मैंने कहा कि एक बार यह ट्रक निकल जाए तो फिर सड़क को पक्का कर देंगे जिससे दुबारा कोई ट्रक नहर में न गिर सके। जब मैं नहर के अंदर ट्रैक्टर ले जाने लगा तब वरयाम सिंह कहने लगा कि नहर में ट्रैक्टर उतार रहे हो, बीमा आदि कुछ करवा रखा है कि नहीं। उसका मतलब था कि नहर बहुत गहरी है। इसमें जान का खतरा भी हो सकता है। उस समय सतगुरु श्री जगजीत सिंह मेरे पास खड़े थे। वह बोल पड़े। वह कहने लगे—"जब मैं इसके पास खड़ा हूं तो बीमा हुआ ही समझो।" मैंने सच्चे पातशाह का ध्यान करके ट्रक को नीचे उतारा तो जो कच्ची मिट्टी थी वह बह गई और ट्रैक्टर ने तीन बार पलटियां खाईं और फिर नहर के बीच गिर गया। ट्रैक्टर पूरी तरह मेरे ऊपर था और मैं पूरी तरह कीचड़ के बीच धंस चुका था। थोड़ी देर बाद मेरा थोड़ा-सा चेहरा दिखाई दिया। और मुझे होश आने लगा। मैं समझता हूं कि यह गुरु जी के उस वाक्य का ही प्रताप था जो उन्होंने कहा कि इसका बीमा हुआ ही समझो। जब मैं उसके पीछे खड़ा हूं। मैं समझता हूं कि यह सब सतगुरु की कृपा से ही संभव हो सका है। केवल थोड़ी सी चोट मेरे घुटने में आई थी। उसे छोड़ कर मुझे और कहीं कोई चोट नहीं आई। मैं अपने आप ही नहर से निकल कर बाहर आ गया था। उसके बाद मैंने दूसरा ट्रैक्टर लिया और नहर में गिरे हुए ट्रक को बाहर निकाल लिया। इस घटना के पश्चात गुरुदेव के प्रति मेरी श्रद्धा बहुत बढ़ गई। अब तो मैं उनके आशीर्वाद से मौत से भी भिड़ने को तैयार था। मैंने 12 साल तक सतगुरु जी की गाड़ी चलाई। या जब ये अफसर लोगों से मिलने जाते तो उनके साथ जाता था। उन्होंने मुझे इस कार्य में प्रशिक्षित कर दिया था।

दूसरे, एक ग्रुप था उसमें बाबा लालसिंह जी, सूबा डफराठिया वाले, संत चेतसिंह, विक्रम सिंह, गुरदयाल सिंह। उन्होंने सतगुरु प्रताप सिंह जी के विरुद्ध

एक मुआमला अदालत में दायर किया था। उन्होंने अपनी याचिका में कहा था कि सतगुरु प्रताप सिंह जी ने जो अलाटमैंट करवाई है वह उन्हें मंजूर नहीं। इस दूसरे ग्रुप के समर्थन में कुछ राजनीतिक तत्व थे जो इस ग्रुप की सहायता कर रहे थे। उन लोगों की सहायता के कारण हम वह मुकदमा हार गए। दूसरा ग्रुप जीत गया।

ज्ञानी करतार सिंह उस समय माल मंत्री थे। वे इस ग्रुप की सहायता कर रहे थे। जब अदालत से आवाज पड़ती थी कि 'ग्रुप नंबर एक' तो उस समय सतगुरु प्रताप सिंह जी उनकी जगह पेश होते थे। सरदार अवतार सिंह करीवाला नंबरदार नामधारी ग्रुप जब आवाज लगती तो विक्रम सिंह के नाम से आवाज लगती थी। इसका नतीजा यह हुआ कि वे लोग जीत गए। जीतने के बाद विक्रम सिंह ने कहा जिस तरह से प्रताप सिंह इधर आया है, उसी तरह लौटा और सेहरा लेकर इसको यहां से भागना है। इनका यहां कुछ नहीं है। मैं जानता था कि मैं उनकी गाड़ी का चालक बनकर रहा हूं सारी जमीन सतगुरु महाराज की ही थी। वे लोग गलत थे। अवतार सिंह से जब गुरु जी ने पूछा कि क्या कहा है, तो उसकी आंखों में आंसू भर आए। और कहा हम लोग हार ही गए हैं। और ये लोग कैसे हैं जो कटु वचन बोलते हैं। उस पर गुरु जी ने कहा कि ये लोग तो पागल हैं। फिर सतगुरु जी ने कहा कि इन सिखों को बसाने में मैंने अपने जीवन के 12 वर्ष कम कर दिए हैं। पर ये लोग मुझे समझ नहीं पाए। अब उनकी बातों का हमने क्या बुरा मानना है। हमने इनके लिए बहुत कुछ किया है। बहुत कुछ इनको दिया है। यदि इन्हें ऐसा करना ही अच्छा लगता है तो ठीक है। उसका परिणाम यह हुआ कि करी वाले की बात सरकार ने की। उसके अनुसार करी वाले को जमीन इधर मिली और शेखुसुरा वालों को परली ओर। और वह भी बंजर। काम सब उल्टा हो गया। वैसे उन्हें सजा ही मिली। बाबा जी ने तो क्षमा मांग ली थी। पर विक्रम सिंह के साथ जो लोग थे वे अपनी ज़िद पर अड़े रहे। सतगुरु प्रताप सिंह जी ने जो वचन किए थे उनके अनुसार बाबा जी को छोड़ कर बाकी सबके सब पागल हो गए। विक्रम सिंह और दयाल लोगों के फैंके हुए बीड़ियों के टुकड़े पीते थे। बाद में मंतचेत सिंह जो घसीटा सिंह का संबंधी था वह भी पागल हो गया। उसकी माता जो बड़ी विदुषी महिला थीं और 118 वर्ष की थीं। उसने सतगुरु जी से प्रार्थना की कि वह तो उनकी बड़ी भक्त है। पर बच्चे अलग विचारों के हैं पर आप मुझ पर इतनी कृपा करें कि आप जब भी करी वाला पधारें मुझे अवश्य दर्शन दिया करें। उसने मंतचेत सिंह को भी कहा कि यह सतगुरु जी की गद्दी पर जाकर क्षमा मांगें पर उसे बुद्धि नहीं मिली वह वैसे ही एक अनगढ़ पत्थर की भांति मूर्ख बना रहा।

एक बार गुरु जी उनके घर गए। और जब वह आने लगे तो मंतचेत सिंह का लड़का जो मोना (केश हीन) हो चुका था, उसने प्रार्थना की कि सच्चे पातशाह आप उसके पास न आइए क्योंकि वह पागल हो चुका है। गुरु जी जब उसके पास गए तो उसने चरण छूकर कहा कि अवतार सिंह से उसे पता चला है कि मुझे श्राप मिला हुआ है। इसलिए मैं जंजीरों में बंधा हुआ हूं। आप मुझ पर कृपा करें।

सच्चे पातशाह ने आदेश दिया कि इसकी जंजीरें खोल दो, कड़ियां बेड़ियां तोड़ दो। इसे मुक्त कर दो। उसे आदेश हुआ कि जिस मुंह से उसने सतगुरु प्रताप सिंह जी की निंदा की थी उसी मुंह से उनसे क्षमा याचना करे, प्रशंसा करे और एक महीने तक श्री भैणी साहब जा कर सेवा करे। वही हमारी प्रार्थना का स्थान है। सतगुरु जी के चरणों में जाकर माथा टेके तो सतगुरु जी कृपा करेंगे। उनकी कृपा के बिना कुछ होने का नहीं है, वही कर्णधार हैं। सब की नैया जैसे नाविक के बिना पार नहीं हो सकती इसी प्रकार सतगुरु जी की कृपा के बिना कल्याण नहीं हो सकता। बस गुरु कृपा होनी थी। सो हो गई। वह बिलकुल स्वस्थ हो गया और स्वस्थ होकर ही प्राण त्याग किया। सच्चे पातशाह सतगुरु जगजीत सिंह जी की कृपा से ही उसे मुक्ति मिली।

प्रश्न : यह घटना सतगुरु प्रताप सिंह के कितने समय बाद घटी?

उत्तर : 1960-70 की बात है जब सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज ने मुझे पावर आफ अटार्नी दी। उसके बाद जितना भी उनका कारोबार था, चाहे कोर्ट-कचहरी का हो या जमीन जायदाद का, या लेन-देन का था या सरप्लस झगड़े का वह सब मैं, सरदार अवतार सिंह, सरदार हरि सिंह 13-14 साल तक संभाले रहे। सरदार अवतार सिंह के निधन के बाद महाराज वीर सिंह का मुखत्यारनामा भी मुझे ही दिया गया। मैं काम करता रहा। 1948 में जब हम भारत आ गए थे। उधर शरण सिंह नाम का एक व्यक्ति जो जिला सयालकोट का रहने वाला था। उसने सतगुरु प्रताप सिंह जी से प्रार्थना की कि उस पर वह कृपा करें और उसका कष्ट दूर कर दें।

सतगुरु श्री प्रताप सिंह जी ने उसकी प्रार्थना सुनी, निरंकार का ध्यान किया और फिर आदेश दिया कि इसकी कुटिया बाहर वाले जोहड़ के पास बना दी जाए। इसे प्रसाद आदि भी वहीं भिजवाया जाए और यह दिन में दो बार वहीं स्नान भी किया करे। यह एक चमत्कार हो गया। वह कुष्ठ से पूर्णतया मुक्त हो गया। कहते हैं, कबीर के पुत्र कमाला ने किसी कुष्ठी को देखा तो उसे दया आ गई। उसे कमाला ने गंगा में तीन बार राम नाम का स्मरण करके डुबकी लगाने के

लिए कहा। उस कुष्ठी ने कमाला के कथनानुसार तीन बार राम नाम का स्मरण करके गंगा में डुबकी लगाई। जब तीसरी डुबकी लगी तो वह व्यक्ति कुष्ठ मुक्त हो चुका था। लोगों ने इस घटना के बारे में कबीर से बात की और कमाला की प्रशंसा करते हुए इस चमत्कारी घटना के बारे में कह सुनाया। यह सुनकर कबीर बड़े नाराज हुए। वह कहने लगे, "कमाला ने राम नाम को बड़ा सस्ता समझ लिया है। सच्चे दिल से एक बार राम का नाम लेने से तीन लोकों के समस्त रोग दूर हो सकते हैं और इस नालायक ने एक रोगी का कुष्ठ निवारण करने के लिए तीन बार राम नाम का प्रयोग करवाया। उसी प्रकार सतगुरु प्रताप सिंह जी स्वयं सर्वरोग हर महौषध थे। यदि उन्होंने किसी कुष्ठी को रोग मुक्त करने के लिए कोई आशीर्वाद दिया तो वह रोग मुक्त क्यों न होता। सतगुरु का नाम ही एक दिव्य महौषध है। सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह उस कुष्ठी की कुटिया के पास भजन करते रहे। ध्यान करते रहे और उनके इस दिव्य उपचार से वह रोगी अच्छा हो गया। सतगुरु जगजीत सिंह जी उस कुष्ठ रोगी के लिए स्वयं तालाब मे कुटिया डाल कर भजन करते रहे। एक दिन सतगुरु प्रताप सिंह जी ने मुझे पूछा कि काका (सतगुरु जगजीत सिंह) किधर है। दिखाई नहीं दिया तो मैंने उन्हें सच्चाई बताई कि वे तो तालाब के बीच में बनाई गई कुटिया में रात को 10 बजे जाते हैं और वहां भजन करते रहते हैं, फिर रात को 12 बजे लौटते हैं। सतगुरु जगजीत सिंह जी के साथ बसंत सिंह पांवडे वाला रहता था जो रात को तालाब में बनी कुटिया में उनके साथ ही जाता और साथ ही वापिस आता था। जाता तो मैं भी था पर जैसे ही सतगुरु भजन करने लगते मैं आकर सो जाता था। वह कुष्ठ का रोगी तो अच्छा ही हो गया। सतगुरु महाराज की कृपा से उस जड़ योनी जोहड़ के भी भाग्य खुल गए। लोग उसे पवित्र मानने लगे। उस पर जाकर स्नान करने और मन्नतें मानने लगे।

सतगुरु महाराज का समस्त जीवन चमत्कारों से भरा हुआ है। वे पत्थर को परमेश्वर बनाने की क्षमता रखते हुए भी साधारण दिखाई देते हैं।

हमारे पास राईयां नाम का एक गांव है। उसमें दो भाई हैं। उनमें एक सरदार दरबारा सिंह सतगुरु प्रताप सिंह का मुखत्यार होता था। उसका दूसरा भाई हमारे एक विद्यालय में अध्यापक था। सतगुरु श्री जगजीत सिंह चाहते थे कि उनकी आधी जमीन इधर और आधी राईयां में हो। शेर सिंह उधर रहे और तेजा सिंह इधर राईयां में। तेजा सिंह इस बात पर अड़ा हुआ था कि उसने इधर वाली जमीन लेनी है और उधर वाली नहीं। अंत में फैसला यह हुआ कि किस को कौन-सी जमीन मिले इसका फैसला लाटरी द्वारा किया जाए। इस पर गुरु जी मुस्कराकर

कहने लगे कि लाटरी वही करेगी जो हम कहेंगे और हुआ भी वही। लाटरी की पर्चियां डाली गईं। जब पर्ची निकाली गई तो तेजा के पक्ष में वही पर्ची निकली जो परली तरफ की जमीन की थी। तब से सभी गुरु जी के चमत्कार का लोहा मानने लगे।

सतगुरु जी ने मुझे आदेश दिया कि आज नित्य नियम के समय सभी संगत श्री जीवन नगर में आए। सतगुरु के आदेश के अनुसार जब सारी संगत आ गई तो सच्चे पातशाह कहने लगे कि आज तक सारी संगत ने मेरी आज्ञा का पालन किया है। मैंने जो कुछ भी कहा उसने मेरी आज्ञा को शिरोधार्य किया। इस प्रकार संगत ने मुझ पर बड़ी कृपा की है। अब मेरा शरीर निर्बल हो गया है। काया कृश हो गई है इसलिए मैं सारा काम और उत्तरदायित्व बड़े बेटे को सौंपता हूं। यदि किसी को कुछ कहना है तो कह सकता है। पर किसी को यदि रहना है तो वह काके की आज्ञा से ही। यदि किसी ने नहीं रहना तो वह भी मुझे बता दे। मेरे तीन स्थान हैं, मंडी, श्री जीवन नगर और श्री भैणी साहब जो जहां चाहे रह सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि वे काके (सतगुरु श्री जगजीत सिंह) जी को जो भी कहेंगे वह मोड़ेगा नहीं। पर आज के उपरांत रहना काके की आशा पर ही निर्भर करेगा। जब सतगुरु ने यह हुकम सुनाया तो संत कृपाल सिंह नारली बोला। सुरजन सिंह टोरियां वाले और सरदार चरण सिंह सुधराज ये सभी लोग वहां उपस्थित थे। सच्चे पातशाह सतगुरु प्रताप सिंह जी ने एक बार फिर घोषणा की कि मैंने अपने सारे अधिकार बड़े काके को दे दिए हैं। अब वह जाने और उसका काम।

उसके बाद सच्चे पातशाह ने दर्शन नहीं दिए। ये उनके आखिरी वचन थे जिन्हें याद रखने वाले 35-40 व्यक्ति अब भी हैं। अब सतगुरु सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह जी महाराज ही सब कुछ हैं। संसार तथा समाज कल्याण की भावना से वह सदा ओतप्रोत रहते हैं।

सतगुरु ईश्वरावतार हैं

—संत गोपाल सिंह

प्रश्न : संत जी! आप इस बात में विश्वास करते हैं कि सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज स्वयं ईश्वर का ही अवतार हैं। क्या आप उनके संपर्क में रहकर अपने अनुभव और प्रत्यक्ष दर्शन के बारे में बताने की कृपा करेंगे जिससे और लोग भी इन घटनाओं को जान सकें?

उत्तर : सतगुरु जी, जैसा आपने स्वयं ही बताया है, ईश्वरावतार हैं। उनकी इच्छा के बिना कोई कार्य नहीं हो पाता। जैसा कि गुरुवाणी में गुरु नानक देव ने कहा कि 'हुकम बिना झूले नहीं पाता'। वह उक्ति उन पर अर्थात् सतगुरु जी पर पूरी तरह से पूरी उतरती है। मुझे याद है कि सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी एक बार मालावाड़ा में पधारे। वहां उन्होंने मालवा के अस्तवला में एक मंदिर बनवाया। जब वह मंदिर बनने लगा तो अनेक राज-मजदूर काम पर लगाए गए। मंदिर का निर्माण हो रहा था। छत डलनी थी। और छत के लिए पहले गार्डर ठीक ढंग से रखे जाने थे। मिस्त्री और राज लोग जब भी गार्डर चढ़ाने लगते। गार्डर ठीक से अपनी जगह नहीं बैठते थे। वे छोटे प्रतीत होते थे। उन लोगों ने अनेक यत्न किए, जोर लगाया। और मजदूर बुलाए गए पर गार्डर ठीक प्रकार से अपने स्थान पर नहीं बैठ पाए। पूरे नहीं हुए। हार कर उन्होंने उस दिन के लिए काम बंद कर दिया कि सुबह होने पर फिर यत्न करेंगे। कुछ मित्र राज लोग तो चिढ़ भी गए कि गार्डर तो ठीक नहीं बैठा है। निराश होकर वे सब सतगुरु जी के पास गए। अपनी समस्या बताई। उनकी बात सुनकर सच्चे पातशाह मुस्करा उठे। और कहने लगे कि आप लोग उन गार्डरों को अदल-बदल करके लगाइए। बस सतगुरु महाराज का इतना कहना था कि गार्डर ठीक अपने स्थान पर बिना किसी रुकावट और मेहनत के बैठ गए। उनकी लंबाई पूरी हो गई। किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई, मंदिर का निर्माण पूरा हो गया। इस घटना को घटे अनेक वर्ष हो गए हैं पर यह चमत्कार भूलने में नहीं आता।

इसी प्रकार हमारे यहां नाली नाम का एक इलाका है। उस इलाके में लोधकर नामक एक दरिया बहता है। एक बार वर्षा अधिक हुई और उस नदी में बाढ़ आ गई। बाढ़ आने से आस-पास के इलाके में पानी भर गया। लोग बड़ी असुविधा का अनुभव करने लगे क्योंकि चारों ओर पानी भर जाने का खतरा बन गया था। ईश्वर विश्वासी व्यक्ति तो अपने प्रभु पर ही विश्वास करता है। अपनी फरियाद

उसी को सुनाता है। इस विपत्ति के बारे में सतगुरु को बताया गया। सतगुरु जी उठे और गाड़ी में बैठकर सारे नाली क्षेत्र का चक्कर लगाया। बस ईश्वर कृपा हो गई और पानी उतर गया। जो पानी इकट्ठा हो गया था वह उधर-उधर चला गया और सब खतरा टल गया।

जो महानुभाव लोहे के गार्डर बिना छुए लंबे कर सकते हैं। अपनी इच्छा मात्र से नदी की बाढ़ रोक सकते हैं वही ईश्वरीय गुणों से परिपूर्णत हैं वही भक्त वत्सल हैं। वही शिव हैं। वही शंकर हैं। क्योंकि शिव का अर्थ भी कल्याणकारी ही होता है। और शंकर भी कल्याण कर्ता ही हैं।

मुझ से गलती हो गई मुझ पर कृपा करो

—कवि गुरबख्श सिंह

प्रश्न : कवि गुरबख्श सिंह जी! आप से प्रार्थना है कि आप सतगुरु सच्चे पातशाह के बारे में अपने अनुभव सुनाने की कृपा कीजिए।

उत्तर : श्रीमान जी, घटनाएं तो अनेक हैं। सतगुरु जी की कृपा से असीम हैं। उनकी कृपाओं के विवरण असंख्य हैं। उनकी कृपा से ही मेरे जीवन में सुधार आ गया। उसी घटना का विवरण मैं आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूं। वह इस प्रकार है :

मेरी माता जी ने रोज कीर्तन करना शुरू कर दिया था। मेरा उस समय बचपन था। अभी मेरी शादी भी नहीं हुई थी। मेरे कानों में रोज वैराग्य के विचार सुनाई पड़ने लगे थे। भले ही मैं भोजन कर रहा होता या और किसी कार्य में व्यस्त होता, मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मेरी माताजी मुझे वैरागी बना कर ही छोड़ेंगी। उस समय सतगुरु जी चले गए थे। मैं अपने आपको असहाय सा समझने लगा था। कोई संभालने वाला नहीं था। सभी लोग समझते कि अब यह मर ही जाएगा। इधर रोज वैराग्यपूर्ण शब्द सुना-सुना कर माता जी ने मेरा तन-मन वैराग्यपूर्ण बना दिया था। सतगुरु प्रतापसिंह जी महाराज ने माता जी को 12 राग लिखवाए थे। जिन्हें सुन-सुन कर मेरा मन रोने लगता था। फिर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि सतगुरु गाड़ी मे विराजमान हैं और बहुत सुन्दर लग रहे हैं। उन्होंने सभी का मन मुग्ध कर दिया है। फिर मैंने देखा कि वह बाई भी इधर ही आ रही है। मेरी माता और मेरी छोटी बहिन कहने लगी कि सतगुरु जी श्री जीवन नगर से आए हैं चलो उनके दर्शन कर लें। वैसे तो नई गुड़िया और नये उसके वस्त्र हैं ऐसा कह करके उन्होंने याद किया। उनकी बातों पर मुझे फिर क्रोध आया। माता जी नाली पार करके उस तरफ गईं। थोड़ा सा पानी इधर-उधर होता ही था। श्री जीवन नगर की कोठी के दो द्वार हैं। परला दरवाजा पशु शाला की तरफ है। भोजनालय लंगर का प्रबंध भी उसी ओर ही है। इधर सच्चे पातशाह की पुरानी कोठी थी। उस समय वे ही थे। उस भवन में बिल्कुल नई सीढ़ियां थीं और उसी ओर से लोग चढ़ कर ऊपर आ रहे थे। फिर एक आवाज आई, ''कुड़िये मुझे पहचान!'' उसका उत्तर जो मिला वह यह था, ''सतगुरु महाराज श्री प्रताप सिंह जी के पास जब जाओगे तो पूछ लेंगे। बड़ा सुख मिलेगा मुझे इससे। मुझे उनसे कुछ पूछना भी है।'' सतगुरु अंतर्यामी थे। वे सर्वज्ञ थे। सब कुछ जानते थे।

धरा आमलक थी पृथ्वी उनके लिए। अर्थात् जिस प्रकार हथेली पर मामला रखा हुआ, मनुष्य सभी प्रकार से उसे देख सकता है उसी प्रकार सतगुरु जी इस सारी पृथ्वी को देख सकने की शक्ति रखते हैं। वे उसी द्वार के पास जा पहुंचे जिधर से होकर हम अंदर आए थे। वे कहने लगे माई तू बाहर से आई है। तू डेरे से आई है। माई को सतगुरु जी ने जैसे पहचान लिया था। जब माई को लगा कि सतगुरु जी ने उसे पहचान लिया है तो वह मस्ती और खुमारी में आ गई। माई ने समझ लिया कि जो सतगुरु मुझसे दूर गए थे इसी ज्योति में विद्यमान हैं। और वही दृश्य मेरी आंखों के सामने आ गया था। फिर माई घर गई और सच्चे पातशाह की भूरि-भूरि प्रशंसा करती रही। अंतिम समय तक माई के मुख पर जो शब्द थे वे सतगुरु जी की प्रशंसा से ही भरे थे। वह अंतिम श्वास तक सतगुरु जी की प्रशंसा से ही भरे थे। वह अंतिम श्वास तक सतगुरु का यशोगान करती रही। उसके मन में जैसे गीता का यह श्लोक रम गया था :

यो माम् पश्यति सर्वत्र,
सर्वत्र मयि पश्यति।

अर्थात् भगवान गीता में कहते हैं, जो मुझे सब जगह देखता है, मैं भी उसे सब जगह देखता हूं।

दूसरी घटना भी कुछ इसी प्रकार की है, इस घटना के कारण बहुत सुन्दर शुरूआत हो गई। हमारे यहां के युवक वर्ग में बड़ा उत्साह था। सतगुरु उन्हें उत्साहित करते रहते थे। उन्होंने युवकों के शिविर भी लगवाए जिससे सभी युवक उन्हें बहुत अधिक स्नेह तथा सम्मान देने लगे। एक दिन संत गोपाल सिंह जी से मेरी भेंट हो गई। वे सतगुरु प्रतापसिंह जी की जीवनी लिख रहे थे। मेरा मन बनाने के लिए उन्होंने सतगुरु जी का सुन्दर विवरण सुनाया। वह कहने लगे कि जब सतगुरु प्रताप सिंह जी प्रस्थान कर गए तो मन उदासीन रहने लगा। सतगुरु उस समय उधर नहीं थे। अब प्रश्न यह था। कि सतगुरु प्रताप सिंह जी के दर्शन कैसे किए जाएं। एक रात सच्चे पातशाह ने मुझे सपने में दर्शन दिए और कहा कि तुम जहां भी बैठे हो मैं तुम्हें देखता हूं। तुम जो कुछ करते हो मुझे उसका भी ज्ञान रहता है। उनकी इस वाणी से प्रभावित होकर मैंने सब कुछ उन्हें सौंप दिया। उसी समय ठाकुर संत कहने लगे,''मुझसे गलती हो गई। मुझ पर कृपा करो।'' सतगुरु प्रताप सिंह संत गोपाल सिंह जी से कहने लगे। फिर उन्होंने कहा कि वे दीवान खाने में नहीं जाते थे। दीवान में जाकर माथा टेकने से मेरा मन संकोच करने लगा। अब क्योंकि संत गोपाल सिंह जी ने बताया था तो वह वहीं खड़े रह गए। मन में असमंजस का वातावरण बन गया कि माथा टेकूं या नही।

फिर मैंने निश्चय करके मन को एकाग्र किया और माथा टेक दिया। जैसी ही मैं माथा टेकने लगा तो प्रतीत हुआ कि सतगुरु प्रताप सिंह की ज्योति सतगुरु जगजीत सिंह जी का रूप धारण करके सिंहासन पर विराजमान है। मेरा सिर एक बार फिर सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी के चरणों में झुक गया। मैंने अनुभव किया कि पहले मेरा मन बड़ा चंचल रहता था। संत गोपाल सिंह की कृपा मुझ पर तीन बार हुई। कभी सतगुरु जगजीत सिंह जी सतगुरु प्रतापसिंह जी बन जाते। फिर सतगुरु जगजीत सिंह जी ने कहा तो मेरा मन बड़ा प्रभावित हुआ कि सतगुरु जगजीत सिंह जी की मेरे प्रति इतनी प्रीति और स्नेह कैसे हो गया। सतगुरु जगजीत सिंह जी भी मुझे प्रदान करने लगे। ये दोनो एक ही प्रकाश के दो स्तम्भ हैं। जो अपने भक्तों के हृदयाकाशा को आलोकित करते रहते हैं।

वोटों के मामले में साहब का ही हुकम चलता है

—संत दीप सिंह

प्रश्नः संत जी आप पर सतगुरु महाराज सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह की बड़ी कृपा रही है। आप उनकी अपार कृपाओं के आधार पर कोई अपने साथ बीती घटना सुनाने की कृपा कीजिए।

उत्तरः पाकिस्तान बनने से पुर्व संत दीप सिंह जी बताते हैं कि वे शेखुपुरा में एक गांव में रहते थे। शेखुपुरा में कर्मपुरा जिले के सैनिक भी रहते थे। वहां इनका खेती का काम था। वहां अपनी कोई मंडी नही थी। वहां चुनाव आदि तो होते नहीं थे। बड़े लोगों जैसे नंबरदार आदि का हुकम चलता था। पंचायती चुनाव की कोई व्यवस्था नहीं थी। जब कोई चुनाव का कार्यक्रम बनता था और जिसके पक्ष में वोट होते थे, तो साहेब का ही हुकम चलता था। गांव में एक व्यक्ति जाता था। और कह देता था कि साहेब का यह आदेश है। वही हुकम मान कर हम वोट डाल देते थे। होता यह था कि जिसकी जमीन पर हम काम करते थे अगर साहेब का हुकम मान कर हम दूसरे किसी के पक्ष में वोट डाल देते तो वह व्यक्ति जिसकी जमीन पर हम कार्य करते थे वह नाराज होकर जमीन वापस ले लेता था और कह देता कि जिसे वोट दिया है उसी से जमीन जाकर लो। इस बात का बड़ा कष्ट होता। इधर आकर साहेब से 500 मरब्बा जमीन खरीदी। उस समय साहेब का वहां आदेश चलता था। साहेब ने हुकम दिया कि इधर चले आओ तो कुछ लोग साहब की ओर चले गए। कुछ नहीं भी आए। जब पाकिस्तान बना तो कुछ लोग इधर आ गए। और इस प्रकार हम यहां पर आकर रहने लगे। यहां दो गांव थे एक सेता और दूसरा धर्मपुरा। हम सेता से यहां आकर बस गए। यहां पर शेखुपुरा के लोग अधिक हैं। यहां साहेब ने उन्हे मुफ्त में जमीन दी है। साहेब ने हमें जमीन और पैसा बहुत दिया, जमीन भी जो दी वह नहरी है। जिन्हें नहरी जमीन मिली है वे बादशाह बने फिर रहे हैं।

बाद में पंचायत बननी शुरू हो गई। साहेब ने कहा कि गांव में मैं चुनाव नहीं होने दूंगा। समिति से पंचायत के सदस्य बनाए जाएंगे। इसके बाद उन्हें सरपंच बना दिया गया। संत दीप सिंह जी ने ढ़ाई वर्ष तक सरपंची की। इसके बाद सतगुरु जी की फिर आज्ञा हुई कि वह सरपंची छोड़ दें। मैंनं जाकर प्रार्थना की

कि यह सरपंची आपकी है। आप जिसे भी चाहें उसे दीजिए। त्वदीयं वस्तु गोविंद! तुभ्यमेव समर्पये।

मैं सरपंची छोड़ कर आ गया। उसके बाद हमारे ही गांव के एक व्यक्ति को सरपंच बनाया गया। पांच साल के पश्चात फिर पार्टियों तथा दलों ने जोर पकड़ा और मुझे कहा गया कि तुम्हें फिर सरपंच बनना है। साहेब की भी फिर आज्ञा हुई कि मुझे फिर सरपंची संभालनी है। सतगुरु महाराज श्री जगतजीत सिंह ने फिर हुकम दिया कि मुझे सरपंची का पद फिर ग्रहण करना है। मैं फिर प्रत्याशी बनकर खड़ा हुआ। चुनाव हुआ। वोट डाले गए। जब वोट गिने गए तो मैं 13 वोटों से जीत गया। सच्चे पातशाह श्री जगजीत सिंह की मुझ पर बहुत कृपा है। यहां वहां से जो भी बिना-जमीन के आया था। उस पर बड़ी कृपा हुई।

फिर अमृतसर जिले में उनका ही एक व्यक्ति आया। बाद में वह दूसरी पार्टियों के साथ मिल कर साहब के खिलाफ हो गया। वह सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह के खिलाफ बोलता था। साहेब ने हुकम दिया कि संत की बात सुनो। चारों पहर उनकी बातें होती रहीं। वहां बात नहीं सुनी गई। वह व्यक्ति झूठ ही कहता रहा। शाम चार बजे तक बातें होती रहीं। मैं इनके कहने पर ही उनके साथ गया था। वहां आने पर पूछा कि संत जी अब क्या कार्यक्रम है और क्या इनके विरुद्ध कोई अभियोग है। संत जी कहने लगे कि कोई बात नहीं थी। सारा मुआमला निराधार था। कि सतगुरु जगजीत सिंह जी की आज्ञा से ही यहां कोई रह सकता है। यह परम कृपालु हैं। हर प्रकार से अपने भक्तों की सहायता करते हैं। उन्हें दु:ख संकट से उबारते हैं। संत दीप सिंह कह रहे हैं कि वे तीन साल पहले की कोई घटना आपको बता रहे हैं कि उनका शरीर अस्वस्थ हो गया तथा पेशाब आना बंद हो गया। जब कष्ट अधिक बढ़ गया तो डाक्टर को दिखाया गया। डाक्टर ने भी देख कर जवाब दे दिया। वे फिर लुधियाना गए और वहीं उनका आप्रेशन हुआ। उस समय सतगुरू महाराज शायद थाईलैंड में थे। सच्चे पातशाह को वहीं बैठ पता चल गया कि संत दीप सिंह का ऑप्रेशन हुआ है तथा कष्ट अधिक हो गया है। सतगुरु जी ने वहीं से डाक्टर को फोन किया और किसी भी प्रकार से रोगी की प्राण रक्षा का आदेश दिया। सतगुरु महाराज की अपार दया से शरीर बच गया। रोग जाता रहा। स्वास्थ्य लाभ हुआ। उन्हें अब पूर्ण विश्वास है कि उनकी प्राण रक्षा स्वयं सतगुरु जी ने ही की है।

हरिनाम के जाप में कष्ट कैसा?

—संत तेगा सिंह

प्रश्न: संत जी! आप कृपया अपना नाम बताइए?

उत्तर: श्रीमान जी मुझे तेगा सिंह नाम से लोग जानते है।

प्रश्न: आपके पिता श्री का नाम?

उत्तर: श्री केसर सिंह।

प्रश्न: इस ओर उस ओर के गांवो का नाम बताने की कृपा कीजिए?

उत्तर: उधर के गांव का नाम समसा था जो जिला शेखुपुरा में पड़ता था और अब वह पाकिस्तान में चला गया है। और इधर के गांव का नाम बुड़ीमाड़ी है।

प्रश्न: संत जी सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की आप पर अपार कृपा रही है। आप कृपया अपने कुछ अनुभव बताने का कष्ट करें।

उत्तर: आपने कष्ट शब्द का प्रयोग किया। सतगुरु जी तो स्वयं ईश्वरावतार हैं और ईश्वर का नाम स्मरण करना जाप कहलाता है। फिर हरिनाम के जाप में कष्ट कैसा। वैसे आपने जो आज्ञा की है मैं उसका पालन करता हूं। मैं एक बार अस्वस्थ हो गया था। बच्चे तथा परिवार के अन्य सदस्य कहने लगे कि चिकित्सा यहीं पर करवाऐंगे। मैंने विचार भिन्नता बताते हुए उन्हें कहा कि सबसे पहले मुझे आप सतगुरु जी के चरणों में ले चलो। मेरे अंदर कोई पथरी अथवा फोड़ा हो गया था। जिसका मुझे बहुत कष्ट था। परिवार के लोगों को पता था कि डाक्टर लुधियाना में है इसलिए ये लोग मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे वहीं ले गए। डाक्टर को दिखाया गया। डाक्टर ने बड़े ध्यान से देखा। मैंने डाक्टर को बताया कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे में खून की कमी हो गई है। और पेशाब भी रुक जाता है। इसलिए कष्ट बहुत है। छोटा बच्चा मेरे साथ था। मुझे अपना कष्ट देखकर लगता था कि मैं बच नहीं पांऊगा। मेरी दृष्टि भी दुर्बल है। दूर से दिखाई नहीं देता। इसलिए आप मुझे वहीं रख लो।

प्रश्न: आप इस समय कितनी आयु के हैं?

उत्तर: इस समय मेरी आयु 85 वर्ष की है। वहां मेरा ऑप्रेशन किया गया। और पेशाब की नली लगा दी साथ यह भी कहा कि इसका ऑप्रेशन बाद में होगा। पर बाद में ऑप्रेशन हुआ नहीं। हम वहां 13 दिन रह कर वहां से आ गए।

प्रश्न: तो फिर आपका पेशाब का ऑप्रेशन नहीं किया गया?

उत्तर: नहीं पेशाब का ऑप्रेशन नहीं किया गया। जो ऑप्रेशन किया था वह सफल हो गया। डाक्टर अमृतसर से था। और वहां हमारा रहना मुश्किल था। डाक्टर का कहना था कि यदि आप यहां नहीं रह सकते तो चले जाइए। वे मुझे दवा आदि देने लगे और फिर पेशाब जो बंद था वह सतगुरु जी की कृपा से खुल गया।

प्रश्न: यह काम बिना ऑप्रेशन के ही हो गया।

उत्तर: हां, जाको राखे साईयां मारि सकै न कोय। बाल न बांका करी सकै जो जग वैरी होय। भगवान स्वयं जिसकी रक्षा करने को तैयार हो जाए उसे कौन मार सकता है। प्रभु ने बड़ी कृपा की और यह शरीर अच्छा हो गया। बाद में पेशाब खुल गया। दवा लेते रहे। उन दिनों मैं 20-25 हजार रुपये के कर्जे में डूब गया था। मेरा शरीर बहुत गिर चुका था मेरे बच्चे उठा-उठा कर जहां-तहां ले जाते थे। धीरे-धीरे मैं फिर ठीक होता गया। कोई तकलीफ नहीं रही। यह सतगुरु जी की कृपा का ही फल था। नहीं तो मेरा शरीर इतनी बड़ी बीमारी कैसे झेल सकता था।

प्रश्न: आपने क्या अपने जीवन की आशा छोड़ दी थी?

उत्तर: मेरा शरीर तो बिल्कुल निष्क्रिय होता जा रहा था। मैंने सबसे कहा कि मुझे सतगुरु महाराज के चरणों में ही पड़े रहने दो। उन्होंने जो कृपा की है वह दूसरा कोई नहीं कर सकता। यहां तक जब मेरे परिवार के लोगों ने मुझे ले जाने के लिए कहा तो गुरू जी मुस्करा कर बोल उठे, इस मिट्टी को ले जाकर क्या करोगे। उसके बाद मैं अच्छा हो गया। बस यह सतगुरु जी का ही उपकार है। ऐसा उपकार दूसरा कौन कर सकता है। मैं स्वयं ही गुरू कृपा का प्रसाद मात्र हूं। भला मैं किसी को क्या दे सकता हूं।

प्रश्न: संत जी सुना है सतगुरु प्रताप सिंह जी के साथ भी आपका संपर्क रहा। आपसे विनती है कि आप सतगुरु प्रताप सिंह जी के साथ अपनी किसी उल्लेखनीय घटना का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर: जब भारत तथा पाकिस्तान में लड़ाई झगड़ा मचा था और लड़ाई गांवों में भी फैल गई थी तो हमारा गांव सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज के कारण ही बचता रहा। एक तो मैंने वहां पर अखंड पाठ कराया था और दूसरे चूड़काने में अरदास कराई थी। वहीं पर हमारी एक बहिन रहती थी। अनाज की कमी के कारण सोचा कि एक बोरी अनाज ले लिया जाए। वहां खाने के लिए अनाज नहीं था। चूड़काने में घूमने के लिए निकले। पर पता नहीं था कि आगे पुलिस बैठी

हुई है। पुलिस ने हमें पकड़ लिया।

प्रश्नः पुलिस मुसलमान थी क्या?

उत्तरः नहीं मुस्लिम मिलिट्री पुलिस थी। वहां पर एक छोटा अफसर था। और एक बड़ा अफसर । हम चार व्यक्ति थे। हमने उन्हें सैल्यूट दी। उन्होंने पूछा,''तुम लोग किधर जा रहे हो? मैंने कहा कि घर में अनाज नहीं है, खाने के लिए। इसलिए अनाज लेने जा रहे हैं। हमारे गांव में अनाज नहीं है। इसीलिए हम यहां आ गए हैं। छोटा अफसर कहने लगा कि हम तुम्हें अनाज देंगे। मुझे लगा कि यह हमारी पिटाई करेगा। मैंने कहा कि हमारी एक प्रार्थना है। वह यह कि आप पहले यह बात सुन लो बाद में आपके जी में जो आए सो करना। हम उजड़ कर बेघर हो गए हैं। हमारे पास खाने के लिए अनाज नहीं है। यह राशि है हमारे पास आप हम पर दया करो। हमें मत मारो। यह पाप मत करो। सतगुरु आपका भला करेंगे। उसने हाथ उठाने का संकेत किया पर मुझे लगा कि सतगुरु जी ने मुझे भजन करने का संकेत किया है। इसलिए मैं भजन करता रहा। मैंने अफसर से कहा कि हमें क्यों मारते हो। तुम भी बाल बच्चों वाले हो। तुम हमें दाना देने के लिए मारना चाहते हो। हमने भूख से विलख-विलख कर ऐसे ही मर जाना है। अफसर कहने लगा तुम दो तो चले जाओ। पास में ही एक गांव था। वहां मेरा एक व्यक्ति परिचित था। मैंने अफसर से कहा कि आप जिस व्यक्ति का भी कहो मैं शहर से अपने साथ ले आता हूं। पर आप मुझे मारना नहीं। मुझे पर दया करो। इस बात पर वह कुछ नरम हो गया। उसने सोचा अच्छे लोग भी इस दुनिया में हैं। सारे ही बुरे या खराब नहीं हैं। मैं समझता हूं यह रक्षा हमारी किसी ने की है तो वह सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज ने ही दूसरे किसी ने नहीं। नहीं हम उसी समय ही मार दिए जाते।

प्रश्नः क्या उस समय सबको मार दिया जाता था?

उत्तरः उस अफसर ने बहुत से लोगों को जान से मार डाला था।

प्रश्नः संत जी! आप भारत कैसे पहुंचे।

उत्तरः हुआ यह कि अनाज लेना तो हम भूल गए। घर पहुंचने पर हमारी बहिन रोने लग पड़ी। वह कहने लगी आप अच्छे अनाज लेने गए कि लौटने से रहे। हमने उसे सारी बात बताई और कहा कि सतगुरु जी यदि कृपा न करते तो आज हम मार दिए गए होते। हम निंरतर भजन करते रहे। पर अंतिम भजन आपके साथ करना है। इसको आप ध्यान से सुन लीजिए। पाकिस्तान बन गया था। उनके गांव बड़े छोटे पाकिस्तान में आ गए थें। भागम-भाग मची हुई थी। लोग ट्रकों गाड़ियों में अपना-अपना सामान उठा कर भाग रहे थे। बहुत अराजकता

जैसी स्थिति बनी हुई थी। बहुत लोग मारे जा चुके थे। मैने एक घोड़ी ले ली। और निकल पड़े। मेरे भाई के पास गाड़ी थी पर मेरे पास घोड़ी थी। पैसा हमारे पास बहुत था। और घोड़ी बहुत अच्छी थी।

प्रश्न: संत जी! आपके काफिले में कितने लोग होंगे?

उत्तर: कोई 6 हजार।

प्रश्न: अमृतसर पहुंच कर कहां गए?

उत्तर: श्रीमान जी! भारत में पहुंच गए थे। फिर कोई चिंता प्राणों की तो रही नहीं थी। इससे पहले घोड़ी ने एक पशु होते हुए भी मेरा पूरा साथ दिया। जगह-जगह से खून भी बह रहा था। लोगों ने घोड़ी देख कर बेच देने के लिए कहा पर मैं उसके लिए राजी न हुआ। चलते-चलते हालत बड़ी खराब हो गई थी। मैं घबरा कर रोने लगा था। उस समय रात के तीन बजे थे। रात को एक आवाज सुनाई दी। आवाज कह रही थी अरे! अब रोता क्यों है। आवाज आने की देर थी कि दर्शन हो गए। आवाज कह रही थी कि पगले अब रोता क्यों है जब मैंने कहा था कि यहां से निकल जा तब तो मेरी सुनी नहीं, अब रोने लगा है। शायद मुझे ऐसे प्रतीत होने लगा था कि माता-पिता नाराज भी हो तो डांटते अवश्य हैं पर फिर सहायता का हाथ देते हैं। कबीर ने कुम्हार की उपमा देकर बड़े सुन्दर ढंग से समझाया है कि कुम्हार जब बर्तन घड़ा आदि बनाता है तो उसके दोष निकालने के उद्देश्य से बाहर से चोट है पर अन्दर सहारा रखता है कि यह बर्तत बेचारा चोट लगने से टूट न जाए। सतगुरु प्रकट हुए और कहने लगे, ''चलो अब चिंता की कोई आवश्यकता नहीं। सुबह हुई तो एक आदमी मिला। वह भी रो रहा था। मैंने कहा रो क्यों रहा है तो उत्तर मिला मर गया हूं। मैंने कहा रो मत। सतगुरु रात को मिले थे। उन्होंने बड़ी कृपा कर दर्शन दिए थे। अब तो भजन कर। भजन से सब दु:ख दूर होते हैं। कबीर फिर एक और स्थान पर कहते हैं।''

साईं अपने पीव को रीझ भजो कै खीझ,
भूमि पैर तो उपजें उल्टो सूधो बीज।

अर्थात सतगुरु महाराज का स्मरण कभी खाली नहीं जाता। जिस प्रकार किसी भी भाव से अनाज के दाने खेत में विखेरता है वह उगते अवश्य हैं भले वह दाने सीधे पड़ें या उल्टे। दिन के दस बजे फिर भाग दौड़ मचने लगी। चारों तरफ घबराहट का वातावरण छाया हुआ था। उसके बाद कहने लगे कि तुम्हारे क़ाफ़िले का पता नहीं था पर प्रबंध हो गया।

प्रश्न: मुसलमानों ने हमला नहीं किया?

उत्तर: हमला तो कर देते पर उस अफसर को कहते रहे कि हमें मत मारो।

प्रश्न: क्या भारत की सेना साथ-साथ थी?

उत्तर: हां भारत की सेना के जवान साथ में थे क़ाफ़िले में 6 हजार व्यक्ति थे। फौज के अफसर पानी नहीं दे रहे थे। मैंने आपत्ति उठाते हुए कहा कि पानी देने की मनाही नहीं है। फिर पानी क्यों नहीं दे रहे लोग। इस बात पर उनसे खूब तकरार हुआ।

प्रश्न: पानी मिल गया था? कोई दिक्कत नहीं हुई थी।

उत्तर: बाद में हमें पानी दे दिया गया। अफसर ने पानी देने के लिए कह दिया। अब घोड़ी की समस्या उत्पन्न हो गई थी। पाकिस्तान की सेना का अफसर इस बात की जिद कर रहा था कि तू तो हिन्दुस्तान का है और घोड़ी इधर की। यह तू साथ नहीं ले जा सकता। तो मैंने हंसते हुए कहा कि अगर घोड़ी लेने के लिए तू ये कानून दिखाने लगा है तो लो यह घोड़ी ले जा। इस पर सतगुरु महाराज की ऐसी कृपा हुई कि उसका मन बदल गया। उसने अपना हठ छोड़ दिया। वह कहने लगा जा तू घोड़ी अपनी साथ ही ले जा। हम चलते हुए खेमकरण आ गए। वहां पास में एक बाग था। इस प्रकार सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज की कृपा हुई और हम इस महान संकट से बचकर यहां आ गए।

सतगुरु महाराज के रंग निराले हैं

—संत हीरा सिंह

सतगुरु महाराज के रंग न्यारे हैं। इनके लिखे को कोई टाल नहीं सकता। उनके कहे में कोई फेर बदल नहीं कर सकता। कारण यह कि सतगुरु का स्थान भगवान से ऊंचा माना जाता है। क्योंकि भगवान से मिलाने वाला गुरू ही होता है। कबीर ने अपनी वाणी में स्पष्ट कहा है कि हरि अर्थात भगवान यदि रूठ जाएं तो गुरू सहायक हो जाते हैं। और यदि गुरू रूठ जाएं तो भगवान सहायक नहीं होता। उसका आंचल नहीं थामते।

ऐसा ही श्री हीरा सिंह जी से भी हुआ। श्री हीरा सिंह शेखुपुरा जिले में 'माना' नाम के गांव के रहने वाले हैं। यह स्थान अब पाकिस्तान की सरकार के आधीन है। इनके पास अपनी जमीन तो थी नहीं। दूसरों की जमीन पर खेती करते थे। वहां जब चुनाव होते पंच-सरपंच चुने जाते तो उन्हीं के आदेशानुसार वोट देने पड़ते थे। इस बार जब चुनाव हुए तो श्री हीरा सिंह ने जमीन वालों के पक्ष में वोट न देकर दूसरों के पक्ष मे वोट दे दिए। इस पर जमीनदारों ने नाराज होकर श्री हीरा सिंह की खेती जमीन वापिस ले ली। इधर देश का विभाजन हो गया था। वह गांव तथा जमीन आदि सब पाकिस्तान में चले गए थे।

सतगुरु महाराज को इस बात का पता चला तो उन्होंने 500 मुरव्वा जमीन इधर ले ली। जो लोग वहां से शरणार्थी बनकर आए तो सतगुरु ने धर्मपुर नगर और संत नगर ज़िला हिसार वालों को नहर के पास जमीन दे दी। सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी ने आदेश दिया कि चुनाव नहीं होंगे और ऐसे ही पंच-सरपंच बना दिए जाया करेंगे। सतगुरु जी ने 5 साल के लिए हीरा सिंह जी को सरपंच बना दिया। उसके बाद सतगुरु जी का कृपा हुई और हीरा सिंह जो फिर सरपंच बना दिए गए। उसके ढाई वर्ष बाद सतगुरु महाराल ने संत हीरा सिंह से सरपंची छोड़ देने का आदेश दिया। संत हीरा सिंह सरपंची छोड़कर श्री भैणी साहब चले गए और सेवा करने लगे। सतगुरु जी ने ढाई साल के बाद फिर संत हीरा सिंह को सरपंची की मदद के लिए खड़े होने का आदेश दिया। उसके बाद फिर जीत गए और सरपंच चुन लिए गए। इस तरह सतगुरु जी की इन पर अपार कृपा रही।

कुछ साल पहले की बात है संत हीरा सिंह जी की तबीयत बड़ी खराब हो गई थी। पेशाब रूक गया था। सिरसा में डाक्टरों ने कह दिया था कि

इनका उनके पास कोई इलाज नहीं है। उन्हें फिर सतगुरु जी की कृपा से लुधियाला में अस्पताल में दिखाया गया। डाक्टरों ने ऑप्रेशन कराने की सलाह दी। ऑप्रेशन हुआ। सतगुरु महाराज उन दिनों थाईलैंड में थें। उन्हें पता चला तो फोन पर कहा कि संत हीरा सिंह को ठीक करना है। सतगुरु महाराज का आशीर्वाद हुआ। ऑप्रेशन सफल हुआ। अब प्रभु कृपा से वह ठीक हैं। और स्वस्थ हैं।

साडे कुछड़ बह के साडी दाढ़ी पुटना

—संत बलदेव सिंह (श्रीजीवन नगर)

संत बलदेव सिंह, कसबा रानियां, ज़िला सिरसा के निवासी हैं, इनके साथ एक बड़ी अजीब घटना घटी, कारण कि इन्होंने अकाल पुरुष सतगुरु जगजीत सिंह जी के आदेश का उल्लंघन किया।

इनके पिता संत नारायण सिंह जी ने अपने पुत्र बलदेव सिंह को बचपन में ही सतगुरु जगजीत सिंह के चरणों में अर्पित कर दिया था तथा प्रार्थना की थी कि वे ही उसका पालन पोषण करें तथा अच्छे मार्ग पर लगाएं। गरीब नवाज सतगुरु जी ने बालक बलदेव सिंह से पूछा कि वह जीवन में क्या बनने की इच्छा रखता है। उसने कहा कि वह संगीत विद्या का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जैसा कि सबको ज्ञात ही है कि सतगुरु सच्चे पातशाह की कृपा अपने भक्तों पर अपार होती है। उन्होंने इस बालक की शिक्षा भारत के जाने माने एवं ख्याति प्राप्त संगीतकारों से दिलवाई। संगीत की विद्या प्राप्त करके वह श्री सतगुरु जी के साथ सारे विश्व में घूम कम भजन कीर्तन और सतगुरु जी की वाणी को संगीत के सुरों में ढालते रहे।

सिरसा में सतगुरु जी की हुजूरी में 25 जोड़ों के अनंद कारज संपन्न हुए। हर एक नामधारी सिख को इस बात का ज्ञान है कि इनके शादी विवाह बिना शानो शौकत एवं फिजूलखर्ची के होते हैं। इन 25 जोड़ों में से एक दूल्हे के पिता ने, जो कि सिरसा का एक बहुत बड़ा ठेकेदार था, जिसका नाम सरदार संतोख सिंह था, ने सतगुरु जी की आज्ञा एवं नामधारी धर्म के उसूलों की उल्लंघना की तथा विवाह संपन्न होने के पश्चात बहुत से लोगों को आमंत्रित कर एक बहुत ही शानदार पार्टी का आयोजन किया।

कुछ समय पश्चात सतगुरु जगजीत सिंह जी सिरसा पधारे, उस समय कुछ लोगों ने आपसे शिकायत की कि इस प्रकार संतोख सिंह ने नामधारी मर्यादा का उल्लंघन किया है। जो कि सदियों से चली आ रही नामधारी व्यवस्था को भ्रष्ट कर सकती है। सतगुरु जी ने उससे वचन किया कि वह साध-संगत से माफी मांगे तो उसे क्षमा कर दिया जाएगा। परंतु ठेकेदार जी ने माफी मांगने से इंकार कर दिया। सतगुरु जी आक्रोश में आ गए। और उन्होंने आदेश दिया कि जब तक ठेकेदार साध-संगत से माफी नहीं मांगते, तब तक कोई भी नामधारी इनके निवास स्थान पर नहीं जाएगा। सतगुरु जी का आदेश एक अकाल पुरुख का

आदेश माना जाता है, जिसका कोई भी सिख सपने में भी उल्लंघन करने का साहस नहीं कर सकता।

एक या डेढ़ वर्ष पश्चात ठेकेदार जी के घर में पोता पैदा हुआ। ठेकेदार जी ने अपने घर में फिर एक शानदार पार्टी का आयोजन किया और नामधारी साध-संगत ने इस पार्टी में सम्मिलित न होकर इसका बहिष्कार कर दिया, किंतु अज्ञानवश संत बलदेवसिंह जी अपने जत्थे को लेकर ठेकेदार जी के घर भजन कीर्तन करने चले गए।

अगली बार जब सतगुरु जी क्रमश: सिरसा एवं श्रीजीवन नगर पधारे तो उन्हें सूचना मिली कि संत बलदेव सिंह अपने रागी जत्थे को लेकर ठेकेदार जी के घर में भजन कीर्तन करने गए थे और आपके आदेश की उल्लंघना की। उन्होंने वचन किया कि रागी जत्थे वाले, जिन्होंने उनके आदेश का उल्लंघन किया है वे खड़े हो जाएं और साध-संगत से माफी मांगें। तब संत बलदेव सिंह जी घबरा गए और खड़े नहीं हुए। हालांकि उनके रागी जत्थे के बाकी लोग खड़े हो गए और सतगुरु जी से हाथ जोड़ कर माफी मांगने लगे। सतगुरु जी ने वचन किया कि उनका जत्थेदार कहां है? इतना सुनते ही संत बलदेव सिंह जी खड़े हो गए। सतगुरु जगजीत सिंह जी संत बलदेव सिंह जी को देखकर अचंभे में पड़ गए कि जिस बालक को उन्होंने इतने प्रेम से पाला-पोसा और एक महान रागी बनाया था उसने ही आज सतगुरु जगजीत सिंह जी के आदेश की अवहेलना की। सतगुरु जी की वाणी से निकला—''बलदेव सिंह सानू तेरे कोलों ए उम्मीद नहीं सी कि तू साडे कुच्छड़ बैठ के साडी ही दाढ़ी पुटेंगा।'' बलदेव सिंह जी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि सतगुरु जी मैं तो सिर्फ कीर्तन करने ही गया था। मैंने वहां से लंगर भी नहीं खाया। लेकिन उसका बातचीत का ढंग आवेशपूर्ण था। वह अनजाने में सतगुरु जी से माफी मांगने के बजाय उनसे बहस करने लगा। बलदेव सिंह जी को इस बात का आभास भी नहीं हुआ कि उसे सतगुरु जी का श्राप मिल गया है।

इस घटना के मात्र 15 दिन पश्चात ही संत बलदेव सिंह जी की दाढ़ी के बाल झड़ने शुरू हो गए। धीरे-धीरे उनका चेहरा खोदा हो गया। उन्होंने काफी इलाज किया किंतु कोई भी फायदा न हुआ। हालांकि उनके सिर के बाल सलामत रहे। बलदेव सिंह जी ने सोचा कि शायद उन्हें कोई चमड़ी की बीमारी हो गई है जिसके कारण उनकी दाढ़ी के बाल झड़ गए हैं। उन्होंने अपने चेहरे को ढ़कने के लिए ठाठा बांध लिया, तत्पश्चात उन्होंने अपने पासपोर्ट के लिए बगैर दाढ़ी के नई फोटो खिंचवाई। दो वर्षों तक उन्हें आभास ही नहीं हुआ कि सतगुरु

जी के श्राप से उनकी दाढ़ी के बाल झड़ गए हैं। वे कई हकीम वैद्यों के पास जाकर अपनी दाढ़ी का इलाज करवाते रहे, किंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

एक रात सपने में संत बलदेव सिंह जी को सतगुरु जगजीत सिंह जी ने दर्शन दिए और वचन दिया—''बलदेव सिंह, सानू तेरे कोलों ए उम्मीद नहीं सी कि तू साडे कुच्छड़ बैठ के साडी ही दाढ़ी पुटेंगा।'' बलदेव सिंह जी की नींद खुल गई, और तब उन्हें पहली बार आभास हुआ कि उनकी दाढ़ी के बाल किसी बीमारी से नहीं, बल्कि सतगुरु जी के आदेश की अवहेलना करने के कारण झड़ गए हैं। वह तुरंत श्री भैणी साहब पहुंच कर सतगुरु जी के चरणों में गिरकर रोने लगे तथा कहने लगे कि ''हे गरीब नवाज-अव्वल तो मैंने जान बूझकर आपके आदेश की अवहेलना नहीं की, यदि अनजाने में यह गलती हो ही गई है तो आप मुझे क्षमा करने की कृपा करें'', सतगुरु जी ने नाराजगी जाहिर करते हुए उसे क्षमा करने से मना कर दिया। बलदेव सिंह जी उनके चरणों में गिरकर रोते रहे और उठने से इंकार कर दिया। ऐसा करने से सतगुरु जी का मन पसीज गया और उन्होंने बलदेव सिंह जी को आदेश दिया कि वे नैरोबी (अफ्रीका) चले जाएं और वहां जाकर नामधारी गुरुद्वारे में साध-संगत की सेवा करें।

सतगुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए संत बलदेव सिंह जी नैरोबी चले गए और अपनी पत्नी से कह गए कि यदि उनकी दाढ़ी के बाल वापिस आ गए तो भारत लौटेंगे अन्यथा नहीं लौटेंगे, हालांकि उन्हें विश्वास था कि सतगुरु जी उन्हें क्षमा कर देंगे, क्योंकि वह क्षमा की मूर्ति हैं। कुछ समय पश्चात बलदेव सिंह जी नैरोबी से दारोस्लाम गए, जहां कि होला मनाने के लिए सतगुरु जगजीत सिंह जी पधारे हुए थे। बलदेव सिंह जी को अफ्रीका आए हुए दो साल हो चुके थे। बलदेव सिंह जी सतगुरु जी के चरणों में गिर पड़े और रोते हुए प्रार्थना करने लगे—''हे सतगुरु, सच्चे पातशाह, आप ही अकाल पुरुख हैं और आप ही मुझे क्षमा कर सते हैं।'' सतगुरु जी ने वचन दिया कि वह गाय के दूध का घी लेकर अपने पैरों के तलुओं पर मलें तो उसकी दाढ़ी के बाल वापिस आ जाएंगे।

सतगुरु जी के आदेशानुसार बलदेव सिंह जी ने गाय के दूध का घी लिया और अपने पैरों के तलुओं पर मलने लगा। ऐसा करने से उसकी दाढ़ी के बाल धीरे-धीरे उगने शुरू हो गए। परंतु एक समस्या पैदा हो गई कि जवानी की अवस्था में ही बलदेव सिंह जी के दाढ़ी के बाल सफेद निकले। बलदेव सिंह जी ने फिर सतगुरु जी से अर्ज की कि ''हे गरीब नवाज, आपने काली दाढ़ी ली थी और वापिस सफेद दाढ़ी दे रहे हैं?'' सतगुरु जी ने वचन किया—''तेरी काली दाढ़ी तो अशां किसी हौर नू दे दी है, हुण सफेद दाढ़ी नाल ही गुजारा कर। और

दो महीने बाद भारत वापिस आंई।" इसके बाद दो महीने में उनकी दाढ़ी के बाल आ गए। उन्होंने भारत वापिस लौटने के लिए पासपोर्ट के लिए फिर नई फोटो खिंचवाई और वापिस भारत लौट आए।

संत बलदेव सिंह जी को एक बहुत पुरानी घटना भी अच्छी तरह याद है जबकि सतगुरु जगजीत सिंह जी सेठ त्रलोक सिंह के दिल्ली डेरे में ठहरा करते थे। वहां पर संत बलदेव सिंह जी को एक रात को तेज बुखार हो गया। सतगुरु जी के आदेशानुसार इनको वहां से इनकी बहन के घर भेज दिया गया ताकि वहां पर इनकी देखभाल अच्छी तरह से हो सके। सतगुरु जी बराबर इनका हालचाल पूछने आते रहे। बुखार 6 दिन तक रहा। जाने का नाम ही नहीं ले रहा था। छठे दिन सच्चे पातशाह ने फिर दर्शन दिए और वचन किया वह बुखार को छोड़ दो और उसके बाद फिर बुखार नहीं रहा और वे स्वस्थ हो गए। संत बलदेव सिंह जी सतगुरु जी को गुरु नानक देव जी का ही अवतार मानते हैं तथा कहते हैं कि यह अकाल पुरुष धरती पर दुखियों का उद्धार करने के लिए ही पधारे हैं।

राम कृपा जा पर होई ता कि बिगारी सकै न कोई

—संत पूर्वा जी

संत जी से सतगुरु महाराज श्री जगजीत सिंह जी की कुछ चमत्कारी घटनाएं सुनाने के लिए निवेदन किया गया है।

संत जी का नाम महेंद्र सिंह है। यह जिला लुधियाना और गांव पूर्बा के निवासी हैं। इनके विद्या गुरु ने एक बार उन्हें पूर्वा कह कर पुकारा था। तबसे यह पूर्बा कहे जाने लगे। इनके परिवार में दस-बारह सिख नामधारी थे। इनका परिवार अकाली था। इनके गांव में जब दीवान लगता था तो संत जी एक बार दर्शन करने अवश्य जाते। संत जी के मन में एक बार गुरु धारण करने का विचार आया। इनको गुरु धारण करने की बहुत लगन लग गई। इनका मन चाहता था कि वह सतगुरु महाराज के पास जाएं और उनसे भजन लें। सन् 1959 में सतगुरु जगजीत सिंह महाराज गद्दी पर बैठे थे। उसके एक महीने बाद उनके गांव में एक मेला लगा था। उसमें सच्चे पातशाह पधारे थे। संत पूर्बा उस समय 16-17 वर्ष के थे। पूर्बा जी को संत सेवा सिंह जी ने भजन दिया था। उस समय संत पूर्वा के मन में सच्चे पातशाह के दर्शनों की इतनी लगन थी कि उनका मन दर्शन करने को जब भी होता, वे सीधे खेतों से ही वहां चले जाते, जहां सतगुरु जी होते थे।

इनके पिता के समय घर में संपन्नता थी। वे जमींदारी का काम करते थे। पर बाद में घर में निर्धनता आ गई। संत जी काम करते हुए बीज लेने आते तो वे सतगुरु के पास पहुंच जाते। इस पर उनके पिता जी को बड़ा क्रोध आता तो दु:खी होकर गालियां निकालने लगते। वैसे उनके पिता जी बहुत अच्छे थे। संत पूर्बा जब सतगुरु के दर्शन करने जाते और दर्शन न कर पाते तो रोने लगते। एक दिन पूर्बा जी खेतों में काम कर रहे थे। अचानक सतगुरु महाराज के दर्शनों की इच्छा जाग उठी। फिर बेकाबू होने लगे। संत जी ने खेतों का काम छोड़ दिया और सतगुरु महाराज के दर्शनों से अपने मन की प्यास बुझाने के लिए चले गए। जब वापिस लौट कर आए तो मन में पिता जी के क्रोध का भय प्रतीत हो रहा था। उन्हें भय था कि पिता जी आज जम कर उनकी पिटाई करेंगे। पर—

रामकृपा जा पर है होई।
ता की बिगारी सकै न कोई''

यह एक चमत्कार पूर्ण घटना थी जब संत पूर्बा गुरु महाराज के पावन दर्शन

करने के पश्चात घर लौटे तो उनके पिताजी दूसरे द्वार से बाहर चले गए और उसके बाद सब घटना भूली-बिसरी जैसी हो गई और पिता जी को फिर उस घटना का स्मरण भी नहीं आया।

पूर्बा जी की सतगुरु महाराज में लगन बढ़ती गई। उनका मन चाहता था कि वह हर समय सतगुरु की सेवा में ही रहें। जब ये सेवकों को सतगुरु महाराज की सेवा मे देखते तो सोचते कि उन्होंने कितनी तपस्याएं की होंगी जिनको सच्चे पातशाह के पास बैठने का सुअवसर प्राप्त होता होगा। शास्त्रकारों ने मोक्ष के चार चार चरण वर्णित किए हैं। सादृश्य, सामीप्य, सायुज्य और कैवल्या अर्थात भगवान की जब कृपा होती है और वे भक्त को मोक्ष प्रदान करते हैं या प्राणी अपने पुण्य कर्मों से मोक्ष अर्जित करता है तो सबसे पहले उसे चतुर्थ श्रेणी का मोक्ष प्राप्त होता है अर्थात सादृश्य मुक्ति प्राप्त होती है। वह भगवान को हर समय हर घड़ी देख सकता है। उसकी आंखें प्रभु के दर्शनामृत का हर समय पान करती रहती हैं। वह हरि दर्शनों से स्वयं को धन्य करता रहता है। पूर्बा जी की भी यही स्थिति थी। वह एक प्रकार की सादृश्य मुक्ति प्राप्त करना चाहते थे जिससे वह हर समय चलते-फिरते उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते सच्चे पातशाह के दर्शन करते रहें और अपना जीवन धन्य करते रहें। उन्हें एक बार सपना आया जिसमें उन्होंने देखा कि सतगुरु महाराज हैलीकाप्टर में बैठ कर आए हैं और उनके मकान के बाहर देहली के पास उतरे हैं। फिर वे उनको अपने साथ बिठा कर ले गए हैं। सपना टूट गया। जब आंख खुली तो वह हैरान होने लगे। वह सोचने लगे कि उनका ऐसा उत्तम भाग्य कभी हो सकता है।

एक बार की बात है, श्री जीवन नगर जिला सिरसा पूर्बा जी सतगुरु महाराज के दर्शनों के लिए गए। क्योंकि आगे कार्तिक मास था और कार्तिक में खेतों में काम अधिक होता है। गेहूं की बिजाई का काम भी होता है। जब यह वहां पहुंचे तो सतगुरु महाराज ने आज्ञा की कि चार लोग मस्तान गढ़ रहें क्योंकि वहां काम बहुत है। उनमें पूर्बा जी भी थे। उनके मन में आया कि आजकल तो जमींदारी का बहुत काम है पर सतगुरु जी के आदेश का पालन करना ही था। यह मस्तान गढ़ चले गए। वहां सतगुरु जी की इन पर विशेष कृपा थी। उन्हें सतगुरु महाराज ने वहीं रहने के लिए कहा। माता जी भी उन दिनों वहीं सेवा किया करती थीं। इन आठ लोगों का ग्रुप था। वहां जमीन को ठीक-ठाक करना था। समतल बनाना था। निराई आदि करनी थी। उन्होंने मस्ताना जी को बुला लिया क्योंकि उधर आदमियों की कमी थी। ये वहां आए तो थोड़ी देर के बाद सच्चे पातशाह भी वहां पहुंच गए। मस्ताना जी ने हंस कर कहा कि पूर्बा वालों से एक आदमी इधर ले

आए हैं। यह सुन कर सतगुरु ने सहज स्वभाव से कहा—"चलो अच्छा किया ले आए हो। इसने यहां हमारे पास ही रहना है।"

सन् 1971-72 में सतगुरु राम सिंह जी की प्रदेश भवन शताब्दी मनाई गई। संत रत्न सिंह उनके लिए भोजन आदि बनाते थे। वे सतगुरु के साथ भी रहे। संत बलकार सिंह भी सेवा में रहते थे। उनके साथ लुधियाना के त्रिलोचन सिंह भी रहते थे। उन्होंने माता जी से प्रार्थना की कि उन्हें सतगुरु जी की सेवा में रहने की अनुमति प्रदान की जाए। पर माता जी ने कहा कि इस काम के लिए बलकार सिंह जी ही रखते हैं। सतगुरु महाराज की उन पर विशेष कृपा हो गई। उन्होंने उन्हें दमदमा साहब जाने की आज्ञा दी। उन्हें ऐसा लगा कि सतगुरु ने उन्हें दमदमा साहब भेज दिया है और संत त्रिलोचन सिंह जी को अपने पास रख लिया है। उन्हें सतगुरु जी जालंधर अपने साथ ले गए। फिर श्री भैणी साहब गए और फिर श्री जीवन नगर। पूर्बा जी को पहले तो विश्वास नहीं हुआ फिर बाद में विश्वास हो गया। वह दो साल तक सतगुरु के पाकशाला अध्यक्ष रहे। संत जी ने सोध (व्रत) रख ली। जो पहले सतगुरु जी के साथ रहते थे। उन्हें इस का बुरा लगा। पूर्बा जी एक महीना उनके पास रहे पर उनका वहां मन नहीं लगा। उन्होंने सतगुरु महाराज को चिट्ठी लिखी और कहा कि उन्होंने उसे पहले भी बचाया था और अब भी कृपा करें। उन्हें बताया गया कि यदि वह छोटे ठाकुर जी के सेवक बन जाएं तो बड़ा फायदा रहेगा परंतु यह नहीं माने। उन्हें निकालने के लिए बहुत वार किए। उन्होंने सच्चे पातशाह को बता दिया कि यदि वह हुकम करेंगे तो वह बुरा नहीं मानेंगे। श्री सतगुरु जी ने पूर्बा जी को अपने साथ रहने की अनुमति प्रदान कर दी। तब से आज तक वह सतगुरु जी के पास ही हैं।

पूर्बा जी सतगुरु जी के साथ जब वैसाख से रहने लगे। वे दो महीने के बाद बीमार पड़ गए। उन दिनों संत मोहकम सिंह सतगुरु जी के कपड़े धोते थे। वह बहुत निर्भय स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने सतगुरु जी को बताया कि वह पूर्बा जी को साथ लिए जा रहे हैं। एक बार सतगुरु जी ने हैदराबाद जाना था जब ये बीमार पड़ गए तो उन्हें श्री जीवन नगर छोड़ गए। पांच लोगों को बारी का बुखार आता था। वह बहुत कमजोर हो गए। किसी ने सतगुरु महाराज को उनकी बीमारी के बारे में बताया।

उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि उनकी मृत्यु हो गई है। कोई उन्हें कहीं लिए जा रहा है। वे एक पहाड़ी पर चढ़ रहे हैं। इतने में उन्हें विचार आया कि कष्ट के समय सतगुरु को स्मरण करना चाहिए। वही संकट में सबकी सहायता करते हैं। जैसे ही उन्हें यह ध्यान आया तभी उन्हें सतगुरु जी नजर आ गए। सतगुरु पूछ रहे

हैं उनसे कि वे किस से पूछ कर लाए हैं इन्हें। इतने में उन्होंने तलवार हाथ में ली और दाईं ओर खड़े व्यक्ति का सिर धड़ से अलग कर दिया और आज्ञा दी इन्हें वापिस ले चलो जहां से लाए हो पर उन्हें फिर कोई पहाड़ी पर ले जाने लगा। सच्चे पातशाह फिर आए और क्रोध में पूछने लगे कि इन्हें क्यों लाए हो और फिर तलवार लेकर बाईं ओर खड़े व्यक्ति का सिर काट दिया। इस प्रकार सतगुरु महाराज ने दो बार जीवन दान दिया। सब लोग जो उन्हें ले जा रहे थे, छोड़ कर चले गए और उन्हें पता चला कि उनकी आत्मा फिर शरीर में प्रवेश कर गई है। उन्हें होश आया और प्यास लगी। उन्होंने पानी पिया और फिर बिस्तर पर जाकर लेट गए। कमजोरी बहुत थी पर अगले दिन बुखार उतर चुका था। संत पूर्बा जी को फिर स्वप्न में ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई है। उन्हें कोई ले जा रहा है। वे उदास हैं और दूर से सच्चे पातशाह को देखते जा रहे हैं। संत पूर्बा जी ने फिर उनसे कहा "सच्चे पातशाह यदि आप न होते तो मेरा क्या होता?" सच्चे पातशाह कहने लगे, "घबराते क्यों हो। देखो तुम्हें बचाने के लिए मैं कहां से चल कर आ गया हूं। वे हैदराबाद से अप्रत्यक्ष रूप से उनके पास बचाने आ गए थे। दोनों सेवक भी पास आ गए। सतगुरु नाराज होने लगे कि ध्यान क्यों नहीं रखा और फिर आशीर्वाद दिया। इस प्रकार इनकी सतगुरु द्वारा दूसरी बार रक्षा की जाने की यह पच्चीस साल पहले की घटना है।

सतगुरु के और चमत्कार

सतगुरु के चमत्कार की घटनाएं अनेक हैं। जिस प्रकार आकाश के नक्षत्र तारे कोई गिन नहीं सकता इसी प्रकार सतगुरु के चमत्कारों का कोई हिसाब नहीं किया जा सकता।

कुंदन सिंह नाम का एक बावरची कुछ समय के लिए सच्चे पातशाह के पास रहा। उसकी सच्चे पातशाह पर अधिक श्रद्धा नहीं थी। एक बार कुंदन सिंह और दिलदार सिंह ड्राईवर गुरदेव सिंह सतगुरु जी के साथ गाड़ी में आ रहे थे। वह रामपुर के पुल के पास थे। जब वे रामपुर के पास से निकले तो चालक ने कहा कि यदि सतगुरु महाराज गाड़ी चला लें तो उसे वापिस आठ मील लौट कर नहीं जाना पड़ेगा। क्योंकि वहीं उसका गांव था। सतगुरु जी ठहरे परम दयालु वह तो भक्तों के दुःख दूर करने वाले हैं। किसी को दुःख कैसे दे सकते थे। उन्होंने ड्राइवर गुरदेव सिंह को उतर जाने की अनुमति दे दी और स्वयं गाड़ी चलाने लगे। कुंदन सिंह की जब आंखें बंद होतीं तो उसे दिखता कि गाड़ी सतगुरु प्रताप सिंह जी चला रहे हैं पर आंखें खुलीं तो देख कर हैरान हो गया कि गाड़ी तो

सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी महाराज चला रहे थे। उसे ऐसा भी प्रतीत हुआ कि उसे आवाज आ रही है, जिसमें सतगुरु महाराज कह रहे थे कि अभी तुझे विश्वास नहीं हुआ कि सतगुरु जगजीत सिंह सतगुरु प्रताप सिंह का ही रूप हैं। एक बार रास्ते में किसी की गाड़ी खराब हो गई तो सतगुरु महाराज ने वहीं अपनी गाड़ी रोक दी और अवतार सिंह जी से गाड़ी स्टार्ट करने को कहा। सतगुरु जी का आदेश पाकर अवतार सिंह जी ने जैसे ही गाड़ी स्टार्ट की गाड़ी झट से चल पड़ी। गाड़ी वाले देख कर हैरान हो गए। उनको जब सतगुरु महाराज के बारे में पता चला तो वे लोग श्रद्धा से उनके चरणों में झुक गए। इस प्रकार के सतगुरु महाराज के साथ रहने पर अनेक कौतुक दिखाई पड़ते हैं। एक बार की घटना सुनाता हूं। सतगुरु अपने पूरे परिवार के साथ सारे संसार का भ्रमण करने गए थे। संत पूर्बा जी भी उनके साथ थे। इंग्लैंड में सतगुरु जी ने बारिश बरसा दी। हुआ ऐसे कि वहां सच्चे पातशाह सतगुरु महाराज सतपाल भट्टी के घर नित्य नियम करने के उद्देश्य से जा रहे थे तो वहां टेलीविजन वालों ने सतगुरु जी की तसवीर खींच ली और प्रसारित कर दी कि आप हैं सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज जो भारत में श्री भैणी साहब से पधारे हैं और यह यहां वर्षा बरसाएंगे। उनकी चालाकी तो यह थी कि सतगुरु महाराज कुछ कर नहीं पाएंगे और नामधारी पंथ के गुरु की सबमें खिल्ली उड़ जाएगी। सबने सतगुरु महाराज से प्रार्थना की कि कृपा करें। अनेक प्रकार के पूजा पाठ किए थे। परंतु कोई लाभ नहीं हुआ था। अगले दिन आसा की वार में अरदास की गई। थोड़ी देर बाद में ही बादल छा गए। और फिर खूब वर्षा बरसी। सायंकाल जिस समय वर्षा रुकी तो जिस हाल में नित्य नियम हो रहा था, वहां बहुत से अंग्रेज बच्चे इकट्ठे हो गए और अनेक लोग गुरु कह कर बुलाने लगे। वहां बीस दिन निरंतर वर्षा होती रही।

सन् 1977 में पहली कार्तिक को पूर्बा जी का आनंद कारज हुआ। पूर्बा जी का तो विवाह करने का विचार नहीं था। माता जी ने उन्हें अपने पास रखा। सब लोग इन्हें शादी करने के लिए विवश करने लगे पर इन्होंने मना कर दिया। सबने सतगुरु महाराज से अरदास की कि यदि उनकी पत्नी (माता जी) कह देंगी तो वह शादी करवायेंगे। उन्होंने बलकार सिंह जी से माता जी को मनाने के लिए कहा। उन्हीं दिनों जब माता जी ने पाठ शुरू किया तो एक लड़की अपनी भाभियों के साथ वहां आई। इससे पहले माता जी ने दूसरे सेवकों से 10 एकड़ जमीन पूर्बा जी से देने को कहा। सतगुरु जी ने कहा कि उनकी आज्ञा के बिना शादी नहीं करना। उस लड़की के तीन भाई थे। दो भाई बड़े और एक छोटा था जिसका नाम सोहन सिंह था और उसके पिता का नाम लाल सिंह था। उसके पिता सच्चे

पातशाह द्वारा बताए गए लड़के से अपनी बेटी की शादी करने को तैयार नहीं थे। इसी प्रकार एक वर्ष बीत गया। लड़की की भाभियों ने जब उससे पूछा तो वह कहने लगी कि वह शादी वहीं करेगी जहां सतगुरु कहेंगे। उसने फिर पक्के निश्चय से वही बात अपनी भाभियों से भी कह दी। उसे फिर सतगुरु महाराज ने सपने में आश्वासन दिया और कहा कि उसके पिता और भाई जितना भी यत्न भले कर लें उसकी शादी सतगुरु ही करेंगे। लक्ष्मण सिंह ने इनसे उम्र की बात पूछी तो 28 साल बताई। सच्चे पातशाह कहने लगे उम्र जो भी हो शादी तो मैंने ही करवानी है। एक साल बीत गया उस लड़की की शादी नहीं हुई। फिर सतगुरु ने पूर्बा जी की शादी उस लड़की सुखविंदर कौर से संपन्न करवा दी। उनका विवाह सन् 1977 में संपन्न हुआ। उनके दो पुत्र हैं। इनके बीच का बेटा 6 साल का होकर डूब कर मर गया था। छोटे बेटे में उसी लड़के की आत्मा है। उस लड़के वलवंत का जब देहांत हुआ तो एक दिन सपने में उसने अपने मामा के लड़के से कहा कि पूर्बा जी को बता देना कि वह फिर उनके घर आएगा। फिर उसने पूर्बा जी के घर जन्म लिया। उसका नाम मान सिंह है। सच्चे पातशाह इन बच्चों को बहुत आशीर्वाद देते हैं। गोस्वामी तुलसी दास कहते हैं—

''होवत वही जो राम रचि राखा''

अर्थात होता वही है जो सच्चे पातशाह को स्वीकार हो। दूसरा नहीं हो सकता। यही ध्रुव सत्य है।

नोट : दुःख से कहना पड़ रहा है कि यह बालक चढ़ाई कर गया है और सतगुरु राम सिंह के दरगाह में पहुंच गया है।